ओम शान्ति

दिव्य गुण माला

भाग - 5

अव्यक्त वाणी संकलन
1969 से 2015

शुभकामनाएँ एवं आशीर्वचन

भाग : 5

इस भाग में 18 गुणों के बारें में बनाया है, जो हमें रहमदिल बन परोपकारी बनना सिखाते हैं। निश्चय और पवित्रता के फाउण्डेशन को मजबूत करने के लिए रूहानियत का अभ्यास कैसे करना है, वह बताते है।

ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन निश्चय है और जो निश्चयबुद्धि होते हैं रूहानियत के अभ्यास से वे सदा ब्रह्मचारी रहते हैं और उनके अंदर पवित्रता की रियल्टी और रॉयल्टी आती हैं। वह दूसरों को रिगार्ड -रिस्पेक्ट देकर उनका सत्कार करते हैं। सदैव न्यारे और एक बाप के प्यारे बनकर ईश्वरीय सेवा करते हैं, जिससे उनमे सहनशीलता का गुण स्वतः आ जाता हैं। उनके दिल में सदैव दयाभाव होता हैं और वे रहमदिल बनकर दूसरों की सेवा करते हैं। ऐसे वे परोपकारी बन जाते हैं और उनका रूहाब भी दूसरों को दिखाई देता हैं।

इसमें वर्णित 18 गुण यह गीता के 18 अध्याय के समान हमें अंतमें स्मृति स्वरूप और निश्चिंत बनाते हैं। हम कल्प-कल्प के विजयी बन जाते हैं।

धन्यवाद।

परम आदरणीय नलिनी दीदी जी,
संचालिका, घाटकोपर सबझोन

दिव्य गुण माला -5

सूची

क्र.	गुण	पृष्ठ क्र.
1	परोपकारी	1-2
2	पवित्रता(प्युरिटी), रियल्टी, रॉयल्टी	3-47
3	रहमदिल, दयाभाव	48-56
4	रिगार्ड, रिस्पेक्ट, सत्कारी	57-70
5	रुहानियत	71-75
6	सदा ब्रह्मचारी	76-77
7	सहनशीलता / सरल चित	78-86
8	संतुष्टता / स्पष्टता	87-109
9	संयम	110
10	संतुलन / बैलेन्स	111-151
11	शीतलता	152-155
12	शुभचिंतक	156-159

1. परोपकारी

10.02.75... अपने समय को, सुखों को, प्राप्ति की इच्छा को सर्व के प्रति महादानी बन दाता बने। ऐसे फॉलो फादर स्वयं के प्रति नाम, शान, मान सर्व प्राप्ति की इच्छा को कुर्बान करने वाले ही परोपकारी बन सकते हैं। लेने की इच्छा छोड़ देने वाले महादानी ही परोपकारी बन सकते हैं।

12.12.78... परोपकारी की परिभाषा सहज भी है और अति गुह्य भी है।

1. परोपकारी अर्थात् हर समय बाप समान हर आत्मा के गुणमूर्त्त को देखते।

2. परोपकारी किसी की भी कमज़ोरी वा अवगुण को देखते अपनी शुभ भावना से सहयोग की कामना से अवगुण को देखते उस आत्मा को भी गुणवान बनाने की शक्ति का दान देंगे।

3. परोपकारी अर्थात् सदा बाप समान स्वयं के खज़ानों को सर्व आत्माओं के प्रति देने वाले दाता रूप होंगे।

4. परोपकारी सदा स्वयं को खज़ानों से सम्पन्न बेगमपुर के बादशाह अनुभव करेंगे। बेगमपुर अर्थात् जहाँ कोई गम नहीं। संकल्प में भी गम के संस्कार अनुभव न हों।

5.परोपकारी अर्थात् सदैव विशेष रूप से अपनी मन्सा अर्थात् संकल्प शक्ति द्वारा, वाणी की शक्ति द्वारा, अपने संग के रंग के द्वारा,सम्बन्ध के स्नेह द्वारा, खुशी के अखुट खज़ाने द्वारा अखण्ड दान करता रहेगा। कोई भी आत्मा सम्पर्क में आवे तो खुशी के खज़ाने से सम्पन्न होके जाए। ऐसे अखण्ड दानी होंगे। विशेष समय वा सम्पर्क वाले अर्थात् कोई-कोई आत्माओं के प्रति दानी नहीं लेकिन सर्व के प्रति सदा महादानी होंगे। परोपकारी स्वयं मालामाल होने के कारण किसी भी आत्मा से कुछ लेकर के देने के इच्छुक नहीं होंगे। संकल्प में भी यह नहीं आवेगा कि यह करे तो मैं करूँ, यह बदले तो मैं बदलूँ, कुछ वह बदले कुछ मैं बदलूँ। एक बात का परिवर्तन आत्मा का और 10 बातों का परिवर्तन मेरा होगा, ऐसी-ऐसी भावना रखने वाले को परोपकारी नहीं कहेंगे। कुछ लेकर के कुछ देना उसको परोपकारी नहीं कहा जाता। 7. परोपकारी अर्थात् भिखारी को मालामाल बनाने वाले – अपकारी के ऊपर उपकार करने वाले। गाली देने वाले को गले लगाने वाले, अपने परोपकारी की शुभ भावना से, स्नेह से, शक्ति से, मीठे बोल से, उत्साह उमंग के सहयोग से दिलशिकस्त को शक्तिवान बना दे अर्थात् भिखारी को बादशाह बना दे। 8. परोपकारी त्रिकालदर्शी होने के कारण हर आत्मा के सम्पूर्ण सहयोग को सामने रखते हुए, हर आत्मा की कमज़ोरी को परखते हुए उसी कमज़ोरी को स्वयं में धारण नहीं करेंगे, वर्णन नहीं करेंगे लेकिन अन्य आत्माओं की कमज़ोरी का काँटा कल्याणकारी स्वरूप से समाप्त कर देंगे। कांटे के बजाए - कांटे को भी फूल बना देंगे। ऐसे परोपकारी सदा सन्तुष्टमणि के समान स्वयं भी सन्तुष्ट होंगे और सर्व को भी सन्तुष्ट करने वाले होंगे। कमाल यह है जो होपलेस में होप पैदा करें। 9. जिसके प्रति सब निराशा दिखायें ऐसे व्यक्ति वा ऐसी स्थिति में सदा के लिए उनकी आशा के दीपक जगा दें। जब आपके जड़ चित्र अभी तक अनेक आत्माओं की अल्पकाल की मनोका-मनायें पूर्ण कर रहे हैं - तो चैतन्य रूप में अगर कोई आपके सहयोगी भाई वा बहन परिवार की आत्मायें, बेसमझी वा बालहठ से अल्पकाल की वस्तु को सदाकाल की प्राप्ति समझ, अल्पकाल का मान-शान-नाम वा अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा रखती हैं तो दूसरे को मान देकर के स्वयं निर्माण बनना यही परोपकार है। यह देना ही सदा के लिए लेना है। जैसे अनजान बच्चा नुकसान वाली चीज़ को भी खिलौना समझता है तो अति न्यारा ही बाप का अति प्यारा बनता है।उनको कुछ देकर छुड़ाना होता है – हठ से सदाकाल का नुकसान हो जाता है – ऐसे बेसमझ आत्मायें भी उसी समय अल्पकाल की प्राप्ति को अर्थात् सदा के नुकसानकारी बातों को अपने कल्याण का साधन समझती हैं। ऐसी आत्माओं को ज़बरदस्ती इन बातों से हटाने से कशमकश में आकर उनके पुरुषार्थ की ज़िन्दगी खत्म हो जाती है। इसलिये कुछ देकर के सदा के लिये छुड़ाना ऐसे युक्ति-

युक्त चलन से स्वत:ही अल्पकाल की भिखारी आत्मा बेसमझ से समझदार बन जावेगी। स्वयं महसूस करेंगे कि यह अल्पकाल के साधन हैं। ऐसी बेसमझ आत्माओं के ऊपर भी परोपकारी। ऐसे परोपकारी स्वत: ही स्वयं उपकारी हो जाते हैं - देना ही स्वयं प्रति मिलना हो जाता। महादानी ही सर्व अधिकारी स्वत: हो जाते। समझा – परोपकारी की परिभाषा क्या है। ऐसे परोपकारी ही सर्व आत्माओं द्वारा दिल की आशीर्वाद के अधिकारी बनते हैं। ऐस परोपकारी आत्माओं के ऊपर सदा सर्व आत्माओं द्वारा प्रशन्सा के पुष्पों की वर्षा होती है।

बाप-दादा को, अन्त सो आदि करने वाले ऐसे आलराउन्ड पार्टधारी, परोपकारी ग्रुप चाहिए। जैसे हर विशेष कार्य के अर्थ ग्रुप बनाते हैं ना। तो इस समय ऐसा परोपकारी ग्रुप चाहिए जो देने वाले दाता हो। जैसे राजा दाता होता है, आजकल के राजे लोग नहीं।

तो ऐसा परोपकारी ग्रुप जो स्वयं के प्रति इच्छा मात्रम अविद्या हो – अखण्ड दानी हो। जैसे बाप को देखा तो स्वयं का समय भी सेवा में दिया। स्वयं निर्माण और बच्चों को मान दिया। पहले बच्चे – नाम बच्चे का काम अपना - काम के नाम की प्राप्ति का त्याग। नाम में भी परोकारी बने। अपना त्याग कर दूसरे का नाम किया। स्वयं को सदा सेवाधारी रखा यह है परोपकारी – बच्चों को मालिक रखा और स्वयं को सेवाधारी रखा। तो मालिक-पन का मान भी दे दिया, शान भी दे दिया, नाम भी दे दिया। कभी अपना नाम नहीं किया - मेरे बच्चे। तो जैसे बाप ने नाम, मान, शान सबका त्याग किया, परोपकार किया, स्वयं का सुख बच्चों के सुख में समझा - बच्चों की विस्मृति कारण दु:ख का अनुभव सो अपना – दु:ख समझा। बच्चों की गलती भी अपनी गलती समझ बच्चों को सदा राइटियस बनाया। इसको कहा जाता है परोपकारी।

19.12.78... परोपकारी से विश्व उपकारी बन जायेंगे। बाप-दादा की विश्व धरनी जिस पर बाप की नज़र पड़ी वह फल अवश्य देगी।

24.10.13... परोपकारी बन स्व उपकार और पर-उपकार दोनों को अटेन्शन में रखते आगे से आगे बढ़ रहे हैं, यह चेक करते, बढ़ते भी रहना और बढ़ाते भी रहना।

2. पवित्रता(प्युरिटी), रियल्टी, रॉयल्टी

13.03.69... कुमारियों के साथ बापदादा का काफी स्नेह है। क्योंकि बापदादा परमपवित्र हैं और कुमारियाँ भी पवित्र हैं। तो पवित्रता, पवित्रता को खींचती है। वर्तमान समय मुख्य विशेषता यही चाहिए, हरेक महारथी का फर्ज है अपना गुण औरों में भरना।

09.06.69... मुख्य श्रीमत यही है कि ज्यादा से ज्यादा समय याद की यात्रा में रहना। क्योंकि इस याद की यात्रा से ही पवित्रता, दैवीगुण और सर्विस की सफलता भी होगी।

06.07.69... एक बार वायदा कर लिया, बापदादा को हाथ दे दिया फिर धर्म को नहीं छोड़ना है। पवित्रता नारी जो होती है वह अपने धर्म में बहुत पक्की रहती है। आप सच्ची-सच्ची सीता, सच्ची लक्ष्मी हो जो महालक्ष्मी बनने वाली हो।

17.11.69... सर्वदा सुख, शान्ति और पवित्रता का जन्म सिद्ध अधिकार कहते हो ना। अपने आप से पूछो कि बच्चा बना और पवित्रता, सुख, शान्ति का अधिकार प्राप्त किया। अगर अधिकार छूट जाता है तो कोई बात के अधीन बन जाते हो। तो अब अधीनता को छोड़ो, अपने जन्म सिद्ध अधिकार को प्राप्त करो।

29.05.70... फर्स्ट नम्बर लेने के लिए विशेष फास्ट रखना पड़ता है। फास्ट के दो अर्थ होते हैं। एक फास्ट व्रत को भी कहा जाता है। तो विशेष कौनसा व्रत रखना है? (पवित्रता का) यह व्रत तो कामन है। यह व्रत तो सभी रखते हैं। फर्स्ट आने के लिए विशेष व्रत रखना है कि एक बाप दूसरा न कोई। हर बात में एक की ही स्मृति आये। जब यह फास्ट रखेंगे तो फर्स्ट आ जायेंगे। दूसरा फास्ट-जल्दी चलने को भी कहा जाता है अर्थात् तीव्र पुरुषार्थ।

11.03.71... कुमार अर्थात् पवित्र अवस्था। उसमें भी सिर्फ एक नहीं, संगठन दिखलाया है। दृष्टान्त में तो थोड़े ही दिखाये जाते हैं। तो यह आप लोगों का संगठन प्योरीटी का यादगार है। ऐसी प्योरिटी होती है जिसमें अपवित्रता का संकल्प वा अनुभव ही नहीं हो। ऐसी स्थिति यादगार समान बनाकर जानी है।

22.06.71... निरन्तर याद में रहो और मन, वाणी, कर्म में प्योरिटी हो। औरों को भी सुनाते हो कि पवित्र बनो, योगी बनो। तो जो औरों को सुनाते हो वही मुख फरमान हुआ ना। संकल्प में भी अपवित्रता वा अशुद्धता न हो – इसको कहते हैं सम्पूर्ण पवित्र।

20.08.71... ज़रा भी मन्सा संकल्प भी इमप्योअर अर्थात् अपवित्रता का न हो, तब फरिश्तेपन की निशानी में टिक सकेंगे।

25.08.71... यह पवित्रता और अपवित्रता का कारण क्या होता है? स्मृति। स्मृति है कि यह देवी है; तो यह स्मृति दृष्टि और वृत्ति को पवित्र बनाती है। और स्मृति है कि यह फीमेल है; तो वह स्मृति वृत्ति और दृष्टि अपवित्रता की तरफ खैंचती है। वहाँ रूप को देखेंगे और वहाँ रूहानित को देखेंगे। देवी का रूप स्मृति में आने से जैसे जड़ चित्रों में कभी संकल्प मात्र भी अपवित्रता वा देह का अट्रेक्शन नहीं होता है, ऐसे ही चैतन रूप में भी यह स्मृति रखने से संकल्प में भी यह कम्पलेन नहीं रहेगी और कम्पलीट हो जायेंगे। समझा? यह हैं वर्तमान पुरुषार्थियों की कम्पलेन के ऊपर कम्पलीट बनने की युक्तियां।

27.02.72... जब होली अर्थात् पवित्रता की स्टेज पर ठहरते हो वा बाप के संग के रंग में रंगे हुए होते हो तो इस ईश्वरीय मस्ती में यह देह का भान वा भिन्न-भिन्न सम्बन्ध का भान, छोटे-बड़े का भान विस्मृत हो एक ही आत्म-स्वरूप का भान रहता है ना। तो आपके सदाकाल की स्थिति का यादगार दुनिया के लोग मना रहे हैं।

10.05.72... अपना कर्त्तव्य है -- संकल्प में, वृति में, स्मृति में भी कोई पाप का संकल्प न आये। इसको ही कहा जाता है ब्राह्मण अर्थात् पवित्र। अगर कोई भी अपवित्रता वृति, स्मृति वा संकल्प में है तो ब्राह्मण-पन की स्थिति में स्थित हो नहीं सकते, सिर्फ कहलाने मात्र हो। इसलिए कदम- कदम पर सावधान रहो। खुशी के साथ-साथ शक्तियों को भी साथ रखना है। विशेषताओं के साथ अगर कमजोरी भी होती है तो एक कमजोरी अनेक विशेषताओं को समाप्त कर देती है। तो अपनी विशेषताओं को प्रत्यक्ष करने के लिए कमजोरी को समाप्त कर दो।

15.09.74... पवित्रता की लाइट का भी चक्र हो और सेवा का प्रकाश फैलाने वाला भी चक्र हो तब कहेंगे–'चक्रधारी।' ऐसा चक्रधारी ही चक्रवर्ती बन सकता है।

27.12.74... जैसे देह और देही अलग-अलग वस्तुयें हैं, लेकिन अज्ञानवश इन दोनों को मिला दिया है। वैसे ही 'मेरे' को 'मैं' समझ लिया है। तो इस गलती के कारण कितनी परेशानी व दु:ख व अशान्ति प्राप्त की। ऐसे ही, यह अपवित्रता और विस्मृति के संस्कार, जो मेरे अर्थात् ब्राह्मणपन के नहीं, लेकिन जो शूद्रपन के हैं, उनको मेरा समझने से, माया के वश व परेशान हो जाते हो अर्थात् ब्राह्मणपन की शान से परे (दूर) हो जाते हो।

18.01.75... विस्मृति और अपवित्रता क्या होती है, उसकी भी अविद्या हो जाय – इसको कहा जाता है वरदान का कोर्स करना।

26.10.75... अब तक मैजॉरिटी पहले पाठ अर्थात् पहली बात – 'पवित्र दृष्टि और भाई-भाई की वृत्ति' में फेल हैं। अब तक इस पहले फरमान पर चलने वाले फरमाँबरदार बहुत थोड़े हैं। बार-बार इस फरमान का उल्लंघन करने के कारण अपने ऊपर बोझ उठाते रहते हैं। इसका कारण यह है कि पवित्रता की मुख्य सब्जेक्ट का महत्व नहीं जानते हैं, उसके नुकसान की नॉलेज को नहीं जानते।

28.10.75... सम्पूर्ण पवित्रता और परिवर्तन-शक्ति से सेवा, स्नेह और सहयोग में विशेष आत्मा बन सकते हैं।

18.01.77... पवित्रता तो ब्राह्मण जन्म का स्वधर्म है। पवित्रता का संकल्प ब्राह्मण जन्म का लक्ष्य और लक्षण है। जिसका निजी लक्षण ही पवित्रता है उसका विनाश की डेट के साथ कोई कनेक्शन नहीं।

11.01.77... जैसे शुरू में बाप से पवित्रता की प्रतिज्ञा की कि मरेंगे, मिटेंगे, सहन करेंगे, मार खायेंगे, घर छोड़ देंगे, लेकिन पवित्रता की प्रतिज्ञा सदा कायम रखेंगे – ऐसी शेरनियों के संगठन ने स्थापना के कार्य में निमित्त बन करके दिखाया, कुछ सोचा नहीं, कुछ देखा नहीं – करके दिखाया, वैसे ही अब ऐसा ग्रुप चाहिए। जो लक्ष्य रखा उस लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए सहन करेंगे, त्याग करेंगे, बुरा-भला सुनेंगे, परीक्षाओं को पास करेंगे लेकिन लक्ष्य को प्राप्त करके ही छोड़ेंगे।

28.01.77... धर्म अर्थात् मुख्य धारणा है – सम्पूर्ण पवित्रता। सम्पूर्ण पवित्रता की परिभाषा जानते हो? संकल्प व स्वप्न में भी अपवित्रता का अंशमात्र भी न हो? ऐसी श्रेष्ठ धारणा करने वाले ही सच्चे ब्राह्मण कहलाते हैं, इसी धारणा के लिए ही गायन है 'प्राण जाएँ पर धर्म न जाएँ।' ऐसी हिम्मत, ऐसा दृढ़ निश्चय करने वाले अपने को समझते हो? किसी भी प्रकार की परिस्थिति में अपने धर्म अर्थात् धारणा के प्रति कुछ त्याग करना पड़े, सहन करना पड़े, सामना करना पड़े, साहस रखना पड़े तो खुशी-खुशी से करेंगे? पीछे हटेंगे नहीं? घबरायेंगे नहीं?

31.01.77... जब से बाप के बच्चे बने, पवित्रता की प्रतिज्ञा की, तो रिटर्न (Return;बदले) में ताज प्राप्त हो ही जाता है। सुनाया था ना– आलमाइटी अथार्टी के बच्चे बनने से अर्थात् अलौकिक जन्म होते ही ताज, तख्त और तिलक जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में प्राप्त होता है। ऐसे अपने भाग्य के चमकते हुए सितारे को देखते हो? अगर सदा अपने भाग्य और भाग्य विधाता के गुण गाते रहो तो सदा गुण सम्पन्न बन ही जायेंगे।

28.04.77... सदा भाग्य की निशानी है पवित्रता और बाप द्वारा सर्व प्राप्तियाँ अर्थात् लाईट का क्राउन। स्मृति कम, तो तिलक भी स्पष्ट चमकता हुआ नहीं दिखाई देगा। चमकता हुआ तिलक सदा बाप के साथ रहने के सुहाग की निशानी है। ऐसी सुहागिन तिलकधारी वा सदा सुहागिन होने के कारण सदा विश्व के आगे श्रेष्ठ अर्थात् ऊँच आत्मा दिखाई देती है। सदा भाग्यवान की निशानी है लाईट का क्राउन। जैसे लौकिक दुनिया में भाग्य की निशानी राज्य अर्थात् राजाई होती है, और राजाई की निशानी ताज होता है, ऐसे ईश्वरीय भाग्य की निशानी लाईट का क्राउन है। उस ताज की प्राप्ति का आधार है प्यूरिटी (पवित्रता) और सर्व प्राप्ति। सम्पूर्ण प्यूरिटी अर्थात् मनसा में भी किसी एक विकार का अंश भी न हो। और सर्व प्राप्ति अर्थात् ज्ञान, सर्व गुण और सर्व शक्तियों की प्राप्ति।

09.05.77... विशेष पार्ट बजाने का शृंगार कौन सा है? सम्पूर्ण पवित्रता ही आपका शृंगार है। संकल्प में भी अपवित्रता का अंश मात्र न हो। ऐसा शृंगार निरन्तर है? क्योंकि आप सब हद के, अल्प काल के पार्ट बजाने वाले

नहीं हो। लेकिन बेहद का, हर सेकेण्ड, हर संकल्प से सदा पार्ट बजाने वाले हो। इसलिए सदा शृंगार की हुई मूर्त अर्थात् सदा पवित्र स्वरूप हो। इस समय का शृंगार जन्म जन्मान्तर के लिए अविनाशी बन जाता है।

25.06.77... पवित्रता ब्राह्मणों का निजी संस्कार है। हद के संस्कार नहीं है। हद की पवित्रता अर्थात् एक जन्म तक की पवित्रता हद का सन्यास है। बेहद के संन्यासियों को जन्म-जन्मान्तर के लिए अपवित्रता का संन्यास है। बाप-दादा ने पवित्रता के लिए कब समय की सीमा दी थी क्या? सलोगन में भी यह लिखते हो कि बाप से सदा काल के लिए पवित्रता सुख-शान्ति का वर्सा लो। समय के आधार पर पवित्र रहना, इसको कौन-सी पवित्रता की स्टेज कहेंगे? इससे सिद्ध है कि स्वयं का अनुभव और प्राप्ति के आधार पर फाउन्डेशन नहीं हैं। तो ऑनेस्ट बच्चों के यह लक्षण नहीं हैं। 'ऑनेस्ट अर्थात् सदा होलीएस्ट।' समझा, ऑनेस्ट किसको कहा जाता है?

18.01.78... अब बाप-दादा हरेक बच्चे को लाइट-माइट हाउस के रूप में देखते हैं। माइक पावरफुल हो गए हैं। लेकिन लाइट, माइट और माइक तीनों ही पावरफुल साथ-साथ चाहिएं। आवाज़ में आना सहज लगता है ना। अब ऐसी पावरफुल स्टेज बनाओ जिस स्टेज से हर आत्मा को शान्ति, सुख और पवित्रता की तीनों ही लाइट्स अपनी माइट से दे सको। जैसे साकारी सृष्टि में जिस रंग की लाइट जलाते हो तो चारों ओर वही वातावरण हो जाता है। अगर हरी लाइट होती है तो चारों ओर वही प्रकाश छा जाता है। एक स्थान पर होते हुए भी एक लाइट वातावरण को बदल देती है जैसे आप लोग भी जब लाल लाइट करते हो तो ऑटोमेटि-कली याद का वायुमण्डल बन जाता है।

07.01.80... अपने को सदा सम्पूर्ण पवित्र आत्मा की स्टेज पर अनुभव करते हो? जब यहाँ पवित्रता के ताजधारी बनते हो तब वहाँ रतनजड़ित ताज भी मिलेगा। सदा अपने ऊपर लाइट का क्राउन अनुभव करो। जो राजकुमार और राजकुमारियाँ होती हैं वे ताजधारी होते हैं ना। आप तो साहबज़ादे और साहबज़ादियाँ हो तो बिगर ताज हो कैसे सकते!

23.01.80... परमात्मा के बच्चे परम पवित्र बच्चे हैं। पवित्रता की ही महानता है। पवित्रता की मान्यता है। पवित्रता के कारण ही परम पूज्य और गायन योग्य बनते हैं। पवित्रता ही श्रेष्ठ धर्म अर्थात धारणा है। इस ईश्वरीय सेवा का बड़े-से-बड़ा पुण्य है – पवित्रता का दान देना। पवित्र बनाना ही पुण्य आत्मा बनना है। क्योंकि किसी आत्मा को आत्म-घात महा पाप से छुड़ाते हो। अपवित्रता आत्म-घात है। पवित्रता जीय-दान है। पवित्र बनाना अर्थात पुण्य आत्मा बनाना। गीता के ज्ञान का वह वर्तमान परमात्म-ज्ञान का जो सार रूप में स्लोगन बनाते हो, उसमें भी पवित्रता का महत्व बताते हो। ''पवित्र बनो – योगी बनो'' यही स्लोगन महान आत्मा बनने का आधार है। ब्राह्मण जीवन के पुरुषार्थ के नम्बर भी पवित्रता के आधार पर हैं। भक्ति मार्ग में यादगार पवित्रता के आधार पर हैं। कोई भी भक्त आपके यादगार चित्र को पवित्रता के बिना टच नहीं कर सकते। जिस दिन विशेष देवी व देवताओं का दिवस मनाते हैं, उस दिन का महत्व भी पवित्रता है। भक्ति का अर्थ ही है – अल्पकाल। ज्ञान का अर्थ है –

सदाकाल। तो भक्त अल्पकाल के नियम पालन करते हैं। जैसे नवरात्रि मनाते हैं, जन्माष्टमी अथवा दीपमाला या कोई विशेष उत्सव मनाते हैं तो पवित्रता का नियम अल्पकाल के लिए जरूर पालन करते हैं। चाहे शरीर की पवित्रता व आत्मा के नियम, दोनों प्रकार की शुद्धि ज़रूर रखते हैं। आपकी यादगार 'विजय माला' – उनका भी सुमिरण करेंगे तो पवित्रता की विधि पूर्वक करेंगे। आप सिद्धि स्वरूप बनते हो, सिद्धि स्वरूप आत्माओं की पूजा भी विधि पूर्वक होती है। पवित्रता के महत्व को जानते हो ना? इसलिए पहले मुख्य पेपर्स पवित्रता के चेक किये हैं, हरेक ने अपना पवित्रता का पेपर चेक किया? प्रोग्राम प्रमाण प्रोग्रेस तो की। टोटल रिज़ल्ट सबसे ज़्यादा मैजारिटी की कर्मणा में परसेन्टेज ठीक रही। वाचा में कर्मणा की रिज़ल्ट से 25% कम। मनसा में कर्मणा की रिज़ल्ट से 50% कम। मनसा संकल्प, और स्वप्न में थोड़ा-सा अन्तर रहा, उसमें भी जन्म की डेट से लेकर अब तक की रिज़ल्ट में कइयों का पुरुषार्थ करने में उतरना चढना, दाग़ हुआ और मिटाया, कभी संकल्प आया और हटाया। कभी वाचा कर्मणा का दाग़ हुआ और मिटाया। हटाने और मिटाने वाले बहुत थे। लेकिन कई ऐसे तीव्र पुरुषार्थी भी देखे जिन्होंने ऐसे संस्कारों का दाग़ मिटाया है जो अब तक भी बिल्कुल साफ शुद्ध पेपर दिखाई दिया। ऐसा स्वप्न तक मिटाया हुआ था। पास विद आनर होने वाले महान पवित्र आत्माएँ भी देखी। उनकी विशेषता क्या देखी। जब से ब्राह्मण जन्म हुआ तब से अभी तक पुरुषार्थ करने की आवश्यकता नहीं लेकिन ब्राह्मण जीवन का विशेष लक्षण है, ब्राह्मण आत्मा का वह अनादि आदि संस्कार है। ऐसे नैचुरल संस्कार से स्वप्न व संकल्प में भी अपवित्रता इमर्ज नहीं हुई है। संकल्प आवे और विजयी बनें, इनसे भी ऊपर नैचुरल संस्कार रूप में चले हैं। इस सबजेक्ट में पुरूषार्थ करने की आवश्यकता नहीं रही है। ऐसे परम पूज्य संस्कार वाले भी देखे। लेकिन माइनॉरटी। नॉलेजफुल होते हुए भी, औरों को पवित्र बनने की विधि बताते हुए भी, औरों की कमजोरियों को सुनते हुए भी, उनको बापकी श्रीमत देते हुए भी, स्वयं सदा सुनते हुए, जानते हुए भी सदा स्वच्छ रहे हैं अर्थात पवित्रता की सबजेक्ट में सिद्धि स्वरूप रहे हैं। इसलिए ऐसे परम पवित्र आत्माओं का पूजन भी सदा विधि पूर्वक होता है। अष्ट देव के रूप में भी पूजन और भक्तों के इष्ट देव के रूप में भी पूजन। अष्ट शक्तियों का प्रैक्टिकल स्वरूप 'अष्ट देव' प्रत्यक्ष होते हैं। तो सुना पेपर्स का रिज़ल्ट।

05.04.81... नये बच्चे अर्थात् सबसे छोटे, छोटे सबसे लाडले होते हैं। नये पत्ते सबको सुन्दर लगते हैं ना! तो भल नये हैं लेकिन अधिकार में नम्बर वन। ऐसे सदा पुरुषार्थ करते चलो। सबसे पहला अधिकार पवित्रता का। उसके आधार पर सुख-शान्ति, सर्व अधिकार प्राप्त हो जाते। तो पहला पवित्रता का अधिकार लेने में सदा नम्बरवन रहना। तो प्राप्ति में भी नम्बरवन हो जायेंगे। पवित्रता की फाउन्डेशन को कभी कमज़ोर नहीं करना। तब ही लास्ट सो फास्ट जायेंगे। बापदादा को भी बच्चों को देख खुशी होती है कि फिर से अपना अधिकार लेने पहुँच गये हैं। इस-लिए खूब रेस करो। अभी भी टूलेट का बोर्ड नहीं लगा है। सब सीट्स खाली है, फिक्स नहीं हुई हैं। जो नम्बर लेने चाहो वह ले सकते हो, इतना अटेन्शन रखते चलते चलो। अधिकारी बनते चलो। योग्यताओं को धारण कर योग्य बनते चलो।

12.10.81... वर्त्तमान ही भविष्य का आधार है। चेक करो और नालेज के दर्पण में दोनों स्वरूप देखो-संगमयुगी ब्राह्मण और भविष्य देवपदधारी। दोनों रूप देखो और फिर दोनों में चेक करो-ब्राह्मण जीवन में डबल ताज है वा सिंगल ताज है? एक है पवित्रता का ताज, दूसरा है प्रैक्टिकल जीवन में पढ़ाई और सेवा का। दोनों ताज समान हैं? सम्पूर्ण हैं? वा कुछ कम है? अगर यहाँ कोई भी ताज अधूरा है, चाहे पवित्रता का, चाहे पढ़ाई वा सेवा का, तो वहाँ भी छोटे से ताज के अधिकारी वा एक ताजधारी अर्थात् प्रजा पद वाले बनना पड़ेगा। क्योंकि प्रजा को भी लाइट का ताज तो होगा अर्थात् पवित्र आत्मायें होंगी। लेकिन विश्वराजन् वा महाराजन् का ताज नहीं प्राप्त होगा। कोई महाराजन् कोई राजन् अर्थात् राजा, महाराजा और विश्व महाराजा, इसी आधार पर नम्बरवार ताजधारी होंगे।

17.10.81... जैसे सेवा स्थान पर कोई भी कमी पेशी देखते हो तो ठीक कर देते हो ऐसे अपने लौकिक स्थान को और स्थिति को ठीक कर देना। घर मन्दिर लगे, गृहस्थी नहीं। जैसे मन्दिर का वायुमण्डल सबको आकर्षित करता, ऐसे आपके घर से पवित्रता की खुशबू आये। जिस प्रकार अगरबत्ती की खुशबू चारों ओर फैलती, इसी प्रकार पवित्रता की खुशबू दूर-दूर तक फैलनी चाहिए, इसको कहा जाता है पवित्र प्रवृत्ति।

29.10.81... कुमारियों की विशेषता क्या है? कुमारी जीवन अर्थात् सम्पूर्ण पावन। अगर कुमारी जीवन में यह विशेषता नहीं तो उसका कोई महत्व नहीं। ब्रह्माकुमारी अर्थात् मंसा में भी अपवित्रता का संकल्प न हो। तभी पूज्य है, नहीं तो खण्डित हो जाती है और खण्डित की पूजा नहीं होती।

03.11.81... जो पावन पवित्र आत्मायें हैं उनके पास सुख और शान्ति स्वत: ही है। तो पावन आत्मायें,श्रेष्ठ आत्मायें विशेष आत्मायें हो। विश्व में महान आत्मायें हों क्योंकि बाप के बन गये। सबसे बड़े ते बड़ी महानता है – पावन बनना। इसलिए आज भी इसी महानता के आगे सिर झुकाते हैं। वह जड़ चित्र किसके हैं? अभी मन्दिर में जायेंगे तो क्या समझेंगे? किसकी पूजा हो रही है? स्मृति में आता है-कि यह हमारे ही जड़ चित्र हैं। ऐसे अपने को महान आत्मा समझकर चलो। ऐसे दिव्य दर्पण बनो जिसमें अनेक आत्माओं को अपनी असली सूरत दिखाई दे।

06.01.82... संगमयुग पर विशेष वरदाता बाप से दो वरदान सभी बच्चों को मिलते हैं। एक– 'सहजयोगी भव'। दूसरा– 'पवित्र भव'। इन दोनों वरदानों को हर ब्राह्मण आत्मा पुरुषार्थ प्रमाण जीवन में धारण कर रहे हैं। ऐसे धारणा स्वरूप आत्माओं को देख रहे हैं। हर एक बच्चे के मस्तक और नयनों द्वारा पवित्रता की झलक दिखाई दे रही है। पवित्रता संगमयुगी ब्राह्मणों के महान जीवन की महानता है। 'पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ श्रृंगार है।' जैसे स्थूल शरीर में विशेष श्वास चलना आवश्यक है। श्वास नहीं तो जीवन नहीं। ऐसे ब्राह्मण जीवन का श्वास है – 'पवित्रता'। 21 जन्मों की प्रालब्ध का आधार अर्थात् फाउण्डेशन पवित्रता है। आत्मा अर्थात् बच्चे और बाप से मिलन का आधार 'पवित्र बुद्धि' है। सर्व संगमयुगी प्राप्तियों का आधार 'पवित्रता' है। पवित्रता, पूज्य-पद पाने का आधार है। ऐसे महान वरदान को सहज प्राप्त कर लिया है? वरदान के रूप में अनुभव करते हो वा मेहनत से प्राप्त

करते हो? वरदान में मेहनत नहीं होती। लेकिन वरदान को सदा जीवन में प्राप्त करने के लिए सिर्फ एक बात का अटेन्शन चाहिए कि 'वरदाता और वरदानी' दोनों का सम्बन्ध समीप और स्नेह के आधार से निरन्तर चाहिए। वरदाता और वरदानी आत्मायें दोनों सदा कम्बाइन्ड रूप में रहें तो पवित्रता की छत्रछाया स्वत: रहेगी। जहाँ सर्वशक्तिवान बाप है वहाँ अपवित्रता स्वप्न में भी नहीं आ सकती है। सदा बाप और आप युगल रूप में रहो। सिंगल नहीं, युगल। सिंगल हो जाते हो तो पवित्रता का सुहाग चला जाता है। नहीं तो पवित्रता का सुहाग और श्रेष्ठ भाग्य सदा आपके साथ है। तो बाप को साथ रखना अर्थात् अपना सुहाग, भाग्य साथ रखना। तो सभी, बाप को सदा साथ रखने में अभ्यासी हो ना?

6-1-82... बाप को कम्पैनियन बनाया अर्थात् पवित्रता को सदा के लिए अपनाया। ऐसे युगलमूर्त के लिए पवित्रता अति सहज है। पवित्रता ही नैचरल जीवन बन जायेगी। पवित्र रहूँ, पवित्र बनूँ, यह क्वेश्चन ही नहीं। ब्राह्मणों की लाइफ ही 'पवित्रता' है। ब्राह्मण जीवन का जीय-दान ही पवित्रता है। आदि- अनादि स्वरूप ही पवित्रता है। जब स्मृति आ गई कि मैं आदि-अनादि पवित्र आत्मा हूँ। स्मृति आना अर्थात् पवित्रता की समर्थी आना। तो स्मृति स्वरूप, समर्थ स्वरूप आत्मायें तो निजी पवित्र संस्कार वाली – निजी संस्कार पवित्र हैं। संगदोष के संस्कार अपवित्रता के हैं। तो निजी संस्कारों को इमर्ज करना सहज है वा संगदोष के संस्कार इमर्ज करना सहज है? ब्राह्मण जीवन अर्थात् सहजयोगी और सदा के लिए पावन। पवित्रता ब्राह्मण जीवन के विशेष जन्म की विशेषता है। पवित्र संकल्प ब्राह्मणों की बुद्धि का भोजन है। पवित्र दृष्टि ब्राह्मणों के आँखों की रोशनी है। पवित्र कर्म ब्राह्मण जीवन का विशेष धन्धा है। पवित्र सम्बन्ध और सम्पर्क ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है। तो सोचो – कि ब्राह्मण जीवन की महानता क्या हुई? पवित्रता हुई ना! ऐसी महान चीज़ को अपनाने में मेहनत नहीं करो, हठ से नहीं अपनाओ। मेहनत और हठ निरन्तर नहीं हो सकता। लेकिन यह पवित्रता तो आपके जीवन का वरदान है, इसमें मेहनत और हठ क्यों? अपनी निजी वस्तु है। अपनी चीज़ को अपनाने में मेहनत क्यों? पराई चीज़ को अपनाने में मेहनत होती है। पराई चीज़ अपवित्रता है, न कि पवित्रता। रावण पराया है, अपना नहीं है। बाप अपना है, रावण पराया है। तो बाप का वरदान पवित्रता है रावण का श्राप अपवित्रता है। तो रावण पराये की चीज़ को क्यों अपनाते हो? पराई चीज़ अच्छी लगती है? अपनी चीज़ पर नशा होता है। तो सदा स्व-स्वरूप पवित्र है, स्वधर्म पवित्रता है अर्थात् आत्मा की पहली धारणा पवित्रता है। स्वदेश पवित्र देश है। स्वराज्य पवित्र राज्य है। स्व का यादगार परम पवित्र पूज्य है। कर्मेन्द्रियों का अनादि स्वभाव सुकर्म है, बस यही सदा स्मृति में रखो तो मेहनत और हठयोग से छूट जायेंगे। बापदादा बच्चों को मेहनत करते हुए नहीं देख सकते, इसलिए हो ही सब पवित्र आत्मायें। स्वमान में स्थित हो जाओ। स्वमान क्या है? – ''मैं परम पवित्र आत्मा हूँ।'' सदा अपने इस स्वमान के आसन पर स्थित होकर हर कर्म करो। तो सहज वरदानी हो जायेंगे। यह सहज आसन है। तो सदा पवित्रता की झलक और फलक में रहो। स्वमान के आगे देह अभिमान आ नहीं सकता। समझा!

22-3-82…धर्म सत्ता अर्थात् हर धारणा की शक्ति स्वयं में अनुभव करने वाली आत्मा। जैसे पवित्रता के धारणा की शक्ति अनुभव करने वाली। पवित्रता की शक्ति से सदा परमपूज्य बन जाते। पवित्रता की शक्ति से इस पतित दुनिया को परिवर्तन कर लेते हो। पवित्रता की शक्ति विकारों की अग्नि में जलती हुई आत्माओं को शीतल बना देती है। पवित्रता की शक्ति आत्मा को अनेक जन्मों के विकर्मों के बन्धन से छुड़ा देती है। पवित्रता की शक्ति नेत्रहीन को तीसरा नेत्र दे देती है। पवित्रता की शक्ति से इस सारे सृष्टि रूपी मकान को गिरने से थमा सकते हैं। पवित्रता पिलर्स हैं – जिसके आधार पर द्वापर से यह सृष्टि कुछ न कुछ थमी हुई है। पवित्रता लाइट का क्राउन है। ऐसे पवित्रता की धारणा – 'यह है धर्म सत्ता'।

24.3.83….ब्राह्मणों की विशेषता है ही 'पवित्रता'। ब्राह्मण अर्थात् पावन आत्मा। पवित्रता को कहाँ तक अपनाया है, उसको परखने का यन्त्र क्या है? ''पवित्र बनो'', यह मन्त्र सभी को याद दिलाते हो लेकिन श्रीमत प्रमाण इस मन्त्र को कहाँ तक जीवन मे लाया है? जीवन अर्थात् सदाकाल। जीवन में सदा रहते हो ना! तो जीवन में लाना अर्थात् सदा पवित्रता को अपनाना। इसको परखने का यन्त्र जानते हो? सभी जानते हो और कहते भी हो कि 'पवित्रता सुख-शान्ति की जननी है'। अर्थात् जहाँ पवित्रता होगी वहाँ सुख-शांति की अनुभूति अवश्य होगी। इसी आधार पर स्वयं को चैक करो – मंसा संकल्प में 8 है, उसकी निशानी – मन्सा में सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप की अनुभूति होगी। अगर कभी भी मंसा में व्यर्थ संकल्प आता है तो शांति के बजाय हलचल होती है। क्यों और क्या इन अनेक क्वेश्चन के कारण सुख स्वरूप की स्टेज अनुभव नहीं होगी। और सदैव समझने की आशा बढ़ती रहेगी – यह होना चाहिए, यह नहीं होना चाहिए, यह कैसे, यह ऐसे। इन बातों को सुलझाने में ही लगे रहेंगे। इसलिए जहाँ शांति नहीं वहाँ सुख नहीं। तो हर समय यह चेक करो कि किसी भी प्रकार की उलझन सुख और शांति की प्राप्ति में विघ्न रूप तो नहीं बनती है!

24.3.83…वर्तमान समय के प्रमाण फ़रिश्ते-पन की सम्पन्न स्टेज के वा बाप समान स्टेज के समीप आ रहे हो, उसी प्रमाण पवित्रता की परिभाषा भी अति सूक्ष्म समझो। सिर्फ ब्रह्मचारी बनना भविष्य पवित्रता नहीं लेकिन ब्रह्मचारी के साथ 'ब्रह्मा आचार्य' भी चाहिए। शिव आचार्य भी चाहिए। अर्थात् ब्रह्मा बाप के आचरण पर चलने वाला। शिव बाप के उच्चारण किये हुए बोल पर चलनेवाला। फुट स्टैप अर्थात् ब्रह्मा बाप के हर कर्म रूपी कदम पर कदम रखने वाले। इसको कहा जाता है – 'ब्रह्मा आचार्य'। तो ऐसी सूक्ष्म रुप से चैंकिग करो कि सदा पवित्रता की प्राप्ति, सुख-शांति की अनुभूति हो रही है? सदा सुख की शैय्या पर आराम से अर्थात् शांति स्वरूप में विराजमान रहते हो? यह ब्रह्मा आचार्य का चित्र है।

24.3.82…अगर आपकी मंसा द्वारा अन्य आत्माओं को सुख और शांति की अनुभूति नहीं होती अर्थात् पवित्र संकल्प का प्रभाव अन्य आत्मा तक नहीं पहुँचता तो उसका भी कारण चेक करो। किसी भी आत्मा की ज़रा भी कमज़ोरी अर्थात् अशुद्धि अपने संकल्प में धारण हुई तो वह अशुद्धि अन्य आत्मा को सुख-शान्ति की अनुभूति

करा नहीं सकेगी। या तो उस आत्मा के प्रति व्यर्थ वा अशुद्ध भाव है वा अपनी मंसा पवित्रता की शक्ति में परसेन्टेज की कमी है। जिस कारण औरों तक वह पवित्रता की प्राप्ति का प्रभाव नहीं पड़ सकता। स्वयं तक है, लेकिन दूसरों तक नहीं हो सकता। लाइट है, लेकिन सर्चलाइट नहीं है। तो पवित्रता के सम्पूर्णता की परिभाषा है – सदा स्वयं में भी सुख-शान्ति स्वरूप और दूसरों को भी सुख-शांति की प्राप्ति का अनुभव कराने वाले। ऐसी पवित्र आत्मा अपनी प्राप्ति के आधार पर औरों को भी सदा सुख और शान्ति, शीतलता की किरणें फैलाने वाली होगी। तो समझा सम्पूर्ण पवित्रता क्या है? पवित्रता की शक्ति इतनी महान है जो अपनी पवित्र मंसा अर्थात् शुद्ध वृत्ति द्वारा प्रकृति को भी परिवर्तन कर लेते। मंसा पवित्रता की शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है – प्रकृति का भी परिवर्तन। स्व परिवर्तन से प्रकृति का परिवर्तन। प्रकृति के पहले व्यक्ति। तो व्यक्ति परिवर्तन और प्रकृति परिवर्तन – इतना प्रभाव है मंसा पवित्रता की शक्ति का। आज मंसा पवित्रता को स्पष्ट सुनाया – फिर वाचा और कर्मणा अर्थात् सम्बन्ध और सम्पर्क में सम्पूर्ण पवित्रता की परिभाषा क्या है वह आगे सुनायेंगे। अगर पवित्रता की परसेन्टेज में 16 कला से 14 कला हो गये तो क्या बनना पड़ेगा? जब 16 कला की पवित्रता अर्थात् सम्पूर्णता नहीं तो सम्पूर्ण सुख-शांति के साधनों की भी प्राप्ति कैसे होगी!

24.3.82...जब कोई चीज़ खो जाती है तो उलझन की निशानी क्यों, क्या, कैसे ही होता है। तो रुहानी स्थिति में भी जो भी पवित्रता को खोता है, उसके अन्दर क्यों, क्या और कैसे की उलझन होती है। तो समझा कैसे चेक करना है? सुख-शांति के प्राप्ति स्वरूप के आधार पर मंसा पवित्रता को चेक करो

14-4-83...योगी जीवन अर्थात् निरन्तर। तो निरन्तर योगी जीवन है! ऐसे ही पवित्र भव का वरदान मिला है। पवित्र भव के वरदान से पूज्य आत्मा बन गये। योगी भव के वरदान से सदा शक्ति स्वरूप बन गये। तो शक्ति स्वरूप और पवित्र पूज्य स्वरूप दोनों ही बन गये हो ना। सदा पवित्र रहते हो? कभी-कभी तो नहीं। क्योंकि एक दिन भी कोई अपवित्र बना तो अपवित्र की लिस्ट में आ जायेगा तो पवित्रता की लिस्ट में हो? कभी क्रोध तो नहीं आता? क्रोध या मोह का आना इसको पवित्रता कहेंगे? मोह अपवित्रता नहीं है क्या? अगर नष्टोमोहा नहीं बनेंगे तो स्मृति स्वरूप भी नहीं बन सकेंगे। कोई भी विकार आने नहीं देना। जब किसी भी विकार को आने नहीं देंगे तब कहेंगे – पवित्र और योगी भव!

17-4-83.... होलीहंस कभी भी बुद्धि द्वारा सिवाए ज्ञान के मोती के और कुछ स्वीकार नहीं कर सकते। ब्राह्मण आत्मायें जो ऊँच हैं, चोटी हैं वह कभी भी नीचे की बातें स्वीकार नहीं कर सकते। बगुले से होलीहंस बन गये। तो होलीहंस सदा स्वच्छ, सदा पवित्र। पवित्रता ही स्वच्छता है। हंस सदा स्वच्छ है, सदा सफ़ेद-सफ़ेद। सफ़ेद भी स्वच्छता वा पवित्रता की निशानी है। आपकी ड्रेस भी सफ़ेद है। यह प्यूरिटी की निशानी है। किसी भी प्रकार की अपवित्रता है तो होलीहंस नहीं। होलीहंस संकल्प भी अशुद्ध नहीं कर सकते। संकल्प भी बुद्धि का भोजन है।

अगर अशुद्ध वा व्यर्थ भोजन खाया तो सदा तन्दुरुस्त नहीं रह सकते। व्यर्थ चीज को फेंका जाता, इकट्ठा नहीं किया जाता इसलिए व्यर्थ संकल्प को भी समाप्त करो, इसी को ही होलीहंस कहा जाता है।''

24.3.83...वर्तमान समय के प्रमाण फ़रिश्ते-पन की सम्पन्न स्टेज के वा बाप समान स्टेज के समीप आ रहे हो, उसी प्रमाण पवित्रता की परिभाषा भी अति सूक्ष्म समझो। सिर्फ ब्रह्मचारी बनना भविष्य पवित्रता नहीं लेकिन ब्रह्मचारी के साथ 'ब्रह्मा आचार्य' भी चाहिए। शिव आचार्य भी चाहिए। अर्थात् ब्रह्मा बाप के आचरण पर चलने वाला। शिव बाप के उच्चारण किये हुए बोल पर चलनेवाला। फुट स्टैप अर्थात् ब्रह्मा बाप के हर कर्म रूपी कदम पर कदम रखने वाले। इसको कहा जाता है – 'ब्रह्मा आचार्य'। तो ऐसी सूक्ष्म रुप से चैंकिग करो कि सदा पवित्रता की प्राप्ति, सुख-शांति की अनुभूति हो रही है? सदा सुख की शैय्या पर आराम से अर्थात् शांति स्वरूप में विराजमान रहते हो? यह ब्रह्मा आचार्य का चित्र है।

24-4-83 ...आत्मा पवित्रता की शक्ति से जो चाहे वह कर सकती है। ब्रह्माकुमारों का संगठन विश्व परिवर्तक संगठन है। सभी अपने को ऐसे शक्तिशाली समझते हो? अपने को पवित्रता का जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त किया हुआ अधिकारी आत्मा समझते हो? ब्रह्माकुमार का अर्थ ही है – 'पवित्र कुमार'। ब्रह्मा बाप ने दिव्य जन्म देते ''पवित्र भव, योगी भव'' यही वरदान दिया। ब्रह्मा बाप ने जन्मते ही बड़ी माँ के रूप में पवित्रता के प्यार से पालना की। माँ के रूप से सदा पवित्र बनो, योगी बनो, श्रेष्ठ बनो बाप समान बनो, विशेष आत्मा बनो, सर्वगुण मूर्त्त बनो, ज्ञान मूर्त्त बनो, सुख शान्ति स्वरूप बनो, हर रोज़ यह लोरी दी। बाप के याद की गोदी में पालन किया। सदा खुशियों के झूले में झुलाया। ऐसे मात पिता के श्रेष्ठ बच्चे – ब्रह्माकुमार वा कुमारी हैं। ऐसा स्मृति का समर्थ नशा रहता है! ब्रह्माकुमार के विशेष जीवन के महत्व को सदा याद रखते हो?

19-5-83.... जब ब्राह्मण जीवन अपनाई तो ब्राह्मण जीवन का मुख्य आधार कहो, नवीनता कहो, अलौकिकता कहो, जीवन का श्रृंगार कहो, वह है ही शृंगार –'पवित्रता'। ब्राह्मण जीवन की चैलेन्ज ही है काम-जीत। यही असम्भव से सम्भव कर दिखाने की, श्रेष्ठ ज्ञान और श्रेष्ठ ज्ञान दाता की निशानी है। जैसे नामधारी ब्राह्मणों की निशानी चोटी और जनेऊ है वैसे सच्चे ब्राह्मणों की निशानी 'पवित्रता और मर्यादायें' हैं। जन्म की वा जीवन की निशानी वह तो सदा कायम रखनी होती है ना। पवित्रता की पहली आधारमूर्त पाइंट है ''स्मृति की पवित्रता''। मैं सिर्फ आत्मा नहीं लेकिन मैं शुद्ध पवित्र आत्मा हूँ। आत्मा शब्द तो सभी कहते हैं लेकिन ब्राह्मण आत्मा सदा यही कहेंगे कि – मैं शुद्ध पवित्र आत्मा हूँ। श्रेष्ठ आत्मा हूँ। पूज्य आत्मा हूँ। आत्मा हूँ। यह स्मृति की ही पवित्रता आधार मूर्त है। तो पहला आधार मज़बूत किया है? यह आक्यूपेशन सदा स्मृति में रहता है? जैसा आक्यूपेशन वैसा कर्म स्वत: होता है। पहले स्मृति की स्वच्छता चाहिए। उसके बाद वृत्ति और दृष्टि। जब स्मृति में पवित्रता आ गई कि मैं पूज्य आत्मा हूँ तो पूज्य आत्मा का विशेष गायन क्या है? सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण। यही पूज्य आत्मा की क्वालिफिकेशन है। वह स्वत: ही स्वयं को और सर्व को किस दृष्टि से देखेंगे? चाहे

अलौकिक परिवार में, चाहे लौकिक परिवार कहो वा लौकिक स्मृति में रहने वाली आत्मायें कहो, सभी के प्रति परम पूज्य आत्मायें हैं वा पूज्य बनाना है यही दृष्टि में रहे। पूज्य आत्माओं अर्थात् अलौकिक परिवार की आत्माओं के प्रति अगर कोई भी अपवित्र दृष्टि जाती है तो यह स्मृति का फाउन्डेशन कमज़ोर है। और यह महा-महा-महापाप है। किसी भी पूज्य आत्मा प्रति अपवित्रता अर्थात् दैहिक दृष्टि जाती है कि यह सेवाधारी बहुत अच्छे हैं, यह शिक्षक बहुत अच्छी है। लेकिन अच्छाई क्या है? अच्छाई है ऊँची स्मृति और ऊँची दृष्टि की। अगर वह ऊँचाई नहीं तो अच्छाई कौन सी है? यह भी सुनहरी मृगमाया का रूप है, यह सर्विस नहीं है, सहयोग नहीं है लेकिन स्वयं को और सर्व को वियोगी बनाने का आधार है। यह बात बार-बार अटेन्शन रखो।

11-5-83 ...आप एक-एक होलीहंस की पवित्रता की झलक चलन से दिखाई दे। आप सबकी श्रेष्ठ स्मृति की समर्थी, ना उम्मीद आत्माओं में उम्मीदों की समर्थी पैदा करे। समझा – युवा वर्ग को क्या करना है।

1.12.83... लौकिक जीवन में लौकिकता वाली पर्सनैलिटी रॉयल्टी दिखाई देती है लेकिन अधिकार के तकदीरवान बच्चों में प्युरिटी की अलौकिक पर्सनैलिटी और रॉयल्टी दिखाई देंगी। इसको कहा जाता है – नम्बरवन पवित्रता के तकदीर की लकीर।

13-2-84...अपना राज्य, सुख सम्पन्न राज्य जहां दु:ख अशान्ति का नाम निशान नहीं, अप्राप्ति नहीं। अप्राप्ति ही अशान्ति का कारण है और अप्राप्ति का कारण है अपवित्रता।

26-2-84 ...मंसा में स्वयं प्रति या किसी प्रति व्यर्थ रूपी अपवित्र संकल्प भी न चला हो। किसी भी कमज़ोरी वा अवगुण रूपी अपवित्रता का संकल्प भी धारण नहीं किया हो, संकल्प में जन्म से वैष्णव संकल्प बुद्धि का भोजन है। जन्म से वैष्णव अर्थात् अशुद्धि वा अवगुण, व्यर्थ संकल्प को बुद्धि द्वारा, मंसा द्वारा ग्रहण न किया हो। इसी को ही सच्चा वैष्णव वा बाल ब्रह्मचारी कहा जाता है। तो हरेक के चित्र में ऐसे प्युरिटी की पर्सनैलिटी की रेखायें लाइट के आकार द्वारा देखीं। जो मंसा- वाचा-कर्मणा तीनों में पवित्र रहे हैं! (कर्मणा में सम्बन्ध, सम्पर्क सब आ जाता है) उनका मस्तक से पैर तक लाइट के आकार में चमकता हुआ चित्र था। समझा! नालेज के दर्पण में अपना चित्र देख रहे हो? अच्छी तरह से देख लेना कि मेरा चित्र क्या रहा जो बापदादा ने देखा।

15.3.84... यह होली का उत्सव होली अर्थात् पवित्र बनाने का, बनने का उत्साह दिलाने वाला है। जो भी यादगार विधि मनाते हैं उन सब विधियों में पवित्र बनने का सार समाया हुआ है। पहले होली बनने वा होली मनाने के लिए अपवित्रता, बुराई को भस्म करना है, जलाना है। जब तक अपवित्रता को सम्पूर्ण समाप्त नहीं किया है तब तक पवित्रता का रंग चढ़ नहीं सकता। पवित्रता की दृष्टि से एक-दो में रंग रंगने का उत्सव मना नहीं सकते। भिन्न-भिन्न भाव भूलकर एक ही परिवार के हैं, एक ही समान हैं अर्थात् भाई-भाई के एक समान वृत्ति से मनाने का यादगार है।

12-4-84...''आज बापदादा सभी होलीहंसों को देख रहे हैं। हर एक होलीहंस कहाँ तक होली बने हैं, कहाँ तक हंस बने हैं! पवित्रता अर्थात् होली बनने की शक्ति कहाँ तक जीवन में अर्थात् संकल्प, बोल और कर्म में, सम्बन्ध में, सम्पर्क में लाई है। हर संकल्प, होली अर्थात् पवित्रता की शक्ति सम्पन्न है! पवित्रता के संकल्प द्वारा किसी भी अपवित्र संकल्प वाली आत्मा को परख और परिवर्तन कर सकते हो? पवित्रता की शक्ति से किसी भी आत्मा की दृष्टि, वृत्ति और कृति तीनों ही बदल सकते हो। इस महान शक्ति के आगे अपवित्र संकल्प भी वार नहीं कर सकते। लेकिन जब स्वयं संकल्प, बोल वा कर्म में हार खाते हो तब दूसरे व्यक्ति वा वायब्रेशन से हार होती है। किसी के भी सम्बन्ध वा सम्पर्क से हार खाना यह सिद्ध करता है कि स्वयं बाप से सर्व सम्बन्ध जोड़ने में हार खाये हुए हैं। तब किसी सम्बन्ध वा सम्पर्क से हार खाते हैं। पवित्रता में हार खाना, इसका बीज है किसी भी व्यक्ति वा व्यक्ति के गुण, स्वभाव, व्यक्तित्व वा विशेषता से प्रभावित होना। यह व्यक्ति वा व्यक्त भाव में प्रभावित होना,

प्रभावित होना नहीं लेकिन बरबाद होना है। व्यक्ति की व्यक्तिगत विशेषता वा गुण, स्वभाव बाप की दी हुई विशेषता है अर्थात् दाता की देन है। व्यक्ति पर प्रभावित होना यह धोखा खाना है। धोखा खाना अर्थात् दु:ख उठाना। अपवित्रता की शक्ति, मृगतृष्णा समान शक्ति है जो सम्पर्क वा सम्बन्ध से बड़ी अच्छी अनुभव होती है, आकर्षण करती है। समझते हैं कि मैं अच्छाई की तरफ प्रभावित हो रहा हूँ। इसलिए शब्द भी यही बोलते वा सोचते कि यह बहुत अच्छे लगते या अच्छी लगती है वा इसका गुण वा स्वभाव अच्छा लगता है। ज्ञान अच्छा लगता है। योग कराना अच्छा लगता है। इससे शक्ति मिलती है! सहयोग मिलता है, स्नेह मिलता है। अल्पकाल की प्राप्ति होती है लेकिन धोखा खाते हैं। देने वाले दाता अर्थात् बीज को, फाउण्डेशन को खत्म कर दिया और रंग-बिरंगी डाली को पकड़कर झूल रहे हैं तो क्या हाल होगा? सिवाए फाउण्डेशन के डाली झुलायेगी या गिरायेगी? जब तक बीज अर्थात् दाता, विधाता से सर्व सम्बन्ध, सर्व प्राप्ति के रस का अनुभव नहीं तब तक कब व्यक्ति से, कब वैभव से, कब वायब्रेशन- वायुमण्डल आदि भिन्न-भिन्न डालियों से अल्पकाल की प्राप्ति का मृगतृष्णा समान धोखा खाते रहेंगे। यह प्रभावित होना अर्थात् अविनाशी प्राप्ति से वंचित होना। पवित्रता की शक्ति जब चाहो जिस स्थिति को चाहे, जिस प्राप्ति को चाहो, जिस कार्य में सफलता चाहो, वह सब आपके आगे दासी के समान हाज़िर हो जायेगी। जब कलियुग के अन्त में भी रजोप्रधान पवित्रता की शक्ति धारण करने वाले नामधारी महात्माओं की अब अन्त तक भी प्रकृति दासी होने का प्रमाण देख रहे हो। अब तक भी नाम महात्मा चल रहा है, अब तक भी पूज्य हैं। अपवित्र आत्मायें झुकती हैं। तो सोचो – अन्त तक भी पवित्रता के शक्ति की कितनी महानता है। और परमात्मा द्वारा प्राप्त हुई सतोप्रधान पवित्रता कितनी शक्तिशाली होगी। इस श्रेष्ठ पवित्रता की शक्ति के आगे अपवित्रता झुकी हुई नहीं लेकिन आपके पांव के नीचे हैं। अपवित्रता रुपी आसुरी शक्ति, शक्ति स्वरूप के पांव के नीचे दिखाई हुई है। जो पांव के नीचे हारी हुई है, हार कैसे खिला सकती है।! ब्राह्मण जीवन और हार खाना इसको कहेंगे नामधारी ब्राह्मण। इसमें अलबेले मत बनो। ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है – पवित्रता की शक्ति। अगर फाउण्डेशन कमज़ोर है तो प्राप्तियों की सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं लेकिन और भी काम विकार

के बाल बच्चे हैं। बापदादा को एक बात पर बहुत आश्चर्य लगता है – ब्राह्मण कहता है, ब्राह्मण आत्मा पर व्यर्थ वा विकारी दृष्टि, वृत्ति जाती है। यह कुल कलंकित की बात है। कहना बहन जी, वा भाई जी और करना क्या है! लौकिक बहन पर भी अगर कोई बुरी दृष्टि जाए, संकल्प भी आये, तो उसे कुल कलंकित कहा जाता है। तो यहाँ क्या कहेंगे? एक जन्म के नहीं लेकिन जन्म-जन्म का कलंक लगाने वाले। राज्य भाग्य को लात मारने वाले। ऐसे पद्मगुणा विकर्म कभी नहीं करना। यह विकर्म नहीं, महा विकर्म है। इसलिए सोचो, समझो, सम्भालो। यही पाप जमदूतों की तरह चिपक जायेंगे। अभी भले समझते हैं बहुत मजे में रह रहे हैं, कौन देखता है, कौन जानता है लेकिन पाप पर पाप चढ़ता जाता है और यही पाप खाने को आयेंगे। बापदादा जानते हैं कि इसकी रिजल्ट कितनी कड़ी है। जैसे शरीर से कोई तड़प-तड़प कर शरीर छोड़ता वैसे बुद्धि पापों में तड़प-तड़पकर शरीर छोड़ेगी। सदा सामने यह पाप के जमदूत रहते हैं। इतना कड़ा अन्त है। इसलिए वर्तमान में गलती से भी ऐसा पाप नहीं करना। बापदादा सिर्फ़ सम्मुख बैठे हुए बच्चों को नहीं कर रहे हैं लेकिन चारों ओर के बच्चों को समर्थ बना रहे हैं। खबरदार, होशियार बना रहे हैं। समझा – अभी तक इस बात में कमजोरी काफी है।

22.4.84... हम सब आत्मायें एक बाप के हैं। एक ही परिवार के हैं, एक ही घर के हैं। एक ही सृष्टि मंच पर पार्ट बजाने वाले हैं। हम सर्व आत्माओं का एक ही स्वधर्म शान्ति और पवित्रता है। बस इसी पाठ से स्व-परिवर्तन और विश्व परिवर्तन कर रहे हो और निश्चित होना ही है।

03-05-84... ब्राह्मण आत्मायें सर्व आत्माओं को सामूहिक सगाई बाप से कराने वाली हैं। परमात्म हाथ में हाथ का हथियाला बंधवाने वाली हैं। ब्राह्मण आत्मायें जन्म-जन्म के लिए सदा पवित्रता का बन्धन बाँधने वाली हैं। अमरकथा कर अमर बनाने वाली हैं।

09-05-84... कुमारी अर्थात् महान। पवित्र आत्मा को सदा महान आत्मा कहा जाता है। आजकल में महात्मायें भी महात्मा कैसे बनते हैं? पवित्र बनते हैं। पवित्रता के कारण ही महान आत्मा कहे जाते हैं।

11-05-84... जैसे भिखारी कभी भी यह नहीं कहेंगे कि हज़ार रुपया दो। इतना ही कहेंगे कुछ पैसे दे दो। रुपया, दो दे दो। ऐसे यह आत्मायें भी सुख-शान्ति पवित्रता की भिखारी अल्पकाल के लिए सफ़लता मांगेंगी। बस यह मेरा कार्य हो जाए, इसमें सफ़लता हो जाए। लेकिन मांगते आप सफ़लता स्वरूप आत्माओं से ही हैं।

27-02-85... हर एक की दिल में है कि 'पवित्रता ही योगी बनने का पहला साधन है।' पवित्रता ही बाप के स्नेह को अनुभव करने का साधन है, पवित्रता ही सेवा में सफ़लता का आधार है।

02-03-85... पवित्रता वा स्वच्छता अपना स्वधर्म जानते हो – इसलिए पवित्रता को अपनाने के कारण जहाँ आपका यादगार होगा वहाँ पवित्रता वा स्वच्छता अभी भी यादगार रूप में चल रही है। और आधाकल्प तो है ही

पवित्र पालना। पवित्र दुनिया। तो आधाकल्प पवित्रता से पैदा होते, पवित्रता से पलते और आधाकल्प पवित्रता से पूजे जाते हैं। जो अधिकारी बच्चे हैं उन्हों को पवित्रता मुश्किल नहीं लगती। जिन्हों को पवित्रता मुश्किल लगती वह डगमग ज़्यादा होते हैं। पवित्रता स्वधर्म है, जन्म सिद्ध अधिकार है तो सदा सहज लगेगा। दुनिया वाले भी दूर भागते हैं वह किसलिए? पवित्रता मुश्किल लगती है। जो अधिकारी आत्मायें नहीं उन्हों को मुश्किल ही लगेगा। अधिकारी आत्मा आते ही दृढ़ संकल्प करती कि पवित्रता बाप का अधिकार है, इसलिए पवित्र बनना ही है। दिल को पवित्रता सदा आकर्षित करती रहेगी। अगर चलते-चलते कहाँ माया परीक्षा लेने आती भी है, संकल्प के रूप में, स्वप्न के रूप में तो अधिकारी आत्मा नालेजफुल होने के कारण घबरायेगी नहीं। लेकिन नालेज की शक्ति से संकल्प को परिवर्तित कर देगी। एक संकल्प के पीछे अनेक संकल्प पैदा नहीं करेगी। अंश को वंश के रूप में नहीं लायेगी।

21-03-85…कुमारियाँ सदा ही पवित्र मानी जाती हैं। कुमारियों के पवित्रता की महिमा 100 ब्राह्मणों से भी ज्यादा है। ऐसी श्रेष्ठ कुमारियाँ हो ना! देखो आज लास्ट जन्म में भी कुमारियों की पूजा होती रहती है। कुमारियों की पूजा देखी है? भारत में बहुत पूजा करते हैं कुमारी की। जब तक कुमारी है तब तक उसके पाँव पड़ते हैं और जब कुमारी शादी करती है तो उसी दिन उनके पाँव पड़ने लगती हैं। कितनों के पाँव पड़ना पड़ता है! नहीं तो कुमारी को कभी पाँव पड़ने नहीं देते। तो ऐसी पवित्र कुमारी हो ना

16-12-85... सदा पवित्रता की शक्ति से स्वयं को पावन बनाए औरों को भी पावन बनने की प्रेरणा देने वाले हो ना? घर-गृहस्थ में रह पवित्र आत्मा बनना, इस विशेषता को दुनिया के आगे प्रत्यक्ष करना है। ऐसे बहादुर बने हो! पावन आत्मायें हैं, इसी स्मृति से स्वयं भी परिपक्व और दुनिया को भी यह प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाते चलो। कौन-सी आत्मा हो? असम्भव को सम्भव कर दिखाने के निमित्त, पवित्रता की शक्ति फ़ैलाने वाली आत्मा हूँ। यह सदा स्मृति में रखो।

22-12-85... जहाँ पवित्रता वा स्वच्छता है वहाँ कोई भी दु:ख अशान्ति का नाम निशान नहीं। पवित्रता के किले के अन्दर यह छोटासा सुखी संसार है। अगर पवित्रता के किले के, संकल्प द्वारा भी बाहर जाते हो तब दु:ख और अशान्ति का प्रभाव अनुभव करते हो। यह बुद्धि रूपी पाँव किले के अन्दर रहें तो संकल्प तो क्या स्वप्न में भी दु:ख अशान्ति की लहर नहीं आ सकती है।

पवित्रता, सिर्फ़ कामजीत जगतजीत बनना यह नहीं है। लेकिन काम विकार का वंश, सर्व हद की कामनायें हैं।

13-01-86... पवित्रता की प्रत्यक्ष निशानी – हैपी अर्थात् खुशी सदा प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देगी। अगर खुशी नहीं तो अवश्य कोई अपवित्रता अर्थात् संकल्प वा कर्म यथार्थ नहीं है, तब खुशी नहीं है।

22-03-86...आजकल किसी को भल 'हाइनेस वा होलीनेस' का टाइटिल देते भी हैं लेकिन प्रत्यक्ष प्रमाण रूप में देखो तो वह पवित्रता, महानता दिखाई नहीं देगी। बापदादा द्वारा नालेज मिली और नालेज की शक्ति से जान लिया कि मुझ आत्मा का अनादि और आदि स्वरूप है ही 'पवित्र'। पवित्रता की शक्ति के कारण जहाँ पवित्रता है वहाँ सुख और शान्ति स्वत: ही है। पवित्रता फाउण्डेशन है। पवित्रता को माता कहते हैं और सुख शान्ति उनके बच्चे हैं। तो जहाँ पवित्रता है वहाँ सुख-शान्ति स्वत: ही है। पवित्र आत्माओं की निशानी – 'सदा खुशी' है। पवित्रता का फाउण्डेशन मजबूत न होने के कारण अल्पकाल के लिए सुख वा शान्ति प्राप्त होती भी है लेकिन अभी-अभी है, अभी-अभी नहीं है। सदाकाल की सुख शान्ति की प्राप्ति सिवाए पवित्रता के असम्भव है। सुख शान्ति, पवित्र-आत्माओं के पास स्वयं स्वत: ही आती है। जहाँ पवित्रता, सुख शान्ति की शक्ति है वहाँ स्वप्न में भी दुख अशान्ति की लहर आ नहीं सकती।

20-02-87...वास्तव में याद वा सेवा की सफ़लता का आधार है – पवित्रता। सिर्फ ब्रह्मचारी बनना – यह पवित्रता नहीं लेकिन पवित्रता का सम्पूर्ण रूप है – ब्रह्मचारी के साथ-साथ ब्रह्माचारी बनना। ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा के आचरण पर चलने वाले, जिसको फ़ालो फ़ादर कहा जाता है पवित्रता का अर्थ है – सदा बाप को कम्पैनियन (साथी) बनाना और बाप की कम्पनी (Company) में सदा रहना। कम्पैनियन बना दिया, 'बाबा मेरा' – यह भी आवश्यक है लेकिन हर समय कम्पनी भी बाप की रहे। इसको कहते हैं – 'सम्पूर्ण पवित्रता।' कई बच्चों को सम्पूर्ण पवित्रता की स्थिति में आगे बढ़ने में मेहनत लगती है। इसलिए बीच-बीच में कोई को कम्पैनियन बनाने का भी संकल्प आता है और कम्पनी भी आवश्यक है – यह भी संकल्प आता है। संन्यासी तो नहीं बनना है लेकिन आत्माओं की कम्पनी में रहते बाप की कम्पनी को भूल नहीं जाओ संगठन में रहना है, स्नेही बनना है लेकिन बुद्धि का सहारा एक बाप हो, दूसरा न कोई। बुद्धि को कोई आत्मा का साथ वा गुण वा कोई विशेषता आकर्षित नहीं करे। इसको कहते हैं – 'पवित्रता' ।पवित्रता में मेहनत लगती – इससे सिद्ध है वरदाता बाप से जन्म का वरदान नहीं लिया है। वरदान में मेहनत नहीं होती। हर ब्राह्मण आत्मा को ब्राह्मण जन्म का पहला वरदान – 'पवित्र भव, योगी भव' का मिला हुआ है। तो अपने से पूछो – पवित्रता के वरदानी हो या मेहनत से पवित्रता को अपनाने वाले हो

20-03-87...कुमारी शब्द ही पवित्रता का सूचक है। पवित्र का ही पूजन है। सदा स्वयं भी पावन रहेंगी और दूसरों को भी पवित्रता की शक्ति देने का श्रेष्ठ कार्य करती रहेंगी। पवित्रता की शक्ति जमा है ना? तो जो जमा होता है वह दूसरों को दिया जाता है। तो सदैव अपने को पवित्रता की देवियाँ समझो।

17-10-87...पूजनीय बनने का विशेष आधार पवित्रता के ऊपर है। जितना सर्व प्रकार की पवित्रता को अपनाते हैं, उतना ही सर्व प्रकार के पूजनीय बनते हैं और जो निरन्तर विधिपूर्वक आदि, अनादि विशेष गुण के रूप से पवित्रता को सहज अपनाते हैं, वही विधिपूर्वक पूज्य बनते हैं। जो आत्मायें सहज, स्वत: हर संकल्प में, बोल में,

कर्म में सर्व अर्थात् ज्ञानी और अज्ञानी आत्मायें, सर्व के सम्पर्क में सदा पवित्र वृत्ति, दृष्टि, वायब्रेशन से यथार्थ सम्पर्क-सम्बन्ध निभाते हैं – इसको ही सर्व प्रकार की पवित्रता कहते हैं। स्वप्न में भी स्वयं के प्रति या अन्य कोई आत्मा के प्रति सर्व प्रकार की पवित्रता में से कोई कमी न हो। मानो स्वप्न में भी ब्रह्मचर्य खण्डित होता है वा किसी आत्मा के प्रति किसी भी प्रकार की ईर्ष्या, आवेशता के वश कर्म होता या बोल निकलता है, क्रोध के अंश रूप में भी व्यवहार होता है तो इसको भी पवित्रता का खण्डन माना जायेगा। पवित्रता की धारणा स्वत: ही यथार्थ संकल्प, बोल, कर्म और स्वप्न लाती है। यथार्थ अर्थात् एक तो युक्तियुक्त, दूसरा यथार्थ अर्थात् हर संकल्प में अर्थ होगा, बिना अर्थ नहीं होगा। ऐसे नहीं कि ऐसे में बोल दिया, निकल गया, कर लिया, हो गया। ऐसी पवित्र आत्मा सदा हर कर्म में अर्थात् दिनचर्या के हर कर्म में यथार्थ युक्तियुक्त रहती है। इसलिए पूजा भी उनके हर कर्म की होती है अर्थात् पूरे दिनचर्या की होती है। पवित्रता की धारणा बहुत महीन है। पवित्रता के आधार पर ही कर्म की विधि और गति का आधार है। पवित्रता सिर्फ मोटी बात नहीं है। ब्रह्मचारी रहे या निर्मोही हो गये - सिर्फ इसको ही पवित्रता नहीं कहेंगे। पवित्रता ब्राह्मण जीवन का शृंगार है। तो हर समय पवित्रता के शृंगार की अनुभूति चेहरे से, चलन से औरों को हो। दृष्टि में, मुख में, हाथों में, पाँवों में सदा पवित्रता का शृंगार प्रत्यक्ष हो। कोई भी चेहरे तरफ देखे तो फीचर्स से उन्हें पवित्रता अनुभव हो। जैसे और प्रकार के फीचर्स वर्णन करते हैं, वैसे यह वर्णन करें कि इनके फीचर्स से पवित्रता दिखाई देती है, नयनों में पवित्रता की झलक है, मुख पर पवित्रता की मुस्कराट है। और कोई बात उन्हें नज़र न आये। इसको कहते हैं – पवित्रता के शृंगार से शृंगारी हुई मूर्त्त।

14-11-87.. आज रूहानी शमा अपने रूहानी परवानों को देख रहे हैं। हर एक रूहानी परवाना अपने उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ते-उड़ते इस रूहानी महफिल में पहुँच गये हैं। यह रूहानी महफिल विचित्र अलौकिक महफिल है जिसको रूहानी बाप जाने और रूहानी बच्चे जानें। यह रूहानी आकर्षण के आगे माया की अनेक प्रकार की आकर्षण तुच्छ लगती है, असार अनुभव होती है। यह रूहानी आकर्षण सदा के लिए वर्तमान और भविष्य अनेक जन्मों के लिए हर्षित बनाने वाली है, अनेक प्रकार के दु:ख-अशान्ति की लहरों से किनारा कराने वाली है। इसलिए सभी रूहानी परवाने इस महफिल में पहुँच गये हैं। बापदादा सभी परवानों को देख हर्षित होते हैं। सभी के मस्तक पर पवित्र स्नेह, पवित्र स्नेह के सम्बन्ध, पवित्र जीवन की पवित्र दृष्टि-वृत्ति की निशानियाँ झलक रही हैं। सभी के ऊपर इन सब पवित्र निशानियों के सिम्बल वा सूचक 'लाइट का ताज' चमक रहा है। सगंमयुगी ब्राह्मण जीवन की विशेषता है – पवित्रता की निशानी। यह लाइट का ताज जो हर ब्राह्मण आत्मा को बाप द्वारा प्राप्त होता है। महान आत्मा, परमात्म-भाग्यवान आत्मा, ऊँचे ते ऊँची आत्मा की यह ताज निशानी है। तो आप सभी ऐसे ताजधारी बने हो? बापदादा वा मात-पिता हर एक बच्चे को जन्म से 'पवित्र-भव' का वरदान देते हैं। पवित्रता नहीं तो ब्राह्मण जीवन नहीं। आदि स्थापना से लेकर अब तक पवित्रता पर ही विघ्न पड़ते आये हैं क्योंकि पवित्रता का फाउण्डेशन 21 जन्मों का फाउण्डेशन है। पवित्रता की प्राप्ति आप ब्राह्मण आत्माओं को उड़ती कला की तरफ़ सहज ले जाने का आधार है। जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, तो पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य

है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। 'पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है।' किसी भी प्रकार की अपवित्रता दु:ख वा अशान्ति का अनुभव कराती है। तो सारे दिन में चेक करो - किसी भी समय दु:ख वा अशान्ति की लहर अनुभव होती है? उसका बीज अपवित्रता है। चाहे मुख्य विकारों के कारण हो वा विकारों के सूक्ष्म रूप के कारण हो। पवित्र जीवन अर्थात् दु:ख-अशान्ति का नाम निशान नहीं। किसी भी कारण से दु:ख का जरा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है। पवित्र जीवन अर्थात् बापदादा द्वारा प्राप्त हुई वरदानी जीवन है। ब्राह्मणों के संकल्प में वा मुख में यह शब्द कभी नहीं होना चाहिए कि इस बात के कारण वा इस व्यक्ति के व्यवहार के कारण मुझे दु:ख होता है। कभी साधारण रीति में ऐसे बोल, बोल भी देते या अनुभव भी करते हैं। यह पवित्र ब्राह्मण जीवन के बोल नहीं हैं। ब्राह्मण जीवन अर्थात् हर सेकेण्ड सुखमय जीवन। चाहे दु:ख का नजारा भी हो लेकिन जहाँ पवित्रता की शक्ति है, वह कभी दु:ख के नजारे में दु:ख का अनुभव नहीं करेंगे लेकिन दु:ख-हर्त्ता सुख-कर्त्ता बाप समान दु:ख के वायुमण्डल में दु:खमय व्यक्तियों को सुख-शान्ति के वरदानी बन सुख-शान्ति की अंचली देंगे, मास्टर सुख-कर्त्ता बन दु:ख को रूहानी सुख के वायुमण्डल में परिवर्तन करेंगे। इसी को ही कहा जाता है – 'दु:ख-हर्त्ता सुख-कर्त्ता।' जब साइन्स की शक्ति अल्पकाल के लिए किसी का दु:ख-दर्द समाप्त कर लेती है, तो पवित्रता की शक्ति अर्थात् साइलेन्स की शक्ति दु:ख-दर्द समाप्त नहीं कर सकती? साइन्स की दवाई में अल्पकाल की शक्ति है तो पवित्रता की शक्ति में, पवित्रता की दुआ में कितनी बड़ी शक्ति है? समय प्रमाण जब आज के व्यक्ति दवाइयों से कारणे-अकारणे तंग होंगे, बीमारियाँ अति में जायेंगी तो समय पर आप पवित्र देव वा देवियों के पास दुआ लेने लिए आयेंगे कि हमें दु:ख, अशान्ति से सदा के लिए दूर करो। पवित्रता की दृष्टि-वृत्ति साधारण शक्ति नहीं है। यह थोड़े समय की शक्तिशाली दृष्टि वा वृत्ति सदाकाल की प्राप्ति कराने वाली है। जैसे अभी जिस्मानी डॉक्टर्स और जिस्मानी हॉस्पिटल्स समय प्रति समय बढ़ते भी जाते हैं, फिर भी डॉक्टर्स को फुर्सत नहीं, हॉस्पिटल्स में स्थान नहीं। रोगियों की सदा ही क्यू लगी हुई होती है। ऐसे आगे चल हॉस्पिटल्स वा डॉक्टर्स के पास जाने का, दवाई करने का, चाहते हुए भी जा नहीं सकेंगे। मैजारिटी निराश हो जायेंगे तो क्या करेंगे? जब दवा से निराश होंगे तो कहाँ जायेंगे? आप लोगों के पास भी क्यू लगेगी। जैसे अभी आपके वा बाप के जड़ चित्रों के सामने 'ओ दयालू, दया करो' कहकर दया वा दुआ मांगते रहते हैं, ऐसे आप चैतन्य, पवित्र, पूज्य आत्माओं के पास 'ओ पवित्र देवियों वा पवित्र देव! हमारे ऊपर दया करो' - यह मांगने के लिए आयेंगे। आज अल्पकाल की सिद्धि वालों के पास शफा लेने वा सुख-शान्ति की दया लेने के लिए कितने भटकते रहते हैं! समझते हैं - दूर से भी दृष्टि पड़ जाए। तो आप परमात्म-विधि द्वारा सिद्धि-स्वरूप बने हो। जब अल्पकाल के सहारे समाप्त हो जायेंगे तो कहाँ जायेंगे? यह जो भी अल्पकाल की सिद्धि वाले हैं, अल्पकाल की कुछ न कुछ पवित्रता की विधियों से अल्पकाल की सिद्धि प्राप्त करते हैं। यह सदा नहीं चल सकती है। यह भी गोल्डन एजड आत्माओं को अर्थात् लास्ट में ऊपर से आई हुई आत्माओं को पवित्र मुक्तिधाम से आने के कारण और ड्रामा के नियम प्रमाण, सतोप्रधान स्टेज के प्रमाण पवित्रता के फलस्वरूप अल्पकाल की सिद्धियाँ प्राप्त हो

जाती हैं लेकिन थोड़े समय में ही सतो, रजो, तमो - तीनों स्टेजस पास करने वाली आत्मायें हैं। इसलिए सदाकाल की सिद्धि नहीं रहती। परमात्म-विधि से सिद्धि नहीं है, इसलिए कहाँ न कहाँ स्वार्थ व अभिमान सिद्धि को समाप्त कर लेता है। लेकिन आप पवित्र आत्मायें सदा सिद्धि स्वरूप हैं, सदा की प्राप्ति कराने वाली हैं। सिर्फ चमत्कार दिखाने वाली नहीं हो लेकिन चमकती हुई ज्योतिस्वरूप बनाने वाले हो, अविनाशी भाग्य का चमकता हुआ सितारा बनाने वाले हो। इसलिए यह सब सहारे अब थोड़ा समय के लिए हैं और आखिर में आप पवित्र आत्माओं के पास ही अंचली लेने आयेंगे। तो इतनी सुख-शान्ति की जननी पवित्र आत्मायें बने हो? इतनी दुआ का स्टॉक जमा किया है वा अपने लिए भी अभी तक दुआ मांगते रहते हो? कई बच्चे अभी भी समय प्रति समय बाप से मांगते रहते कि इस बात पर थोड़ी-सी दुआ कर लो, आशीर्वाद दे दो। तो मांगने वाले दाता कैसे बनेंगे? इसलिए पवित्रता की शक्ति की महानता को जान पवित्र अर्थात् पूज्य देव आत्मायें अभी से बनो। ऐसे नहीं कि अन्त में बन जायेंगे। यह बहुत समय की जमा की हुई शक्ति अन्त में काम में आयेगी। तो समझा, पवित्रता की गुह्य गति क्या है? सदा सुख-शान्ति की जननी आत्मा - यह है पवित्रता की गुह्यता! साधरण बात नहीं है! ब्रह्मचारी रहते हैं, पवित्र बन गये हैं। लेकिन पवित्रता जननी है, चाहे संकल्प से, चाहे वृति से, वायुमण्डल से, वाणी से, सम्पर्क से सुख- शान्ति की जननी बनना - इसको कहते हैं – 'पवित्र आत्मा'। तो कहाँ तक बने हो - यह अपने आपको चेक करो। अच्छा।

22.11.87....ब्राह्मण जन्म लेते ही पहली हिम्मत कौनसी धारण की? पहली हिम्मत - जो असम्भव को सम्भव करके दिखाया, पवित्रता के विशेषता की धारणा की। हिम्मत से दृढ़ संकल्प किया कि हमें पवित्र बनना ही है और बाप ने पद्मगुणा मदद दी कि आप आत्मायें अनादि-आदि पवित्र थी, अनेक बार पवित्र बनी हैं और बनती रहेंगी। नई बात नहीं है। अनेक बार की श्रेष्ठ स्थिति को फिर से सिर्फ रिपीट कर रहे हो। अब भी आप पवित्र आत्माओं के भक्त आपके जड़ चित्रों के आगे पवित्रता की शक्ति मांगते रहते हैं, आपके पवित्रता के गीत गाते रहते हैं। साथ-साथ आपके पवित्रता की निशानी हर एक पूज्य आत्मा के ऊपर लाइट का ताज है। ऐसे स्मृति द्वारा समर्थ बनाया अर्थात् बाप की मदद से आप निर्बल से बलवान बन गये। इतने बलवान बने जो विश्व को चैलेन्ज करने के निमित्त बने हो कि हम विश्व को पावन बना कर ही दिखायेंगे! निर्बल से इतने बलवान बनो जो द्वापर के नामीग्रामी ऋषि-मुनि महान आत्मायें जिस बात को खण्डित करते रहे हैं कि प्रवृत्ति में रहते पवित्र रहना असम्भव है और स्वयं आजकल के समय प्रमाण अपने लिए भी कठिन समझते हैं, और आप उन्हों के आगे नैचरल रूप में वर्णन करते हो कि यह तो आत्मा का अनादि, आदि निजी स्वरूप है, इसमें मुश्किल क्या है? इसको कहते हैं – हिम्मते बच्चे मदद दे बाप। असम्भव, सहज अनुभव हुआ और हो रहा है। जितना ही वह असम्भव कहते हैं, उतना ही आप अति सहज कहते हो। तो बाप ने नॉलेज के शक्ति की मदद और याद द्वारा आत्मा के पावन स्थिति के अनुभूति की शक्ति की मदद से परिवर्तन कर लिया। यह है पहले कदम की हिम्मत पर बाप की पद्मगुणा मदद।

30-1-88 ...कुमारों की विशेषता क्या है? कुमार जीवन श्रेष्ठ जीवन है क्योंकि पवित्र जीवन है। और जहाँ पवित्रता है, वहाँ महानता है। कुमार अर्थात् शक्तिशाली, जो संकल्प करें वह कर सकते हैं। कुमार अर्थात् सदा बन्धनमुक्त बनने और बनाने वाले। ऐसी विशेषतायें हैं ना? जो संकल्प करो वही कर्म में ला सकते हो। स्वयं भी पवित्र रह औरों को भी पवित्र रहने का महत्व बता सकते हो। ऐसी सेवा के निमित्त बन सकते हो। जो दुनिया वाले असम्भव समझते हो वह ब्रह्माकुमार चैलेन्ज करते हैं – तो हमारे जैसा पावन कोई हो नहीं सकता, क्यों? क्योंकि बनाने वाला सर्वशक्तिवान है। दुनिया वाले कितना भी प्रयत्न करते हैं लेकिन आप जैसे पावन बन नहीं सकते। आप सहज ही पावन बन गये। सहज लगता है ना? या दुनिया वाले जैसे कहते हैं - यह अननैचुरल है, ऐसे लगता है? कुमारों की परिभाषा ही है – 'चैलेन्ज करने वाले, परिवर्तन कर दिखाने वाले, असम्भव को सम्भव करने वाले'। दुनिया वाले अपने साथियों को संग के दोष में ले जाते हैं और आप बाप के संग में ले आते हो। उन्हें अपना संग नहीं लगाते, बाप के संग का रंग लगाते हो, बाप समान बनाते हो। ऐसे हो ना?

3.3.88...बापदादा हर एक अति स्नेही, सहजयोगी, सदा बाप के कार्य में सहयोगी, सदा पावन वृत्ति से, पावन दृष्टि से सृष्टि को परिवर्तन करने वाले सर्व होली बच्चों को देख सदा हर्षित होते हैं। पावन तो आजकल के गाये हुए महात्मायें भी बनते हैं लेकिन आप श्रेष्ठ आत्मायें हाइएस्ट होली बनते हो अर्थात् संकल्प-मात्र, स्वप्न मात्र भी अपवित्रता वृत्ति को, दृष्टि को पावन स्थिति से नीचे नहीं ला सकती। हर संकल्प अर्थात् स्मृति पावन होने के कारण वृत्ति, दृष्टि स्वत: ही पावन हो जाती है। न सिर्फ आप पावन बनते हो लेकिन प्रकृति को भी पावन बना देते हो। इसलिए पावन प्रकृति के कारण भविष्य अनेक जन्म शरीर भी पावन मिलते हैं। ऐसे होलीहंस वा सदा पावन संकल्पधारी श्रेष्ठ आत्मायें बन जाती हो। ऊँचे-ते-ऊँचा बाप हर बात में श्रेष्ठ जीवन वाले बनाते हैं। पवित्रता भी ऊँचे-ते-ऊँची पवित्रता, साधारण नहीं। साधारण पवित्र आत्मायें आप महान पवित्र आत्माओं के आगे मन से मानने का नमस्कार करेंगे कि आपकी पवित्रता अति श्रेष्ठ है। आजकल के गृहस्थी अपने को अपवित्र समझने के कारण जिन पवित्र आत्माओं को महान समझकर सिर झुकाते हैं, वह महान आत्मायें कहलाने वाली आप श्रेष्ठ पावन आत्माओं के आगे मानेंगी कि आपकी पवित्रता और हमारी पवित्रता में महान अन्तर है।

यह होली का उत्सव आप पावन आत्माओं के पावन बनने की विधि का यादगार है। क्योंकि आप सभी नम्बरवार पावन आत्मायें बाप के याद की लग्न की अग्नि द्वारा सदा के लिए अपवित्रता को जला देते हो। इसलिए पहले जलाने की होली मनाते हैं, फ़िर रंग की होली वा मंगल-मिलन मनाते हैं। जलाना अर्थात् नाम-निशान समाप्त करना। वैसे किसको नाम-निशान से खत्म करना होता है तो क्या करते हो? जला देते हैं। इसलिए रावण को भी मारने के बाद जला देते हैं। यह आप आत्माओं का यादगार है। अपवित्रता को जला दिया अर्थात् पावन 'होली' बन गये। बापदादा सदैव सुनाते ही हैं कि ब्राह्मणों का होली मनाना अर्थात् होली (पवित्र) बनाना। तो यह चेक करो कि अपवित्रता को सिर्फ मारा है या जलाया है? मरने वाले फ़िर भी जिन्दा हो जाते हैं, कहाँ-न-कहाँ श्वाँस छिपा रह

जाता है। लेकिन जलना अर्थात् नाम-निशान समाप्त करना। कहाँ तक पहुँचे हैं, अपने आप को चेक करना पड़े। स्वप्न में भी अपवित्रता का छिपा हुआ श्वाँस फ़िर से जीवित नहीं होना चाहिए। इसको कहते हैं – श्रेष्ठ पावन आत्मा। संकल्प से स्वप्न भी परिवर्तित हो जाते हैं।

19-3-88 ...इस जीवन का मूल सिद्धान्त 'पवित्रता' है। इस पवित्रता के सिद्धान्त द्वारा आप आत्माओं के भविष्य में सिद्धि स्वरूप के रूप में लाइट का ताज सदा ही प्राप्त है जिसका यादगार-रूप डबल ताज दिखाते हैं और भक्ति में भी जब भी यथार्थ और दिल से भक्ति करेंगे तो पवित्रता के सिद्धान्त को मूल आधार समझेंगे और समझते हैं कि सिवाए पवित्रता के भक्ति की सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती है। चाहे अल्पकाल के लिए, जितना समय भक्ति करते हैं, उतना समय ही पवित्रता को अपनायें लेकिन 'पवित्रता ही सिद्धि का साधन है' - इस सिद्धान्त को अपनाते अवश्य हैं। इसी प्रकार से हर एक ज्ञान का सिद्धान्त वा धारणा का मूल सिद्धान्त बुद्धि से सोचे कि हर एक सिद्धान्त सिद्धि का साधन कैसे बनता है? यह मनन करने का काम दे रहे हैं। जैसे दृष्टान्त सुनाया, इसी प्रकार से सोचना। तो आप विधि-विधाता भी बनते हो, सिद्धि-दाता भी बनते हो।

1.12.89... जहाँ मधुरता है वहाँ ही पवित्रता है। बिना पवित्रता के मधुरता आ नहीं सकती। तो सदा मधुर रहने वाले और सदा खुशबहार रहने वाले। अच्छा! टीचर्स भी खुशबहार को देख करके सदा-बहार ही रहती हैं ना।

21.12.89... भक्त माना सदा मंगता के संस्कार होंगे। मैं नीच हूँ, बाप ऊँचा है - यह संस्कार होंगे। वह रॉयल भिखारी हैं और आप आत्माओं में अधिकारीपन के संस्कार हैं। इसलिए परिचय मिलते ही अधिकारी बन गये। समझा? भक्तों को भी कोई जगह दो ना। दोनों में आप आयेंगे क्या? उन्हों का भी आधाकल्प है, आपका भी आधाकल्प है। उन्हों को भी गायनमाला में आना ही है। फिर भी दुनिया वालों से तो अच्छे हैं। और तरफ़ तो बुद्धि नहीं है, बाप की तरफ़ ही है। शुद्ध तो रहते हैं। पवित्रता का फल मिलता है – ''गायन योग्य होने का''। आपकी पूजा होगी। उन्हों की पूजा नहीं होती, सिर्फ स्टेच्यू बनाके रखते हैं गायन के लिए। मीरा का कभी मंदिर नहीं होगा। देवताओं मिसल मीरा की पूजा नहीं होती, सिर्फ गायन है। अभी लास्ट जन्म में चाहे किसी को भी पूज्य लेवें। धरनी को भी पूजें तो वृक्ष को भी पूजें। लेकिन नियम प्रमाण उन्हों का सिर्फ गायन होता है, पूजन नहीं। आप पूज्य बनते हो। तो आप पूजनीय आत्माएं हो- यह नशा सदा स्मृति में रखो। पूज्य आत्मा कभी कोई अपवित्र संकल्प को टच भी नहीं कर सकती। ऐसे पूज्य बने हो!

21.12.89... होली अर्थात् सदा पवित्रता की शक्ति से अपवित्रता को सेकण्ड में भगाने वाले। न केवल अपने लिए बल्कि औरों के लिए भी। क्योंकि सारे विश्व को परिवर्तन करना है ना। पवित्रता की शक्ति कितनी महान है, यह तो जानते हो ना! पवित्रता ऐसी अग्नि है जो सेकण्ड में विश्व के किचड़े को भस्म कर सकती है। सम्पूर्ण पवित्रता ऐसी श्रेष्ठ शक्ति है! अंत में जब सब संपूर्ण हो जायेंगे तो आपके श्रेष्ठ संकल्प में लगन की अग्नि से यह

सब किचड़ा भस्म हो जायेगा। योग ज्वाला हो। अंत में ऐसे धीरे- धीरे सेवा नहीं होगी। सोचा और हुआ – इसको कहते हैं 'विहंग मार्ग की सेवा'।

13.2.91 ...शिव जयन्ती अर्थात् परमात्म जयन्ती को महाशिवरात्रि क्यों कहते हैं? सिर्फ शिव रात्रि नहीं कहते लेकिन महाशिवरात्रि कहते हैं क्योंकि इस अवतरित दिवस पर शिव बाप ब्रह्मा दादा और ब्राह्मणों ने महान संकल्प का व्रत लिया कि विश्व को पवित्रता के व्रत से महान श्रेष्ठ बनायेंगे। विशेष आदि देव ब्रह्मा अपने निमित्त ब्राह्मण आदि बच्चों के साथ इस महान व्रत लेने के निमित्त बने, तो महान बनाने के व्रत लेने का दिव्य दिवस है। इसलिए महा शिवरात्रि कहा जाता है।

25.3.90... रुहानियत का आधार पवित्रता है। संकल्प, बोल और कर्म पवित्रता की जितनी-जितनी धारणा है उसी प्रमाण रुहानियत की झलक सूरत में दिखाई देती है। ब्राह्मण-जीवन की चमक पवित्रता है। निरंतर अतीन्द्रिय सुख और स्वीट साइलेन्स का विशेष आधार है – पवित्रता। तो पवित्रता नंबरवार है तो इन अनुभूतियों की प्राप्ति भी नंबरवार है। अगर पवित्रता नंबरवन है तो बाप द्वारा अनुभूतियों की प्राप्ति भी नंबरवन है। पवित्रता की चमक स्वत: ही निरंतर चेहरे पर दिखाई देती है। पवित्रता की रुहानियत के नयन सदा ही निर्मल दिखाई देंगे। सदा नयनों में रुहानी आत्मा और रुहानी बाप की झलक अनुभव होगी। आज बापदादा सभी बच्चों की विशेष यह चमक और झलक देख रहे हैं। आप भी अपने रुहानी पवित्रता के फीचर्स को नॉलेज के दर्पण में देख सकते हो। क्योंकि विशेष आधार पवित्रता है। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य को नहीं कहा जाता। लेकिन सदा ब्रह्चारी और सदा ब्रह्माचारी अर्थात ब्रह्मा बाप के आचरण पर हर कदम में चलने वाले। उसका संकल्प, बोल और कर्म रुपी कदम नैचुरल ब्रह्मा बाप के कदम-ऊपर-कदम होगा। जिसको आप फुट स्टेप कहते हो। उनके हर कदम में ब्रह्मा बाप का आचरण दिखाई देगा। तो ब्रह्मचारी बनना मुश्किल नहीं है लेकिन यह मन-वाणी-कर्म के कदम ब्रह्माचारी हों – इस पर चेक करने की आवश्यक्ता है। और जो ब्रह्माचारी हैं उनका चेहरा और चलन सदा ही अर्न्तमुखी और अतीन्द्रिय सुखी अनुभव होगा।

4.12.91... तपस्या का अर्थ ही है मन-वचन-कर्म और सम्बन्ध-सम्पर्क में अपवित्रता का अंश मात्र भी विनाश होना। नाम- निशान समाप्त होना। जब अपवित्रता समाप्त हो जाती है तो इस समाप्ति को ही सम्पन्न स्थिति कहा जाता है। सफल तपस्वी अर्थात् सदा-स्वत: पवित्रता की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी, हर बोल और कर्म से, दृष्टि और वृत्ति से अनुभव हो। प्योरिटी सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् संकल्प में भी कोई भी विकार टच न हो। जैसे ब्राह्मण जीवन में शारीरिक आकर्षण व शारीरिक टचिंग अपवित्रता मानते हो, ऐसे मन-बुद्धि में किसी विकार के संकल्प मात्र की आकर्षण व टचिंग, इसको भी अपवित्रता कहा जायेगा। पवित्रता की पर्सनैलिटी वाले, रॉयल्टी वाले मन-बुद्धि से भी इस बुराई को टच नहीं करते। क्योंकि सफल तपस्वी अर्थात् सम्पूर्ण वैष्णव। वैष्णव कभी बुरी चीज को टच नहीं करते हैं। तो उन्हों का है स्थूल, आप ब्राह्मण वैष्णव आत्माओं का है सूक्ष्म। बुराई को टच न करना यही तपस्या है। धारण करना अर्थात् ग्रहण करना। ये तो बहुत मोटी बात है। लेकिन संकल्प में भी टच नहीं करना। इसको ही कहा जाता है सच्चे वैष्णव। सिर्फ याद के समय याद में रहना इसको तपस्या नहीं कहा जाता। तपस्या अर्थात् प्योरिटी के पर्सनैलिटी और रॉयल्टी का स्वयं भी अनुभव करना

और औरों को भी अनुभव कराना। सफल तपस्वी का अर्थ ही है विशेष महान आत्मा बनना। विशेष आत्माओं वा महान आत्माओं को देश की वा विश्व की पर्सनैलिटीज़ कहते हैं। पवित्रता की पर्सनैलिटी अर्थात् हर कर्म में महानता और विशेषता। पर्सनैलिटी अर्थात् सदा स्वयं की और औरों की सेवा में सदा बिज़ी रहना अर्थात् अपनी इनर्जी, समय, संकल्प वेस्ट नहीं गँवाना, सफल करना। इसको कहेंगे पर्सनैलिटी वाले। पर्सनैलिटी वाले कभी भी छोटी-छोटी बातों में अपने मन-बुद्धि को बिज़ी नहीं रखते हैं। तो अपवित्रता की बातें आप श्रेष्ठ आत्माओं के आगे छोटी हैं या बड़ी हैं? इसलिए तपस्वी अर्थात् ऐसी बातों को सुनते हुए नहीं सुनें, देखते हुए नहीं देखें। ऐसा अभ्यास किया है? ऐसी तपस्या की है? वा यही सोचते हो चाहते तो नहीं हैं, लेकिन दिखाई दे देता है, सुनाई दे देता है? जैसे कोई चीज़ से आपका कनेक्शन ही नहीं हैं, उन चीजों को देखते हुए नहीं देखते हो ना। जैसे रास्ते पर जाते हो, कहीं कुछ दिखाई देता है परन्तु आपके मतलब की कोई बात नहीं है, तो देखते हुए नहीं देखेंगे ना। साइड सीन समझ कर पार कर लेंगे ना? ऐसे जो बातें सुनते हो, देखते हो, आपके काम की नहीं हैं, तो सुनते हुए नहीं सुनो, देखते हुए न देखो। अगर मन-बुद्धि में धारण किया, कि ये ऐसे हैं, ये वैसे हैं... इसको कहा जायेगा व्यर्थ बुराई को टच किया अर्थात् सच्चा वैष्णवपन सम्पूर्ण रूप से नहीं है। प्योरिटी के पर्सनैलिटी में परसेन्टेज कम अर्थात् तपस्या की परसेन्टेज कम। तो समझा तपस्या क्या है? इसी विधि से अपने आपको चेक करो- तपस्या वर्ष में तपस्या का प्रत्यक्ष स्वरूप प्योरिटी की पर्सनैलिटी अनुभव करते हो? पर्सनैलिटी कभी छिप नहीं सकती। प्रत्यक्ष दिखाई जरूर देती है। जैसे साकार ब्रह्मा बाप को देखा- प्योरिटी की पर्सनैलिटी कितनी स्पष्ट अनुभव करते थे। ये तपस्या के अनुभव की निशानी अब आप द्वारा औरों को अनुभव हो। सूरत और सीरत देनों द्वारा अनुभव करा सकते हो। अभी भी कई लोग अनुभव करते भी हैं। लेकिन इस अनुभव को और स्वयं द्वारा औरों में फैलाओ।

11.12.91... कई बच्चे बात को मिलाने और बनाने में बहुत होशियार हैं। क्योंकि द्वापर से मिलावट और बनावट की कथायें बहुत सुनी हैं। तो इस ब्राह्मण जीवन में भी वह संस्कार इमर्ज कर लेते हैं। ऐसी अच्छे रूप से बात बना लेते हैं जो झूठ को बिल्कुल सम्पूर्ण सत्य बना देते हैं और सत्य को झूठ सिद्ध कर देते हैं। इसको कहा जाता है – अन्दर एक, बाहर दूसरा। तो क्या यह रीयल्टी है? रॉयल्टी है? नहीं है ना । तो ऐसे पवित्रता की रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी। यह रॉयल्टी की निशानी है। अगर यह निशानी नहीं है तो समझो प्योरिटी की रॉयल्टी नहीं आई है वा परसेन्टेज में आई है, सम्पूर्ण नहीं है।

पवित्रता की रीयल्टी रॉयल्टी अर्थात् अविनाशी चित्त और मुख हर्षित हों। आप आत्माओं की प्योरिटी की ही रॉयल्टी है। ऐसे सम्पूर्ण पवित्र और कोई भी आत्मा सारे कल्प में न ही बनी है, न बनेगी। यह प्योरिटी की ही विशेषता है। इसलिए सिर्फ देव आत्माओं के आगे ही यह महिमा गाते हैं कि आप सम्पूर्ण निर्विकारी हो, और किसी भी धर्म आत्माओं की महिमा में ऐसी महिमा नहीं गाई जाती है। सिर्फ देव आत्माओं के श्रेष्ठ कीर्ति अर्थात् श्रेष्ठ पवित्रता की ही कीर्तन होता है। और कोई भी धर्म में कीर्तन नहीं होता है। साजों और बाजों से कीर्तन का रिवाज देव आत्माओं में ही है वा संगमयुग के शक्ति स्वरूप में है। यह सम्पूर्ण पवित्रता के विधि की सिद्धि है। इसलिए आप जैसी रूहानी रॉयल्टी और किसी आत्मा की नहीं है। तो चेक करो- ऐसे प्योरिटी की रॉयल्टी कहाँ तक आई है? रूहानी रॉयल्टी की सबसे श्रेष्ठ निशानी है – रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी अर्थात् सत्यता।

पवित्रता की रीयल्टी रॉयल्टी अर्थात् अविनाशी चित्त और मुख हर्षित हों। चेक करो – दूसरे को चेक करने नहीं लग जाना, अपने को चेक करना है। ऐसी रॉयल आत्मा बापदादा को और सर्व ब्राह्मण परिवार को अति प्यारी होती है।

16-3-92.. .. .. भल कैसी भी पुरुषार्थी आत्मा है लेकिन ब्राह्मण आत्मा बनने से रुप ज़रुर बदलता है। ब्राह्मण आत्मा की चमक सुन्दरता हर एक ब्राह्मण आत्मा में आ जाती है। इसलिए रंग और रुप सबमें दिखाई दे रहा है। खुशबू नम्बरवार है। खुशबू है सम्पूर्ण पवित्रता। वैसे तो जो भी ब्राह्मण बनते हैं, ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी कहलाते हैं। कुमार और कुमारी बनना अर्थात पवित्र बनना। पवित्रता की परिभाषा अति सूक्ष्म है। सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं। तन से ब्रह्मचारी बनना इसको सम्पूर्ण पवित्रता नहीं कहते। मन से भी ब्रह्मचारी हो अर्थात मन भी सिवाय बाप के और किसी भी प्रकार के लगाव में नहीं आए। तन से भी ब्रह्मचारी, सम्बन्ध में भी ब्रह्मचारी, संस्कार में भी ब्रह्मचारी।

3.10.92.. .. .. सतगुरु का महामन्त्र क्या मिला? पवित्र बनो, योगी बनो। जन्मते ही यह महामन्त्र सतगुरु द्वारा प्राप्त हुआ और यही महामन्त्र सर्व प्राप्तियों की चाबी सर्व बच्चों को मिली। ''योगी जीवन, पवित्र जीवन'' ही सर्व प्राप्तियों का आधार है। इसलिए यह चाबी है। अगर पवित्रता नहीं, योगी जीवन नहीं तो अधिकारी होते हुए भी अधिकार की अनुभूति नहीं कर सकेंगे। इसलिए यह महामन्त्र सर्व खजानों के अनुभूति की चाबी है। ऐसी चाबी का महामन्त्र सतगुरु द्वारा सभी को श्रेष्ठ भाग्य में मिला है और साथ-साथ सतगुरु द्वारा वरदान प्राप्त हुए हैं।

18.2.93.. .. .. पवित्रता का व्रत तो ब्राह्मण जन्म से ही धारण कर लिया है ना! सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं लेकिन पांचों ही विकारों पर विजय हो–इसको कहते हैं पवित्रता का व्रत। तो सोचो कि पवित्रता के व्रत में कहाँ तक सफल हुए हैं? जैसे ब्रह्मचर्य अर्थात् काम महाशत्रु को जीतने के लिये विशेष अटेन्शन में रहते हो, ऐसे ही और भी चार साथी जो काम महाशत्रु के हैं, उनका भी

इतना ही अटेन्शन रहता है? कि उसके लिए छुट्टी है–थोड़ा-थोड़ा क्रोध भल कर लो? छुट्टी है नहीं, लेकिन अपने आपको छुट्टी दे देते हो। देखा गया है कि क्रोध के बाल-बच्चे जो हैं उनको छुट्टी दे दी है। क्रोध महाभूत को तो भगाया है लेकिन उसके जो बालबच्चे हैं उनसे थोड़ी प्रीत अभी भी रखी है। जैसे छोटे बच्चे अच्छे लगते हैं ना। तो यह क्रोध के छोटे बच्चे कभी-कभी प्यारे लगते हैं! व्रत अर्थात् सम्पूर्ण पवित्रता का व्रत। कई बच्चे बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुनाते हैं। कहते हैं–''क्रोध आया नहीं लेकिन क्रोध दिलाया गया, तो क्या करें? मेरे को नहीं आया लेकिन दूसरा दिलाता है।'' बहुत मज़े की बातें करते हैं। कहते हैं–आप भी उस समय होते तो आपको भी आ जाता। तो बापदादा क्या कहेंगे? बापदादा भी कहते–अच्छा, तुमको माफ कर दिया, लेकिन आगे फिर नहीं करना।

सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् रोशनी । अंधकार मिटाने वाली आत्माओं के पास अंधकार रह नहीं सकता। रह सकता है? आ सकता है? चलो, रहे नहीं लेकिन आकर चला जाए–यह हो सकता है? अगर किसी भी विकार का अंश है तो उसको रोशनी कहेंगे या अंधकार कहेंगे? अंधकार खत्म हो गया ना।

07.03.93...सारे चक्र में हाइएस्ट भी हो और साथ-साथ होलीएस्ट भी हो। चाहे और आत्मायें भी होली अर्थात् पवित्र बनती हैं लेकिन आपकी वर्तमान समय की पवित्रता और फिर देवता जीवन की पवित्रता सभी से श्रेष्ठ और न्यारी है। इस समय भी सम्पूर्ण पवित्र अर्थात् होली बनते हो। सम्पूर्ण पवित्रता की परिभाषा बहुत श्रेष्ठ है और सहज भी है। सम्पूर्ण पवित्रता का अर्थ ही है–स्वप्न-मात्र भी अपवित्रता मन और बुद्धि को टच नहीं करे। इसी को ही कहा जाता है सच्चे वैष्णव। चाहे अभी नम्बरवार पुरुषार्थी हो लेकिन पुरुषार्थ का लक्ष्य सम्पूर्ण पवित्रता का ही है। और सहज पवित्रता को धारण करने वाली आत्मायें हो। सहज क्यों है? क्योंकि हिम्मत बच्चों की और मदद सर्वशक्तिवान बाप की। इसलिए मुश्किल वा असम्भव भी सम्भव हो गया है और नम्बरवार हो रहा है। तो होली

अर्थात् पवित्रता की भी श्रेष्ठ स्थिति का अनुभव आप ब्राह्मण आत्माओं को है। सहज लगती है या मुश्किल लगती है? सम्पूर्ण पवित्रता मुश्किल है या सहज है? कभी मुश्किल, कभी सहज? सम्पूर्ण बनना ही है–ये लक्ष्य है ना। लक्ष्य तो हाइएस्ट है ना! कि लक्ष्य ही ढीला है कि–कोई बात नहीं, सब चलता है? नहीं। यह तो नहीं सोचते हो–थोड़ा-बहुत तो होता ही है? ये तो नहीं सोचते–''थोड़ा तो चलता ही है, चला लो, किसको क्या पता पड़ता है, कोई मन्सा तो देखता ही नहीं है, कर्म में तो आते ही नहीं हैं?'' लेकिन मन्सा के वायब्रेशन्स भी छिप नहीं सकते। चलाने वाले को बापदादा अच्छी तरह से जानते हैं। ऐसे आउट नहीं करते, नहीं तो नाम भी आउट कर सकते हैं। लेकिन अभी नहीं करते।चलाने वाले स्वयं ही चलते-चलते, चलाते-चलाते त्रेता तक पहुँच जायेंगे।लेकिन लक्ष्य सभी का सम्पूर्ण पवित्रता का ही है। सारे चक्र में देखो–सिर्फ देव आत्मायें हैं जिनका शरीर भी पवित्र है और आत्मा भी पवित्र है। और जो भी आये हैं–आत्मा पवित्र बन भी जाये लेकिन शरीर पवित्र नहीं होगा। आप आत्मायें ब्राह्मण जीवन में ऐसे पवित्र बनते हो जो शरीर भी, प्रकृति भी पवित्र बना देते हो। इसलिए शरीर भी पवित्र है तो आत्मा भी पवित्र है। लेकिन वो कौनसी आत्मायें हैं जो 'शरीर' और 'आत्मा'–दोनों से पवित्र बनती हैं? उन्हों को देखा है? कहाँ हैं वो आत्मायें? आप ही हो वो आत्मायें! आप सभी हो या थोड़े हैं? पक्का है ना कि हम ही थे, हम ही बन रहे हैं। तो हाइएस्ट भी हो और होलीएस्ट भी हो। दोनों ही हो ना! कैसे बने? बहुत अलौकिक रूहानी होली मनाने से होली बने। कौनसी होली खेली है जिससे होलीएस्ट भी बने हो और हाइएस्ट भी बने हो?

07.03.93... ब्राह्मण जीवन की विशेषता ही है होली अर्थात् पवित्र।

पवित्रता की विशेषता से ही अभी भी महान् हो और सदा ही महान् रहेंगे। प्योरिटी सहज लगती है या मुश्किल लगती है? तो पवित्रता धारणा कर ली या पवित्रता धारण करने में अभी टाइम चाहिए? सब विकार चले गये? या थोड़ा अंश रह गया है? पाण्डवों को कभी क्रोध आता है? माताओं को मोह आता है? सम्पूर्ण पवित्र अर्थात् अपवित्रता का अंश-मात्र भी न हो। क्योंकि जितनी पवित्रता है उतनी ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी है। अगर पवित्रता कम तो पर्सनैलिटी कम। ये प्योरिटी की पर्सनैलिटी सेवा में भी सहज सफलता दिलायेगी। कोई भी पर्सनैलिटी का प्रभाव पड़ता है ना। तो सबसे बड़े ते बड़ी पर्सनैलिटी है प्योरिटी की। अगर एक विकार भी अंश-मात्र है तो दूसरे साथी भी उसके साथ जरूर होंगे। जैसे आप लोग दूसरों को कहते हो कि–जहाँ पवित्रता है वहाँ सुख-शान्ति है, अगर पवित्रता नहीं तो सुख-शान्ति नहीं। जैसे पवित्रता का सुख-शान्ति से गहरा सम्बन्ध है, ऐसे अपवित्रता का भी पांच विकारों से गहरा सम्बन्ध है। इसलिए कोई भी विकार का अंश-मात्र भी न रहे। इसको कहा जाता है पवित्रता। तो ऐसा ही लक्ष्य है ना। या थोड़ा-थोड़ा रह गया हो तो कोई बात नहीं? तो सदा लक्ष्य को सामने रख लक्ष्य प्रमाण लक्षण धारण करते उड़ते चलो। जब सभी कहते हो– नम्बरवन आना है; कोई टू नम्बर नहीं कहते। तो किस आधार से नम्बरवन बनेंगे? पवित्रता के आधार से ना। तो नम्बर- वन प्योर बनो।

18.11.93... स्वराज का धर्म वा धारणा एक कौन-सी है? 'पवित्रता'। मन, वचन, कर्म, सम्बन्ध, सम्पर्क सब प्रकार की पवित्रता इसको कहा जाता है–एक धर्म अर्थात् एक धारणा। स्वप्न मात्र, संकल्प मात्र भी अपवित्रता अर्थात् दूसरा धर्म न हो। क्योंकि जहाँ पवित्रता है वहाँ अपवित्रता अर्थात् व्यर्थ वा विकल्प का नाम-निशान नहीं होगा। ऐसे समर्थ सम्राट बने हो? वा ढीलेढाले राजे हो? वा कभी ढीले, कभी सम्राट? कौन से राजे हो? अगर अभी छोटा-सा एक जन्म का राज नहीं चला सकते तो 21 जन्म का राज अधिकार कैसे प्राप्त करेंगे? संस्कार

अब भर रहे हैं। अभी के श्रेष्ठ संस्कार से भविष्य संसार बनेगा। तो अभी से एक राज, एक धर्म के संस्कार भविष संसार का फ़ाउन्डेशन है।

सदा पवित्रता की चैलेन्ज का झण्डा लहराना ही असम्भव को सम्भव करना है।

23.12.93... महान् आत्मा तो सभी बच्चे बने हैं क्योंकि सबसे महान् बनने का मुख आधार 'पवित्रता' को धारण किया है। पवित्रता का व्रत सभी ने प्रतिज्ञा के रूप में धारण किाा है। किसी भी प्रकार का दृढ़ संकल्प रूपी व्रत लेना अर्थात् अपनी वृत्ति को परिवर्तन करना। दृढ़ व्रत वृत्ति को बदल देता है। इसलिये ही भक्ति में व्रत लेते भी हैं और व्रत रखते भी हैं। व्रत लेना अर्थात् मन में संकल्प करना और व्रत रखना अर्थात् स्थूल रीति से परहेज करना। चाहे खान-पान की, चाहे चाल- चलन की, लेकिन दोनों का लक्ष व्रत द्वारा वृत्ति को बदलने का है। आप सभी ने भी पवित्रता का व्रत लिया और वृत्ति श्रेष्ठ बनाई। सर्व आत्माओं के प्रति क्या वृत्ति बनाई? आत्मा भाई-भाई हैं, ब्रदरहुड–इस वृत्ति से ही ब्राह्मण महान् आत्मा बने। यह व्रत तो सभी का पक्का है ना? ब्राह्मण जीवन का अर्थ ही है पवित्र आत्मा, और ये पवित्रता ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है। फाउण्डेशन पक्का है ना कि हिलता है? ये फाउण्डेशन सदा अचल-अडोल रहना ही ब्राह्मण जीवन का सुख प्राप्त करना है।

23.12.93... बापदादा हर एक ब्राह्मण बच्चे को सम्पूर्ण और सम्पन्न देखना चाहते हैं। तो जैसे इस मुख बात को जीवन में अपनाया है, असम्भव को सम्भव सहज किया है तो और सर्व प्रकार की पवित्रता को धारण करना क्या बड़ी बात है! पवित्रता की परिभाषा सभी बहुत अच्छी तरह से जानते हो। अगर आप सबको कहें ''पवित्रता क्या है'' इस टॉपिक पर भाषण करो तो अच्छी तरह से कर सकते हो ना? जब जानते भी हो और मानते भी हो फिर 'उतना', 'जितना' ये शब्द क्यों? कौन-सी पवित्रता कमज़ोर होती है, जो सुख, शान्ति और शक्ति की अनुभूति कम हो जाती है? पवित्रता किसी न किसी स्टेज में अचल नहीं रहती, तो किस रूप की पवित्रता की हलचल है उसको चेक करो। बापदादा पवित्रता के सर्व रूपों को स्पष्ट नहीं करते क्योंकि आप जानते हो, कई बार सुन चुके हो, सुनाते भी रहते हो, अपने आपसे भी बात करते रहते हो कि हाँ, ये है, ये है. . .। मैजारिटी की रिज़ल्ट देखते हुए क्या दिखाई देता है? कि ज्ञान बहुत है, योग की विधि के भी विधाता बन गये, धारणा के विषय पर वर्णन करने में भी बहुत होशियार हैं और सेवा में एक-दो से आगे हैं, बाकी क्या है? ज्ञाता तो नम्बरवन हो गये हैं, सिर्फ़ एक बात में अलबेले बन जाते हो, वो है–''स्व को सेकण्ड में व्यर्थ सोचने, देखने, बोलने और करने में फुलस्टॉप लगाकर परिवर्तन करना।''

पवित्रता का अर्थ ही है–सदा संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध और सम्पर्क में तीन बिन्दु का महत्व हर समय धारण करना। कोई भी ऐसी परिस्थिति आये तो सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाने में स्वयं को सदा पहले ऑफर करो–''मुझे करना है''। ऐसी ऑफर करने वाले को तीन प्रकार की दुआएं मिलती हैं–(1) स्वयं को स्वयं की भी दुआएं मिलती हैं, खुशी मिलती है, (2) बाप द्वारा, (3) जो भी जब दु:खधाम को छोड़ चले तो न दु:ख लो, न दु:ख दो।श्रेष्ठ आत्माों ब्राह्मण परिवार की हैं उन्हों के द्वारा भी दुआएं मिलती हैं। तो मरना हुआ या पाना हुआ, क्या कहेंगे? पाया ना। तो फुल स्टॉप लगाने के पुरुषार्थ को वा कन्ट्रोलिंग पॉवर द्वारा परिवर्तन शक्ति को तीव्र गति से बढ़ाओ। अलबेलापन नहीं लाओ–ये तो होता ही है, ये तो चलना ही है. . . ये अलबेलेपन के संकल्प हैं। अलबेलापन परिवर्तन कर अलर्ट बन जाओ।

10.10.94.. .. .. . अपने को कल्प-कल्प की पूज्य आत्मायें अनुभव करते हो? स्मृति है कि हम ही पूज्य थे, हम ही हैं और हम ही बनेंगे? पूज्य बनने का विशेष साधन क्या है? कौन पूज्य बनते हैं? जो श्रेष्ठ कर्म करते हैं और

श्रेष्ठ कर्मों का भी फ़ाउन्डेशन है पवित्रता। पवित्रता पूज्य बनाती है। अभी भी देखो जो नाम से भी पवित्र बनते हैं तो पूज्य बन जाते हैं। लेकिन पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं। ब्रह्मचर्य व्रत को धारण किया इसमें ही सिर्फ श्रेष्ठ नहीं बनना है। यह भी श्रेष्ठ है लेकिन साथ में और भी पवित्रता चाहिये। अगर मन्सा संकल्प में भी कोई निगेटिव संकल्प है तो उसे भी पवित्र नहीं कहेंगे, इसलिए किसी के प्रति भी निगेटिव संकल्प नहीं हो। अगर बोल में भी कोई ऐसे शब्द निकल जाते हैं जो यथार्थ नहीं है तो उसको भी पवित्रता नहीं कहेंगे। यदि संकल्प और बोल ठीक हों लेकिन अपकारी पर उपकार करना-यही ज्ञानी तू आत्मा का कर्तव्य है।सम्बन्ध-सम्पर्क में फ़र्क हो, किससे बहुत अच्छा सम्बन्ध हो और किससे अच्छा नहीं हो तो उसे भी पवित्रता नहीं कहेंगे। तो ऐसे मन्सा-वाचा-कर्मणा अर्थात् सम्बन्ध-सम्पर्क में पवित्र हो? ऐसे पूज्य बने हो? अगर मानो कोई भी बात में कमी है तो उसको खण्डित कहा जाता है। खण्डित मूर्ति की पूजा नहीं होती है। इसलिए ज़रा भी मन्सा, वाचा, कर्मणा में खण्डित नहीं हो अर्थात् अपवित्रता न हो, तब कहा जायेगा पूज्य आत्मा। तो ऐसे पूज्य बने हो? जड़ मूर्ति भी खण्डित हो जाती है तो पूजा नहीं होती। उसको पत्थर मानेंगे, मूर्ति नहीं मानेंगे। मुज़ियम में रखेंगे, मन्दिर में नहीं रखेंगे। तो ऐसे पवित्रता का फ़ाउन्डेशन चेक करो–कोई भी संकल्प आो, तो स्मृति में लाओ कि मैं परम पूज्य आत्मा हूँ। यह याद रहता है या जिस समय कोई बात आती है उस समय भूल जाता है, पीछे याद आता है? फिर पश्चाताप होता है–ऐसे नहीं करते तो बहुत अच्छा होता। तो सदा पवित्र आत्मा हूँ, पावन आत्मा हूँ। पवित्रता अर्थात् स्वच्छता। स्वच्छता कितनी प्यारी लगती है। अगर मन्दिर भी हो, मूर्ति भी हो लेकिन स्वच्छता नहीं तो अच्छा लगेगा? तो मैं पूज्य आत्मा इस शरीर रूपी मन्दिर में विराजमान हूँ–ये स्मृति सदा जीवन में लाओ।

25-1-94.. ... ..स्वच्छता अर्थात् पवित्रता। तो अभी स्वच्छ बन गये ना। मैलापन निकल गया या अभी भी थोड़ा-थोड़ा है? थोड़ा- थोड़ा रह तो नहीं गया? कभी मैले के संग का रंग तो नहीं लग जाता? कभी- कभी मैले का असर होता है? तो स्वच्छता श्रेष्ठ है ना। मैला भी रखो और स्वच्छ भी रखो तो क्या पसन्द करेंगे? स्वच्छ पसन्द करेंगे या मैला भी पसन्द करेंगे? तो सदा मन-बुद्धि स्वच्छ अर्थात् पवित्र। व्यर्थ की अपवित्रता भी नहीं। अगर व्यर्थ भी है तो सम्पूर्ण स्वच्छ नहीं कहेंगे। तो व्यर्थ को समाप्त करना अर्थात् होलीहंस बनना। हर समय बुद्धि में ज्ञान रत्न चलते रहें, मनन चलता रहे। ज्ञान चलेगा तो व्यर्थ नहीं चलेगा। इसको कहा जाता है रत्न चुगना।

9-3-94.. .. .. प्योरिटी की रॉयल्टी ब्राह्मण जीवन की विशेषता है। जैसे कोई रॉयल फैमिली का बच्चा होगा तो उसके चेहरे से चलन से मालूम पड़ता है कि यह कोई रॉयल कुल का है। ऐसे ब्राह्मण जीवन की परख यह प्योरिटी की झलक से ही होती है। और चेहरे वा चलन से पोरिटी की झलक तब दिखाई देगी जब सदा संकल्प में भी प्योरिटी हो। संकल्प में भी अपवित्रता का नाम निशान न हो। तो ऐसे हैं या कभी संकल्प में थोड़ा सा प्रभाव पड़ता है? क्योंकि पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत नहीं। लेकिन प्योरिटी अर्थात् किसी भी विकार अर्थात् अशुद्धि का प्रभाव न हो। तो फ़ाउन्डेशन पक्का है या कभी कभी क्रोध को छुट्टी दे देते हो? बाल बच्चा आ जाता या अंश और वंश सब खत्म। क्या समझते हो? माताओं में मोह आता है? बॉडीकॉन्शसनेस की अटैचमेंट है? कोई विकार का अंश मात्र भी नहीं। क्योंकि बड़ों से तो मोह वा लगाव जल्दी निकल जाता है, लेकिन छोटों-छोटों से थोड़ा जादा होता है। जैसे लौकिक संबंध में भी बच्चों से इतना प्यार नहीं होगा जितना पोत्रों और धोत्रों से होता है। ऐसे विकारों के भी ग्रेट चिल्ड्रेन से प्यार तो नहीं है? फ़ाउन्डेशन प्योरिटी है इसलिए इस फाडन्डेशन के ऊपर सदा ही अटेन्शन रहे।

07.11.95.. .. .. ब्रह्मा बाप ने पवित्रता के कारण, एक नवीनता के कारण गालियाँ भी खाईं। तो पवित्रता फाउण्डेशन है और फाउण्डेशन का ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना ये तो एक कॉमन बात है लेकिन अभी आगे बढ़े हो

तो बचपन की स्टेज नहीं है, अभी तो वानप्रस्थ स्थिति में जाना है। मैं ब्रह्मचारी तो रहता हूँ, पवित्रता तो है ही, सिर्फ इसमें खुश नहीं हो जाओ। वैसे तो अभी दृष्टि-वृत्ति में पवित्रता को और भी अण्डरलाइन करो लेकिन मूल फाउण्डेशन है अपने संकल्प को शुद्ध बनाओ, ज्ञान स्वरूप बनाओ, शक्ति स्वरूप बनाओ।

07.11.95 .. .. ..बापदादा देखते हैं कि पवित्रता की गुह्य भाषा, पवित्रता का गुह्य रहस्य अभी बुद्धि में पूरा स्पष्ट नहीं है। व्यर्थ संकल्प चलना या चलाना, अपने अन्दर भी चलता है और दूसरों को भी चलाने के निमित्त बनते हैं। तो व्यर्थ संकल्प – क्या ये पवित्रता है? तो फिर संकल्प की पवित्रता का रहस्य सभी को प्रैक्टिकल में लाना चाहिए ना। वैसे देखा जाये तो पांचों ही विकार, चाहे काम हो, चाहे मोह हो, सबसे नम्बरवन है काम और लास्ट में है मोह। लेकिन कोई भी विकार जब आता है तो पहले संकल्प में आता है। व्यर्थ संकल्प क्रोध भी पैदा करता है तो काम अर्थात् व्यर्थ दृष्टि, किसी आत्मा के प्रति अगर व्यर्थ दृष्टि भी जाती है तो उस समय पवित्रता नहीं मानी जायेगी। तो यह व्यर्थ संकल्प बाप के प्यार के पीछे न्योछावर क्यों नहीं करते?

वानप्रस्थ स्थिति में जाना है तो दृष्टि-वृत्ति में भी पवित्रता को अण्डरलाइन करो

16.11.95 ...मानो आप चाहते हो कि कान्फ्रेन्स होती है, फंक्शन होते हैं तो उसमें हमारा भी पार्ट होना चाहिए। आख़िर भी हम लोगों को कब चांस मिलेगा? आपकी इच्छा है और आप इशारा भी करते हैं लेकिन आपको चांस नहीं मिलता है तो उस समय चिड़चिड़ापन आता है कि नहीं आता है? चलो, महाक्रोध नहीं भी करो, लेकिन जिसने ना की उनके प्रति व्यर्थ संकल्प भी चलेंगे ना? तो वह पवित्रता तो नहीं हुई। ऑफर करना, विचार देना इसके लिए छुट्टी है लेकिन विचार के पीछे उस विचार को इच्छा के रूप में बदली नहीं करो। जब संकल्प इच्छा के रूप में बदलता है तब चिड़चिड़ापन भी आता है, मुख से भी क्रोध होता है वा हाथ पांव भी चलता है। हाथ पांव चलाना–वह हुआ महाक्रोध। लेकिन निस्वार्थ होकर विचार दो, स्वार्थ रखकर नहीं कि मैंने कहा तो होना ही चाहिए–ये नहीं सोचो। ऑफर भले करो, ये रांग नहीं है। लेकिन क्यों-क्या में नहीं जाओ। नहीं तो ईर्ष्या, घृणा – ये एक-एक साथी आता है। इसलिए अगर पवित्रता का नियम पक्का किया, लगाव मुक्त हो गये तो यह भी लगाव नहीं रखेंगे कि होना ही चाहिए। होना ही चाहिए, नहीं। ऑफर किया ठीक, आपकी निस्वार्थ ऑफर जल्दी पहुँचेगी। स्वार्थ या ईर्ष्या के वश ऑफर और क्रोध पैदा करेगी। तो टीचर्स क्या करेंगी? 100 परसेन्ट लगाव मुक्त।

16.11.95 ...बाप का फरमान है कि सोते समय सदा अपने बुद्धि को क्लीयर करो, चाहे अच्छा, चाहे बुरा, सब बाप के हवाले करो और अपने बुद्धि को खाली करो। दे दिया बाप को और बाप के साथ सो जाओ, अकेले नहीं। अकेले सोते हो ना तभी स्वप्न आते हैं। अगर बाप के साथ सोओ तो कभी ऐसे स्वप्न भी नहीं आ सकते। लेकिन फरमान को नहीं मानते हो तो फरमान के बदले अरमान मिलता है। सुबह को उठकर के दिल में अरमान होता है ना कि मेरी पवित्रता स्वप्न में खत्म हो गई। ये कितना अरमान है! कारण है अलबेलापन। तो अलबेले नहीं बनो।

जितना-जितना पवित्रता के पिल्लर को पक्का करेंगे उतना-उतना ये पवित्रता का पिल्लर लाइट हाउस का काम करेगा।

प्रवृत्ति वालों को तो इन सभी महात्माओं को चरणों में झुकाना है। सब आपके गुण गायेंगे कि ये प्रवृत्ति में रहते भी निर्विघ्न पवित्रता के बल से आगे बढ़ रहे हैं। एक दिन आयेगा जो आप सबके आगे ये महात्मायें झुकेंगे। लेकिन अपना वायदा याद रखना–लगाव मुक्त रहना। पवित्रता का पिल्लर मजबूत करो तो यह पिल्लर लाइट हाउस का काम करता रहेगा अपवित्रता परधर्म है, पवित्रता सच्चा स्वधर्म है

04.12.95 .. .. .. ये चेक करो कि निश्चय का फाउण्डेशन पक्का है? हमारा निश्चय नम्बरवन है वा नम्बर टू है? अगर नम्बरवन निश्चय है तो चलते-चलते मुख्य पवित्रता धारण करने में मुश्किल नहीं लगेगा। अगर पवित्रता स्वप्न मात्र भी हिलाती है, हलचल में आती है, तो समझो नम्बरवन फाउण्डेशन कच्चा है। क्योंकि आत्मा का स्वधर्म पवित्रता है। अपवित्रता परधर्म है और पवित्रता स्वधर्म है। तो जब स्वधर्म का निश्चय हो गया तो परधर्म हिला नहीं सकता।

जब कहते हो सर्वशक्तिमान् बाप हमारे साथ है, तो फिर अपवित्रता आ नहीं सकती। लेकिन यदि आती है तो चेक करो कि – माया ने कोई चोर-गेट तो नहीं बनाकर रखा है? आपके जो विशेष स्वभाव या संस्कार कमज़ोर होंगे उसे ही माया अपना गेट बना देगी तो गेट खुला हुआ है तभी माया आती है। लेकिन यदि सर्वशक्तिमान् साथ है तो ये कमज़ोरी रह नहीं सकती।

13.12.95 .. .. .. जो सदा संगम पर बाप के दिल तख्तनशीन स्वत: और सदा रहता है, कभी-कभी नहीं, जो सदा आदि से अन्त तक स्वप्न मात्र भी, संकल्प मात्र भी पवित्रता के व्रत में सदा रहा है, स्वप्न तक भी अवित्रता को टच नहीं किया है, ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें तख्तनशीन हो सकती हैं।

27.02.96 .. .. .. सत्यता का फाउण्डेशन पवित्रता है। और सत्यता का प्रैक्टिकल प्रमाण चेहरे पर और चलन में दिव्यता होगी। दुनिया में भी अनेक आत्मायें अपने को सत्यवादी कहते हैं वा समझते हैं लेकिन सम्पूर्ण सत्यता पवित्रता के आधार पर होती है। पवित्रता नहीं तो सदा सत्यता रह नहीं सकती है। तो आप सबका फाउण्डेशन क्या है? पवित्रता।

27.02.96 .. .. .. चाहे धर्म आत्मायें, महान आत्मायें भी पार्ट बजाती हैं लेकिन वो आत्मा और शरीर दोनों से पवित्र नहीं हैं और आप देव आत्मायें शरीर और आत्मा दोनों से पवित्र हैं, जो सारे कल्प में और कोई आत्मा ऐसी नहीं। तो पवित्रता का फाउण्डेशन सिवाए आपके और कोई भी आत्मा का श्रेष्ठ नहीं है। आपको देव आत्मा का पार्ट याद है? पाण्डवों को याद है? देव आत्मा की पवित्रता नेचुरल रूप में रही है। महान आत्मायें आत्माओं को पवित्र बनाती हैं लेकिन बहुत पुरुषार्थ से, नेचुरल नहीं। न नेचुरल है न नेचर रूप में है। और आपकी आधा कल्प पवित्रता की जीवन नेचुरल भी है और नेचर भी है। कोई पुरुषार्थ वहाँ नहीं है। यहाँ का पुरुषार्थ वहाँ नेचुरल हो जाता है। क्योंकि वहाँ अपवित्रता का नाम-निशान नहीं, मालूम ही नहीं कि अपवित्रता भी होती है। इसलिए आपके पवित्रता का प्रैक्टिकल स्वरूप देवता अर्थात् दिव्यता का है। सम्पूर्ण सत्यता ही पवित्रता का आधार है। पवित्रता का प्रैक्टिकल स्वरूप देवता अर्थात् दिव्यता है। व्यर्थ संकल्प करना वा दूसरों के व्यर्थ संकल्प चलाने के निमित्त बनना–यह भी अपवित्रता है। पवित्रता ही नवीनता है और यही ज्ञान का फाउण्डेशन है। वानप्रस्थ स्थिति में जाना है तो दृष्टि-वृत्ति में भी पवित्रता को अण्डरलाइन करो। पवित्रता की शक्ति से अपने संकल्पों को शुद्ध, ज्ञान स्वरूप बनाकर कमजोरियों को समाप्त करो। स्वप्न व संकल्प की पवित्रता ही सबसे बड़े से बड़ी पर्सनैलिटी है।

13-3-98.. .. .. हर एक बच्चा ऐसा होलीएस्ट बनता है जो सारे कल्प में और कोई भी ऐसा महान पवित्र आत्मा न बना है, न बन सकते हैं। समय प्रति समय धर्म आत्मायें, महान आत्मायें, पवित्र रहे हैं लेकिन उन्हों की पवित्रता और आपकी पवित्रता में अन्तर है। इस समय आप पवित्र बनते हो, इसी पवित्रता की प्राप्ति वा प्रालब्ध भविष्य अनेक जन्म तक तन-मन-धन, सम्बन्ध, सम्पर्क और साथ में आत्मा भी पवित्र है। शरीर भी पवित्र हो और आत्मा भी पवित्र हो – ऐसी पवित्रता आप आत्मायें प्राप्त करती हो। मन-वचन-कर्म तीनों ही पवित्र बनने से ऐसी प्रालब्ध प्राप्त होती है। तो ऐसे होलीएस्ट आत्मायें हो। अपने को ऐसे श्रेष्ठ होलीएस्ट आत्मायें समझते हो?

30-3-98.. .. .. सदा स्वप्न मात्र भी, संकल्प मात्र भी पवित्रता का खण्डन नहीं हो। अखण्ड पवित्रता- यह है बाल ब्रह्मचारियों का लक्ष्य और लक्षण। अभी तक की मुबारक है लेकिन आगे भी बापदादा यही कहेंगे कि सदा अमर भव के वरदानी रहना ही है। अमर हैं ना! खण्डित तो नहीं ना! देखो खण्डित मूर्ति का कभी पूजन नहीं होता है, तो कोई भी व्रत अगर खण्डित होता है तो वह अमर वरदानी आत्मा नहीं बन सकता है और ऐसा पूज्य जो द्वापर से कलियुग अन्त तक पूज्य बने, ऐसे इष्ट नहीं बन सकते, इसलिए सदा अमरभव।

12-12-98.. .. .. हर ब्राह्मण आत्मा को जन्मते ही स्वयं ब्रह्मा बाप द्वारा मस्तक में स्मृति का तिलक लगता है। स्वयं भगवान तिलकधारी बनाते हैं। साथ-साथ हर ब्राह्मण आत्मा को पवित्रता के महामन्त्र द्वारा लाइट का ताज धारण कराते हैं और साथ-साथ हर ब्राह्मण आत्मा को विश्व-कल्याणकारी आत्मा बनाए ज़िम्मेवारी का ताज धारण कराते हैं। डबल ताज है और भगवान स्वयं अपने दिल तख़्तनशीन बनाते हैं।

13-2-99...पवित्रता का व्रत सिर्फ ब्रह्मचर्य का व्रत नहीं लेकिन ब्रह्मा समान हर संकल्प, बोल और कर्म में पवित्रता – इसको कहा जाता है ब्रह्मचारी और ब्रह्माचारी। हर बोल में पवित्रता का वायब्रेशन समाया हुआ हो। हर संकल्प में पवित्रता का महत्त्व हो। हर कर्म में, कर्म और योग अर्थात् कर्मयोगी का अनुभव हो – इसको कहा जाता है ब्रह्माचारी। ब्रह्मा बाप को देखा हर बोल महावाक्य, साधारण वाक्य नहीं क्योंकि आपका जन्म ही साधारण नहीं, अलौकिक है। अलौकिकता का अर्थ ही है पवित्रता। तो रोज़ रात को अपना टीचर बनकर चेक करो और अपने को परसेन्टेज़ के प्रमाण अपने आपको ही मार्क्स दो। बनना 100 परसेन्ट है। लेकिन हर रोज़ अपने आपको देखो, दूसरे को नहीं देखना। बापदादा ने देखा है कि अपने बजाए दूसरों को देखने लग जाते हैं, वह सहज होता है। तो अपने को देखो कि आज के दिन संकल्प, बोल और कर्म में कितनी परसेन्ट रही?

1-3-99 .. .. .. पवित्रता ब्राह्मण जीवन का मुख्य आधार है। पढ़ाई भी क्या है? आपका स्लोगन भी है ''पवित्र बनो-योगी बनो''। स्लोगन है ना? पवित्रता ही महानता है। पवित्रता ही योगी जीवन का आधार है। कभी-कभी बच्चे अनुभव करते हैं कि अगर चलते-चलते मन्सा में भी अपवित्रता अर्थात् वेस्ट वा निगेटिव, परचिंतन के संकल्प चलते हैं तो कितना भी योग पावरफुल चाहते हैं, लेकिन होता नहीं है क्योंकि ज़रा भी अंशमात्र संकल्प में भी किसी प्रकार की अपवित्रता है तो जहाँ अपवित्रता का अंश है वहाँ पवित्र बाप की याद जो है, जैसा है वैसे नहीं आ सकती। जैसे दिन और रात इक्ट्ठा नहीं होता। इसीलिए बापदादा वर्तमान समय पवित्रता के ऊपर बार-बार अटेन्शन दिलाते हैं। कुछ समय पहले बापदादा सिर्फ कर्म में अपवित्रता के लिए इशारा देते थे लेकिन अभी समय सम्पूर्णता के समीप आ रहा है इसलिए मन्सा में भी अपवित्रता का अंश धोखा दे देगा। तो मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें पवित्रता अति आवश्यक है। मन्सा को हल्का नहीं करना क्योंकि मन्सा बाहर से दिखाई नहीं देती है लेकिन मन्सा धोखा बहुत देती है। ब्राह्मण जीवन का जो आन्तरिक वर्सा सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप, मन की सन्तुष्टता है, उसका अनुभव करने के लिए मन्सा की पवित्रता चाहिए। बाहर के साधनों द्वारा या सेवा द्वारा अपने आपको ख़ुश करना – यह भी अपने को धोखा देना है। बापदादा देखते हैं कभी-कभी बच्चे अपने को इसी आधार पर अच्छा समझ, ख़ुश समझ धोखा दे देते हैं, दे भी रहे हैं। दे देते हैं और दे भी रहे हैं, यह भी एक गुह्य राज़ है। क्या होता है, बाप दाता है, दाता के बच्चे हैं, तो सेवा युक्तियुक्त नहीं भी है, मिक्स है, कुछ याद और कुछ बाहर के साधनों63 वा ख़ुशी के आधार पर है, दिल के आधार पर नहीं लेकिन दिमाग के आधार पर सेवा करते हैं तो सेवा का प्रत्यक्ष फल उन्हों को भी मिलता है; क्योंकि बाप दाता है और वह उसी में ही ख़ुश रहते हैं

कि वाह हमको तो फल मिल गया, हमारी अच्छी सेवा है। लेकिन वह मन की सन्तुष्टता सदाकाल नहीं रहती और आत्मा योगयुक्त पावरफुल याद का अनुभव नहीं कर सकती, उससे वंचित रह जाते। बाकी कुछ भी नहीं मिलता हो, ऐसा नहीं है। कुछ-न-कुछ मिलता है लेकिन जमा नहीं होता। कमाया, खाया और खत्म। इसलिए यह भी अटेन्शन रखना। सेवा बहुत अच्छी कर रहे हैं, फल भी अच्छा मिल गया, तो खाया और खत्म। जमा क्या हुआ? अच्छी सेवा की, अच्छी रिज़ल्ट निकली, लेकिन वह सेवा का फल मिला, जमा नहीं होता। इसलिए जमा करने की विधि है – मन्सा, वाचा, कर्मणा - पवित्रता। फाउण्डेशन पवित्रता है। सेवा में भी फाउण्डेशन पवित्रता है। स्वच्छ हो, साफ़ हो। और कोई भी भाव मिक्स नहीं हो। भाव में भी पवित्रता, भावना में भी पवित्रता। होली का अर्थ ही है – पवित्रता। अपवित्रता को जलाना। इसीलिए पहले जलाते हैं फ़िर मनाते हैं और फ़िर पवित्र बन संस्कार मिलन मनाते हैं। तो होली का अर्थ ही है – जलाना, मनाना।

1-3-99.. .. .. बापदादा एक-एक बच्चे के मस्तक में सम्पूर्ण पवित्रता की चमकती हुई मणी देखने चाहते हैं। नयनों में पवित्रता की झलक, पवित्रता के दो नयनों के तारे, रूहानियत से चमकते हुए देखने चाहते हैं। बोल में मधुरता, विशेषता, अमूल्य बोल सुनने चाहते हैं। कर्म में सन्तुष्टता, निर्माणता सदा देखने चाहते हैं। भावना में – सदा शुभ भावना और भाव में सदा आत्मिक भाव, भाई-भाई का भाव। सदा आपके मस्तक से लाइट का, फ़रिश्ते पन का ताज दिखाई दे। दिखाई देने का मतलब है अनुभव हो। ऐसे सजे सजाये मूर्त्त देखने चाहते हैं। और ऐसी मूर्त्त ही श्रेष्ठ पूज्य बनेगी। वह तो आपके जड़ चित्र बनायेंगे लेकिन बाप चैतन्य चित्र देखने चाहते हैं।

26-08-99 .. .. .. पवित्र आत्माओं को बाबा बार-बार मुरली द्वारा इशारा देता रहता है कि बच्चे सम्पूर्ण पवित्र भव। केवल ब्रह्मचर्य ही पवित्रता नहीं है लेकिन मन की पवित्रता, वाणी की पवित्रता, जीवन की पवित्रता, संग की पवित्रता यह भी सब पवित्रतायें हैं। और जो इसे जीवन में जितना धारण करता है उतना बड़ा विश्व का महाराजा, महारानी बनता है। इसलिए आपके यादगार देवी-देवताओं को 'कमल-आसन' पर दिखाते हैं और गायन भी करते हैं कमल-नयन, चरण कमल, मुख-कमल.... तो एक एक अंग इतने पवित्र बने हैं तब उनका गायन भक्तिमार्ग में होता है। तो ऐसे गायन और पूजन योग्य आत्माओं को देख बाबा भी खुश होता है और देखता है कि इसमें मेरे विजयी रत्न 108 की माला में आने वाले कौन-कौन हैं? और बच्चे खुद भी समझते हैं कि मैं विजयमाला में आने लायक हूँ या नहीं ?

11-11-2000 .. .. ..सारी विश्व में समय प्रति समय होलीएस्ट आत्मायें आती रही हैं। आप भी होलीएस्ट हो लेकिन आप श्रेष्ठ आत्मायें प्रकृतिजीत बन, प्रकृति को भी सतोप्रधान बना देती हो। आपके पवित्रता की पावर प्रकृति को भी सतोप्रधान पवित्र बना देती है। इसलिए आप सभी आत्मायें प्रकृति का यह शरीर भी पवित्र प्राप्त करती हो। आपके पवित्रता की शक्ति विश्व के जड़, चैतन्य, सर्व को पवित्र बना देती है इसलिए आपको शरीर भी पवित्र प्राप्त होता है। आत्मा भी पवित्र, शरीर भी पवित्र और प्रकृति के साधन भी सतोप्रधान पावन होते हैं। इसलिए विश्व में होलीएस्ट आत्मायें हो। होलीएस्ट हो? अपने को समझते हो कि हम विश्व की होलीएस्ट आत्मायें हैं?

15-12-2001 .. . .. रूहानियत का आधार है पवित्रता। जितनी-जितनी मन-वाणी-कर्म में पवित्रता होगी उतना ही रूहानियत दिखाई देगी। पवित्रता ब्राह्मण जीवन का शृंगार है। पवित्रता ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है। तो बापदादा हर बच्चे की पवित्रता के आधार पर रूहानियत को देख रहे हैं। रूहानी आत्मा इस लोक में रहते हुए भी अलौकिक फ़रिश्ता दिखाई देगी। तो अपने आपको देखो, चेक करो - हमारे संकल्प, बोल में रूहानियत है?

पवित्रता स्वप्न तक भी भंग न हो तब रूहानियत दिखाई देगी। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, लेकिन हर बोल ब्रह्माचारी हो, हर संकल्प ब्रह्माचारी हो, हर कर्म ब्रह्माचारी हो।

28-03-2002 .. .. . द्वापर के आदि की महान आत्मायें और समय प्रति समय आये हुए धर्म पितायें भी पवित्र, होली बने हैं। लेकिन आपकी पवित्रता सबसे श्रेष्ठ भी है, न्यारी भी है। कोई भी सारे कल्प में चाहे महात्मा है, चाहे धर्म आत्मा है, धर्म पिता है लेकिन आप की आत्मा भी पवित्र, शरीर भी पवित्र, प्रकृति भी सतोप्रधान पवित्र, ऐसा होलीएस्ट कोई न बना है, न बन सकता है। अपना भविष्य स्वरूप सामने लाओ।

25-10-02 .. .. .. बापदादा ने ड्रामानुसार आप सबको दुनिया के आगे, विश्व के आगे एग्जैम्पुल बनाया है। चैलेन्ज करने के लिए। तो प्रवृत्ति में रहते भी निवृत्त, अपवित्रता से निवृत्त रह सकते हो? तो चैलेन्ज करने वाले हो ना? सभी चैलेन्ज करने वाले हो, थोड़ा-थोड़ा डरते तो नहीं हो, चैलेन्ज तो करें लेकिन पता नहीं क्या हो! तो चैलेन्ज करो विश्व को क्योंकि नई बात यही है कि साथ रहते भी स्वप्न मात्र भी अपवित्रता का संकल्प नहीं आये, यही संगमयुग के ब्राह्मण जीवन की विशेषता है। तो ऐसे विश्व के शोकेस में आप एग्जैम्पुल हो, सैम्पुल कहो एग्जैम्पुल कहो। आपको देख करके सबमें ताकत आयेगी हम भी बन सकते हैं। ठीक है ना? शक्तियां ठीक है? पक्के हो ना? कच्चे पक्के तो नहीं? पक्के। बापदादा भी आपको देख करके खुश है। मुबारक हो।

28-02-2003 .. .. .. पवित्रता आप ब्राह्मणों का सबसे बड़े से बड़ा श्रृंगार है, इसीलिए आपके चित्रों का कितना श्रृंगार करते हैं। यह पवित्रता का यादगार श्रृंगार है। पवित्रता, सम्पूर्ण पवित्रता, काम चलाऊ पवित्रता नहीं। सम्पूर्ण पवित्रता आप ब्राह्मण जीवन की सबसे बड़े ते बड़ी प्रापर्टी है, रॉयल्टी है, पर्सनाल्टी है। इसीलिए भक्त लोग भी एक दिन पवित्रता का व्रत रखते हैं। यह आपकी कॉपी की है।

22-8-02 .. .. .. आज के समय अनुसार सर्व आत्माओं को पवित्रता की ही आवश्यकता है। पवित्रता नहीं तो सुख-शान्ति भी नहीं आ सकती। आप ब्राह्मण बच्चों को भी वर्तमान समय हर संकल्प में पवित्रता ही महान बनाती है। ब्राह्मण बच्चों ने जब से ब्राह्मण जन्म लिया है तब से ही बापदादा ने पवित्रता का कंगन बांधा है, इस बंधन को सब मिलकर फिर से स्मृति स्वरूप बनने और बनाने के लिए यह उत्सव मनाते हैं।

15-11-2003 .. .. ..जैसे आप ब्राह्मण आत्माओं की सफेद ड्रेस सभी को कितनी न्यारी और प्यारी लगती है। स्वच्छता, सादगी और पवित्रता अनुभव होती है। दूर से ही जान जाते हैं यह ब्रह्माकुमार कुमारी है। ऐसे ही आप ब्राह्मण आत्माओं के चलन और चेहरे से सदा खुशी की झलक, खुशनसीब की फलक दिखाई दे। आज सर्व आत्मायें महान दु:खी हैं, ऐसी आत्मायें आपका खुशनुम: चेहरा देख, चलन देख एक घड़ी की भी खुशी की अनुभूति करें, जैसे प्यासी आत्मा को अगर एक बूंद पानी की मिल जाती है तो कितना खुश हो जाता है। ऐसे खुशी की अंचली आत्माओं के लिए बहुत आवश्यक है। ऐसे सर्व खजानों से सदा सम्पन्न हो।

15-11-2003...कुमार यह कमाल दिखावें कि स्वप्न मात्र पवित्रता में परिपक्व हैं। बापदादा विश्व में चैलेन्ज करके बताये कि ब्रह्माकुमार यूथ कुमार, डबल कुमार हैं ना। ब्रह्माकुमार भी हो और शरीर में भी कुमार हो। तो पवित्रता की परिभाषा प्रैक्टिकल में हो। तो आर्डर करें, आपको चेक करें पवित्रता के लिए। करें आर्डर? इसमें हाथ नहीं उठा रहे हैं। मशीनें होती हैं चेक करने की। स्वप्न तक भी अपवित्रता हिम्मत नहीं रखे। कुमारियों को भी ऐसे बनना है, कुमारी अर्थात् पूज्य पवित्र कुमारी। कुमार और कुमारियां यह बापदादा को प्रॉमिस करें कि हम सभी इतने पवित्र हैं जो स्वप्न में भी संकल्प नहीं आ सकता, तब कुमार और कुमारियों की पवित्रता सेरीमनी मनायेंगे। अभी थोड़ा-थोड़ा है, बापदादा को पता है। अपवित्रता की अविद्या हो क्योंकि नया जन्म लिया ना। अपवित्रता

आपके पास्ट जन्म की बात है। मरजीवा जन्म, जन्म ही ब्रह्मा मुख से पवित्र जन्म है। तो पवित्र जन्म की मर्यादा बहुत आवश्यक है। कुमार कुमारियों को यह झण्डा लहराना चाहिए। पवित्र हैं, पवित्र संस्कार विश्व में फैलायेंगे, यह नारा लगे। सुना कुमारियों ने। देखो कुमारियां कितनी हैं। अभी देखेंगे कुमारियां यह आवाज फैलाती हैं या कुमार? ब्रह्मा बाप को फॉलो करो। अपवित्रता का नाम निशान नहीं, ब्राह्मण जीवन माना यह है। माताओं में भी मोह है तो अपवित्रता है। मातायें भी ब्राह्मण हैं ना। तो ना माताओं में, ना कुमारियों में, ना कुमारों में, न अधर कुमार कुमारियों में। ब्राह्मण माना ही है पवित्र आत्मा। अपवित्रता का अगर कोई कार्य होता भी है तो यह बड़ा पाप है। इस पाप की सजा बहुत कड़ी है। ऐसे नहीं समझना यह तो चलता ही है। थोड़ा बहुत तो चलेगा ही, नहीं। यह फर्स्ट सबजेक्ट है। नवीनता ही पवित्रता की है। ब्रह्मा बाप ने अगर गालियां खाई तो पवित्रता के कारण। हो गया, ऐसे छूटेंगे नहीं। अलबेले नहीं बनो इसमें। कोई भी ब्राह्मण चाहे सरेण्डर है, चाहे सेवाधारी है, चाहे प्रवृत्ति वाला है, इस बात में धर्मराज भी नहीं छोड़ेगा, ब्रह्मा बाप भी धर्मराज को साथ देगा। इसलिए कुमार कुमारियां कहाँ भी हो, मधुबन में हो, सेन्टर पर हो लेकिन इसकी चोट, संकल्प मात्र की चोट बहुत बड़ी चोट है। गीत गाते हो ना - पवित्र मन रखो, पवित्र तन रखो.. गीत है ना आपका। तो मन पवित्र है तो जीवन पवित्र है इसमें हल्के नहीं होना, थोड़ा कर लिया क्या है! थोड़ा नहीं है, बहुत है। बापदादा आफीशियल इशारा दे रहा है, इसमें नहीं बच सकेंगे। इसका हिसाब-किताब अच्छी तरह से लेंगे, कोई भी हो। इसलिए सावधान, अटेन्शन। सुना - सभी ने ध्यान से। दोनों कान खोल के सुनना। वृत्ति में भी टचिंग नहीं हो। दृष्टि में भी टचिंग नहीं। संकल्प में नहीं तो वृत्ति दृष्टि क्या है! क्योंकि समय सम्पन्नता का समीप आ रहा है, बिल्कुल प्युअर बनने का। उसमें यह चीज़ तो पूरा ही सफेद कागज पर काला दाग है।

17-02-2004.. .. .. बापदादा भक्तों के भक्ति की लीला देख उन्हें भी मुबारक देते हैं क्योंकि यादगार सब अच्छी तरह से कॉपी की है। वह भी इसी दिन व्रत रखते हैं, वह व्रत रखते हैं थोड़े समय के लिए, अल्पकाल के खान-पान और शुद्धि के लिए। आप व्रत लेते हो सम्पूर्ण पवित्रता, जिसमें आहार- व्यवहार, वचन, कर्म, पूरे जन्म के लिए व्रत लेते हो। जब तक संगम की जीवन में जीना है तब तक मन-वचन-कर्म में पवित्र बनना ही है। न सिर्फ बनना है लेकिन बनाना भी है। तो देखो भक्तों की बुद्धि भी कम नहीं है, यादगार की कॉपी बहुत अच्छी की है। आप सभी सब व्यर्थ समर्पण कर समर्थ बने हो अर्थात् अपने अपवित्र जीवन को समर्पण किया, आपकी समर्पणता का यादगार वह बलि चढ़ाते हैं लेकिन स्वयं को बलि नहीं चढ़ाते, बकरे को बलि चढ़ा देते हैं। देखो कितनी अच्छी कॉपी की है, बकरे को क्यों बलि चढ़ाते हैं? इसकी भी कॉपी बहुत सुन्दर की है, बकरा क्या करता है? में-में-में करता है ना! और आपने क्या समर्पण किया? मैं, मैं, मैं। देह-भान का मैं-पन, क्योंकि इस मैं-पन में ही देह-अभिमान आता है। जो देह-अभिमान सभी विकारों का बीज है।

03-02-06.. .. ..बाप के दिल पसन्द स्थिति है ही सम्पूर्ण पवित्रता। इस ब्राह्मण जन्म का फाउण्डेशन भी सम्पूर्ण पवित्रता है। सम्पूर्ण पवित्रता की गुह्यता को जानते हो? संकल्प और स्वप्न में भी रिंचक मात्र अपवित्रता का नाम-निशान न हो। बापदादा आजकल के समय की समीपता प्रमाण बार-बार अटेन्शन खिंचवा रहे हैं कि सम्पूर्ण पवित्रता के हिसाब से व्यर्थ संकल्प, यह भी सम्पूर्णता नहीं है।

14-03-06.. .. .. बापदादा ऐसे होली अर्थात् महान पवित्र बच्चों के मस्तक पर चमकता हुआ भाग्य का सितारा देख रहे हैं। ऐसे महान पवित्र सारे कल्प में और कोई नहीं बनता। इस संगमयुग पर पवित्रता का व्रत लेने वाले भाग्यवान बच्चे भविष्य में डबल पवित्र शरीर से भी पवित्र और आत्मा भी पवित्र बनते हैं। सारे कल्प में चक्र

लगाओ चाहे कितनी भी महान आत्मायें आये हैं लेकिन शरीर भी पवित्र और आत्मा भी पवित्र, ऐसा पवित्र न धर्म आत्मा बने हैं, न महात्मा बने हैं। बापदादा को आप बच्चों के ऊपर नाज़ है वाह! मेरे महान पवित्र बच्चे वाह! डबल पवित्र, डबल ताजधारी भी कोई नहीं बनता, डबल ताजधारी भी आप श्रेष्ठ आत्मायें बनती हैं। अपना वह डबल पवित्र डबल ताजधारी स्वरूप सामने आ रहा है ना! इसलिए आप बच्चों की जो इस संगमयुग में प्रैक्टिकल जीवन बनी है, उस एक-एक जीवन की विशेषता का यादगार दुनिया वाले उत्सव के रूप में मनाते रहते हैं।

02-02-07.. .. .. इस ज्ञान का फाउण्डेशन ही है होली अर्थात् पवित्र बनना। तो हर एक बच्चा होलीएस्ट है, पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं लेकिन मन-वाणी-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में पवित्रता। आप देखो, आप परमात्म ब्राह्मण आत्मायें आदि-मध्य-अन्त तीनों ही काल में होलीएस्ट रहती हो। पहले-पहले आत्मा जब परमधाम में रहते हो तो वहाँ भी होलीएस्ट हो फिर जब आदि में आते हो तो आदिकाल में भी देवता रूप में होलीएस्ट आत्मा रहे। होलीएस्ट अर्थात् पवित्र आत्मा की विशेषता है - प्रवृत्ति में रहते सम्पूर्ण पवित्र रहना। और भी पवित्र बनते हैं लेकिन आपकी पवित्रता की विशेषता है - स्वप्नमात्र भी अपवित्रता मन-बुद्धि में टच नहीं करे। सतयुग में आत्मा भी पवित्र बनती और शरीर भी आपका पवित्र बनता। आत्मा और शरीर दोनों की पवित्रता जो देव आत्मा रूप में रहती है, वह श्रेष्ठ पवित्रता है।

15-02-07.. .. .. आज बापदादा उस भगत आत्मा, जिसने आपके इस विचित्र जन्म दिन मनाने को, आप ज्ञान और प्रेम रूप में मनाते और उस भगत आत्मा ने भावना, श्रद्धा के रूप में आपके मनाने की कापी अच्छी की है, तो आज उस बच्चे को मुबारक दे रहे थे कि कापी करने में अच्छा पार्ट बजाया है। देखो हर बात को कापी की है। कापी करने का भी तो अक्ल चाहिए ना! मुख्य बात तो इस दिन भक्त लोग भी व्रत रखते हैं, वह व्रत खाने पीने का रखते हैं, भावना में वृत्ति को श्रेष्ठ बनाने के लिए व्रत रखते हैं, उन्हों को हर वर्ष रखना पड़ता और आपने क्या व्रत लिया? एक ही बार व्रत लेते हो, वर्ष-वर्ष व्रत नहीं लेते। एक ही बार व्रत लिया पवित्रता का। सभी ने पवित्रता का व्रत लिया है, पक्का लिया है? जिन्होंने पक्का लिया है वह हाथ उठाओ, पक्का, थोड़ा भी कच्चा नहीं। पक्का? अच्छा। दूसरा भी प्रश्न है, अच्छा व्रत तो लिया मुबारक हो। लेकिन अपवित्रता के मुख्य पांच साथी हैं, ठीक है ना! कांध हिलाओ। अच्छा पांचों का व्रत लिया है? या दो तीन का लिया है? क्योंकि जहाँ पवित्रता है वहाँ अगर अंश मात्र भी अपवित्रता है तो क्या सम्पूर्ण पवित्र आत्मा कहा जायेगा? और आप ब्राह्मण आत्माओं की तो पवित्रता ब्राह्मण जन्म की प्रापर्टी है, पर्सनैलिटी है, रॉयल्टी है। तो चेक करो - कि सम्पूर्ण पवित्रता में ऐसे तो नहीं, मुख्य पवित्रता के ऊपर अटेन्शन है लेकिन और अव्यक्त बापदादा जो साथी हैं, उसको हल्का तो नहीं छोड़ा है?

03-03-07.. .. .. होली अर्थात् महान पवित्र आत्मायें। दुनिया वाले तो शरीर को स्थूल रंग से रंगते हैं लेकिन आप आत्माओं ने आत्मा को कौन से रंग में रंगा है? सबसे अच्छे ते अच्छा रंग कौनसा है? अविनाशी रंग कौनसा है? आप जानते हो, आप सबने परमात्म संग का रंग आत्मा को लगाया जिससे आत्मा पवित्रता के रंग में रंग गई। यह परमात्म संग का रंग कितना महान और सहज है इसलिए परमात्म संग का महत्व अभी अन्त में भी सतसंग का महत्व होता है। सतसंग का अर्थ ही है परमात्म संग, जो सबसे सहज है। संग में रहना और ऊंचे ते ऊंचे सांग में रहना क्या मुश्किल है क्या? और इस संग के रंग में रहने से जैसे परमात्मा ऊंचे ते ऊंचा है वैसे आप बच्चे भी ऊंचे ते ऊंचे पवित्र महान आत्मायें पूज्य आत्मायें बन गई।

31-03-07.. .. .. अभी की पवित्रता के कारण आपके जड़ चित्र से भी पवित्रता की मांग करते हैं। पवित्रता अर्थात् एक धर्म अब की स्थापना है जो भविष्य में भी चलती है। ऐसे ही भविष्य का क्या गायन है? एक राज्य,

एक धर्म और साथ में सदा सुख-शान्ति, सम्पत्ति, अखण्ड सुख, अखण्ड शान्ति, अखण्ड सम्पत्ति। तो अब के आपके स्वराज्य के जीवन में, वह है विश्व राज्य और इस समय है स्वराज्य, तो चेक करो अविनाशी सुख, परमात्म सुख, अविनाशी अनुभव होता है? ऐसे तो नहीं, कोई साधन वा कोई सैलवेशन के आधार पर सुख का अनुभव तो नहीं होता? कभी दुःख की लहर किसी भी कारण से अनुभव में नहीं आनी चाहिए। कोई नाम, मान-शान के आधार पर तो सुख अनुभव नहीं होता है? क्यों? यह नाम मान शान, साधन, सैलवेशन यह स्वयं ही विनाशी हैं, अल्पकाल के हैं। तो विनाशी आधार से अविनाशी सुख नहीं मिलता। चेक करते जाओ। अभी भी सुनते भी जाओ और अपने में चेक भी करते जाओ तो पता पड़ेगा कि अब के संस्कार और भविष्य संसार की प्रालब्ध में कितना अन्तर है!

30-11-07.. .. .. इस सत्यता की शक्ति का आधार है सम्पूर्ण पवित्रता। मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क, स्वप्न में भी अपवित्रता का नाम निशान न हो। ऐसी पवित्रता का प्रत्यक्ष स्वरूप क्या दिखाई देता? ऐसी पवित्र आत्मा के चलन और चेहरे में स्पष्ट दिव्यता दिखाई देती है। उनके नयनों में रूहानी चमक, चेहरे में सदा हर्षितमुखता और चलन में हर कदम में बाप समान कर्मयोगी। ऐसे सत्यवादी सत बाप द्वारा इस समय आप सभी बन रहे हो। दुनिया में भी कई अपने को सत्यवादी कहते हैं, सच भी बोलते हैं लेकिन सम्पूर्ण पवित्रता ही सच्ची सत्यता की शक्ति है। जो इस समय इस संगमयुग में आप सभी बन रहे हो। इस संगमयुग की श्रेष्ठ प्राप्ति है – सत्यता की शक्ति, पवित्रता की शक्ति। जिसकी प्राप्ति सतयुग में आप सभी ब्राह्मण सो देवता बन आत्मा और शरीर दोनों से पवित्र बनते हो। सारे सृष्टि चक्र में और कोई भी आत्मा और शरीर दोनों से पवित्र नहीं बनते। आत्मा से पवित्र बनते भी हैं लेकिन शरीर पवित्र नहीं मिलता। तो ऐसी सम्पूर्ण पवित्रता इस समय आप सब धारण कर रहे हो। फलक से कहते हो, याद है क्या फलक से कहते हो? याद करो। सभी दिल से कहते हैं, अनुभव से कहते हैं कि पवित्रता तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, जन्म सिद्ध अधिकार सहज प्राप्त होता है क्योंकि पवित्रता वा सत्यता प्राप्त करने के लिए आप सभी ने पहले अपने सत स्वरूप आत्मा को जान लिया। अपने सत बाप, शिक्षक, सतगुरू को पहचान लिया। पहचान लिया और पा लिया। जब तक कोई अपने सत स्वरूप वा सत बाप को नहीं जानते तो सम्पूर्ण पवित्रता, सत्यता की शक्ति आ नहीं सकती। तो आप सभी सत्यता और पवित्रता की शक्ति के अनुभवी है ना! हैं अनुभवी? अनुभवी हैं? वह लोग प्रयत्न करते हैं लेकिन यथार्थ रूप में ना अपने स्वरूप, न सत बाप के यथार्थ स्वरूप को जान सकते। और आप सबने इस समय के अनुभव द्वारा पवित्रता को ऐसे सहज अपनाया जो इस समय की प्राप्ति का प्रालब्ध देवताओं की पवित्रता नेचरल है और नेचर है। ऐसी नेचरल नेचर का अनुभव आप ही प्राप्त करते हो। तो चेक करो कि पवित्रता वा सत्यता की शक्ति नेचरल नेचर के रूप में बनी है? आप क्या समझते हो? जो समझते हैं कि पवित्रता तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है वह हाथ उठाओ। जन्म सिद्ध अधिकार है कि मेहनत करनी पड़ती है? मेहनत करनी तो नहीं पड़ती ना! सहज है ना! क्योंकि जन्म सिद्ध अधिकार तो सहज प्राप्त होता है । मेहनत नहीं करनी पड़ती। दुनिया वाले असम्भव समझते हैं और आपने असम्भव को सम्भव और सहज बना दिया है।

02-02-08 ....आप ब्राह्मण आत्माओं की प्युरिटी का प्रभाव आदिकाल से प्रसिद्ध है। याद आता है अपना अनादि और आदिकाल! याद करो अनादिकाल में भी आप प्युअर आत्मायें आत्मा रूप में भी विशेष चमकते हुए सितारे, चमकते रहते हैं और भी आत्मायें हैं लेकिन आप सितारों की चमक सबके साथ होते भी विशेष चमकती

है। जैसे आकाश में सितारे अनेक होते हैं लेकिन कोई कोई सितारे स्पेशल चमकने वाले होते हैं। देख रहे हो सभी अपने को, फिर आदिकाल में आपके प्युरिटी की रॉयल्टी और पर्सनालिटी कितनी महान रही है! सभी पहुंच गये आदिकाल में? पहुंच जाओ। चेक करो मेरी चमकने की रेखा कितनी परसेन्ट में है? आदिकाल से अन्तिम काल तक आपके प्युरिटी की रॉयल्टी, पर्सनालिटी सदा रहती है। अनादि काल का चमकता हुआ सितारा, चमकते हुए बाप के साथ-साथ निवास करने वाले। अभी-अभी अपनी विशेषता अनुभव करो। पहुंच गये सब अनादिकाल में? फिर सारे कल्प में आप पवित्र आत्माओं की रॉयल्टी भिन्न-भिन्न रूप में रहती है क्योंकि आप आत्माओं जैसा कोई सम्पूर्ण पवित्र बने ही नहीं हैं। पवित्रता का जन्म सिद्ध अधिकार आप विशेष आत्माओं को बाप द्वारा प्राप्त है। अभी आदिकाल में आ जाओ। अनादिकाल भी देखा, अब आदिकाल में आपके पवित्रता की रॉयल्टी का स्वरूप कितना महान है! सभी पहुंच गये सतयुग में। पहुंच गये! आ गये? कितना प्यारा स्वरूप देवता रूप है। देवताओं जैसी रॉयल्टी और पर्सनालिटी सारे कल्प में किसी भी आत्मा की नहीं है। देवता रूप की चमक अनुभव कर रहे हो ना! इतनी रूहानी पर्सनालिटी, यह सब पवित्रता की प्राप्ति है। अभी देवता रूप का अनुभव करते मध्यकाल में आ जाओ। आ गये? आना अनुभव करना सहज है ना। तो मध्यकाल में भी देखो, आपके भक्त आप पूज्य आत्माओं की पूजा करते हैं, चित्र बनाते हैं। कितने रॉयल्टी के चित्र बनाते और कितनी रॉयल्टी से पूजा करते। अपना पूज्य चित्र सामने आ गया है ना! चित्र तो धर्मात्माओं के भी बनते हैं। धर्म पिताओं के भी बनते हैं, अभिनेताओं के भी बनते हैं लेकिन आपके चित्र की रूहानियत और विधि पूर्वक पूजा में फर्क होता है। तो अपना पूज्य स्वरूप सामने आ गया! अच्छा फिर आओ अन्तकाल संगम पर, यह रूहानी ड्रिल कर रहे हो ना! चक्कर लगाओ और अपने प्युरिटी का, अपनी विशेष प्राप्ति का अनुभव करो। अन्तिम काल संगम पर आप ब्राह्मण आत्माओं का परमात्म पालना का, परमात्म प्यार का, परमात्म पढ़ाई का भाग्य आप कोटों में कोई आत्माओं को ही मिलता है। परमात्मा की डायरेक्ट रचना, पहली रचना आप पवित्र आत्माओं को ही प्राप्त होती है। जिससे आप ब्राह्मण ही विश्व की आत्माओं को भी मुक्ति का वर्सा बाप से दिलाते हो। तो यह सारे चक्कर में अनादिकाल, आदिकाल, मध्यकाल और अन्तिमकाल सारे चक्र में इतनी श्रेष्ठ प्राप्ति का आधार पवित्रता है। सारा चक्कर लगाया अभी अपने को चेक करो, अपने को देखो, देखने का आइना है ना! अपने को देखने का आइना है? जिसको है वह हाथ उठाओ। आइना है, क्लीयर है आइना? तो आइने में देखो मेरी पवित्रता का कितना परसेन्ट है? पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं लेकिन ब्रह्माचारी। मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें पवित्रता है? कितनी परसेन्ट में है? परसेन्टेज़ निकालने आती है ना! टीचर्स को आती है? पाण्डवों को आती है? अच्छा होशियार हो। माताओं को आती है? आती है माताओं को? अच्छा। पवित्रता की परख है – वृत्ति, दृष्टि और कृति तीनों में चेक करो, सम्पूर्ण पवित्रता की जो वृत्ति होगी, वह आ गई ना बुद्धि में। सोचो, सम्पूर्ण पवित्रता की वृत्ति अर्थात् हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना। अनुभवी हो ना! और दृष्टि क्या होगी? हर आत्मा को आत्मा रूप में देखना। आत्मिक स्मृति से बोलना, चलना। शार्ट में सुना रहे हैं।

05-03-08 ....बापदादा भी मानते हैं कि मैजारिटी प्यार में पास हैं, लेकिन पवित्रता के व्रत में चारों रूप में मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क चारों ही रूप में सम्पूर्ण पवित्रता का व्रत निभाने में परसेन्टेज आ जाती है। अभी बापदादा क्या चाहते हैं? बापदादा यही चाहते कि जो प्रतिज्ञा की है, समान बनने की, तो हर एक बच्चे की सूरत में बाप की मूर्त दिखाई दे। हर एक बोल में बाप समान बोल हो, बापदादा के बोल वरदान रूप बन जाते हैं।

तो आप सब यह चेक करो, हमारी सूरत में बाप की मूर्त दिखाई देती है? बाप की मूर्त क्या है? सम्पन्न, सब बात में सम्पन्न। ऐसे हर एक बच्चे के नयन, हर एक बच्चे का मुखड़ा बाप समान है? सदा मुस्कराता हुआ चेहरा है? कि कभी सोच वाला, कभी व्यर्थ संकल्पों की छाया वाला, कभी उदास, कभी बहुत मेहनत वाला, ऐसा चेहरा तो नहीं है? सदा गुलाब, कभी गुलाब जैसा खिला हुआ चेहरा, कभी और नहीं बन जाये। क्योंकि बापदादा ने यह भी जन्मते ही बता दिया है कि माया आपके इस श्रेष्ठ जीवन का सामना करेगी। लेकिन माया का काम है आना, आप सदा पवित्रता के व्रत लेने वाली आत्माओं का काम है दूर से ही माया को भगाना।

30-11-08 ...आप सभी भी अपने से पूछो, अपने को चेक करो तो पवित्रता का बल और पवित्रता का फल सदा अनुभव करते हो? सदा रूहानी नशा, दिल में फलक रहती है? कभी-कभी कोई कोई बच्चे जब अमृतवेले मिलन मनाते हैं, रूहरिहान करते हैं तो मालूम है क्या कहते हैं? पवित्रता द्वारा जो अतीन्द्रिय सुख का फल मिलता है वह सदा नहीं रहता। कभी रहता है, कभी नहीं रहता क्योंकि पवित्रता का फल ही अतीन्द्रिय सुख है। तो अपने से पूछो मैं कौन हूँ? सदा अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति में रहते वा कभी-कभी? अपने को कहलाते क्या हो? सभी अपना नाम लिखते तो क्या लिखते हो? बी.के. फलाना.., बी.के. फलानी। और अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान कहते हो। सब हैं ना! मास्टर सर्वशक्तिवान हैं? जो समझते हैं हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, सदा, कभी-कभी नहीं, वह हाथ उठाओ। सदा? देखना, सोचना, सदा हैं? डबल फारेनर्स नहीं हाथ उठा रहे हैं, थोड़े उठा रहे हैं। टीचर्स उठाओ, हैं सदा? ऐसे ही नहीं उठाओ, जो सदा हैं वह सदा वाली उठाओ। बहुत थोड़े हैं। पाण्डव उठाओ, पीछे वाले, बहुत थोड़े हैं। सारी सभा नहीं हाथ उठाती। अच्छा मास्टर सर्वशक्तिवान हैं तो उस समय शक्तियां कहाँ चली जाती? मास्टर हैं, इसका अर्थ ही है, मास्टर तो बाप से भी ऊंचा होता है। तो चेक करो - अवश्य प्युरिटी के फाउण्डेशन में कुछ कमजोर हो। क्या कमजोरी है? मन में अर्थात् संकल्प में कमजोरी है, बोल में कमजोरी है या कर्म में कमजोरी है, या स्वप्न में भी कमजोरी है क्योंकि पवित्र आत्मा का मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क, स्वप्न स्वत: शक्तिशाली होता है। जब व्रत ले लिया, वृत्ति को बदलने का, तो कभी कभी क्यों? समय को देख रहे हो, समय की पुकार, भक्तों की पुकार, आत्माओं की पुकार सुन रहे हो और अचानक का पाठ तो सबको पक्का है तो फाउण्डेशन की कमजोरी अर्थात् पवित्रता की कमजोरी। अगर बोल में भी शुभ भावना, शुभ कामना नहीं, पवित्रता के विपरीत है तो भी सम्पूर्ण पवित्रता का जो सुख है अतीन्द्रिय सुख, उसका अनुभव नहीं हो सकता क्योंकि ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य ही है असम्भव को सम्भव करना। उसमें जितना और उतना शब्द नहीं आता। जितना चाहिए उतना नहीं है। तो कल अमृतवेले विशेष हर एक अपने को, दूसरे को नहीं सोचना, दूसरे को नहीं देखना, लेकिन अपने को चेक करना - कितनी परसेन्टेज़ में पवित्रता का व्रत निभा रहे हैं? चार बातें चेक करना - एक वृत्ति, दूसरा - सम्बन्ध-सम्पर्क में शुभ भावना, शुभ कामना, यह तो है ही ऐसा, नहीं। लेकिन उस आत्मा प्रति भी शुभ भावना।

30-11-08 .....प्युरिटी को पर्सनैलिटी, रीयल्टी, रायॅल्टी कहा जाता है। तो अपनी रॉयल्टी को याद करो। अनादि रूप में भी आप आत्मायें बाप के साथ अपने देश में विशेष आत्मायें हो। जैसे आकाश में विशेष सितारे चमकते हैं ऐसे आप अनादि रूप में विशेष सितारा चमकते हो। तो अपने आदिकाल की रॉयल्टी याद करो। फिर सतयुग में जब आते हैं तो देवता रूप की रॉयल्टी याद करो। सभी के सिर पर रॉयल्टी की लाइट का ताज है। अनादि आदि कितनी रॉयल्टी है। फिर द्वापर में आओ तो भी आपके चित्रों जैसी रॉयल्टी और किसकी नहीं है।

नेताओं के, अभिनेताओं के, धर्म आत्माओं के चित्र बनते हैं लेकिन आपके चित्रों की पूजा और आपके चित्रों की विशेषता कितनी रॉयल है। चित्र को देख कर ही सब खुश हो जाते हैं। चित्रों द्वारा भी कितनी दुआयें लेते हैं। तो यह सब रॉयल्टी पवित्रता की है। पवित्रता ब्राह्मण जीवन का जन्म सिद्ध अधिकार है। पवित्रता की कमी समाप्त होना चाहिए। ऐसे नहीं हो जायेगा, उस समय वैराग्य आ जायेगा तो हो जायेगा, बातें बहुत अच्छी-अच्छी सुनाते हैं। बाबा आप फिक्र नहीं करो हो जायेगा। लेकिन बापदादा को इस जनवरी मास में स्पेशल पवित्रता में हर एक को सम्पन्न करना है। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता है। व्यर्थ बोल, व्यर्थ रूप बोल का, जिसको कहते हैं क्रोध का अंश रोब, संस्कार ऐसे बनाओ जो दूर से ही आपको देख पवित्रता के वायब्रेशन लें क्योंकि आप जैसी पवित्रता, जो रिजल्ट में आत्मा भी पवित्र, शरीर भी पवित्र, डबल पवित्रता प्राप्त है। जब भी कोई भी बच्चा पहले आता है तो बाप का वरदान कौन सा मिलता है? याद है? पवित्र भव, योगी भव। तो दोनों बात को एक पवित्रता और दूसरा फुलस्टाप, योगी। पसन्द है?

30-11-08 .....आप सभी भी मन वचन कर्म, वृत्ति दृष्टि द्वारा पवित्रता का अनुभव कर रहे हो ना! पवित्रता की वृत्ति अर्थात् हर एक आत्मा प्रति शुभ भावना, शुभ कामना। दृष्टि, हर एक आत्मा को आत्मिक स्वरूप में देखना, स्वयं को भी सहज सदा आत्मिक स्थिति में अनुभव करना। ब्राह्मण जीवन का महत्व मन वचन कर्म की पवित्रता है। पवित्रता नहीं तो ब्राह्मण जीवन का जो गायन है सदा पवित्रता के बल से स्वयं भी स्वयं को दुआ देते हैं, क्या दुआ देते? पवित्रता द्वारा सदा स्वयं को भी खुश अनुभव करते और दूसरों को भी खुशी देते। पवित्र आत्मा को तीन विशेष वरदान मिलते हैं - एक स्वयं स्वयं को वरदान देता, जो सहज बाप का प्यारा बन जाता। 2- वरदाता बाप का नियरेस्ट और डियरेस्ट बच्चा बन जाता इसलिए बाप की दुआयें स्वत: प्राप्त होती हैं और सदा प्राप्त होती हैं। तीसरा - जो भी ब्राह्मण परिवार के विशेष निमित्त बने हुए हैं, उन्हों द्वारा भी दुआयें मिलती रहती। तीनों की दुआओं से सदा उड़ता रहता और उड़ाता रहता। तो आप सभी भी अपने से पूछो, अपने को चेक करो तो पवित्रता का बल और पवित्रता का फल सदा अनुभव करते हो?

9-3-09 .....आपकी पवित्रता प्रभु के संग का रंग, परमात्म कम्बाइन्ड रहने का अनुभव सबसे न्यारा और प्यारा है । और जो भी होली , पवित्र बनते हैं तो उन्हों का शरीर पवित्र नहीं बनता, आत्मा पवित्र बनती है है लेकिन आप ऐसे होली बनते हो , पवित्र बनते हो जो आपका शरीर और आत्मा दोनों पवित्र रहते हैं । और पवित्रता को सुख,शान्ति, प्रेम, आनंद की जननी कहा जाता है । जहाँ पवित्रता है वहाँ सुख शान्ति साथ में है ही है क्योंकि जहाँ जननी हो ती वहाँ बच्चे होते हैं क्योंकि बाप आके आपको ऐसा होली बनाता है जो आपके जड़ चित्र कलियुग के लास्ट जन्म में भी आप अपने चित्र देखते हो कितने विधि पूर्व क उन्हों की पूजा होती है , यह पवित्रता की विशेषता है और कितने भी महान आत्मायें , धर्म आत्मायें पवित्र बने हैं लेकिन मन्दिर किसका नहीं बनता है । ऐसे विधि पूर्वक पूजा किसकी भी नहीं हो ती है और लास्ट जन्म तक आपके चित्र भी दुआयें देते रहते हैं ।थोडे समय का सुख शान्ति अनुभव कराते हैं ।

लोग भी होली में क्या करते हैं ? पहले बुराई को जलाते हैं फिर रंग लगाते हैं , मनाते हैं । तो आपकेऊपर बापदादा ने संग का रंग तो लगाया लेकिन साथ में ज्ञान का रंग, शक्तियों का रंग, गुणों का रंग, वह लगाता रहता है । तो सभी के ऊपर यह रूहानी रंग चढ़ा हुआ है ना! चढ़ा है ? हाथ उठाओ । रूहानी रंग चढ़ गया, उतरने वाला तो नहीं है ना! जिसके ऊपर रूहानी रंग चढ़ गया, अविनाशी रंग चढ़ गया, उसकेऊपर और कोई रंग

लग नहीं सकता। इस रंग से कितने होली बन गये हो ? जो सारे कल्प में आप जैसा होली पवित्र और कोई बन नहीं सकता। आपकी पवित्रता प्रभु के संग का रंग, परमात्म कम्बाइन्ड रहने का अनुभव सबसे न्यारा और प्यारा है ।

11-02-10 ....बाबा हम इस पूरे जन्म के लिए, ब्राह्मण जन्म के लिए व्रत धारण करेंगे, व्रत धारण किया है ना! कौन सा? पवित्रता का। एक जन्म का व्रत लिया है लेकिन एक जन्म पवित्रता का व्रत 21 जन्म चलेगा। वह थोड़े समय के लिए खाने पीने और जागरण का कार्य करते हैं। लेकिन आप अभी के एक जन्म के जागरण से अर्थात् अंधकार से रोशनी में आ गये और यह जागरण भी आपका 21 जन्म चलेगा। सारे विश्व में ऐ सा जागरण किया है अव्यक्त बापदादा जो विश्व में आपके जागरण से विश्व जागती ज्योति रहेगी। कोई भी दु:ख अशान्ति का अंधकार नहीं रहेगा।

28-02-10 ...बापदादा चारों ओर के बच्चों के मस्तक में भाग्य का सितारा चमकता हुआ देख रहे हैं। इतना बड़ा भाग्य सारे कल्प में और किसका भी नहीं होता। इस संगमयुग के प्राप्ति के आधार से आप बच्चे ही इतने श्रेष्ठ पवित्र बनते हो जो भविष्य में आप डबल पवित्र बनते हो। आत्मा भी पवित्र और शरीर भी पवित्र। सारे कल्प में चक्र लगाके देखो कोई धर्मात्मा भी डबल पवित्र नहीं बना है। आप बच्चे डबल पवित्र भी बनते हो और डबल पवित्रता की निशानी डबल ताजधारी बनते हो।

15-3-10 ...बाप की हर एक बच्चे के प्रति यही चाहना है कि मेरा एक एक बच्चा बाप समान बने। जैसे बाप वैसे बच्चों की भी श्रेष्ठ स्थिति बने। वह श्रेष्ठ स्थिति क्या है? सम्पूर्ण पवित्रता की स्थिति। ऐसी पवित्रता जो स्वप्न में भी अपवित्रता आ नहीं सके। ऐसी सम्पूर्ण पवित्र स्थिति बना रहे हो? जिस सम्पूर्ण पवित्रता में अपवित्रता का नामनिशान नहीं।

चलते चलते अगर बाप की दी हुई विशेषताओं को अपनी विशेषता समझ अभिमान में आते हैं तो यह भी व्यर्थ संकल्प हुआ और मेरेपन के अशुभ संकल्प मैं कम नहीं हूँ, मैं भी सब जानता हूँ, यह मेरा संकल्प ही यथार्थ है, ऊंचा है, यह मेरेपन का अभिमान का संकल्प यह भी सूक्ष्म अपवित्रता का अंश है। तो अपने को चेक करो किसी भी प्रकार का अपवित्रता के व्यर्थ संकल्प का कोई अंश तो नहीं रह गया है? क्योंकि अभी पवित्र दुनिया की स्थापना का समय समीप लाने वाले आप परमात्म प्यारे बच्चे निमित्त हो। तो जो निमित्त आत्मायें हैं उन्हों का वायब्रेशन चारों ओर फैलता है। तो चेक करो किसी भी प्रकार का व्यर्थ संकल्प भी अपने तरफ खींचता तो नहीं है? क्योंकि अभी पवित्र दुनिया, पवित्र राज्य समीप आ रहा है। दु:ख और अशान्ति चारों ओर भिन्न-भिन्न स्वरूप में बढ़ रही है। उसके लिए पवित्रता का वायब्रेशन आवश्यक है। दु:ख अशान्ति का कारण अपवित्रता है। तो अपवित्र आत्माओं को और भक्त आत्माओं को अभी डबल सेवा चाहिए।

19-10-11 ...मन को घोड़ा भी कहा जाता है लेकिन आपकेपास श्रीमत की लगाम है। है ना लगाम! तो कभी भी अगर मन वेस्ट संकल्प की तरफ ले जाता, लगाम को टाइटकरने से अपने को व्यर्थ संकल्प की थोड़ी भी अपवित्रता को खत्म कर सकते हो। मन के मालिक बन, जैसे ब्रह्माबाप ने रोज़ मन की चेकिंग की, ऐसे रोज़ चेक करो और व्यर्थ संकल्प को समाप्त करो। तो आज बापदादा यहीचाहता है कि इस व्यर्थ संकल्पों को समाप्त करो।

02-02-12 ...संगम पर स्वयं भगवान, आपकी जीवन में स्वयं मालिक आप बच्चों मेंपवित्रता की विशेषता भरता है। जो पवित्रता आपके सर्व अविनाशी सुखों की खान है। और बनाने वाला कौन? स्वयंभगवान। वह तो

अभी भी प्रत्यक्ष प्रमाण आपको पवित्रता की जायदाद बाप से प्राप्त हो गई है। अब चेक करो -पवित्रता सर्व प्राप्तियों का आधार है, पवित्रता से आप सभी मास्टर सर्वशक्तिमान बन गये। तो चेक करो सर्वशक्तियां प्राप्त हैं?

15-03-14...बापदादा चारों ओर के बच्चों को नयनों की दृष्टि देते हुए यही मिलन मना रहे हैं बच्चे सदा हर दिन इसी मिलन के खुशी और मौज़ में आगे बढ़ते चलो। जैसे दिन का नाम है होली, ऐसे जीवन के हर दिन होली बन अर्थात् पवित्र बन पवित्रता के वायब्रेशन चारों ओर फैलाते रहो।

कुमारियों के साथ बापदादा का काफी स्नेह है। क्योंकि बापदादा परमपवित्र हैं और कुमारियाँ भी पवित्र हैं। तो पवित्रता, पवित्रता को खींचती है।

रॉयल्टी और रीयल्टी

5.2.75.. ..आज ऐसी ऊंची आत्माओं की विशेष दो बातें देख रहे हैं। वह कौन-सी हैं? एक रूहानी रॉयल्टी दूसरी पर्सनेलिटी जब हैं ही ऊंचे-से-ऊंचे बाप की ऊंची सन्तान – जिन्हों के आगे देवतायें भी श्रेष्ठ नहीं गाये जाते, राजायें भी चरणों में झुकते हैं, और सर्व नामी-ग्रामी आत्मायें भी भिखारी बन ईश्वरीय प्रसाद लेने के लिए जिज्ञासा रख आने वाली हैं तो ऐसी सर्व- आत्माओं के निमित्त बने हुए आप सभी मास्टर-ज्ञानदाता और वरदाता हो। तो ऐसी रॉयल्टी है? वास्तव में तो प्योरिटी ही रॉयल्टी है और प्योरिटी ही पर्सनेलिटी है। अब अपने को देखो कितने परसेन्ट प्योरिटी धारण की हुई है? प्योरिटी की परख व पहचान हरेक की रॉयल्टी और पर्सनेलिटी से हो रही है। रॉयल्टी कौनसी है? रॉयल आत्मा को हद की विनाशी वस्तु व व्यक्ति में कभी आकर्षण नहीं होगा। जैसे लौकिक रीति से रॉयल पर्सनेलिटी वाली आत्मा को किन्हीं छोटी-छोटी चीजों में ऑख नहीं डूबती है, किसी के द्वारा गिरी हुई कोई भी चीज स्वीकार करने की इच्छा नहीं होती है, उनके नयन सदा सम्पन्न होने के नशे में रहते हैं, अर्थात् नयन नीचे नहीं होते हैं, उनके बोल मधुर और अनमोल अर्थात् गिनती के होते हैं और उनके सम्पर्क में खुमारी अनुभव होती है, ऐसे ही रूहानी रॉयल्टी उससे भी पदम गुणा श्रेष्ठ है। ऐसी रॉयल्टी में रहने वाली आत्माओं की कभी भी एक-दूसरे के अवगुणों या कमजोरी की तरफ आँख भी नहीं जा सकती। जिसको दूसरा छोड़ रहा है अर्थात् मिटाने के पुरुषार्थ में लगा हुआ है, ऐसी छोड़ने वाली चीज अर्थात् गिरावट में लाने वाली चीज और गिरी हुई चीज, रूहानी रॉयल्टी वाले के संकल्प में भी धारण नहीं हो सकती व दूसरे की वस्तु की तरफ कभी संकल्प रूपी ऑख भी नहीं जा सकती। तो यह पुराने तमोगुणी स्वभाव, संस्कार, कमज़ोरियाँ शूद्रों की हैं न कि ब्राह्मणों की। शूद्रों की वस्तु की तरफ संकल्प कैसे जा सकता है? अगर धारण करते हैं तो जैसे कहावत है ना कि ''कख का चोर सो लख का चोर'' – तो यह भी सेकेण्ड-मात्र व संकल्पमात्र धारण करने वाली आत्माएं रॉयल नहीं गायी जायेंगी। रूहानी रॉयल्टी वाली आत्माओं के बोल महावाक्य होते हैं। ये वाक्य गोल्डन वर्शन्स होते हैं, जिन्हें सुनने वाले भी गोल्डन एज के अधिकारी बन जाते हैं। एक-एक बोल रत्न के समान वेल्युएबल होता है वे दु:ख देने वाले, गिराने वाले या पत्थर के समान बोल नहीं होते, साधारण और व्यर्थ भी नहीं होते, समर्थ और स्नेह के बोल होते हैं। सारे दिन के उच्चारण किये हुए बोल ऐसे श्रेष्ठ होते हैं कि हिसाब निकालने पर स्मृति में आ सकते हैं कि आज ऐसे और इतने बोल बोले। रॉयल्टी वाले की निशानी व विशेषता यह है कि पचास बोल बोलने वाले विस्तार के बजाय दस बोल के सार में बोले, क्वॉन्टिटी (Quantity) को कम कर क्वॉलिटी (Quality) में लाये। रूहानी रॉयल्टी वाले के सम्पर्क में जो भी आत्मा आये, उसे थोड़े समय में भी, उस आत्मा के दातापन की व वरदातापन की अनुभूति होनी चाहिए, शीतलता व शान्ति की अनुभूति होनी चाहिए जो हर-एक के मन में यह गुणगान हो कि यह कौनसा फरिश्ता था, जो सम्पर्क में आया। थोड़े समय में भी उस तड़पती हुई और भटकती हुई आत्मा को बहुत काल की प्यास बुझाने का साधन व ठिकाना दिखाई देने लगे। इसको कहा जाता है – पारस के संग लोहा भी पारस हो जाए, अर्थात् रूहानी रॉयल्टी वाले की रूहानी नजर से निहाल हो जाए। ऐसी रॉयल्टी अनुभव करते हो? अब सेवा की गति तीव्र चाहिए। वह तब होगी, जब ऐसी रूहानी रॉयल्टी चेहरे से दिखाई देगी। तब ही सर्व-आत्माओं का उलाहना पूर्ण कर सकेंगे। ऐसी रूहानी रॉयल्टी वाला गिरी हुई चीज़ को कभी भी नहीं उठाता। प्योरिटी की पर्सनेलिटी हो कि जो मस्तक द्वारा शुद्ध आत्मा और सतोप्रधान आत्मा दिखाई दे अर्थात् अनुभव कर सके, नयनों द्वारा भाई-भाई की वृत्ति अर्थात् शुद्ध, श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा वायुमण्डल व वायब्रेशन परिवर्तित

कर सको। जब लौकिक पर्सनेलिटी अपना प्रभाव डाल सकती है तो प्योरिटी की पर्सनेलिटी कितनी प्रभावशाली होगी? शुद्ध स्मृति द्वारा निर्बल आत्माओं को समर्थी स्वरूप बना सकते हो? ऐसी रॉयल्टी और पर्सनेलिटी स्वयं में प्रत्यक्ष रूप में लाओ। तब स्वयं को व बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे! अब विशेष रहमदिल बनो। स्वयं पर भी और सर्व पर भी रहमदिल! सहज ही सर्व के स्नेही और सहयोगी बन जायेंगे। समझा? ऐसे भाग्य का सितारा चमक रहा है न? ऐसे धरती के सितारों को सब चमकता हुआ देखना चाहते हैं।

25.6.77.. ..जितना ऑनेस्ट होगा उतना ही होलीएस्ट होगा। होलीएस्ट बनने की मुख्य बात है – 'बाप से सच्चा बनना।' सिर्फ ब्रह्मचर्य धारण करना यह प्यूरिटी की हाइएस्ट स्टेज दिलवाला बाप के दिलतख्त नशीन हैं और दिलतख्त नशीन बच्चे ही राज्यतख्तनशीन होते हैं।

प्योरिटी ही हाइऐस्ट स्टेज है – रीयल्टी अर्थात् सच्चाई।

19.12.78.. ..बाप-दादा आज विशेष रूप से हर बच्चे में एक विशेषता देख रहे हैं कि हर एक में रीयल्टी (Reality) की रायल्टी (Royalty) कहाँ तक आई है! रीयल्टी ही रायल्टी है। इससे बड़ी रायल्टी और कोई नहीं है। रायल्टी किन बातों की वा रीयल्टी किस बात की ? पहले अपने स्वरूप की रीयल्टी। अगर रीयल्टी अर्थात् अपने असली स्वरूप की सदा स्मृति है तो स्वरूप की रीयल्टी से इस स्थूल सूरत में भी अलौकिक रायल्टी नज़र आयेगी। जो भी देखेंगे उनके मुख से यही निकलेगा कि यह इस दुनिया के नहीं हैं लेकिन अलौकिक दुनिया के फरिश्ते हैं अथवा यह स्वर्ग का कोई देवता उतरा है। ऐसे रायल्टी से अनुभव होगा। दूसरी बात स्मृति में भी रीयल्टी अर्थात् एक बाप दूसरा न कोई। इस रीयल्टी की स्मृति से कर्म में वा बोल में रायल्टी दिखाई देगी। हर कर्म सत्य अर्थात् श्रेष्ठ होने के कारण जो भी सम्पर्क में आयेंगे उन्हें हर कर्म में बाप समान चरित्र अनुभव होंगे। हर बोल में बाप के समान अथार्टी और प्राप्ति की अनुभूति होगी अर्थात् हर बोल समर्थ अर्थात् फल देने वाला होगा। जिसको कहा जाता है सत-वचन। ऐसे कर्म और बोल में रीयल्टी की रायल्टी होगी। सम्पर्क अर्थात् संग रीयल होने के कारण पारस का कार्य करेगा। जैसे पारस लोहे को परिवर्तन कर देता है - ऐसे रीयल्टी की रायल्टी वाली आत्मा का संग असमर्थ को समर्थ बना देगा अर्थात् नकली को असली बना देगा। ऐसी आत्मा के रीयल और रायल नयन अर्थात् दिव्य दृष्टि जादू की वस्तु समान काम करेंगे। अभी-अभी मुक्ति के स्टेज की अनुभूति, अभी-अभी जीवनमुक्ति के स्टेज की अनुभूति, अभी-अभी लास्ट अन्तिम जन्म, अभी-अभी फर्स्ट जन्म का स्पष्ट साक्षात्कार करायेंगे। अभी-अभी अति दु:खी स्टेज, अभी-अभी अति सुखमय जीवन का अनुभव करायेंगे। 'हम सो-सो हम' के जादू के मन्त्र का अनुभव करायेंगे अर्थात् 84 जन्मों का ही ज्ञान स्मृति में दिलायेंगे। अभी-अभी स्थूल वतन, संगम युग के सुख की अनुभूति करायेंगे, अभी-अभी सुक्ष्म फरिश्ते स्वरूप का अनुभव करायेंगे। अभी-अभी परमधाम निवासी आत्मिक स्वरूप का अनुभव करायेंगे, अभी-अभी स्वर्ग के सुखमय जीवन का अनुभव करायेंगे। एक सेकेण्ड में इन चारों ही धामों का अनुभव करायेंगे, यह है जादू मन्त्र। ऐसे रायल्टी वाले सदा सर्व कर्म इन्द्रियों द्वारा कोई न कोई प्राप्ति कराने वाले अर्थात् देने वाले दाता होंगे। ऐसे रायल्टी वाले किसी भी प्रकार के मायावी आकर्षण तरफ संकल्प द्वारा भी झुकेंगे नहीं अर्थात् प्रभावित नहीं होंगे। जैसे आजकल की रायल्टी वाली आत्मायें सदा भरपूर रहने के कारण यहाँ वहाँ किसी के अधीन नहीं होगी। ऐसे सदा बुद्धि भरपूर रहने के कारण, स्थूल में कहते हैं पेट भरा हुआ है और यहाँ बुद्धि हर खज़ाने से भरपूर होगी, इसीलिए कोई भी व्यक्ति वा वैभव के तरफ जो अल्पज्ञ और अल्पकाल के हैं, वहाँ बुद्धि नहीं जायेगी अर्थात् अप्राप्त कोई वस्तु नहीं

होगी -जो लेने के लिए कहाँ नज़र जाए। उनके नयनों में सदा बिन्दु रूप बाप ही समाया हुआ होगा। यह है रायल्टी अर्थात् रीयल्टी। यह देह भी रीयल नहीं, देही रीयल है। तो अपने आप से पूछो रीयल्टी की रायल्टी कहाँ तक आई है। नम्बरवार होगी ना मेरा नम्बर कौन सा है -यह चैक करो। फर्स्ट डिवीज़न में हैं वा सेकेण्ड में हैं, थर्ड तो नहीं कहेगे ना। पंजाब का नम्बर कौन सा है?- सब फर्स्ट डिवीज़न वाले हैं ना? अगर सेकेण्ड़ में भी हो तो आज फर्स्ट में आ जाना। सेकेण्ड नम्बर वालों को भी संगमयुग में भी सर्व प्राप्ति की अनुभूति नहीं होगी। कोई प्राप्ति होगी कोई नहीं होगी - जैसे कई कहते हैं शान्ति की अनुभूति तो होती है लेकिन अतिइन्द्रिय सुख का अनुभव नहीं है। खुशी की अनुभूति होती है लेकिन शक्ति रूप की अनुभूति नहीं होती। फर्स्ट ड़िवीज़न वाले को हर गुण की अनुभूति हर शक्ति की अनुभूति होगी। अगर कोई भी कमी है अर्थात् 14 कला है सेकेण्ड ड़िवीज़न। ऐसी आत्मायें अभी अभी श्रेष्ठ प्राप्ति से वंचित रह जाती और भविष्य में भी सतोप्रधान प्राप्ति के बजाय सतो प्राप्ति करती हैं। तो सेकण्ड डिविजन हो गये ना। फर्स्ट डिवीजन वाले राज्य के, भक्त नहीं अधिकारी बन सर्व अधिकार एक बाप से प्राप्त करो।प्रकृति के सतोप्रधानता का सुख लेंगे और वह सतो का सुख लेगे, सतोप्रधान का नहीं। तो अब सोचो कि क्या लेना है? सतोप्रधानता की प्राप्ति वा सतो की प्राप्ति। सर्व प्राप्ति की अनुभूति वा कोई-कोई प्राप्ति की अनुभूति, खुद ही अपना जज बनो- तो धर्मराज के पास जाना नहीं पड़ेगा। समझा – रीयल्टी ही रायल्टी कैसे है। फिर सुनायेगे कि रायल्टी का विस्तार और भी क्या है। अच्छा

18.11.81.. .. सभी को विशेष रूहानियत का अनुभव कराओ। शान्ति, शक्ति का अनुभव कराओ। नालेज तो बहुत है लेकिन एक सेकेण्ड की अनुभूति ही उन्हों के लिए नवीनता है। सारी विदेश की मैजारिटी आर्टीफिशल शान्ति है, तो रीयल शान्ति, रीयल सुख रीयल स्वरूप की अनुभूति है ही नहीं। अगर वह एक सेकेण्ड की भी हो जायेगी तो नवीनता का अनुभव करेंगे। वैसे भी विदेश में सदा नई चीज़ पसन्द करते हैं। इसलिए यह नवीनता करो। कोई भी नामधारी महात्मा यह अनुभूति नहीं करा सकते। आत्मा परमात्मा का शब्द तो सुनते रहते हैं लेकिन कनेक्शन जुड़वाकर अनुभव करना यह नवीनता है। जिसको कहा जाता है– रीयल्टी का अनुभव करना। यही साधन है।

26.2.84.. .. ''बापदादा आज अपनी चित्रशाला को देख रहे हैं। बापदादा की चित्रशाला है यह जानते हो? आज वतन में हर बच्चे के चरित्र का चित्र देख रहे थे। हर एक का आदि से अब तक का चरित्र का चित्र कैसा रहा! तो सोचो चित्रशाला कितनी बड़ी होगी! उस चित्र में रहेक बच्चे की विशेष तीन बातें देखीं! एक– पवित्रता की पर्सनैलिटी। दूसरा – रीयल्टी की रायल्टी। तीसरा – सम्बन्धों की समीपता। यह तीन बातें हरेक चित्र में देखीं।

प्युरिटी की पर्सनैलिटी आकार रूप में चित्र के चारों ओर चमकती हुई लाइट दिखाई दे रही थी। रीयल्टी की रायल्टी चेहरे पर हर्षितमुखता और स्वच्छता चमक रही थी और सम्बन्धों की समीपता मस्तक बीच चमकता हुआ सितारा कोई ज्यादा चारों ओर फैली हुई किरणों से चमक रहा था, कोई थोड़ी-सी किरणों से चमक रहा था। समीपता वाली आत्मायें बाप समान बेहद की अर्थात् चारों ओर फैलती हुई किरणों वाली थीं। लाइट और माइट दोनों में बाप समान दिखाई दे रही थीं। ऐसे तीनों विशेषताओं से हरेक चरित्र का चित्र देखा।

30.3.85.. ..धारणा स्वरूप में विशेष याद रखना। एक – सब बातों में रीयल्टी हो। मिक्स नहीं। इसको कहते हैं – रीयल्टी। संकल्प में, बोल में, सब बात में रीयल। 'सच्ची दिल पर साहेब राजी'। सच की निशानी क्या होगी? सच तो बिठो नच। जो सच्चा होगा वह सदा खुशी में नाचता रहेगा। तो एक रीयल्टी दूसरा रॉयल्टी। छोटी-छोटी बात में कभी भी बुद्धि झुकाव में न आवे। जैसे रॉयल बच्चे होते हैं तो उन्हों की कब छोटी-सी चीज़ पर नज़र नहीं

जायेगी। अगर नज़र गई तो उसको रॉयल नहीं कहा जाता। किसी भी छोटी-छोटी बातों में बुद्धि का झुकाव हो जाए तो उसको रॉयल्टी नहीं कहा जाता। जो रॉयल होता है वह सदा प्राप्ति स्वरूप होता है। कहाँ अरँख वा बुद्धि नहीं जाती। तो यह है रूहानी रॉयल्टी, कपड़ों की रॉयल्टी नहीं। 'तो रीयल्टी, रॉयल्टी और तीसरा युनिटी'। हर बात में, संकल्प में, बोल में, कर्म में भी सदा एक दो में युनिटी दिखाई दे। ब्राह्मण माना ही एक। लाख नहीं, एक। इसको कहा जाता है युनिटी। वहाँ अनेक स्थिति के कारण एक भी अनेक हो जाते। और यहाँ अनेक होते भी एक हैं। इसको कहा जाता है – 'युनिटी'। दूसरे को नहीं देखना है। हम चाहते हैं युनिटी करें लेकिन यह नहीं करते हैं। अगर आप करते रहेंगे तो उसको डिसयुनिटी का चांस ही नहीं मिलेगा। कोई हाथ ऐसे करता, दूसरा न करे तो आवाज़ नहीं होगा। अगर कोई डिसयुनिटी का कोई भी कार्य करता है, आप युनिटी में रहो तो डिसयुनिटी वाले कब डिसयुनिटी का काम कर नहीं सकेंगे। युनिटी में आना ही पड़ेगा। इसलिए तीन बातें – रीयल्टी, रॉयल्टी और युनिटी। यह तीनों ही बातें सदा बाप समान बनने में सहयोगी बनेंगी। समझा!

4.12.91.. .. पवित्रता की पर्सनैलिटी वाले, रॉयल्टी वाले मन-बुद्धि से भी इस बुराई को टच नहीं करते। क्योंकि सफल तपस्वी अर्थात् सम्पूर्ण वैष्णव। वैष्णव कभी बुरी चीज को टच नहीं करते हैं। तो उन्हों का है स्थूल, आप ब्राह्मण वैष्णव आत्माओं का है सूक्ष्म। बुराई को टच न करना यही तपस्या है। धारण करना अर्थात् ग्रहण करना। ये तो बहुत मोटी बात है। लेकिन संकल्प में भी टच नहीं करना। इसको ही कहा जाता है सच्चे वैष्णव।

11.12.91.. .. आप जैसी रूहानी रॉयल्टी और किसी आत्मा की नहीं है। तो चेक करो- ऐसे प्योरिटी की रॉयल्टी कहाँ तक आई है? रूहानी रॉयल्टी की सबसे श्रेष्ठ निशानी है – रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी अर्थात् सत्यता। जैसे आत्मा का अनादि स्वरूप सत है। सत अर्थात् अविनाशी और सत्य है। जैसे बाप की महिमा विशेष यही गाते रहते हैं – सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। सत्य ही शिव है वा गॉड इज ट्रुथ कहा जाता है। तो बाप की महिमा सत्य अर्थात् सत्यता की है। ऐसे रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी – सत्यता जरा भी बनावटी या मिला वटी न हो। चाहे बोल में, चाहे कर्म में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में मिलावट या बनावट नहीं हो। जिसको साधारण भाषा में बापदादा कहते हैं – सच्चाई। रॉयल आत्माओं की वृत्ति, दृष्टि बोल और चलन सब एक सत्य होगी। ऐसे नहीं कि वृत्ति में एक बात हो और बोल में दूसरा बनावटी भाव हो। इसको रॉयल्टी वा रीयल्टी नहीं कहा जाता है।

आजकल बापदादा बच्चों की लीला देखते भी हैं और सुनते भी हैं। कई बच्चे बात को मिलाने और बनाने में बहुत होशियार हैं। क्योंकि द्वापर से मिलावट और बनावट की कथायें बहुत सुनी हैं। तो इस ब्राह्मण जीवन में भी वह संस्कार इमर्ज कर लेते हैं। ऐसी अच्छे रूप से बात बना लेते हैं जो झूठ को बिल्कुल सम्पूर्ण सत्य बना देते हैं और सत्य को झूठ सिद्ध कर देते हैं। इसको कहा जाता है – अन्दर एक, बाहर दूसरा। तो क्या यह रीयल्टी है? रॉयल्टी है? नहीं है ना । तो ऐसे पवित्रता की रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी। यह रॉयल्टी की निशानी है। अगर यह निशानी नहीं है तो समझो प्योरिटी की रॉयल्टी नहीं आई है वा परसेन्टेज में आई है, सम्पूर्ण नहीं है। रीयल्टी की दूसरी निशानी बापदादा सदा सुनाते रहते हैं – सच तो बिठो नच। सच्ची आत्मायें सदा खुशी में नाचती रहेंगी। कभी खुशी कम, कभी खुशी ज्यादा, ऐसा नहीं होगा। दिन प्रतिदिन, हर समय और खुशी बढ़ती रहेगी। रीयल्टी की निशानी है – सदा खुशी में नाचना। नैन चैन कहते हो ना , रायल्टी का अर्थ भी है चित से भी और नैन चैन से भी सदा हर्षित। सिर्फ बाहर से हर्षितमुख नहीं, लेकिन चित्त में भी हर्षित। हर्षित चित्त हर्षित मुख, दोनों हर्षित हों। कई बार ऐसे भी होता है कि अन्दर चित्त में खुशी नहीं होती लेकिन बाहरमुख में समय प्रमाण खुशनुमा बन करके दिखाते हैं। इसको अल्प काल का हर्षितमुख कहेंगे, लेकिन हर्षित चित्त, हर्षितमुख अविनाशी हो। तो पवित्रता की

रीयल्टी रॉयल्टी अर्थात् अविनाशी चित्त और मुख हर्षित हों। चेक करो – दूसरे को चेक करने नहीं लग जाना, अपने को चेक करना है। ऐसी रॉयल आत्मा बापदादा को और सर्व ब्राह्मण परिवार को अति प्यारी होती है। रीयल प्यारी आत्मा की विशेषता क्या होती है? क्योंकि आजकल के रीति-रसम प्रमाण जो बहुत प्यारा लगता है तो प्यारे के तरफ न चाहते हुए भी आकर्षित हो जाते हैं। जिसको आप लोग अपनी भाषा में अटैचमेन्ट कहते हो। क्योंकि प्यारा है तो अटैचमेन्ट तो होगी ना। लेकिन रीयल और रॉयल प्यार की निशानी है – वो जितना ही प्यारा होगा उतना ही न्यारा भी होगा। इसलिए वह न स्वयं एक्स्ट्रा अटैचमेन्ट में आयेगा, न दूसरा उसकी अटैचमेन्ट में आयेगा। इसको कहा जाता है रीयल प्यार, सम्पूर्ण प्यार। वह हर्षित रहेगा, आकर्षित भी होगा परन्तु हद की आकर्षण करने वाला नहीं। तो रीयल और रॉयल की निशानी क्या हुई? अति प्यारा और अति न्यारा। रॉयल्टी की और विशेषता है उस आत्मा में कभी किसी भी प्रकार के, चाहे स्थूल, चाहे सूक्ष्म, मांगने के संस्कार नहीं होंगे। क्योंकि रॉयल आत्मा सदा सम्पन्न भरपूर रहती है। एक भरपूरता बाहर की होती है स्थूल वस्तुओं से, स्थूल साधनों से भरपूरता। और दूसरी होती है मन की भरपूरता। जो मन से भरपूर रहता है उसके पास स्थूल वस्तु या साधन नहीं भी हो फिर भी मन भरपूर होने के कारण वो कभी अपने में कमी महसूस नहीं करेगा। ना में भी हाँ का अनुभव करेगा। और जिसका मन भरपूर नहीं होता वह आत्मा बाहर से कितनी भी वस्तु और साधन से भरपूर होते भी वह कभी भी अपने को भरपूर नहीं समझेगा। ऐसी आत्मा सदा इच्छा के कारण 'चाहिए चाहिए'का गीत गाती रहेगी। हर बात में ये होना चाहिए, ये करना चाहिए, ये मिलना चाहिए, ये बदलना चाहिए... हर समय यही गीत गाते रहेगें। और मन से भरपूर आत्मा सदा यही गीत गाती रहेगी सब पा लिया, प्राप्त हो गया, ये होना चाहिए, ये करना चाहिए, ये चाहिए चाहिए भी रॉयल मांगने के संस्कार हैं। बेहद की सेवा-प्रति सोचना कि ये होना चाहिए, ये करना चाहिए, वह अलग बात है लेकिन स्व की हद के प्राप्ति अर्थ चाहिए चाहिए ये रॉयल मांगना है। नाम चाहिए, मान चाहिए, शान चाहिए, प्यार चाहिए, पूछना चाहिए – ये सब हद की बातें हैं। रॉयल आत्मा में मांगने का अंश मात्र भी संस्कार नहीं होता है। समझा – रॉयल्टी क्या होती है? तपस्या के चार्ट में यह सब चेक करना, ऐसे नहीं, मैंने किसी को गाली नहीं दी, क्रोध नहीं किया, नहीं, यह सब बातें चेक करना। फिर प्राइज लेना। तपस्या का अर्थ ही है – सम्पूर्ण पवित्र बनना। तो पवित्रता की पर्सनालिटी, पवित्रता की रॉयल्टी कहॉ तक प्रैक्टिकल में रही है यह चेक करना है। इसको कहेंगे तपस्वीराज। समझा – रॉयल्टी क्या है? रॉयल आत्मा का चेहरा और चलन दोनों ही सत्यता की सभ्यता अनुभव करायेंगे। वैसे भी रॉयल आत्माओं को सभ्यता की देवी कहा जाता है। उनका बोलना, देखना, चलना, खान-पीना, उठना-बैठना, हर कर्म में सभ्यता सत्यता स्वत: ही दिखाई देगी। ऐसे नहीं कि मैं तो सत्य को सिद्ध कर रहा हूँ और सभ्यता हो ही नहीं। कई बच्चे कहते हैं वैसे क्रोध नहीं आता है, लेकिन कोई झूठ बोलता है तो क्रोध आ जाता है। उसने झूठ बोला, आपने क्रोध से बोला तो दोनों में राइट कौन? सत्यता को सिद्ध करने वाला सदा सभ्यता वाला होगा। कई चतुराई करते हैं, कहेंगे हम क्रोध नहीं करते हैं, हमारा आवाज ही बड़ा है, आवाज ही ऐसा तेज है। साइन्स के साधनों से आवाज को कम और ज्यादा कर सकते हैं ना तो क्या साइलेन्स के पॉवर से अपने आवाज की गति को धीमी या तेज नहीं कर सकते हो? इससे तो ये टेप रिकार्ड और ये माइक अच्छा है जो आवाज कम ज्यादा तो कर सकते हो। तो ये चेक करो कि सत्यता के साथ सभ्यता भी है? अगर सभ्यता नहीं तो सत्यता नहीं। तो प्योरिटी की रॉयल्टी सदा प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे। ऐसे नहीं, अन्दर में तो रॉयल्टी है, बाहर देखने में नहीं आती। अगर अन्दर है तो बाहर में जरूर दिखाई देगी। सत्यता की रॉयल्टी को

कोई छिपा नहीं सकता। इसमें गुप्त नहीं रहना है। कई कहते हैं गुप्त पुरुषार्थी हैं इसीलिए गुप्त रहते हैं। लेकिन जैसे सूर्य को कोई छिपा नहीं सकता, सत्यता के सूर्य को कोई छिपा नहीं सकता। न कोई कारण छिपा सकता है, न कोई व्यक्ति। सत्य सदा ही सत्य है। सत्यता की शक्ति सबसे महान है। सत्यता सिद्ध करने से सिद्ध नहीं होती। सत्यता की शक्ति को स्वत:ही सिद्ध होने की सिद्धि प्राप्त होती है। सत्यता को अगर कोई सिद्ध करने चाहता है तो वह सिद्ध जिद्द हो जाता है। इसलिए सत्यता स्वयं ही सिद्ध होती ही है। उसको सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। समझा । तपस्या वर्ष में क्या दिखाना है? प्योरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी।अच्छा!

28.2.2003.. .. सम्पूर्ण पवित्रता आप ब्राह्मण जीवन की सबसे बड़े ते बड़ी प्रापर्टी है, रॉयल्टी है, पर्सनाल्टी है।

17.10.2003.. .. आप विशेष आत्माओं की अनादि आदि पर्सनैलिटी और रॉयल्टी कितनी ऊंची है! अनादि रूप में भी देखो जब आप आत्मायें परमधाम में रहती तो कितनी चमकती हुई आत्मायें दिखाई देती हो। उस चमक की रॉयल्टी, पर्सनैलिटी कितनी बड़ी है। दिखाई देती है? और बाप के साथ-साथ आत्मा रूप में भी रहते हो, समीप रहते हो। जैसे आकाश में कोई-कोई सितारे बहुत ज्यादा चम-कने वाले होते हैं ना! ऐसे आप आत्मायें भी विशेष बाप के साथ और विशेष चमकते हुए सितारे होते हो। परमधाम में भी आप बाप के समीप हो और फिर आदि सतयुग में भी आप देव आत्माओं की पर्सनैलिटी, रॉयल्टी कितनी ऊंची है। सारे कल्प में चक्कर लगाओ, धर्म आत्मा हो गये, महात्मा हो गये, धर्म पितायें हो गये, नेतायें हो गये, अभिनेतायें हो गये, ऐसी पर्सनैलिटी कोई की है, जो आप देव आत्माओं की सतयुग में है? अपना देव स्वरूप सामने आ रहा है ना? आ रहा है या पता नहीं हम बनेंगे या नहीं? पक्का है ना! अपना देव रूप सामने लाओ और देखो, पर्सनैलिटी सामने आ गई? कितनी रॉयल्टी है, प्रकृति भी पर्सनैलिटी वाली हो जाती है। पंछी, वृक्ष, फल, फूल सब पर्सनैलिटी वाले, रॉयल। अच्छा फिर आओ नीचे, तो अपना पूज्य रूप देखा है? आपकी पूजा होती है! डबल फारेनर्स पूज्य बनेंगे कि इन्डिया वाले बनेंगे? आप लोग देवियां, देवतायें बने हो? सूंढ वाला नहीं, पूंछ वाला नहीं। देवियां भी वह काली रूप नहीं, लेकिन देवताओं के मन्दिर में देखो, आपके पूज्य स्वरूप की कितनी रॉयल्टी है, कितनी पर्सनैलिटी है? मूर्ति होगी, 4 फुट, 5 फुट की और मन्दिर कितना बड़ा बनाते हैं। यह रॉयल्टी और पर्सनैलिटी है। आजकल के चाहे प्राइम मिनि-स्टर हो, चाहे राजा हो लेकिन धूप में बिचारे का बुत बनाके रख देंगे, क्या भी होता रहे। और आपके पूज्य स्वरूप की पर्सनैलिटी कितनी बड़ी है। है ना बढ़िया! कुमारियां बैठी हैं ना! रॉयल्टी है ना आपकी? फिर अन्त में संगमयुग में भी आप सबकी रॉयल्टी कितनी ऊंची है। ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी कितनी बड़ी है! डायरेक्ट भगवान ने आपके ब्राह्मण जीवन में पर्सनैलिटी और रॉयल्टी भरी है। ब्राह्मण जीवन का चित्रकार कौन? स्वयं बाप। ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी रॉयल्टी कौन सी है? प्युरिटी। प्युरिटी ही रॉयल्टी है। है ना! ब्राह्मण आत्मायें सभी जो भी बैठे हो तो प्युरिटी की रॉयल्टी है ना! हाँ, कांध हिलाओ। पीछे वाले हाथ उठा रहे हैं। आप पीछे नहीं हो, सामने हो। देखो नज़र पीछे जाती है, आगे तो ऐसे देखना पड़ता है पीछे आटोमेटिक जाती है। तो चेक करो - प्युरिटी की पर्सनैलिटी सदा रहती है? मन्सा-वाचा-कर्मणा, वृत्ति, दृष्टि और कृति सबमें प्युरिटी है? मन्सा प्युरिटी अर्थात् सदा और सर्व प्रति शुभ भावना, शुभ कामना - सर्व प्रति। वह आत्मा कैसी भी हो लेकिन प्युरिटी की रॉयल्टी की मन्सा है - सर्व प्रति शुभ भावना, शुभ कामना, कल्याण की भावना, रहम की भावना, दातापन की भावना।

3. रहमदिल

20.12.69... कोई भी चीज को गर्म कर नर्म किया जाता है। फिर मोल्ड किया जाता है। यहाँ कौनसी नर्माई और गर्माई है। नर्माई है निर्माणता, गर्माई है – शक्ति रूप। निर्माणता अर्थात् स्नेह रूप। जिसमें हर आत्मा प्रति स्नेह होगा वही निर्माणता में रह सकेंगे। स्नेह नहीं है तो न रहमदिल बन सकेंगे न नम्रचित।

26.1.70... जैसे सम्पूर्ण चन्द्रमा कितना सुन्दर लगता है। वैसे अपना चेहरा सदैव हर्षित रहे। चेहरा ऐसा चमकता हुआ हो जो और भी आप के चेहरे में अपना रूप देख सकें। चेहरा दर्पण बन जाये। अनेक आत्माओं को अपना मुखड़ा दिखलाना है। अभी पदमापद्म भाग्यशाली बनना है। महादानी बनना है। रहम दिल बाप के बच्चे सर्व आत्माओं पर रहम करना है। इस रहम की भावना से कैसी भी आत्माएं बदल सकती हैं। सारे दिन में यह चैक करो कि कितने रहमदिल बने। कितनी आत्माओं पर रहम करना है। इस रहम की भावना से कैसी भी आत्माएं बदल सकती हैं।

सारे दिन में यह चेक करो कि कितने रहमदिल बने? कितनी आत्माओं पर रहम किया। दूसरों को सुख देने में भी अपने में सुख भरता है। देना अर्थात् लेना। दूसरों को सुख देने से खुद भी सुख स्वरूप बनेंगे। कोई विघ्न नहीं ओंगे। दान करने से शक्ति मिलती है।

31.12.70... अति पाप आत्मा, अति अपकारी आत्मा, बगुले के ऊपर भी नफरत नहीं, घृणा नहीं, निरादर नहीं लेकिन विश्व-कल्याणकारी स्थिति में स्थित हो रहमदिल बन तरस की भावना रखते हुए सेवा का सम्बन्ध समझकर सेवा करेंगे और जितने ही होपलेस केस की सेवा करेंगे तो उतने ही प्राइज़ के अधिकारी बनेंगे। नामीग्रामी विश्व-कल्याणकारी गाये जायेंगे।

18.4.71...एक तो रूहानियत, दूसरा चेहरे से सदैव ईश्वरीय रुहाब दिखाई दे और तीसरा सर्विस में सदैव रहमदिल का संस्कार वा गुण प्रत्यक्ष हर आत्मा को अनुभव हो। तीनों ही बातें रूहानियत, रुहाब और रहमदिल का गुण भी हो। यह तीनों ही बातें प्रत्यक्ष रूप में, स्थिति में, चेहरे में और सर्विस अर्थात् कर्म में दिखाई दें, तब समझो कि अब सफ़लता हमारे समीप आ रही है। तीनों ही साथ में चाहिएं।

20.5.71... भक्ति मार्ग में साक्षात्कार द्वारा वरदान प्राप्त होता है क्योंकि वह आत्माएं इतनी निर्बल होती हैं जो ज्ञान धारण नहीं कर सकतीं स्वयं पुरुषार्थी नहीं बन सकतीं। इसलिए वरदान की इच्छा रखती हैं, और वरदान रूप में उनको कुछ-न-कुछ प्राप्ति होती है। इस रीति जो कमज़ोर आत्माएं आपके सामने आती हैं, जिन आत्माओं की इच्छा को देखकर तरस की, रहम की भावना आती है। रहमदिल बन अपनी सभी शक्ति की मदद दे उनको ऊंचा उठाना – यह है वरदान का रूप।

8 .6.71...जिस समय कोई आत्मा में नो दैवी संस्कारों की रचना कराती हो, उस समय बनती हो ज्ञानमूर्त्त। और जिस समय पालना कराती हो तो उस समय रहम और स्नेह दोनों मूर्ति की आवश्यकता है। अगर रहम नहीं आता है तो स्नेह भी नहीं। तो पालना के समय एक रहमदिल और स्नेह मूर्त।

11.7.71...आप लोगों के यादगार जड़ चित्र हैं। उनमें भी चित्रकार मुख्य यही धारणा भरते हैं – एक तरफ शक्तियों का रुहाब भी फुल फोर्स में दिखाते हैं और साथ-साथ रहम का भी दिखाते हैं। एक ही चित्र में दोनों ही भाव प्रकट करते हैं ना। यह क्यों बना है? क्योंकि प्रैक्टिकल में आप रुहाब और रहमदिल-मूर्त बने हो। तो जड़ चित्रों में भी यही मुख्य धारणाएं दिखाते हैं। तो आप लोग अभी जब सर्विस पर हो तो सर्विस के प्रतक्षफल का आधार इन दो मुख धारणाओं के ऊपर है। रहमदिल जरूर बनना है, लेकिन किस आधार पर और कब? यह भी देखना है।

जितना-जितना रहमदिल के साथ रुहाब में रहेंगे तो फिर रोब खत्म हो ही जायेगा। कोई कैसी भी आत्मा हो, रोब दिलाने वाला भी हो, तो रुहाब और रहमदिल बनने से रोब में कभी नहीं आयेंगे।

15.9.71...मैंने इतना किया, मुझे इससे कुछ शान-मान वा महिमा मिलनी चाहिए – यह भी लेना हुआ, लेने की भावना हुई। दाता के बच्चे अगर यह भी लेने का संकल्प करते हो तो दाता नहीं हुए। यह भी लेना, देने वाले के आगे शोभता नहीं है। इसको कहा जाता है बेहद के वैरागी। सेवाधारी को यह भी संकल्प नहीं उठना चाहिए। तब स्टेट से अपने बेहद के विश्व महाराजन् का स्टेट्स पा सकेंगे। अच्छा। जो निष्कामी होगा, वही विश्व का कल्याणकारी बनेगा। रहमदिल होगा।

3.10.71...अपने को सेवाधारी समझने से त्याग, तपस्या सभी आ जाता है। सेवाधारी हूँ और सेवा के लिए ही यह जीवन है, यह समझने से सेकेण्ड भी सेवा बिगर नहीं जायेगा। तो सदा अपने को सेवाधारी समझते चलो। और अपने को बुजुर्ग समझना चाहिए, तो फिर छोटी-छोटी बातें खिलौने दिखाई देंगी, रहमदिल बन जायेंगे।

9.10.71... रहमदिल का गुण सूरत से दिखाई देना चाहिए।

रहमदिल के साथ-साथ शक्तिरूप का रूहाब भी होना चाहिए। सिर्फ रहमदिल भी नहीं। जितना ही अति रूहाब उतना ही अति रहम। शब्दों में भी रहमदिल का भाव हो, ऐसी सर्विस का अभी समय है।

शक्तियों के चित्रों में सदैव नयनों की शोभा आप देखेंगे। और कोई इतनी आकर्षण वाली चीज़ नहीं होती है। नानों द्वारा ही सब भाव प्रसिद्ध करते हैं। तो यह नज़र से निहाल करना – यह सर्विस भी शक्तियों की गाई हुई है। नयनों की आकर्षण हो, नयनों में रूहानियत हो, नयनों में रूहाब हो, नयनों में रहमदिली हो – ऐसा प्लैन बनाना है।

3.5.72...जैसे-जैसे समय बीत चुका तो समय के प्रमाण परिस्थितियों के लिए बाप रहमदिल बन कुछ-न-कुछ जो सैलवेशन देते आो हैं वह समय प्रमाण अभी समाप्त हो चुका। अभी रहमदिल नहीं। अगर अब तक भी रहमदिल बनते रहे तो आत्मायें अपने उपर रहमदिल बन नहीं सकेंगी। जब बाप इतनी ऊंच स्टेज की सावधानी देते हैं तब बच्चे भी अपने ऊपर रहमदिल बन सकें। इस कारण अभी यह नहीं समझना कि बाप रहमदिल है, इसलिए जो कुछ भी हो गया तो बाप रहम कर देगा। नहीं, अभी तो एक भूल का हजार गुणा दण्ड का हिसाब-किताब चुक्तू करना पड़ेगा। इसलिए अभी ज़रा भी गफ़लत करने का समय नहीं है। अभी तो बिल्कुल अपने कदम-कदम पर सावधानी रखते हुए कदम में पद्मों की कमाई करते पद्मपति बनो। नाम है ना पद्मापद्म भागशाली। तो जैसा नाम है ऐसा ही कर्म होना चाहिए। हर कदम में देखो – पद्मों की कमाई करते पद्मपति बने हैं? अगर पद्मपति नहीं बने तो पद्मापद्म भाग्यशाली कैसे कहलोंगे? एक कदम भी पदम की कमाई बिगर न जाए। ऐसी चेकिंग करते हो वा कई कदम व्यर्थ जाने बाद होश आता है? इसलिए फिर भी पहले से ही सावधान करते हैं। अन्त का स्वरूप शक्तिपन का है। शक्ति रूप रहमदिल का नहीं होता है। शक्ति का रूप सदैव संहारी रूप दिखाते हैं। तो संहार का समय अब समीप आ रहा है। संहार के समय रहमदिल नहीं बनना होता है। संहार के समय संहारी रूप धारण किया जाता है। इसलिए अभी रहमदिल का पार्ट भी समाप्त हुआ।

28.7.72... अब तक माया को इतनी शक्तिशाली देखकर, क्या माया को मूर्छित करना वा माया को हार खिलाना नहीं आता है? अभी तक भी उसको देखते रहते हो कि हमारे ऊपर वार कर रही है। अभी तो आप शक्ति-सेना और पाण्डव-सेना को अन्य आत्माओं के ऊपर माया का वार देखते हुये रहमदिल बनकर रहम करने का समय आया है। तो क्या अब तक अपने ऊपर भी रहम नहीं किया है? अब तो शक्तियों की शक्ति अन्य आत्माओं की सेवा प्रति कर्त्तव्य में लगने की हैं। अब अपने प्रति शक्ति काम में लगाना, वह समय नहीं है। अब शक्तियों का कर्त्तव्य विश्व-कल्याण का है।

24.12.72... कोई अपने संस्कार वा स्वभाव के रूप में आपके सामने परीक्षा के रूप में आवे लेकिन आप सेकेण्ड में अपने श्रेष्ठ संस्कार, एक की स्मृति से ऐसी आत्मा के प्रति भी रहमदिल के संस्कार वा स्वभाव धारण कर सकते हो।

8.7.73...पहले समय था कि कमाया और खाया। लेकिन अभी समय कौन-सा है? जो जमा किया है उसको सर्व-आत्माओं के प्रति देने का समय है। नहीं तो आपकी प्रजा व भक्त इन प्राप्तियों से वंचित रह जायेंगे और वे भिखारी के भिखारी ही रह जायेंगे। तो क्या दाता और वरदाता के बच्चे, वरदाता व दाता नहीं बनेंगे? जिस समय सर्व-आत्माएं आपके सामने भिखारी बन लेने आयेंगी तो क्या रहमदिल बाप के बच्चे सर्व आत्माओं के प्रति रहम नहीं करेंगे? क्या उस समय उन पर तरस नहीं आयेगा? क्या उसे तड़पता हुआ देख सकेंगे?

20.5.74... बाप ने अपने श्रेष्ठ कार्य की ज़िम्मेवारी व ताज बच्चों को पहनाया है। ऐसा ताजधारी बनने के बाद ताज उतार और ताज के बजाय अपने सिर के ऊपर क्या रख लेते हो? ताज उतार कर व्यर्थ संकल्पों का, व्यर्थ बोलचाल का भरा हुआ बोझ का टोकरा व बोरी सिर पर रख लेते हो। बेताज बन जाते हो! जबकि ऐसा चित्र देखना भी पसन्द नहीं करते हो, उनको देखते हुए रहमदिल बनते हो लेकिन अपने ऊपर फिर क्यों रख लेते हो?

26.6.74... अपने आप को क्यों भूल जाते हो? लेना है बाप का सहारा और कर देते हो सर्वशक्तिमान से किनारा। खिवैया से किनारा कर और किनारे को अर्थात् मंज़िल जब ढूंढ़ते हो, तो मिलेगी या समय व्यर्थ जायेगा? बाप-दादा को ऐसे भोले व भूले हुए बच्चों पर रहम आता है। लेकिन कब तक? जब तक बाप द्वारा रहम लेने कीआवश्यकता व इच्छा है, तब तक अन्य आत्माओं के प्रति रहमदिल नहीं बन सकेंगे? जो स्वयं ही लेने वाला है, वह देने वाला दाता नहीं बन सकता जैसे भिखारी, भिखारी को सम्पन्न नहीं बना सकता।

5.2.75...अब विशेष रहमदिल बनो। स्वयं पर भी और सर्व पर भी रहमदिल! सहज ही सर्व के स्नेही और सहयोगी बन जायेंगे।

7.2.75...कैसे भी संस्कारों वाली, असन्तुष्ट रहने वाली आत्मा सम्पर्क में आये, वह भी सम्पर्क में यह अनुभव करे कि मैं अपने संस्कारों के कारण ही असन्तुष्ट रहती हूँ लेकिन इन विशेष आत्माओं में मेरे प्रति स्नेह व सहयोग की व रहमदिल की शुभ भावना सदा नजर आती है। अर्थात् वह अपनी ही कमजोरी महसूस करे।

3-5-77... एक तरफ रहमदिल बन बाप के सम्बन्ध से रियायत भी करते हैं। अर्थात् एक, दो, तीन बार माफ भी करते हैं। दूसरी तरफ सुप्रीम जस्टिस के रूप में कल्याणकारी होने के कारण, बच्चों के कल्याण अर्थ ईश्वरीय लॉज (Laws;कानून) भी बताते हैं।

10-6-77...विघ्न-विनाशक बनने का साधन कौन सा है? ड्रामा अनुसार जो होता है उसको भावी समझ आगे चलते जावे। आत्माओं का जो अकल्याण हो जाता है, तो रहमदिल के नाते क्या होना चाहिए, जिससे उन आत्माओं का अकल्याण न हो। इसकी कोई न कोई युक्ति रचनी चाहिए।

26-12-78...इष्ट देव सदा रहमदिल होगा। कौन-सा रहम? हर आत्मा को भटकने वा भिखारीपन से बचाने का। हरेक के ऊपर रहम करेगा। निष्काम रहमदिल होगा। किस पर रहम और किस पर नहीं – ऐसे नहीं। अर्थात् बेहद रूप में रहमदिल होंगे। उनके रहम के संकल्प से अन्य आत्माओं को अपने रुहानी रूप वा रुह की मंज़िल सेकेण्ड में स्मृति में आ जायेगी। उनके रहम के संकल्प से भिखारी को सर्व खजानों की झलक दिखाई देगी। भटकती हुई आत्माओं को मुक्ति वा जीवन मुक्ति का किनारा वा मंज़िल सामने दिखाई देगी – ऐसा रहमदिल होगा।

3-2-79... विश्व कल्याणकारी अर्थात् रहमदिल आत्मायें ही कैसी भी अवगुण वाली आत्मा हो, कड़े संस्कार वाली आत्मा हो, कम बुद्धि वाली आत्मा हो, पत्थर बुद्धि हो, सदा ग्लानि करने वाली आत्मा हो, सर्व आत्माओं के प्रति कल्याणकारी अर्थात् लाफुल और लवफुल होंगे। रहम के बदले दो बातों में बदल जाते हैं। कोई रहम करने के बदले आत्माओं में वहम भाव पैदा कर देते हैं – यह कभी बदल नहीं सकते, यह हैं ही ऐसे, सब तो राजा बनने वाले नहीं हैं, इस प्रकार के अनेक वहम भाव रहम को खत्म कर देते हैं। दूसरी बात – रहम भाव के बदले अहम् भाव ''मैं ही सब कुछ हूँ – यह कुछ नहीं है। यह कुछ नहीं कर सकते मैं सब कुछ कर सकता हूँ।'' इस प्रकार के अहम् भाव अर्थात् मैं-पन का अभिमान रहमदिल बनने नहीं देता। यह दोनों बातें बेहद के विश्व कल्याणकारी बना नहीं सकती।

विश्व कल्याणकारी – कमज़ोर आत्मा को भी महिमा से महान बना देंगे। अर्थात् अपनी रहमदिल की शक्ति से स्वयं तो उसके अवगुण धारण नहीं करेंगे लेकिन उसको भी अपने अवगुण विस्मृत कराए समर्थ बना देंगे।

सेवा में विशेष रहमदिल का गुण याद रहता है? रहमदिल बाप के बच्चे रहमदिल बन कर सेवा करते तो सफ़लता बहुत मिलती है। तो सभी बाप समान रहमदिल हो, अन्जान आत्माओं के प्रति तरस पड़ता है? सदा सम्पन्न मूर्त बन वरदानी और महादानी बनो।

28.11.79... जैसे दु:खी आत्माओं के ऊपर रहमदिल बनते हो वैसे कमज़ोरियों के ऊपर भी रहमदिल बनो। अगर ऐसे रहमदिल बन गये तो क्या हो जायेगा? अनेक होते हुए भी एक बन जायेंगे।

जब वरदानी मूर्त्त हो तो वरदानी कभी किसी की कमज़ोरी नहीं देखते। वरदानी सदा सब के ऊपर रहमदिल होते हैं।

30.11.79... स्वमान वाला सबको मान देने वाला दाता होता है। छोटे-बड़े, ज्ञानी-अज्ञानी, मायाजीत या मायावश, गुणवान हो या कोई एक-दो अवगुणवान भी हो अर्थात् गुणवान बनने का पुरुषार्थी हो लेकिन स्वमान वाले सभी को मान देने वाले दाता होते हैं अर्थात् स्वयं सम्पन्न होने के कारण सदा रहमदिल होंगे। दाता अथवा रहमदिल। कभी किसी प्रकार की आत्मा के प्रति संकल्प मात्र भी रौब में नहीं आयेंगे। या रहम होता है या रौब होता है।

23.1.80...महादानी अर्थात् बिल्कुल निर्बल, दिलशिकस्त असमर्थ आत्मा को एकस्ट्रा बल दे करके रूहानी रहमदिल बनना। माया का भी रहमदिल बनना होता है। कोई ग़लत काम कर रहा है और आप तरस कर रहे हो तो यह माया का रहमदिल बनना है। ऐसे समय पर लॉफुल बनना भी पड़ता है। होता लगाव है और समझते हैं रहम। इसको कहा जाता है, माया का रहम। ऐसा रहमदिल नहीं बनना है। इसलिए कहा – रूहानी रहमदिल।

9.2.80... 'एक दूसरे की कमज़ोरी न धारण करो न वर्णन करो'। वर्णन होने से वह वातावरण फैलता है। अगर कोई सुनाये भी तो दूसरा शुभ भावना से उससे किनारा कर ले। यह नहीं कि इसने सुनाया, मैंने नहीं कहा – लेकिन सुना तो सही ना! जैसे कहने वाले का बनता है, सुनने वाले का भी बनता है। परसेन्टेज में अन्तर है लेकिन बनता तो है ना? व्यर्थ चिन्तन या कमजोरी की बातें नहीं चलनी चाहिए। बीती हुई बात को भी रहमदिल बन समा दो। समाकर शुभ भावना से उस आत्मा के प्रति मनसा सेवा करते रहो।

18-4-82... घृणा वाले से स्वयं भी घृणा कर ले यह हुआ कर्म का बन्धन। ऐसा कर्म के बन्धन में आने वाला एकरस नहीं रह सकता। कभी किसी रस में होगा कभी किसी रस में। इसलिए अच्छे को अच्छा समझकर साक्षी होकर देखो और बुरे को रहमदिल बन रहम की निगाह से परिवर्तन करने की शुभ भावना से साक्षी हो देखो।

18-11-85... मातायें किस एक गुण में विशेष अनुभवी हैं? वह विशेष गुण कौन-सा? (त्याग है, सहनशीलता है) और भी कोई गुण है? माताओं का स्वरूप विशेष रहमदिल का होता है। मातायें रहमदिल होती हैं। आप बेहद की माताओं को बेहद की आत्माओं के प्रति रहम आता है? जब रहम आता है तो क्या करती हो? जो रहमदिल होते हैं वह सेवा के सिवाए रह नहीं सकते हैं। जब रहमदिल बनते हो तो अनेक आत्माओं का कल्याण हो ही जाता है। इसलिए माताओं को 'कल्याणी' भी कहते हैं। कल्याणी अर्थात् कल्याण करने वाली। जैसे बाप को विश्व-कल्याणकारी कहते हैं वैसे माताओं को विशेष बाप समान कल्याणी का टाइटिल मिला हुआ है।

30-1-88... दुश्मन आत्मा को भी रहमदिल भावना से देखना, बोलना, सम्पर्क में आना। इसको कहते हैं सहनशीलता।

31-3-90... रहमदिल और बेहद की वैराग वृत्ति अपने परिवार के अन्जान, परेशान आत्माओं के ऊपर रहमदिल बनो। दिल से रहमआये। विश्व की अन्जान आत्माओं के लिए भी रहम चाहिए। और साथ-साथ ब्राह्मण-परिवार के पुरुषार्थ की तीव्रगति के लिए वास्व-उन्नति के लिए रहमदिल की आवश्यक्ता है। स्व-उन्नति के लिए स्व पर जब रहमदिल बनते हैं तो रहमदिल आत्मा को सदाबेहद की वैराग्यवृत्ति स्वत: ही आती है। स्व के प्रति भी रहम हो कि मैं कितनी ऊंच-ते-ऊंच बाप की वही आत्मा हूँ और वही बापसमाम बनने के लक्ष्यधारी हूँ। उस प्रमाण ओरिज्नल श्रेष्ठ स्वभाव वा संस्कार में अगर कोई कमी है तो अपने ऊपर दिल का रहमकमियों से वैराग्य दिला देगा।

सच्चे भक्त सदा रहमदिल होते हैं इसलिए वे पाप-कर्म से डरते हैं। बाप से नहीं डरते लेकिन पाप से डरते हैं। इसलिए कई पाप-कर्म से बचे हुए रहते हैं। तो ज्ञान-मार्ग में भी जो यथार्थ रहमदिल हैं – उसमें 3 बातों से किनारा करने की शक्ति होती है। जिसमें रहम नहीं होता वे समझते हुए, जानते हुए तीन बातों के पर-वश बन जाते हैं। वह तीनों बातें हैं – अलबेलापन, ईष्या और घृणा। कोई भी कमजोरी वा कमी का कारण 90% यह तीनों बातें होती

हैं। और जो रहमदिल होगा वह बाप के साथी धर्मराज की सजा से किनारा करने की शुभ-इच्छा रखते हैं। जैसे भक्त डर केमारे अलबेले नहीं होते, ऐसे ब्राह्मण-आत्माए बाप के प्यार के कारण, धर्मराजपुरी से क्रास न करना पड़े – इस मीठे डर से अलबेले नहीं होते हैं। बाप का प्यार उससे किनारा करा देता है। अपने दिल का रहम अलबेलापन समाप्त कर देता है। और जब अपने प्रति रहम भावना आती है तो जैसी वृत्ति, जैसी स्मृति, वैसी सर्व ब्राह्मण सृष्टि के प्रति स्वत: ही रहमदिल बनते हैं। यह है यथार्थ ज्ञानयुक्त रहम। बिना ज्ञान के रहम कभी नुकसान भी करता है। लेकिन ज्ञानयुक्त रहम कभी भी किसी आत्मा के प्रति ईर्ष्या वा घृणा का भाव दिल में उत्पन्न करने नहीं देगा।

4.12.91...अचल स्थिति वालों का विशेष गुण होगा – रहमदिल।

3.11.92...चाहे कोई कितना भी असन्तुष्ट करने की परिस्थितियां उनके आगे लाये लेकिन सम्पन्न, तृप्त आत्मा असन्तुष्ट करने वाले को भी सन्तुष्टता का गुण सहयोग के रूप में देगी। ऐसी आत्मा के प्रति रहम दिल बन शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा उनको भी परिवर्तन करने का प्रयत्न करेंगे। रूहानी रॉयल आत्माओं का यही श्रेष्ठ कर्म है।

10.12.92...रहमदिल बाप के बच्चों को सर्व आत्माओं के प्रति रहम आता है ना। रहमदिल क्या करता है? रहम का अर्थ ही है–किसी भी प्रकार की हिम्मत देना, निर्बल आत्मा को बल देना। तो आत्माओं के दु:ख का संकल्प तो मास्टर सुखदाता आत्माओं के पास पहुँचता ही है। जैसे वहाँ दु:ख की लहर है, ऐसे ही विशेष आत्माओं में सेवा की विशेष लहर चले–देना है, कुछ करना है।

9.1.93...ये ब्राह्मण जन्म के आदि के संस्कार 'रहमदिल' और 'सहयोग की भावना' का फल है। चाहे तन से, चाहे मन से–रहमदिल और सहयोग की भावना का पार्ट आदि से मिला हुआ है।

10.03.96... अपने भाई बहिनों के ऊपर रहमदिल बनो, और रहमदिल बन सेवा करेंगे तो उसमें निमित्त भाव स्वत: ही होगा। किसी पर भी चाहे कितना भी बुरा हो लेकिन अगर आपको उस आत्मा के प्रति रहम है, तो आपको उसके प्रति कभी भी घृणा या ईर्ष्या या क्रोध की भावना नहीं आयेगी। रहम की भावना सहज निमित्त भाव इमर्ज कर देती है। मतलब का रहम नहीं, सच्चा रहम। मतलब का रहम भी होता है, किसी आत्मा के प्रति अन्दर लगाव होता है और समझते हैं रहम पड़ रहा है। तो वह हुआ मतलब का रहम। सच्चा रहम नहीं, सच्चे रहम में कोई लगाव नहीं, कोई देह भान नहीं, आत्मा- आत्मा पर रहम कर रही है। देह अभिमान वा देह के किसी भी आकर्षण का नाम-निशान नहीं। कोई का लगाव बॉडी से होता है और कोई का लगाव गुणों से, विशेषता से भी होता है। लेकिन विशेषता वा गुण देने वाला कौन? आत्मा तो फिर भी कितनी भी बड़ी हो लेकिन बाप से लेवता (लेने वाली) है। अपना नहीं है, बाप ने दिया है। तो क्यों नहीं डायरेक्ट दाता से लो। इसीलिए कहा कि स्वार्थ का रहम नहीं। कई बच्चे ऐसे नाज़-नखरे दिखाते हैं, होगा स्वार्थ और कहेंगे मुझे रहम पड़ता है। और कुछ भी नहीं है

सिर्फ रहम है। लेकिन चेक करो–नि:स्वार्थ रहम है? लगावमुक्त रहम है? कोई अल्पकाल की प्राप्ति के कारण तो रहम नहीं है?

18-1-97... रहमदिल बाप के बच्चे अभी बेहद पर रहम करो। जब दूसरे पर रहम आयेगा तो अपने ऊपर रहम पहले आयेगा, फिर जो एक ही छोटी सी बात पर आपको पुरूषार्थ करना पड़ता है, वह करने की आवश्यकता नहीं होगी। मास्टर रहमदिल, मास्टर दयालू, मर्सी- फुल बन जाओ। इस गुण को इमर्ज करो। तो औरों के ऊपर रहम करने से स्वयं पर रहम आपेही आयेगा।

29-7-02... बच्चों को समय प्रमाण अपने मिले हुए सर्व खज़ानों के अखण्ड महादानी बन, निरन्तर रहमदिल स्वरूप से आत्माओं को शान्ति की, सुख की अंचली देने में ही बिज़ी रहना है। स्व-सेवा और विश्व सेवा की लहर अपने में और सर्व में फैलानी है।

दया भाव

22.10.81 .. .. .. सभी ब्राह्मण आत्मायें अपने को आदि सनातन प्राचीन धर्म की श्रेष्ठ आत्मायें अर्थात् धर्मात्मा मानते ही हो। तो, हे धर्मात्मायें, आप सबका पहला धर्म अर्थात् धारणा है ही स्व के प्रति, ब्राह्मण परिवार के प्रति और विश्व की सर्व आत्माओं के प्रति दया भाव और कृपा दृष्टि। तो अपने आप से पूछो कि सदा दया की भावना और कृपा दृष्टि सर्व के प्रति रहती है वा नम्बरवार रहती है? दया भाव वा कृपा दृष्टि किस पर करनी होती है? जो कमज़ोर आत्मा है, अप्राप्त आत्मा है, किसी-न-किसी बात के वशीभूत आत्मा है – ऐसी आत्मायें दया वा कृपा की इच्छा रखती हैं वा उनकी इच्छा न भी हो तो आप दाता के बच्चे उन आत्माओं को शुभ-इच्छा से देने वाले हो।

22.10.81.....चाहे कोई कैसा भी संस्कार वाला हो लेकिन या दया वा कृपा की भावना वा दृष्टि पत्थर को भी पानी कर सकती है। अपोज़ीशन वाले अपनी पोज़ीशन में टिक सकते हैं। स्वभाव के टक्कर खाने वाले ठाकुर बन सकते हैं। क्रोध-अग्नि, योग-ज्वाला बन जायेगी। अनेक जन्मों के कड़े हिसाब-किताब सेकण्ड में समाप्त हो नया सम्बन्ध जुट जायेगा। कितना भी विरोधी है – वह इस विधि से गले मिलने वाले हो जायेंगे। लेकिन इन सबका आधार है –''दया भाव''। दया भाव की आवश्यकता ऐसी परिस्थिति और ऐसे समय में है! समय पर नहीं किया तो क्या मास्टर दया के सागर कहलायेंगे? जिसमें दया भाव होगा वह सदा निराकारी, निर्विकारी और निरअहंकारी होगा। मंसा निराकारी, वाचा निर्विकारी, कर्मणा निरअहंकारी। इसको कहा जाता है दयालु और कृपालु आत्मा। तो, हे दया से भरपूर भण्डार आत्मायें, समय पर किसी आत्मा के प्रति दया भाव की अंचली भी नहीं दे सकते हो? भरपूर भण्डार से अंचली दे दो तो सारे ब्राह्मण परिवार की समस्यायें ही समाप्त हो जाएं। संस्कार तो आप सबके अनादि, आदि, अविनाशी दातापन के हैं। देवता अर्थात् देने वाला। संगम पर मास्टर दाता हो।

4. रिगार्ड, रिस्पेक्ट, सत्कारी

18.01.69... बाबा बोले अच्छा बच्ची सभी बच्चों ने बुलाया है तो बापदादा बच्चों का सेवाधारी है। यह सुनकर संकल्प चला कि बाबा ने अभी-अभी ना की और अभी-अभी हाँ की क्यों? दिल के संकल्प को जानकर बाबा बोले – यह जानबूझ कर कर्म करके बाबा सिखला रहे हैं कि तुम बच्चों को भी एक दो की राय, एक दो के विचारों को रिगार्ड देना चाहिए। भल समझो कोई विचार देता है और तुमको नहीं जंचता है तो भी उनके विचार को फौरन ठुकरा नहीं देना चाहिए। पहले तो उनको रिगार्ड दो कि हाँ, क्यों नहीं। बहुत अच्छा। जिससे उनके विचार का फोर्स कम हो जाऐ। तो फिर आप जो उन्हें समझा-येंगे वह समझ सकेंगे। अगर सीधा ही उनको कट करेंगे तो दोनों फोर्स टक्कर खायेंगी और रिजल्ट में सफलता नहीं निकलेगी। इसलिए एक दो के विचार अर्थात् राय को पहले रिगार्ड देना आवश्यक है। इससे ही आपस में स्नेह और संगठन चलता रहेगा।

23.7.69.. .. जैसा कर्म आप करेंगे आपको ही देख कर सभी फालो करेंगे। एक सलोगन और याद करना ज़रूरी है। छोटो को करो प्यार और बड़ो को दो रिगार्ड। प्यार देना है फिर रिगार्ड लेना है। यह कभी नहीं भुलना।

6.8.70.. .. एक बात विशेष ध्यान में यह रखनी है कि अपने रिकार्ड को ठीक रखने के लिए सर्व को रिगार्ड दो। जितना जो सर्व को रिगार्ड देता है उतना ही अपना रिकार्ड ठीक रख सकता है। दूसरे का रिगार्ड रखना अपना रिकार्ड बनाना है। अगर रिगार्ड कम देते हैं तो अपने रिकार्ड में कमी करते हैं। इसलिए इस मुख्य बात की आवश्यकता है। समझा। जैसे यज्ञ के मददगार बनना ही मदद लेना है वैसे रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। देते हैं लेने के लिए। एक बार देना अनेक बार लेने के हकदार बन जाते हैं। जैसे कहते हैं छोटों को प्यार और बड़ों को रिगार्ड। लेकिन सभी को बड़ा समझ रिगार्ड देना यही सर्व के स्नेह को प्राप्त करने का साधन है। यह बात भी विशेष ध्यान देने योग है। हर बात में पहले आप। यह वृत्ति, दृष्टि और वाणी तथा कर्म में लानी चाहिए। जितना पहले आप कहेंगे उतना ही विश्व के बाप समान बन सकेंगे।

9.12.70.. ..रुहानी सेवाधारी ग्रुप के लिए यह खास शिक्षा दे रहे हैं। अपने को जितना अधिकारी समझते हो उतना ही सत्कारी बनो। पहले सत्कार देना फिर अधिकार लेना। सत्कार और अधिकार दोनों साथ-साथ हो। अगर सत्कार को छोड़ सिर्फ अधिकार लेंगे तो क्या हो जायेगा? जो कुछ किया वह बेकार हो जायेगा। इसलिए दोनों बातों को साथ-साथ रखना है।

21.1.71.. .. सदैव यह ख्याल रखो कि जो भी आत्मायें सम्पर्क में आती हैं उनको जो आवश्यकता है वह मिले। रोटी की आवश्यकता वाले को पानी दे दो तो... किसको मान देना पडता है, उसको कहो जाकर दरी पर बैठो तो कैसे बैठेगा! कोई को दरी पर बिठाकर कोर्स कराया जाता है कोई को सोफे पर। अभी गवर्नर आया तो क्या किया? रिगार्ड दिया ना। अगर रिवाजी रीति से चलाओ तो चल न सके। कहाँ रिगार्ड देकर लेना पड़ता है। सभी को एक जैसा डोज़ देने से बीमार भी पड़ जाते हैं। आजकल डाक्टर्स के पास पेशेन्टस जाते हैं तो लम्बा कोर्स नहीं चाहते हैं। आया इन्जेक्शन लगाया और खलास। यहाँ भी ऐसे है, आया और उनको उड़ाया। ऐसी सर्विस करते हो?

11.7.71.. .. छोटे भी और प्यारे होते हैं। इसलिए अपने को सिकीलधे समझो। सर्व के स्नेही हो। बड़ों को तो फिर भी कहेंगे, छोटे तो छूट जाते हैं। लेकिन अपने में कोई कमी नहीं रखना। सभी के आगे जाने का लक्ष्य जरूर

रखना है। आगे बढ़ते हुए भी आगे बढ़ाने वालों का रिगार्ड नहीं छोड़ना है। बढ़ाने वालों का रिगार्ड रखेंगे तब वह आपका रिगार्ड रखेंगे, आपको देख अन्य करेंगे।

3.2.72.. .. जब आप लोग नजदीक आयेंगे तब फिर दूसरों के भी नम्बर नजदीक आयेंगे। दिन-प्रतिदिन ऐसे परिवर्तन का अनुभव तो होता होगा। वेरीफाय कराना, एक दो को रिगार्ड देना वह दूसरी बात है लेकिन अपने में निश्चय रख कोई से पूछना वह दूसरी बात है। वह जो कर्म करेगा निश्चयबुद्धि होगा। बाप भी बच्चों को रिगार्ड देकर के राय-सलाह देते हैं ना। ऐसी स्टेज को देखना है कितना नजदीक आये हैं? फिर यह संकल्प नहीं आयेगा – पता नहीं यह राइट है राय रांग है; यह संकल्प मिट जायेगा क्योंकि मास्टर नालेजफुल हो। स्वयं के नशे में कमी नहीं होनी चाहिए। कारोबार के सयंम के प्रमाण एक दो को रिगार्ड देना – यह भी एक संयम है। ऐसी स्टेज है, जैसे एक सैम्पल रूप में देखा ना! तो साकार द्वारा देखी हुई बातों को फालो करना तो सहज है ना। तो ऐसी स्टेज समानता की आ रही है ना। अभी ऐसे महान् और गुह्य गति वाला पुरुषार्थ चलना है। साधारण पुरुषार्थ नहीं। साधारण पुरुषार्थ तो बचपन का हुआ। लेकिन अब विशेष आत्माओं के लिए विशेष ही है।

19.7.72.. .. बालक सो मालिक, मालिक सो बालक। एक-दो के हर राय को रिगार्ड देना है। चाहे छोटा है राय बड़ा है, चाहे आने वाला स्टूडेन्ट है, चाहे रहने वाला साथ है – हरेक की राय को रिगार्ड ज़रूर देना चाहिए। कोई की राय को ठुकराना गोया अपने आपको ठुकराना है। पहले तो ज़रूर रिगार्ड देना चाहिए, फिर भले कोई समझानी दो, वह दूसरी बात है। पहले से ही कट ना करना चाहिए कि यह रांग है, यह हो नहीं सकता। यह उसकी राय का डिसरिगार्ड करते हो। इससे फिर उनमें भी डिसरिगार्ड का बीज पड़ता है। जैसे मां-बाप घर में होते हैं तो नेचरल बच्चों में वह संस्कार होते हैं मां-बाप को कापी करने के। मां-बाप कोई बच्चों को सिखलाते नहीं हैं। यह भी अलौकिक जन्म में बच्चे हैं। बड़े मां-बाप के समान होते हैं। इसलिये आज आपने उनकी राय का डिसरिगार्ड किया, कल आपको वह डिसरिगार्ड देगा। तो बीज किसने डाला? जो निमित्त हैं। चूहा पहले फूंक देकर फिर काटता है। तो व्यर्थ को कट भी करना हो तो पहले उनको रिगार्ड दो। फिर उसको कट करना नहीं लेकिन समझेंगे – हमको श्रीमत मिल रही है। रिगार्ड दे आगे बढ़ाने में वह खुश हो जावेंगे। किसको खुश कर फिर कोई काम भी निकालना सहज होता है। एक दो की बात को कब कट नहीं करना चाहिए। हां, क्यों नहीं, बहुत अच्छा है – यह शब्द भी रिगार्ड देंगे। पहले 'ना' की तो नास्तिक हो जावेंगे। पहले सदैव 'हां' करो। चीज भले कैसे भी हो लेकिन उसका बिठन (डिब्बी) अच्छा होता है तो लोग प्रभावित हो जाते हैं। तो ऐसे ही जब सम्पर्क में आते हो तो अपना शब्द और स्वरूप भी ऐसा हो। ऐसे नहीं कि रूप में फिर 'ना' की रूपरेखा हो। इसमें रहम और शुभ कल्याण की भावना से चेहरे में कब चेंज नहीं आवेगी, शब्द भी युक्तियुक्त निकलेंगे। बापदादा भी किसको शिक्षा देते हैं तो पहले स्वमान दे फिर शिक्षा देते हैं। तो आजकल जो भी आते हैं वह अपने मान लेने वाले, ठुकराये हुए को स्वमान-रिगार्ड चाहिए। इसलिये कब भी किसको डिसरिगार्ड नहीं, पहले रिगार्ड देकर फिर काटो। उनकी विशेषता का पहले वर्णन करो, फिर कमजोरी का। जैसे आपरेशन करते हैं तो पहले इंजेक्शन आदि से सुध-बुध भुलाते हैं। तो पहले उसको रिगार्ड से उस नशे में ठहराओ, फिर कितना भी आपरेशन करेंगे तो आपरेशन सक्सेस होगा। यह भी एक तरीका है। जब यह संस्कार भर जावेंगे तो विश्व से आपको रिगार्ड मिलेगा। अगर आत्माओं को कम रिगार्ड देंगे तो प्रारब्ध में भी कम रिगार्ड मिलेगा। अच्छा।

2.8.72.. .. आजकल आप देखेंगे दिन-प्रतिदिन नू-ब्लड का रिगार्ड जादा है। जितना आगे बढ़ेंगे उतना छोटों की बुद्धि जो काम करेगी वह बूढ़ों की नहीं, यह चेंज होगी। बड़े भी बच्चों की राय को रिगार्ड देंगे। अब भी जो बड़े हैं

वह समझते हैं – ''हम तो पुराने जमाने के हैं, यह हैं आजकल के। उन्हों को रिगार्ड ना देंगे, बड़ा समझ न चलायेंगे तो काम न चलेगा।'' पहले बच्चों को रोब से चलाते थे, अभी ऐसे नहीं। बच्चे को भी मालिक समझ चलाते हैं। तो यह भी ड्रामा है। छोटे ही कमाल कर दिखोंगे।

2.8.73.. जिस सब्जेक्ट को जो ऑब्जेक्ट है वह अनुभव होनी चाहिए। ऑब्जेक्ट है तो इसका परिणाम रिसपेक्ट ज़रूर मिलेगी। आप मुख से जो भी शब्द रिपीट करेंगे राय जो भी प्लान बनायेंगे वह समर्थ होने के कारण उसे सभी रिसपेक्ट देंगे। अर्थात् जो भी एक दूसरे को राय देते हो तो उस राय को सभी रिसपेक्ट देंगे क्योंकि समर्थ है। इस प्रकार हर सब्जेक्ट को देखो।

..दिव्य गुणों की राय सर्विस की जो सब्जेक्ट् है तो उसकी प्राप्ति यह है कि नज़दीक सम्पर्क और सम्बन्ध में आना चाहिए। नज़दीक सम्बन्ध और सम्पर्क में आने से ऑटोमेटिकली रिस्पेक्ट ज़रूर मिलेगी। ऐसे हर सब्जेक्ट की ऑब्जेक्ट को चेक करो और ऑब्जेक्ट की चेक करने का साधन है–रिसपेक्ट। अगर मैं नॉलेजफुल हूँ तो जिसको भी नॉलेज देती हूँ क्या वह इस नॉलेज को इतना रिस्पेक्ट देते हैं? नॉलेज को रिसपेक्ट देना अर्थात् नॉलेजफुल को रिसपेक्ट देना है? अगर योग की सब्जेक्ट में ऑब्जेक्ट है तो और भी किसके संकल्प को परिवर्तन में लाने के समर्थ बना सकते हैं। तो वे ज़रूर रिसपेक्ट देंगे। तो इस रीति हर सब्जेक्ट में चेकिंग करनी है। हर सब्जेक्ट में व संकल्प में ऑब्जेक्ट और रिस्पेक्ट (Respect) इन दोनों की प्राप्ति का अनुभव जो भी करते हैं तो वही परफेक्ट (Perfect) कहेंगे। परफेक्ट अर्थात् कोई भी इफेक्ट (Effect) से दूर, इफेक्ट से परे हैं तो परफेक्ट हैं। चाहे शरीर का, चाहे संकल्पों का और चाहे कोई भी सम्पर्क में आने से किसके भी वायब्रेशन राय वायुमण्डल का, सभी प्रकार के इफ़ेक्ट से परे हो जायेंगे तो समझो सब्जेक्ट में पास अर्थात् परफेक्ट हैं तो ऐसे बन रहे हो ना? लक्ष्य तो यही है ना?

11.7.74.. .. बाप-दादा को सबके वायदे याद रहते हैं लेकिन बाप-दादा बच्चों का डिस-रिगार्ड (dis-regard) नहीं करते। सामने बैठ कहे कि वायदा नहीं निभाया, यह भी डिस-रिगार्ड है। जब सिर का ताज बना रहे हैं, स्वयं से भी आगे रख रहे हैं, तो ऐसी आत्मा का डिस-रिगार्ड कैसे करेंगे? इसलिए मुस्कराते हैं। ऐसे नहीं कि याद नहीं रहता है। आत्माओं को तो चला देते हैं। निमित्त बनी हुई टीचरों को बड़ी चतुराई से चला देते हैं। कहेंगे आपने हमारे भावार्थ को नहीं समझा। हमारा भाव यह नहीं था, शब्द मुख से निकल गया। लेकिन बाप-दादा भाव के भी भाव को जानता है। उससे छिपा नहीं सकेंगे। टीचर फिर भी समझेंगे मेरे से गल्ती हो गई; हो सकता है। लेकिन बाप से तो नहीं हो सकती है ना? इसलिये अब छोटी-छोटी बातों के लिये समय नहीं। यह भी व्यर्थ में एड (add) हो जाता है। बाप से जितनी मेहनत लेते हो, उतना रिटर्न (Return) करना होगा।

10.2.75.. .. ऐसे साक्षात्कार मूर्त बनने के लिये सार रूप में तीन बातें अपने में देखो – 1. सर्व-अधिकारी बने हैं? 2. परोपकारी बने हैं? 3. सर्व प्रति सत्कारी बने हैं? अर्थात् सर्व को सत्कार देने और लेने योग्य बने हैं? याद रखो कि सत्कार देना ही लेना है। इन तीन बातों के आधार से ही विश्व के आगे विश्व-कल्याणकारी प्रसिद्ध होंगे।

सत्कारी बनने के लिए स्वयं को सर्व के सेवाधारी समझना पड़े। सेवाधारी की परिभाषा भी गुह्य है। सिर्फ स्थूल सेवा व वाणी द्वारासेवा, सम्पर्क द्वारा सेवा, सेलवेशन द्वारा व भिन्न-भिन्न प्रकार के साधनों द्वारा सेवा करना, सिर्फ इतना ही नहीं, अपने हर गुण द्वारा दान करना व दूसरों को भी गुणवान बनाना, स्वयं के संग का रंग चढ़ाना, यह है श्रेष्ठ सेवा।

निर्बल को देख किनारा नहीं करना है व थक नहीं जाना है। लेकिन होपलेस (Hopeless) केस को भी स्वयं की सेवा द्वारा अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित हो सम्मान देने के द्वारा सर्व के सत्कारी बन सकते हैं। स्वयं के त्याग द्वारा अन्य को सत्कार देते हुए अपना भाग्य बनाना है। छोटा, बड़ा, महारथी व प्यादा सर्व को सत्कार की नजर से देखो। सत्कार न देने वाले को भी सत्कार देने वाला, ठुकराने वाले को भी ठिकाना देने वाला, ग्लानि करने वाले के भी गुणगान करने वाला, ऐसे को कहा जाता है सर्व-सत्कारी।

9.9.75.. .. स्मृति स्वरूप में एक तरफ बेहद का मालिकपन, दूसरी तरफ विश्व की सेवाधारी आत्मा होगी। एक तरफ अधिकारीपन का नशा, दूसरी तरफ सर्व के प्रति सत्कारी, हर आत्मा के प्रति बाप समान दाता और वरदाता, चाहे दुश्मन हो, किसी भी जन्म के हिसाबकिताब चुक्तु करने के निमित्त बनी हुई आत्मा हो – ऐसी श्रेष्ठ स्थिति से गिराने के निमित्त बनी हुई आत्मा को भी, संस्कारों के टक्कर खाने वाली आत्मा को भी, घृणा वृत्ति रखने वाली आत्मा को भी, सर्व आत्माओं के प्रति दाता व वरदाता।

27.10.75.. .. बाप ने कहा – सैलवेशन आर्मी हो अर्थात् अन्य आत्माओं को सैलवेशन देने प्रति हो लेकिन हद की सैलवेशन कि यह साधन होगा तो सर्विस करेंगे, पहले साधन दो फिर सर्विस करेंगे। साधन भी सेवा-अर्थ नहीं, लेकिन अपने सुख के अर्थ मांगते हैं। अगर यह किया जाए तो बहुत सर्विस कर सकता हूँ, एक्स्ट्रा स्नेह, रिगार्ड दिया जाय, एक्स्ट्रा खातिरी की जाय और विशेष नाम लिया जाय – ऐसे प्रकार के सैलवेशन के आधार पर अपना पुरुषार्थ करने लग पड़ते हैं। इसलिये आधार गलत होने के कारण उन्हें अपनी उन्नति का अनुभव नहीं होता।

9.12.75.. .. जैसे साकार बाप को देखा। अथॉरिटी (Authority) होते हुए भी बाप के आगे बच्चे तो छोटे ही हैं, रचना हैं – लेकिन रचना होते हुए भी बच्चों से रिगार्ड के बोल बोलते थे। कभी किसी को भी कुछ नहीं कहा, अथॉरिटी होते हुए भी अथॉरिटी को यूज़ नहीं किया तो आपस में भाई-बहन के नाते आपको कैसा होना चाहिए? संगठित रूप में आप ब्राह्मण बच्चों की आपस के सम्पर्क की भाषा भी अव्यक्त भाव की होनी चाहिए। जैसे फरिश्ते अथवा आत्मायें आत्माओं से बोल रही हैं! किसी की सुनी हुई गलती को संकल्प में भी स्वीकार न करना और न कराना ही चाहिये। ऐसी जब स्थिति हो तब ही बाप की जो शुभ कामना है-संगठन की, वह प्रैक्टिकल में होगी।

9.2.76.. .. अब दूरन्देश बुद्धि रखो। यहाँ जितनों के आगे झुकेंगे अर्थात् नम्रता के गुण को धारण करेंगे तो सारा कल्प ही सर्व आत्मायें मेरे आगे नमन करेंगी। सतयुग त्रेता में राजा के रिगार्ड से काँध से नहीं लेकिन मन से झुकेंगे और द्वापर, कलियुग में काँध झुकायेंगे।

6.2.77..... राज्य-पद के संस्कार अर्थात् श्रेष्ठ पद के संस्कार क्या दिखाई देंगे? 'अधिकारी और सत्कारी, निराकारी और निरहंकारी।' ये विशेष धारणायें राज्य-पद का विशेष आसन है। यह आसन ही सिंहासन की प्राप्ति कराता है।

2.6.77.. ..हर एक को अपने पूर्वज का रिगार्ड और स्नेह रहता है। हर कर्म का आधार, कुल की मर्यादाओं का आधार, रीति-रस्म का आधार, पूर्वज होते हैं। तो सर्व आत्माओं के आधार मूर्त और उद्धार मूर्त आप पूर्वज हो। ऐसे अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित रहते हो?

21.1.79.. .. आज भाग्यविधाता बाप सर्व भाग्यशाली बच्चों का विशेष एक बात का आदि से अब तक का रिकार्ड (Record) देख रहे थे। कौन सी बात का? रिगार्ड का रिकार्ड देख रहे थे। रिगार्ड2 (Regard) भी

विशेष ब्राह्मण जीवन के चढ़ती कला का साधन है। जो रिगार्ड देते हैं वही विशेष आत्मा वर्तमान समय और जनम जन्मान्तर भी अन्य आत्माओं द्वारा रिगार्ड लेने के पात्र बनते हैं। बापदादा भी साकार सृष्टि पर पार्ट बजाते आदि काल से पहले बच्चों को रिगार्ड दिया। बच्चों को स्वयं से भी श्रेष्ठ मानकर बच्चों के आगे समर्पण हुआ। पहले बच्चे पीछे बाप, बच्चे सिर के ताज बने। बच्चे ही डबल पूज्य बनते – बच्चे ही बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनते हैं। बाप ने भी आदिकाल से रिगार्ड रखा – ऐसे ही फालो फादर करने वाले बच्चे आदिकाल से अपना रिगार्ड का रिकार्ड बहुत अच्छा रखते आये हैं। हरेक अपने आपको चैक करो कि हमारा रिकार्ड अब तक कैसा रहा। रिकार्ड रखने के लिए पहली बात है – बाप में रिगार्ड – दूसरी बात...बाप द्वारा मिली हुई नालेज का रिगार्ड – तीसरी बात – स्वयं का रिगार्ड – चौथी बात – जो भी आत्मायें चाहे ब्राह्मण परिवार राय अन्य आत्मायें जो भी सम्पर्क में आती हैं उन आत्माओं के प्रति आत्मा का रिगार्ड। इन चारों ही बार्तें में अपने आपको चैक करो कि हमारा रिकार्ड कैसा रहा। चारों ही बातों में कितनी मार्क्स हैं! चारों ही बातों में सम्पन्न रहे हैं राय यथा शक्ति किस बात में मार्क्स अच्छी हैं और किसमें कम! पहली बात – बाप का रिगार्ड – अर्थात् सदा जो है जैसा है वैसे स्वरूप से, यथार्थ पहचान से बाप के साथ सर्व सम्बन्धों की मर्यादाओं को निभाना। बाप के सम्बन्ध का रिगार्ड है फालो फादर करना। शिक्षक के सम्बन्ध का रिगार्ड है सदा पढ़ाई में रेगुलर (Regular)3 और पंक्चुअल (Punctual)4 रहना। पढ़ाई की सर्व सबजेक्ट में फुल अटैन्शन देना – सतगुरू के सम्बन्ध में रिगार्ड रखना – अर्थात् सतगुरु की आज्ञा देह सहित देह के सर्व सम्बन्ध भूलकर देही स्वरूप अर्थात् सतगुरू के समान निराकारी स्थिति में स्थिति रहना। सदा वापस घर जाने के लिए एवररेडी रहना। ऐसे ही साजन के सम्बन्ध का रिगार्ड – हर संकल्प और सेकेण्ड में उसी एक की लगन में आशिक रहना। तुम्ही से खाऊं, तुम्हीं से हर कार्य में सदा संग रहूँ...इस वफादारी को निभाना। सखा राय बन्धु के सम्बन्ध का रिगार्ड अर्थात् सदा अपना सर्व बातों में साथीपन का अनुभव करना। ऐसे सर्व सम्बन्धों का नाता निभाना ही रिगार्ड रखना है। रिगार्ड रखना अर्थात जैसे कहावत है एक बाप दूसरा न कोई – बाप ने कहा और बच्चे ने किया। कदम के ऊपर कदम रख चलना। मनमत राय परमत बुद्धि द्वारा ऐसे समाप्त हो जाए जैसे कोई चीज़ होती ही नहीं। मनमत राय परमत को संकल्प से टच करना भी स्वप्नमात्र भी न हो – अर्थात् अविद्या हो। सिर्फ़ एक ही श्रीमत बुद्धि में हो – सुनो तो भी बाप से – बोलो तो भी बाप का – देखो तो भी बाप को, चलो तो भी बाप के साथ, सोचो तो भी बाप की बातें सोचो, करो तो भी बाप के सुनाये हुए श्रेष्ठ कर्म करो। इसको कहा जाता है बाप के रिगार्ड का रिकार्ड। ऐसे चैक करो कि पहली बात में रिकार्ड फर्स्टकलस रहा है राय सेकेण्ड क्लास। अखण्ड रहा है राय खण्डित हुआ है, अटल रहा है या माया की परिस्थितियों प्रमाण रिगार्ड का रिकार्ड हलचल में रहा है। लकीर सदा सीधी रही है राय टेढ़ी बाँकी भी रही है। दूसरी बात – नालेज का रिगार्ड – अर्थात् आदि से अभी तक जो भी महावाक्य उच्चारण हुए उन हर महावाक्य में अटल निश्चय हो – कैसे होगा, कब होगा, होना तो चाहिए, है तो सत्य...इस प्रकार के क्वेश्चन उठाना भी अर्थात् सूक्ष्म संकल्प के रूप में संशय उठाना है। यह भी नालेज का डिस रिगार्ड1 है। आजकल के अल्पकाल के चमत्कार दिखाने वाले अर्थात् बाप से वंचित करने वाले यथार्थ से दूर करने वाले नामधारी महान आत्मायें उन्हों के लिए भी सतवचन महाराज कहते हैं। तो सतगुरू जो महान आत्माओं का भी रचता परमपिता है उसकी सत्य नालेज में क्वेश्चन करना राय संकल्प उठाना यह भी रायल रूप का संशय अर्थात डिसरिगार्ड है। एक क्वेश्चन होता है स्पष्ट करने के लिए – दूसरा क्वेश्चन होता है सूक्ष्म संशय के आधार से – इसको कहा जाता है डिसरिगार्ड। बाप

तो ऐसे कहते हैं लेकिन होना असम्भव है राय मुश्किल है – ऐसा संकल्प भी किस खाते में जावेगा – यह चैक करो। तीसरी बात – स्वयं का रिगार्ड – इसमें भी बाप द्वारा इस अलौकिक श्रेष्ठ जीवन राय ब्राह्मण जीवन के जो भी टाइटिल हैं राय अनेक गुणों और कर्तव्य के आधार पर जो स्वरूप राय स्थिति का गायन हे – जैसे स्वदर्शन चक्रधारी – ज्ञान स्वरूप प्रेमस्वरूप फरिशतेपन की स्थिति – जो बाप ने नालेज के आधार पर टाइटिल दिये हैं ऐसे अपने को अनुभव करना राय ऐसी स्थिति में स्थित रहना। जो हूँ वैसा अपने को समझकर चलना – जो हूँ अर्थात् श्रेष्ठ आत्मा हूँ, डायरेक्ट बाप की सन्तान हूँ, बेहद के प्रापर्टी की अधिकारी हूँ, मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ ऐसे जो हूँ वैसे समझकर चलना इसको कहा जाता है स्वयं का रिगार्ड। मैं तो कमजोर हूँ, मेरी हिम्मत नहीं हैं। बाप कहते हैं लेकिन मैं नहीं बन सकती, मेरा ड्रामा में पार्ट ही पीछे का है, जितना है उतना ही अच्छा है, ऐसे स्वयं से दिलशिकस्त होना यह भी स्वयं का डिसरिगार्ड है। यह भी चैक करो कि स्वयं के रिगार्ड का रिकार्ड क्या रहा। चौथी बात – आत्माओं द्वारा सम्बन्ध राय सम्पर्क वाली आत्माओं का रिगार्ड – इसका अर्थ है हर आत्मा को चाहे ब्राह्मण आत्मा, चाहे अज्ञानी आत्मा हो लेकिन हर आत्मा के प्रति श्रेष्ठ भावना अर्थात् ऊंचे उठाने की राय आगे बढ़ाने की भावना हो, विश्व कल्याण की कामना हो इसी धारणा से हर आत्मा से सम्पर्क में आना यह है रिगार्ड रखना। सदा आत्मा के गुणों राय विशेषतओं को देखना – अवगुण को देखते हुए न देखना राय उससे भी ऊंचा अपनी शुभ वृत्ति से राय शुभचिन्तक स्थिति से अन्य के अवगुण को भी परिवर्तन करना इसको कहा जाता है आत्मा का आत्मा प्रति रिगार्ड। सदा अपने स्मृति की समर्थी द्वारा अन्य आत्माओं का सहयोगी बनना यह है रिगार्ड। सदा 'पहले आप' का मंत्र संकल्प और कर्म में लाना, किसी की भी कमजोरी राय अवगुण को अपनी कमजोरी राय अवगुण समझ वर्णन करने के बजाए राय फैलाने के बजाए समाना और परिवर्तन करना यह है रिगार्ड। किसी की भी कमजोरी की बड़ी बात को छोटा करना, पहाड़ को राई बनाना चाहिए न कि राई को पहाड़ बनाना है। इसको कहा जाता है रिगार्ड। दिलशिकस्त को शक्तिवान बनाना – संग के रंग में नहीं आना – सदा उमंग उल्लास में लाना इसको कहा जाता है रिगार्ड। ऐसे इस चौथी बात में भी चैक करो कि इसमें भी कितनी मार्क्स हैं! समझा कैसे रिगार्ड देना है। ऐसे चारों ही बातों में रिगार्ड अच्छा रखने वाले विश्व की आत्माओं द्वारा रिगार्ड लेने के पात्र बनते हैं। अर्थात अब विश्व कल्याणकारी रूप में और भविष्य विश्व महाराजन के रूप में और मध्य में श्रेष्ठ पूज्य के रूप में प्रसिद्ध होते हैं। तो विश्व महाराजन बनने के लिए रिकार्ड भी ऐसा बनाओ। रिगार्ड रखना अर्थात् रिगार्ड लेना है। देना, लेना हो जाता है। एक देना और दस पाना है। सहज हुआ ना।

28.11.79.. .. टीचर्स को विशेष क्या करना है? अब ऐसा अपना संगठन बनाओ जो सबके मुख से यह निकले कि यह अनेक होते भी एक हैं। जैसे यहाँ दीदी-दादी दो हैं लेकिन कहते हैं दोनो एक हैं तो यह प्रभाव पड़ता है ना। जब ये दो होते हुए भी एक-समान एक दूसरे को रिगार्ड देते, दो होते हुए एक दिखा रही हैं तो आप अनेक होते हुए एक का प्रमाण दे सकते हो। जैसे कहते हैं कि सब की वाणी एक ही होती है, जो एक बोलती वही सब बोलते हैं, ड्रैस भी एक जैसी, वाणी सबकी एक ही ज्ञान के पॉइन्ट्स की होती, भले सुनाने का ढंग अलग हो, सार एक ही होता है। वैसे ऐसा ग्रुप बनाओ जो सब कहें यह अनेक नहीं हैं, एक हैं। यही विशेषता है ना।

18.1.80.. ..बाप-दादा को भी मुरबी बच्चों का रिस्पेक्ट रखना होता है। इसलिए बापदादा बधाई देते हैं, न कि विदाई।

19.3.81.. .. रिगार्ड देना और रिगार्ड लेना, इस मंत्र से सदा सहज सेवा की वृद्धि होती रहती है। अभी रिगार्ड देने भी सीख गये हैं। लेने भी सीख गये हैं। रिगार्ड देना ही लेना है। यह सदा याद रखो। सिर्फ़ रिगार्ड लेने से नहीं मिलेगा, लेकिन देने से मिलेगा। इसलिए एक दो में स्नेह और युनिटी अच्छी रहती। यह मंत्र पक्का याद हैं ना।

27.3.81.. .. कोई समझते हैं – हम अपने से सन्तुष्ट हैं, बाप भी सन्तुष्ट है। चल जायेगा। लेकिन नहीं। जब बाप सन्तुष्ट है, आप भी सन्तुष्ट हो तो परिवार सन्तुष्ट न हो, यह हो नहीं सकता। परिवार को सन्तुष्ट करने के लिए सिर्फ़ छोटी-सी एक बात है। '' रिगार्ड दो और रिगार्ड लो।'' यह रिकार्ड दिन रात चलता रहे। रिगार्ड का रिकार्ड निरन्तर चलता रहे। कोई कैसा भी हो लेकिन आप दाता बन देते जाओ। रिटर्न दे राय न दे लेकिन आप देते जाओ। इसमे निष्काम बनो। मैंने इतना दिया। उसने तो कुछ दिया नहीं। हमने सौ बार दिया, उसने एक बार भी नहीं। इसमें निष्काम बनो तो परिवार स्वत: ही सन्तुष्ट होंगे। आज नहीं तो कल। आपका देना जमा होता जायेगा, वह जमा हुआ फल ज़रूर देगा।

19.3.81.. .. सभी ने यज्ञसेवा की ज़िम्मेवारी का बीड़ा तो उठा लिया है। अभी सिर्फ़ हम सब एक हैं, हम सबका सब काम एक है, प्रैक्टिकल दिखाई दे। अभी एक रिकार्ड तैयार करना है, वह कौन-सा है? वह रिकार्ड मुख का नहीं है। एक दो को रिगार्ड का रिकार्ड। यही रिकार्ड फिर चारों ओर बजेगा। रिगार्ड देना, रिगार्ड लेना। छोटे को भी रिगार्ड देना, बड़े को भी देना। यह रिगार्ड का रिकार्ड अभी निकलना चाहिए। अभी चारों ओर इस रिकार्ड की आवश्यकता है।

3.4.81.. .. टीचर्स कहो या सेवाधारी कहो क्योंकि मेहनत का हजार गुणा फल मिलता है। और वह भी मेहनत क्या है? यहाँ भी स्टूडेन्ट के लिए तो दीदी-दादी बन जाती हो। टाइटल तो मिल जाता है ना। 10 वर्ष का स्टूडेन्ट भी दो वर्ष की आने वाली जो टीचर बनती उसको दीदी-दादी कहने लगते। यहाँ भी ऊंची स्टेज पर तो देखते हैं ना। रिगार्ड तो देते हैं ना। अगर सच्चे सेवाधारी हैं तो यहाँ भी रिगार्ड मिलने के योग्य बन जाते। अगर मिक्स है तो आज दीदी-दादी कहेंगे, कल सुना भी देंगे। सेवा मिक्स है तो रिगार्ड भी मिक्स ही मिक्स है, इसलिए सेवाधारी अर्थात् बाप समान।

27.3.82.. .. वानप्रस्थी जिन्हों को सदा फुर्सत है, जो रिटायर्ड हैं, उनकी सेवा के लिए थोड़ी मेहनत करनी पड़ेगी – वे सिर्फ कार्ड बांटने से नहीं आयेंगे। फुर्सत वालों की सेवा भी फुर्सत अर्थात् समय देकर करनी पड़ेगी क्योंकि वे अपने को वानप्रस्थी होने के कारण अनुभवी समझते हैं। उन्हें अनुभव का अभिमान होता है। इसलिए उनकी सेवा के लिए थोड़ा ज्यादा समय देना पड़े और तरीका भी मित्रता का, स्नेह मिलन का हो। समझाने का नहीं। मित्रता के नाते से उन्हों को मिलो। ऐसे नहीं सुनाओ कि यह बात आप नहीं जानते हो, मैं जानता हूँ। अनुभव की लेन-देन करो। उनकी बात को सुनो तो समझेंगे यह हमें रिगार्ड देते हैं। किसी को भी समीप लाने के लिए उनकी विशेषता का वर्णन करो फिर उन्हें अपना अनुभव सुनाकर समीप ले आओ। अगर कहेंगे कोर्स करो, ज्ञान सुनो तो नहीं सुनेंगे इसलिए अनुभव सुनाओ। बापदादा को अभी ऐसे वानप्रस्थियों का गुलदस्ता भेंट करो। उन्हें मित्रता के नाते से सहयोगी बनाकर बुलाओ।

6.4.82.. .. जैसे कहा जाता है – आँख बन्द करके चलते चलो। ऐसा तो नहीं, वैसा तो नहीं होगा? यह आँख नहीं खोलो। यह व्यर्थ चिंतन की आँख बन्द कर बाप की मर्जी अर्थात् बाप के कदम पीछे कदम रखते चलो। पाँव के ऊपर पाँव रखकर चलना मुश्किल होता है राय सहज होता है? तो ऐसे सदा फ़ालो फ़ादर करो। फालो सिस्टर,

फ़ालो ब्रदर यह नया स्टेप नहीं उठाओ। इससे मंज़िल से वंचित हो जायेंगे। रिगार्ड दो, लेकिन फालो नहीं करो। विशेषता और गुण को स्वीकार करो लेकिन फुटस्टेप बाप के फुटस्टेप पर हो।

13.4.83.. .. सभी अपने को पूज्य आत्मायें अनुभव करते हो? पुजारी से पूज्य बन गये ना! पूज्य को सदा ऊँचे स्थान पर रखते हैं। कोई भी पूजा की मूर्ति होगी तो नीचे धरती पर नहीं रखेंगे। तो आप पूज्य आत्मायें कहाँ रहती हो! ऊपर रहती हो! भक्ति में भी पूज्य आत्माओं का कितना रिगार्ड रखते हैं। जब जड़ मूर्ति का इतना रिगार्ड है तो आपका कितना होगा? अपना रिगार्ड स्वयं जानते हो? क्योंकि जितना जो अपना रिगार्ड जानता है उतना दूसरे भी उनको रिगार्ड देते हैं। अपना रिगार्ड रखना अर्थात् अपने को सदा महान श्रेष्ठ आत्मा अनुभव करना।

सदा पूज्य अर्थात् सदा महान। सदा विशेष। कई बच्चे सोचते हैं कि हम तो आगे बढ़ रहे हैं लेकिन दूसरे हमको आगे बढ़ने का रिगार्ड नहीं देते हैं। इसका कारण क्या होता? सदा स्वयं अपने रिगार्ड में नहीं रहते हो। जो अपने रिगार्ड में रहते वह रिगार्ड माँगते नहीं, स्वत: मिलता है। जो सदा पूज्य नहीं उन्हें सदा रिगार्ड नहीं मिल सकता।

1.6.83.. .. युवा वर्ग सदा सफलता के लिए अपने पास एक रूहानी तावीज रखे। वह कौन सा? – रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। यह रिगार्ड का रिकार्ड सफलता का अविनाशी रिकार्ड हो जायेगा। युवा वर्ग के लिए सदा मुख पर एक ही सफलता का मन्त्र हो – ''पहले आप'' – यह महामन्त्र मन से पक्का रहे। सिर्फ मुख के बोल हों कि पहले आप और अन्दर में रहे कि पहले मैं, ऐसे नहीं। ऐसे भी कई चतुर होते हैं मुख से कहते पहले आप, लेकिन अन्दर भावना पहले मैं की रहती है। यथार्थ रूप से, पहले मैं को मिटाकर दूसरे को आगे बढ़ाना सो अपना बढ़ना समझते हुए इस महामन्त्र को आगे बढ़ाते सफलता को पाते रहेंगे। समझा। यह मन्त्र और तावीज सदा साथ रहा तो प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा।

बापदादा सदैव कहते कि तीर भी लगाओ साथसाथ मालिश भी करो। रिगार्ड भी अच्छी तरह से दो लेकिन अपनी सत्यता को भी सिद्ध करो।

ब्रह्मा बाप कहते थे कि सब प्रदर्शनियों मे प्रश्नावली लगाओ। उसमें कौन सी बातें थीं। तीर समान थी ना! फार्म भराने के लिए कहते थे। यह राइट है राय रांग, हाँ राय ना, लिखो। फार्म भराते थे ना। तो क्या योजनायें रही। एक हैं ऐसे ही भरवाना। जल्दी-जल्दी में रांग राय राइट कर दिया, लेकिन समझाकर भराओ। तो उसी अनुसार यथार्थ फार्म भरेंगे। सिद्ध तो करना ही पड़ेगा। वह आपस में प्लैन बनाओ। जो अथार्टी भी रहे और स्नेह भी रहे। रिगार्ड भी रहे और सत्यता भी प्रसिद्ध हो। ऐसे किसकी इनसल्ट थोड़े ही करेंगे? यह भी लक्ष्य है कि हमारी ही ब्रैन्चेज हैं। हमारे से ही निकले हुए हैं। उन्हों को रिगार्ड देना तो अपना कर्त्तव्य है। छोटों को प्यार देना यह तो परम्परा ही है।

7.12.83.. .. मुरलीधर बाप का रिगार्ड अर्थात् मुरली के एक-एक बोल का रिगार्ड। एक-एक वरशन 2500 वर्षों की कमाई का आधार है। पद्मों की कमाई का आधार है। उसी हिसाब प्रमाण एक वरदान मिस हुआ तो पद्मों की कमाई मिस हुई। एक वरदान खज़ानों की खान बना देता है। ऐसे मुरली के हर बोल को विधिपूर्वक सुनने और उससे प्राप्त हुई सिद्धि के हिसाब-किताब की गति को जानने वाले श्रेष्ठ गति को प्राप्त होते हैं। जैसे कर्मों की गति गहन है वैसे विधिपूर्वक मुरली सुनने, समाने की गति भी अति श्रेष्ठ है। मुरली ही ब्राह्मण जीवन की साँस(श्वाँस) है। श्वाँस नहीं तो जीवन नहीं – ऐसी अनुभवी आत्माएँ हो ना। अपने आपको रोज़ चेक करो कि आज इसी महत्व से, विधिपूर्वक मुरली सुनी! अमृतवेले की यह विधि सारा दिन हर कर्म में सिद्धिस्वरूप स्वत: और सहज बनाती है। समझा।

14.12.83.. .. मास्टर सर्वशक्तिवान बन गये जो प्रकृति भी आप प्रभु बच्चों की दासी बन सेवा करेगी। प्रकृति आप प्रभु परिवार को श्रेष्ठ समझ आपके ऊपर जन्म-जन्मान्तर के लिए चंवर (पंखा)झुलाती रहेगी। श्रेष्ठ आत्माओं के स्वागत में, रिगार्ड में चंवर झुलाते हैं ना। प्रकृति सदाकाल के लिए रिगार्ड देती रहेगी।

22.2.84.. .. कारोबार में सदा सफल होने का सलोगान है – 'रिगार्ड देना, रिगार्ड लेना'। दूसरे को रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। देने में लेना भरा हुआ है। रिगार्ड कभी भी प्रयत्न करने राय माँगने से नहीं मिलता है। रिगार्ड दो और रिगार्ड मिलेगा। रिगार्ड लेने का साधन ही है – रिगार्ड देना। आप रिगार्ड दो और आपको नहीं मिले यह हो नहीं सकता। लेकिन दिल से दो। मतलब से नहीं। जो दिल से रिगार्ड देता है उसको दिल से रिगार्ड मिलता है। मतलब का रिगार्ड देंगे तो मिलेगा भी मतलब का। सदैवी दिल से दो और दिल से लो। इस सलोगन द्वारा सदा ही निर्विघ्न, निरसंकल्प, निश्चिन्त रहेंगे। मेरा क्या होगा यह चिन्ता नहीं रहेगी। मेरा हुआ ही पड़ा है। बना ही पड़ा है। निश्चिन्त रहेंगे। और ऐसी श्रेष्ठ आत्मा की श्रेष्ठ प्रालब्ध वर्तमान और भविष्य निश्चित ही है। कोई इसको बदल नहीं सकता। कोई किसकी सीट ले नहीं सकता। निश्चित है। निश्चिन्त की निश्चित है। इसको कहा जाता है – बाप समान फ़ालो फ़ादर करने वाले।

26.2.84.. .. निमित्त बनी हुई विशेष आत्मायें हैं। बापदादा भी विशेष आत्माओं का विशेष रिगार्ड रखते हैं। फिर भी सेवा के साथी हैं ना। ऐसे तो सभी साथी हैं फिर भी निमित्त को निमित्त समझने में ही सेवा की सफ़लता है। ऐसे तो सर्विस में कई बच्चे बहुत तीव्र उमंग उत्साह में बढ़ते रहते हैं फ़िर भी निमित्त बनी हुई विशेष आत्माओं को रिगार्ड देना अर्थात् बाप को रिगार्ड देना है और बाप द्वारा रिगार्ड के रिटर्न में दिल का स्नेह लेना है। समझा! टीचर्स को रिगार्ड नहीं देते हो लेकिन बाप से दिल के स्नेह का रिटर्न लेते हो।

12.3.84.. .. बापदादा तो बच्चों की महिमा कर खुश होते रहते हैं। वाह मेरा फ़लाना रत्न। वाह मेरा फ़लाना रत्न। यही महिमा करते रहते हैं। बाप कभी किसकी कमज़ोरी को नहीं देखते। ईशारा भी देते तो भी विशेषतापूर्वक रिगार्ड के साथ इशारा देते हैं। नहीं तो बाप को अथार्टी है ना, लेकिन सदैवी रिगार्ड देकर फ़िर ईशारा देते हैं। यही बाप की विशेषता सदा बच्चों में भी इमर्ज रहे। फ़ालो फ़ादर करना है ना।

7.1.85.. .. महान दाता अर्थात् विधाता। सदा देने वाला होने कारण सदा नि:स्वार्थी होंगे। स्व के स्वार्थ से सदा न्यारे और बाप समान सर्व के प्यारे होंगे। विधाता आत्मा के प्रति स्वत: ही सर्व का रिगार्ड का रिकार्ड होगा। विधाता स्वत: ही सर्व की नजर में दाता अर्थात् महान होंगे। ऐसे विधाता कहाँ तक बने हैं? विधाता अर्थात् राजवंशी। विधाता अर्थात् पालनहार। बाप समान सदा स्नेह और सहयोग की पालना देने वाले। विधाता अर्थात् सदा सम्पन्न। तो अपने आपको चेक करो कि लेने वाले हो राय देने वाले मास्टर विधाता हो?

जब 5 तत्व भी आप विधाता के आगे दासी बन जाते हैं, प्रकृति जीत मायाजीत बन जाते हो, उसके आगे यह हद की इच्छायें ऐसी हैं जैसे सूर्य के आगे दीपक। जब सूर्य बन गये तो इन दीपकों की क्या आवश्यकता है? चाहिए की तृप्ति का आधार है, जो चाहिए वह ज़्यादा से ज़्यादा देते जाओ। मान दो, लो नहीं। रिगार्ड दो, रिगार्ड लो नहीं। नाम चाहिए तो बाप के नाम का दान दो। तो आपका नाम स्वत: ही हो जायेगा। देना ही लेने का आधार है।

7.1.85.. .. कोई भी हद की चाहना वाला माया का सामना नहीं कर सकता है। मांगने से मिलने वाली यह चीज़ ही नहीं है। कोई को कहो मुझे रिगार्ड दो या रिगार्ड दिलाओ। मांगने से मिले यह रास्ता ही रांग है तो मंजिल कहाँ से मिलेगी। इसलिए 'मास्टर विधाता' बनो। तो स्वत: ही सब आपको देने आयेंगे।

30.1.85.. .. बापदादा बोले, बच्चे सम्मेलन कर रहे हैं। सम्मेलन का अर्थ है सम-मिलन। तो जो इस सम्मेलन में आने वाले हैं उन्हें बाप समान नहीं तो अपने समान निश्चय बुद्धि तो अवश्य बनाना। जो भी आये कुछ बनकर जाए सिर्फ़ बोलकर न जाए। यह दाता का घर है। तो आने वाले यह नहीं समझें कि हम इन्हें मदद करने आये हैं या इन्हें सहयोग देने आये हैं। लेकिन वह समझें कि यह स्थान लेने का स्थान है, देने का नहीं। यहाँ हरेक छोटा बड़ा जिससे भी मिले जो उस समय यहाँ पर हो उनको यह संकल्प करना है कि दृष्टि से, वायुमण्डल से, सम्पर्क-सम्बन्ध से 'मास्टर दाता' बनकर रहना है। सबको कुछ न कुछ देकर ही भेजना है। यह हरेक का लक्ष्य हो, आने वाले को रिगार्ड तो देना ही है लेकिन सबका रिगार्ड एक बाप में बिठाना है।

2.3.85.. .. इस समय स्वयं भगवान मात-पिता के रूप से आप बच्चों को सम्भालते हैं अर्थात् पालना करते हैं। तो अविनाशी पालना होने के कारण, अविनाशी स्नेह के साथ सम्भालने के कारण सारा कल्प बड़ी रायल्टी से, स्नेह से, रिगार्ड से सम्भाले जाते हो। ऐसे प्यार, स्वच्छता, पवित्रता और स्नेह से सम्भालने के अविनाशी पात्र बन जाते हो। तो समझा, कितने अमूल्य हो?

11.4.85.. ..कभी भी किसी को ना ना करके हिम्मतहीन नहीं बनाओ। मानो अगर कोई रांग भी हो तो उसको सीधा रांग नहीं कहो। पहले उसे दिलासा दो, हिम्मत दिलाओ। उसको हाँ करके पीछे समझाओ तो वह समझ जायेगा। पहले से ही ना ना कहेंगे तो उसकी जो थोड़ी भी हिम्मत होगी वह खत्म हो जायेगी। रांग तो हो भी सकता है लेकिन रांग को रांग कहेंगे तो वह अपने को रांग कभी नहीं समझेगा। इसलिए पहले उसे हाँ कहो, हिम्मत बढ़ाओ फिर वह स्वयं जजमेन्ट कर लेगा। रिगार्ड दो। यह विधि सिर्फ अपना लो। रांग भी हो तो पहले अच्छा कहो, पहले उसको हिम्मत आये। कोई गिरा हुआ हो तो क्या उसको और धक्का देंगे या उठायेंगे... उसे सहारा देकर पहले खड़ा करो। इसको कहते हैं – 'उदारता'। सहयोगी बनने वालों को सहयोगी बनाते चलो। तुम भी आगे, मैं भी आगे। साथ-साथ चलते चलो। हाथ मिलाकर चलो। तो सफ़लता होगी। और सन्तुष्टता की दुआयें मिलेगी। ऐसी दुआयें लेने में महान बनो तो सेवा में स्वत: महान हो जायेंगे।

14.12.85.. .. संगठन की शक्ति का आधार क्या है? सिर्फ यह पाठ पक्का हो जाए कि 'रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है'। देना लेना है। लेना, लेना नहीं है। लेना अर्थात् गँवाना। देना अर्थात् लेना। कोई दे तो देवें यह कोई बिजनेस नहीं। यह तो दाता बनने की बात है। दाता लेकर फ़िर नहीं देता। वह तो देता ही जाता। इसलिए इस संगठन की सफ़लता है। लेकिन अभी कंगन तैयार हुआ है। माला नहीं तैयार हुई है।

23.12.85.. .. छोटे हो या नये हो लेकिन बापदादा त्याग और हिम्मत की मुबारक देते हैं। उसी रिगार्ड से बापदादा देखते हैं। निमित्त बनने का भी महत्व है। इसी महत्व से सदा आगे बढ़ाते हुए विश्व में महान आत्मायें बन प्रसिद्ध हो जायेंगी। तो अपनी महानता को तो जानती हो ना! जितने महान उतने निर्मान।

31.3.86.. .. इस वर्ष को विशेष वरदान है। लेकिन वरदान लेने के लिए विशेष दो अटेन्शन देने पड़ेगे। एक तो सदा बाप समान देने वाले बनना है, लेने की भावना नहीं रखनी है। रिगार्ड मिले, स्नेह मिले तब स्नेही बनें, व रिगार्ड मिले तब रिगार्ड दें, नहीं। दाता के बच्चे बन मुझे देना है। लेने की भावना नहीं रखना। श्रेष्ठ कर्म करते हुए दूसरे तरफ से मिलना चाहिए यह भावना नहीं रखना। श्रेष्ठ कर्म का फल श्रेष्ठ होता ही है। यह नॉलेज आप जानते हो लेकिन करने समय यह संकल्प नहीं रखना। एक तो वरदान लेने के पात्र बनने के लिए सदा 'दाता बन करके रहना' और दूसरा 'विघ्न विनाशक बनना है', तो समाने की शक्ति सदा विशेष रूप में अटेन्शन में रखना।

31.3.86.. .. एक दो को रिगार्ड देना यह भी ब्राह्मण कुल की मर्यादा है। स्नेह लेना और रिगार्ड देना। विशेषता को महत्व दिया जाता है, न कि व्यक्ति को। बापदादा के लिए और ही जो पीछे-पीछे आते हैं वह विशेष स्नेह के पात्र हैं। जैसे छोटे बच्चे होते हैं तो उनको एक्स्ट्रा प्यार दिया जाता है। आप तो छोटे नहीं हो, बड़े हो फिर भी बापदादा के पास सेवाधारियों के लिए सदा रिगार्ड है, क्योंकि साथी हैं ना!

31.12.86.. .. कई बच्चों के सेवा के उमंग-उत्साह के समाचार और साथ-साथ नये वर्ष के उमंग-उत्साह के कार्ड की माला बापदादा के गले में पिरो गई। जिन्होंने भी कार्ड भेजे हैं, बापदादा कार्ड के रिटर्न में रिगार्ड और लव दोनों देते हैं।

6.1.88.. .. सदा पाण्डवों के लिए शक्तियों को और शक्तियों के लिए पाण्डवों को स्नेह है, रिगार्ड है और सदा रहेगा। शक्तियाँ पाण्डवों को आगे रखती हैं – इसमें ही सफ़लता है और पाण्डव शक्तियों को आगे रखते – इसमें ही सफ़लता है। 'पहले आप' का पाठ दोनों को पक्का है। 'पहले आप', 'पहले आप' कहते खुद भी 'पहले आप' हो जायेंगे।

26.1.88.. .. संगमयुग में दिल का स्नेह, दिल का रिगार्ड - यही पूज्य बनना है। फल को मैं-पन में लाने वाले ऐसा पूज्य नहीं बन सकते। एक है दिल से किसको ऊंचा मानना, तो ऊंचे को पूज्य कहा जाता है। जैसे आजकल की दुनिया में भी बाप ऊँचा होने कारण बच्चे ''पूज्य पिताजी'' कहकर बुलाते हैं या लिखते हैं ऐसे दिल से ऊँचा मानना अर्थात् दिल से रिगार्ड देना। दूसरा होता है बाहर की मर्यादा प्रमाण रिगार्ड देना ही पड़ता है। तो ''दिल से देना'' और ''देना ही पड़ता'' इसमें कितना अन्तर है! पूज्य बनना अर्थात् दिल से सर्व मानें।

3.2.88.. .. वह भी दिन आ जायेंगे जो सब कहेंगे कि अगर फ़िलॉसॅफी है तो आदि सनातन धर्म की है। हिन्दू शब्द से बिगड़ते हैं लेकिन आदि सनातन धर्म को रिगार्ड देंगे। गॉड एक है तो धर्म भी एक है, हम सबका धर्म भी एक है – यह धीरे-धीरे आत्मा के धर्म की तरफ़ आकर्षित होते जायेंगे।

31.3.88.. .. अभी ऐसा ग्रुप तैयार करो। जैसे पहले ग्रुप के लिए सब कहते हैं कि इन्हों का आपस में स्नेह है। स्वभाव भिन्न-भिन्न हैं, वह तो रहेंगे ही लेकिन 'रिगार्ड' है, 'प्यार' है, 'हाँ जी' है, समय पर अपने आपको मोल्ड कर लेते - इसलिए यह किले की दीवार मज़बूत है, इसलिए ही आगे बढ़ रहे हैं। फाउण्डेशन को देखकर ख़ुशी होती है ना। जैसे यह पहला पूर दिखाई देता है, ऐसे शक्तिशाली ग्रुप बन जाएँ तो सेवा पीछे-पीछे आयेगी।

.. सदैव अपने को दाता के बच्चे और देवता बनने वाले हैं – यही याद रखो। दाता के बच्चे लेकर नहीं देते। मान मिले, रिगार्ड दे तो दूँ – ऐसा नहीं। सदा दाता के बच्चे देने वाले। ऐसा नशा सदा रहता है ना।

13.1.92.. .. वहाँ रॉयल फैमिली का पद भी इतना होता है जितना तख्त-नशीन राजा-रानी का होता है। इसलिए फर्स्ट डिवीजन का लक्ष्य सदा रखना। रॉयल फैमिली वहाँ कम नहीं होती है–इतना ही पद होता है, इतना ही रिगार्ड होता है जितना लक्ष्मी-नारायण का। तो फर्स्ट रॉयल फैमिली में आना भी इतना ही है जितना लक्ष्मी-नारायण बनना। इसलिए पुरुषार्थ करना, चांस है। तो लक्ष्य तो बहुत अच्छा रखा है।

31.12.92.. .. इस ईश्वरीय मार्ग में कभी भी कोई ऐसे कह नहीं सकता कि मेरी बुद्धि का प्लैन बहुत अच्छा है, मेरी राय बहुत अच्छी है, मेरी राय क्यों नहीं मानी गई? 'मेरी' है? मेरी बुद्धि बहुत अच्छा काम करती है, मेरी बुद्धि को रिगार्ड नहीं दिया गया। तो 'मेरा' है? जो भी विशेषता है वह 'मेरी' है या 'बाप' की देन है? तो बाप की देन में मेरापन नहीं आ सकता। इसलिए सदा ही न्यारे और प्यारे रहने वाले। तो यह भी एक सीढ़ी है बालक और

मालिक बनने की। यह सीढ़ी है–कभी चढ़ो, कभी उतरो। कभी बालक बन जाओ, कभी मालिक बन जाओ। इससे सदा ही हल्के रहेंगे, किसी प्रकार का बोझ नहीं।

14.12.94.. .. बापदादा सदा टीचर्स को समान स्वरूप से देखते हैं। इतना स्नेह और इतना रिगार्ड बाप सदा देते हैं और उसी नज़र से देखते हैं कि ये समान सेवाधारी हैं। टीचर्स के बिना तो काम नहीं चलेगा ना! आप लोगों को ठप्पा तो टीचर्स का लगाना पड़ता है ना? अगर टीचर्स आपके फॉर्म पर ठप्पा नहीं लगायेंगी तो कैसे आयेंगे?

9.1.95.. .. फालो फादर गाया हुआ है या फालो ब्रदससिस्टर? विशेषता देखो, लेकिन फालो फादर। रिगार्ड रखो लेकिन गाइड एक बाप है। कोई भाईबहन गाइड नहीं बन सकता। गाइड एक है। गॉड गाइड है और साकार एग्ज़ाम्पल ब्रह्मा बाप है। बस। तो फालो फादर करते हो कि सोचते हो कि ब्रह्मा को तो देखा ही नहीं, जाना ही नहीं, तो कैसे फालो करें? जानते नहीं हो, देखा नहीं है? टीचर्स को देखा, भाईबहनों को देखा, बाप को देखा ही नहीं–ऐसे तो नहीं सोचते? कोई भी निमित्त हैं लेकिन निमित्त बनाया किसने? अपने आप ही तो निमित्त नहीं बने ना? बाप ने बनाया। तो फिर बाप याद आयेगा ना?

दूसरे के विचारों को अपने विचारों से मिलाना–यही है रिगार्ड देना।

7.3.95.. .. जैसे खुशी से अपने विचार देते हो ऐसे दूसरे के विचार भी खुशी से लो। घबराओ नहीं–ये कैसे होगा, ये क्या किया, ये तो हो नहीं सकता, ये तो चल नहीं सकता....। दूसरे की राय, दूसरे की बात को भी इतना ही रिगार्ड दो जितना अपनी बात को रिगार्ड देते हो। विचार देना अलग चीज है, आपको उनके विचार अगर ठीक नहीं भी लगते हैं तो उसके इफेक्ट में आना, अवस्था नीचेऊपर हो जाये तो ये सेवा, सेवा नहीं होती। एडजस्ट करना, दूसरों के विचार को भी अपने विचारों के माफिक सोचना समझना–यह है दूसरे के विचारों को रिगार्ड देना। जैसे समझते हो ना कि मैंने यह सोचा या विचार निकाला, विचार किया, काम किया, तो मेरे विचारों का महत्व होना चाहिये, दूसरों को रिगॉर्ड देना चाहिये, ऐसे दूसरे का विचार भी अपने विचारों से मिलाना, वो मिलाना नहीं आता है, दूसरे के विचार को दूसरों के विचार समझते हो। क्योंकि अभी आप डबल विदेशी भी सेवा के क्षेत्र में प्लैन बनाने में अच्छी प्रोग्रेस कर रहे हो और आगे भी होनी है। लेकिन एडजस्टमेन्ट की विशेषता को यूज़ करो। अगर कोई भी बच्चा आगे बढ़ता है तो बापदादा को खुशी होती है। ऐसे नहीं समझते कि ये क्यों आगे बढ़े! जो बढ़ता है वो बहुत अच्छा। तो डबल विदेशियों के लिये बापदादा को स्नेह तो है ही लेकिन सेवा के प्लैन राय प्रैक्टिकल सेवा के लिये जो करते हो, कर रहे हो, उसके लिये बहुतबहुत रिगार्ड है।

6.4.95.. .. लौकिक पर्सनालिटी वालों का गायन विशेष बुक में होता है और आपका गायन शास्त्रों में होता है और शास्त्रों को कितना रिगार्ड देते हैं। बड़े विधिपूर्वक शास्त्र को सम्भालते हैं, उसको भी बड़े पूज्य के रूप में देखते हैं। जो सच्चे भक्त हैं वो शास्त्र को विधिपूर्वक रखते भी हैं और पढ़ते भी हैं। ऐसे रिवाजी किताबों के माफिक नहीं रखते। तो अपनी पवित्रता की पर्सनालिटी को सदा ही इमर्ज रूप में स्मृति में रखो।

18.1.97.. .. भगत भी आपकी पूजा सन्तुष्टता से करेंगे, काम चलाऊ नहीं, दिल से करेंगे। तो यहाँ ब्राह्मण जीवन में जितने ब्राह्मणों का आपके प्रति स्नेह, सम्मान अर्थात् रिगार्ड होगा, दिल से सन्तुष्ट होंगे, उतना ही पूज्य बनेंगे। पूज्य के लिए स्नेह और सम्मान होता है। तो जब जब जड़ चित्रों की पूजा होगी, तब इतना ही स्नेह और रिगार्ड मिलेगा। सारे कल्प की प्रारब्ध अभी बनानी है।

31.1.98.. .. बाकी सभी विदेश के सेन्टर्स के बच्चे बहुत अच्छे-अच्छे कार्ड भी भेजते हैं, पत्र भी भेजते हैं, कोई आता है तो बहुत-बहुत यादप्यार भी भेजते हैं। बापदादा भी कार्ड को रिगार्ड देते हैं। दिल से भेजते हैं, दिखावे से

नहीं भेजें। दिखावे से भेजना वह एकानामी होनी चाहिए और दिल से भेजते हैं तो उसका कोई मूल्य नहीं है। तो हर एक के साइन किये हुए बहुत कार्ड बापदादा के पास हर उत्सव के पहुंचते हैं। भारतवासियों के भी पहुंचते हैं। बापदादा सभी कार्डस और पत्रों का एक ही जवाब देते हैं - मुबारक हो, बधाईयां हो, सदा सफल रहो और औरों को भी सफलता स्वरूप बनाते उड़ो। चलो नहीं, उड़ो।

30.3.98.. .. जो भी डायरेक्शन मिलते हैं, डायरेक्ट बाप द्वारा मिलते हैं, चाहे निमित्त आत्मायें दादियों द्वारा मिलते हैं, उसको रिगार्ड देना अति आवश्यक है। इसमें न बहाना देना, न अलबेलापन करना। आगे के लिए बापदादा बता देता है कि मार्क्स जमा नहीं हुई। इसलिए इसको महत्व देना अर्थात् महान बनना। हल्की बात नहीं करो।

7.4.98.. .. बाबा ने कहा कि सभी मीटिंग वाले बच्चों का एक गुण देखकर बाबा को बहुत प्यार आ रहा है। वह कौन-सा गुण? बाबा ने कहा एक गुण यह है कि जब प्रोग्राम बनता है, तो सब बड़े उमंग-उत्साह से पहुँच जाते हैं। अपने सरकमस्टांश को किनारे कर, मधुबन से दादी का जब बुलावा होता है तो एवररेडी बन बुलावे पर एक्यूरेट पहुँच जाते हैं, यह गुण सभी का बहुत अच्छा है। इस गुण को देख करके बाबा मुबारक देते हैं। तो जैसे इस समय यह गुण बहुत प्रिय लग रहा है, ऐसे जब भी बड़े निमित्त बने हुए कोई सेवा के लिए भी आर्डर देवें तो आप समय प्रमाण, डायरेक्शन प्रमाण वहाँ पहुँच करके वह कार्य करो। तो यह भी एक बड़ों को रिगार्ड देना है, हाँ जी का पाठ पढ़ कर बड़ों की बहुत दुआयें लेनी हैं, इसलिए बाबा इस गुण के ऊपर हरेक बच्चे को अरब गुणा, खरब गुणा मुबारक देते हैं।

31.12.99.. .. आप लोग सभी नये वर्ष में सिर्फ कार्ड देकर हैपी न्यु इयर नहीं करना लेकिन कार्ड के साथ हर एक आत्मा को दिल से रिगॉर्ड देना। रिगार्ड का कार्ड देना और एक-दो को सौगात में छोटी-मोटी कोई भी चीज़ें तो देते ही हो, वह भी भले दो लेकिन उसके साथ-साथ दुआयें देना और दुआयें लेना। कोई नहीं भी दे तो आप लेना। अपने वायब्रेशन से उसकी बद-दुआ को भी दुआ में बदल लेना। तो रिगार्ड देना और दुआयें देना और लेना - यह है नये वर्ष की गिफ्ट। शुभ भावना द्वारा आप दुआ ले लेना।

31.12.2000.. .. बापदादा को छोटे कहते हैं कि हमको बड़ों का प्यार चाहिए और बाप छोटों को कहते हैं कि बड़ों का रिगार्ड रखो तो प्यार मिलेगा। रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। रिगार्ड ऐसे नहीं मिलता है। देना ही लेना है। जब आपके जड़ चित्र देते हैं। देवता का अर्थ ही है देने वाला। देवी का अर्थ ही है देने वाली। तो आप चैतन्य देवी देवतायें दाता बनो, दो। अगर सभी देने वाले दाता बन जायेंगे, तो लेने वाले तो खत्म हो जायेंगे ना! फिर चारों ओर सन्तुष्टता की, रूहानी गुलाब की खुशबू फैल जायेगी। सुना!

25.10.2002.. ..देवता अर्थात् देने वाला दाता, कोई गाली देता है, रिस्पेक्ट नहीं करता है तो किचड़ा है ना कि अच्छी चीज़ है? तो आप लेते क्यों हो? किचड़ा लिया जाता है क्या? कोई आपको किचड़ा देवे तो आप लेगें? नहीं लेंगे ना। तो रिस्पेक्ट नहीं करता, इन्सल्ट करता, गाली देता, आपको डिस्टर्व करता, तो यह क्या है? अच्छी चीज़ें हैं। फिर आप लेते क्यों हो? थोड़ा-थोड़ा तो ले लेते हो, पीछे सोचते हो नहीं लेना था। तो अभी लेना नहीं। लेना अर्थात् मन में धारण करना, फील करना। तो अपने अनादिकाल, आदिकाल, मध्यकाल, संगम काल, सारे कल्प के प्युरिटी की रॉयल्टी, पर्सनाल्टी याद करो। कोई क्या भी करे आपकी पर्सनाल्टी को कोई छीन नहीं सकता। यह रूहानी नशा है ना?

7.1.2003.. .. बापदादा ने देखा कि निमित्त बनी दादी जी के संकल्प को चारों ओर उमंग से स्वीकार करते हैं। यही है बाप के संकल्प को रिगार्ड देना क्योंकि दादियों को साकार रूप में निमित्त बापदादा ने ही बनाया है।

8.1.2003(अव्यक्त सन्देश).. ..आज विशेष दादी जानकी की यादप्यार लेते बाबा के पास पहुंची और दादी के दिल का संकल्प बाबा को सुनाया। बाबा बहुत जिगरी दिल से मुस्कराया और बोले, बच्ची को बाप के हर एक अमूल्य बोल से बहुत प्यार और रिगार्ड है इसलिए बच्ची औरों को भी हर बोल, वचन का महत्त्व और प्यार सिखाती है। बापदादा ने जो बेहद की सेवा अर्थ निमित्त बनाया है, तो रहमदिल से हर कोने की आत्माओं को कुछ प्रभु प्रसाद मिल जाए, कोई वंचित न रह जाए, यह दृढ़ संकल्प स्वत: ही सफलता दिलाता रहता है।

श्रीमत की हिम्मत और रिगार्ड में स्वयं रह औरों को भी श्रीमत पर चलने की विधि सच्ची दिल, साफ दिल का महामन्त्र अच्छा अनुभव कराती है। इसलिए बापदादा कहते मस्तकमणी है, दिल के हार का सच्चा डायमण्ड है।

4.2.2003(अव्यक्त सन्देश)... कुछ समय बाद बाबा बोले, आप त्रिमूर्ति बच्चों को देख बापदादा बहुत दिल की दुआयें देते हैं और वाह मेरे दिल खुश बच्चे वाह! के गीत गाते हैं कि आपस में विचार मिलाते, हाँ जी का पाठ पक्का कर एक दो के संकल्प संस्कार को मिलाते रिगार्ड देते, बेहद की सेवा को बढ़ा रहे हैं। बस सदा सेवा के साथी बन, संगठन के लिए एग्जैम्पुल बन आगे बढ़ते रहो, उड़ते रहो, यही विधि है ब्राह्मण परिवार के संगठन को निमित्त बन आगे बढ़ाने की।

6.3.2003(अव्यक्त सन्देश).....बापदादा तो बच्चों के संस्कार मिलन की महारास देखने चाहते हैं। उसका आधार है एक दो में फेथ, रिस्पेक्ट और सरल नेचर। बापदादा देखते हैं कि दिनप्रतिदिन एक दो के नजदीक आ ही रहे हैं। समय अनुसार होना ही है।

2.4.2008.. .. दादियों से:- आप लोगों को देख सभी खुश हो जाते हैं क्योंकि आदि रत्न हो ना और निमित्त बने हुए हो। आपस में मिलकर एक दो की राय को महत्व देते हुए यह परिवर्तन का कार्य कर रहे हो और करते रहेंगे। यह छोटा सा संगठन है ना। एक दो की राय को रिगार्ड देते हुए सभी को निमित्त और निर्माण बनाने वाले विशेष कार्य के निमित्त बने हुए हो। अच्छा है।

22.2.2009.. .. दादियों से:- आपस में बैठे, सभी ने अपने अपने विचार दिये, विचार तो भिन्न भिन्न होंगे, लेकिन विचारों को समझ, रिगार्ड दे ,एक दो में स्पष्ट करना। बिना स्पष्ट किये अन्दर नहीं रखें। अन्दर रखने से किचड़ा हो जाता है। कोई भी चीज़ अगर अन्दर रखो और सफाई नहीं करो तो क्या होता है? तो आप निमित्त जो बच्चे हैं, उनको बापदादा कहते है मुरब्बी बच्चे, पाण्डव भी हैं लेकिन जो निमित्त हैं वह मुरब्बी बच्चे, मुरब्बी बच्चों का संगठन बहुत जल्दी सभी को बहुत उमंग उत्साह में लाता है।

19.2.2012.. .. (तीनों भाईयों को जन्म दिन की गिफ्ट) मुबारक यह है कि सदा समय पर एक दो को सहयोग दे करके कारोबारको ऐसे इज़ी चलाओ जो कोई भी मेहनत नहीं करनी पड़े और डिसकस कोई बात में नहीं करनी पड़े, सहज होता जाए । हो रहा है और थोड़ा अटेन्शन। सब मिलकर करते चलो। एक दो के विचार को रिगार्ड देते हुए फाइनल करते चलो क्योंकि विचारों में फर्क तो होता है लेकिन विचारों को मिलाना है, मिलाके सन्तुष्ट करना है और सन्तुष्टता फैलानी है।

30.3.2014.. .. हरिद्वार में सन्त सम्मेलन होने वाला है, आपकी कोई प्रेरणा हो:- कभी भी ऐसे धार्मिक स्थान पर जाते हैं तो उन्हों के प्रति शुभ भावना रख उनकी महिमा भी करनी चाहिए, जो वह समझें यह हमारे को रिगार्ड देते हैं।

5. रूहानियत

28.11.69 .. .. .. सम्पूर्ण समर्पण जो हो जाता है उसकी दृष्टि क्या होती है? (शुद्ध दृष्टि, शुद्ध वृत्ति हो जाती है) लेकिन किस युक्ति से वह वृत्ति-दृष्टि शुद्ध हो जाती है? एक ही शब्द में यह कहेंगे कि दृष्टि और वृत्ति में रूहानियत आ जाती है। अर्थात् दृष्टि वृत्ति रुहानी हो जाती है। जिस्म को नहीं देखते हैं तो शुद्ध, पवित्र दृष्टि हो जाती है। जड़ चीज़ को ऑखों से देंखेंगे ही नहीं तो उस तरफ वृत्ति भी नहीं जायेगी। दृष्टि नहीं जायेगी तो वृत्ति भी नहीं जायेगी। दृष्टि देखती है तब वृत्ति भी जाती है। रूहानी दृष्टि अर्थात् अपने को और दूसरों को भी रूह देखना चाहिए।

25.12.69 .. .. .. यह प्रश्न है कि रूहानियत सदा कायम क्यों नहीं रहती है? रूहानियत कायम न रहने का कारण यह है कि अपने को और दूसरों को जिनके सर्विस के लिये हम निमित्त हूँ, उन्हों को बापदादा की अमानत समझ कर चलना। जितना अपने को और दूसरों को अमानत समझेंगे तो रूहानियत आयेगी। अमानत न समझने से कुछ कमी पड़ जाती है। मन के संकल्प जो करते हैं वह भी ऐसे समझ करके करें कि यह मन भी एक अमानत है। इस अमानत में ख्यानत नहीं डालनी है। दूसरे शब्दों में आप औरों को ट्रस्टी कहकर समझाते हो ना। उन्हों को ट्रस्टी कहते हो लेकिन अपने मन और तन को और जो कुछ भी निमित्त रूप में मिला है, चाहे जिज्ञासु हैं, सेन्टर है, वा स्थूल कोई भी वस्तु है लेकिन अमानत मात्र है। अमानत समझने से इतना ही अनासक्त होंगे। बुद्धि नहीं जायेगी। अनासक्त होने से ही रूहानियत आवेगी।

20.2.74 .. .. .. इतना सहजयोगी बनो जो आपको देखते ही औरों का योग लग जावे। एक घड़ी का रोब सारे दिन की रूहानियत को तो गँवा देता है, इससे तो फौरन किनारा करना चाहिये।

रूहानियत से रोब की समाप्ति करनी है, इसे ही शास्त्रों में पाण्डवों का पहाड़ों पर गलना कहा गया है।

19.9.75 .. .. .. कमल-पुष्प के आगे रूहानी गुलाब वह कौन थे? रूहानी गुलाब जो सदा अपने रूहानियत की स्थिति में स्थित रहते हुए सर्व को भी रूहानियत की दृष्टि से देखने वाले, सदा मस्तक मणि को देखने वाले हैं। साथ-साथ अपनी रूहानियत की स्थिति से सदा अर्थात् हर समय सर्व आत्माओं को अपनी स्मृति, दृष्टि और वृत्ति से रूहानी बनाने के शुभ संकल्पों में रहने वाले अर्थात् हर समय योगी तू आत्मा सेवाधारी आत्मा हो कर चलने वाले – ऐसे रूहानी गुलाब

रूहानी गुलाब वह है जो सदा रूहानियत की स्थिति में स्थित रहे।

वर्तमान समय रूहानी दृष्टि और वृत्ति के अभ्यास की बहुत आवश्यकता है। 75% इस रूहानियत के अभ्यास में कमजोर हैं। मैजॉरिटी किसी-न-किसी प्रकार के प्रकृति के आकर्षण के वशीभूत हो ही जाते हैं।

20.10.75.. .. .. सच्चे सुख की अनुभूति तब होगी जब शिकायतों को रूहानियत में बदलेंगे।

शिकायतों को रूहानियत में बदली करो, तब संगमयुग के सुखों को अनुभव करेंगे।

24.10.75.. .. .. आत्मिक वृत्ति और रूहानी वृत्ति। इस वृत्ति द्वारा प्रवृत्ति में भी रूहानियत भर जायेगी अर्थात् प्रवृत्ति में रूहानियत के कारण अमानत समझ कर चलेंगे। तो मेरा-पन सहज ही समाप्त हो जायेगा।

6.12.75.. .. .. चेक करो – हमारी तस्वीर में रूहानियत कहाँ तक आई है।

8.12.75.. .. .. जितना-जितना परखने की शक्ति बढ़ती जाएगी तो कोई भी आत्मा सामने आयेगी तो वह कहाँ तक रूहानियत की अनुभवी है वह फौरन ही उसके वायब्रेशन द्वारा स्पष्ट समझ में आ जायेगा।

27.1.76.. .. .. फास्ट पुरुषार्थ करने वालों की सूरत और सीरत बाप-समान सदा रूहानी नज़र आती है। सिवाय रूहानियत के अन्य कोई भी संकल्प व स्मृति नहीं रहती, अर्थात् बाप द्वारा प्राप्त हुई सर्व शक्तियाँ स्वरूप में दिखाई देती हैं। उनकी हर नज़र में हर आत्मा को 'नज़र से निहाल' करने की रूहानियत दिखाई देगी।

8.2.76 .. .. .. रूहानी परिवार का कनेक्शन रूहानियत के बजाय देह-अभिमान का कनेक्शन है तो वह भी यथार्थ कनेक्शन नहीं हुआ।

26-1-77 .. .. .. इस शिवरात्रि पर ऐसी स्थूल और सूक्ष्म स्टेज बनाओ, जिससे आने वाली आत्माओं को अपने स्वरूप रूह और रूहानियत का अनुभव हो। वाणी द्वारा वाणी से परे जाने का अनुभव हो। ऐसे सम्पर्क में आने वाली आत्माओं का विशेष प्रोग्राम रखो। लक्ष्य रखो कि अनुभव कराना है, न कि सिर्फ भाषण करना है, चाहे छोटे-छोटे संगठन बनाओ लेकिन रूहानियत और रूहानी बाप के सम्बन्ध और अनुभव में समीप लाओ।

14-4-77.. .. .. हर एक ने यथा- शक्ति अपनी-अपनी तस्वीर तैयार की है। तस्वीर के अन्दर विशेषता रूहानियत की चाहिए। रूहानियत भरी तस्वीर हर आत्मा को रूहानी बाप की राह बता देती है।

11-5-77 आपको भी सदा बाप के साथ का अनुभव होता है? जब साथ का अनुभव होगा तो जो बाप के गुण, बाप की शक्तियाँ वह आपकी हैं। जैसे बाप रूहानी है वैसे साथ में रहने वाले भी रूहानियत में रहेंगे। शरीर को देखते भी रूह को देखेंगे।

30-6-77.. .. .. जो वाणी कर्म करती है उससे कई गुणा अधिक रूहानियत की शक्ति कार्य कर सकती है। जैसे वाणी में आने का अभ्यास हो गया है, वैसे रूहानीयत का अभ्यास हो जाएगा तो वाणी में आने का दिल नहीं होगा।

13.1.78.. .. .. बाप के समीप रहने वालों के ऊपर बाप के सत के संग का रंग चढ़ा हुआ होगा। सत के संग का रंग है रूहानियत। तो समीप रतन सदा रूहानी स्थिति में स्थित होंगे। शरीर में रहते हुए न्यारे, रूहानियत में स्थित रहेंगे। शरीर को देखते हुए भी न देखें और आत्मा जो न दिखाई देने वाली चीज़ है। वह प्रत्यक्ष दिखाई दे यही कमाल है। रूहानी मस्ती में रहने वाले ही बाप को साथी बना सकते , क्योंकि बाप रूह है।

5-12-78.. .. .. जहाँ रूहानियत होगी वहाँ आँसू नहीं होंगे।

10-12-78.. .. .. हर बोल में रूहानियत हो – रूहानियत के शब्द बहुत मीठे होते हैं।

10.12.79 .. .. .. पुण्य आत्माओं का संकल्प एक रूहानी चुम्बक है जो आत्मा को रूहानियत की तरफ आकर्षित करने वाला है।

18.1.80 .. .. .. अपने सेवाकेन्द्र का व जो भी सम्पर्क के सेवाकेन्द्र हैं उनका वातावरण रूहानियत का बनाओ जिससे स्वयं की और आने वाली आत्माओं की, जो नयेन ये आते हैं उनकी सहज उन्नति हो सके।

19-10-81 .. .. .. रूहानियत में अभिमान नहीं होता है। स्वमान होता है। स्वमान अर्थात स्व-आत्मा का मान। स्वमान और अभिमान दोनों में अन्तर है। तो सदा स्वमान की सीट पर स्थित रहो। अभिमान की सीट छोड़ दो।

11-11-81 .. .. .. नम्रचित नहीं तो सेवा हो नहीं सकती। तो सेवाधारी की विशेषता – सदा नम्रचित, स्वयं झुका हुआ होगा तब औरों को झुका सकेगा। तो रूहानी सेवाधारी! 'रूहानी' शब्द सदा याद रखो। चलते-फिरते, बोलते... कर्म में रूहानियत दिखाई दे। साधारणता नहीं, रूहानियत।

18-11-81 .. .. .. सभी को विशेष रूहानियत का अनुभव कराओ। शान्ति, शक्ति का अनुभव कराओ। नालेज तो बहुत है लेकिन एक सेकेण्ड की अनुभूति ही उन्हों के लिए नवीनता है।

8-1-82 .. .. .. गुडमार्निंग से सेवा शुरू होती है और गुडनाइट तक सेवा ही सेवा है। जैसे निरन्तर योगी ऐसे ही निरन्तर रूहानी सेवाधारी। चाहे कर्मणा सेवा भी करते हो तो कर्मणा द्वारा भी रूहों को रूहानियत की शक्ति भरते हो क्योंकि कर्मणा के साथ-साथ मंसा सेवा भी करते हो। तो कर्मणा सेवा में भी रूहानी सेवा। भोजन बनाते हो तो रूहानियत का बल भोजन में भर देते हो, इसलिए भोजन 'ब्रह्मा भोजन' बन जाता है। शुद्ध अन्न बन जाता है। प्रसाद के समान बन जाता है। तो स्थूल सेवा में भी रूहानी सेवा भरी है।

14-3-82.. .. .. भारत वालों ने अल्पकाल के साधनों की कापी की और कापी करने के कारण अपनी असली शक्ति को खो दिया। रूहानियत से किनारा कर लिया और विदेशी सुख के साधनों का सहारा ले लिया। और विदेश ने क्या किया? समझदारी का काम किया। भारत की असली रूहानी शक्ति ने उन्हों को विदेश में आकर्षित किया। इसका परिणाम हरेक नामधारी रूहानी शक्ति वाले के पास अथवा निमित्त गुरुओं के पास विदेशी फालोअर्स ज़्यादा देखने में आयेंगे। विदेशी आत्मायें नकली साधनों को छोड़कर असलियत की तरफ, रूहानियत की तरफ ज्यादा आकर्षित हो रही हैं और भारतवासी नकली साधनों में मस्त हो गये हैं। अपनी चीज़ को छोड़ पराई चीज़ के तरफ जा रहे हैं और विदेशी आत्मायें असली चीज़ को ढूँढ़ने, परखने और पाने की ज़्यादा इच्छुक हैं।

24.3.82.. .. .. रूहानी गुलाब अर्थात् चारों ओर रूहानियत की खुशबू फैलाने वाले।

1-6-83.. .. .. कर्म का भाषण कोई नहीं कर सकता है। मुख का भाषण अनेक कर सकते। कर्म बाप को प्रत्यक्ष कर सकता है। कर्म रूहानियत को सिद्ध कर सकता है।

12-3-84.. .. .. सन्तुष्टता रूहानियत की सहज विधि है।

19.12.84.. .. .. रूहानी गुलाब सदा रूहानियत में रहने वाला, सदा रूहानी नशे में रहने वाला। सदा रूहानी सेवा में रहने वाला – ऐसे रूहानी गुलाब हो। आजकल के समय प्रमाण रूहानियत की आवश्यकता है। रूहानियत न होने के कारण ही यह सब लड़ाई झगड़े हैं। तो रूहानी गुलाब बन रूहानियत की खुशबू फ़ैलाने वाले। यही ब्राह्मण जीवन का आक्यूपेशन है। सदा इसी आक्यूपेशन में बिजी रहो।

2-12-85.. .. .. इस ब्राह्मण जीवन की विशेषता ही है – 'रूहानियत'। इस रूहानियत की शक्ति से स्वयं को वा सर्व को परिवर्तन करते हो। मुख्य फाउण्डेशन ही यह 'रूहानी शक्ति' है। इस शक्ति से ही अनेक प्रकार के जिस्मानी बन्धनों से मुक्ति मिलती है।

जैसे सृष्टि की रचना में तीन कार्य स्थापना, पालना और विनाश, तीनों ही आवश्यक हैं। ऐसे सर्व बन्धनों से मुक्त होने की युक्ति – मन्सा, वाचा, कर्मणा तीनों रूहानी शक्तियाँ साथ-साथ आवश्यक हैं। कभी मन्सा को सम्भालते तो वाचा में कमी पड़ जाती। फ़िर कहते सोचा तो ऐसे नहीं था, पता नहीं यह क्यों हो गया। तीनों तरफ पूरा अटेन्शन चाहिए। क्योंकि यह तीनों ही साधन सम्पन्न स्थिति को और बाप को प्रत्यक्ष करने वाले हैं। मुक्ति पाने के लिए तीनों में रूहानियत अनुभव होनी चाहिए। जो तीनों में युक्तियुक्त हैं वो ही जीवनमुक्त हैं।

30-12-85 .. .. .. जहाँ भी हो, जो भी ड्यूटी मिली है, चाहे दूर बैठने की, चाहे स्टेज पर आने की – मुझे सहयोगी बनना ही है। इसको कहा जाता है सारे विश्व में सेवा की रूहानियत की लहर फैलाना।

3.11.92.. .. .. आप रॉयल फैमली की आत्मायें आदि काल में भी और अनादि काल में भी और वर्तमान संगमयुग में भी रूहानी रॉयल्टी वाली हो। अनादि काल स्वीटहोम में भी आप विशेष आत्माओं की रूहानियत की झलक, चमक सर्व आत्माओं से श्रेष्ठ है। आत्मायें सभी चमकती हुई ज्योतिस्वरूप हैं, फिर भी आपकी रूहानी रॉयल्टी की चमक अलौकिक है।

5-3-2001.. .. .. रचना जो रची है, उसकी पालना रूहानियत की शक्ति द्वारा करो अब बाप चाहते हैं – विस्तार को सार में लाओ। रचना तो आपने कर ली है, उसकी मुबारक है लेकिन अब उन्हों के पालना की आवश्यकता है क्योंकि रूहानी पालना कम होने से आने वाली आत्मायें वा सेवा साथी अब भी कमज़ोर हैं। रूहानियत की शक्ति कम है इसलिए अब इस पर अटेन्शन दो।

15-12-2001.. .. .. एकव्रता बन पवित्रता की धारणा द्वारा रूहानियत में रह मनसा सेवा करो

रूहानियत नयनों से प्रत्यक्ष होती है। रूहानियत की शक्ति वाली आत्मा सदा नयनों से औरों को भी रूहानी शक्ति देती है। रूहानी मुस्कान औरों को भी खुशी की अनुभूति कराती है। उनकी चलन, चेहरा फ़रिश्तों के समान डबल लाइट दिखाई देता है। ऐसी रूहानियत का आधार है पवित्रता। जितनी-जितनी मन-वाणी-कर्म में पवित्रता होगी उतना ही रूहानियत दिखाई देगी। पवित्रता ब्राह्मण जीवन का शृंगार है। पवित्रता ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है। तो बापदादा हर बच्चे की पवित्रता के आधार पर रूहानियत को देख रहे हैं। रूहानी आत्मा इस लोक में रहते हुए भी अलौकिक फ़रिश्ता दिखाई देगी।

चेक करो - हमारे संकल्प, बोल में रूहानियत है? रूहानी संकल्प अपने में भी शक्ति भरने वाले हैं और दूसरों को भी शक्ति देते हैं। जिसको दूसरे शब्दों में कहते हो रूहानी संकल्प मनसा सेवा के निमित्त बनते हैं। रूहानी बोल स्वयं को और दूसरे को सुख का अनुभव कराते हैं। शान्ति का अनुभव कराते हैं। एक रूहानी बोल अन्य आत्माओं के जीवन में आगे बढ़ने का आधार बन जाता है। रूहानी बोल बोलने वाला वरदानी आत्मा बन जाता है। रूहानी कर्म सहज स्वयं को भी कर्मयोगी स्थिति का अनुभव कराते हैं और दूसरों को भी कर्मयोगी बनाने के सैम्पुल बन जाते हैं। जो भी उनके सम्पर्क में आते हैं वह सहजयोगी, कर्मयोगी जीवन का अनुभवी बन जाते हैं। लेकिन सुनाया रूहानियत का बीज है पवित्रता। पवित्रता स्वप्न तक भी भंग न हो तब रूहानियत दिखाई देगी।

समय के अनुसार विश्व की आत्मायें आप आत्माओं को रूहानियत का सैम्पुल देखने चाहती हैं। इसका सहज साधन है - सिर्फ एक शब्द अटेन्शन में रखो, बार-बार उस एक शब्द को अपने आप अण्डरलाइन करो, वह एक शब्द है - एकव्रता भव।

6. सदा ब्रह्मचारी

07.12.78...किसी भी प्रकार की पवित्रता अर्थात् स्वच्छता खण्डन हुई है तो परम पूज्यनीय नहीं बन सकते हैं। बाप समान न होने कारण समीप सम्बन्ध में नहीं आ सकते। इसलिए श्रेष्ठता का आधार, समीपता का आधार बाल ब्रह्मचारी अर्थात् सदा ब्रह्माचारी, जिसको ही फालो फादर भी कहते हैं। सदा ब्रह्मचारी अर्थात् संकल्प में भी किसी प्रकार की अपवित्रता वृत्ति को चंचल नहीं बनाये। पहली हार वृत्ति की चंचलता, फिर दृष्टि और कृति की चंचलता होती है। वृत्ति की चंचलता रजिस्टर को दागी बना देती है – इसलिए वृत्ति से भी सदा ब्रह्मचारी।

07.12.78...श्रेष्ठता का आधार अपने मरजीवा जीवन में विशेष दो बातों की चैकिंग करो- एक सदा पर उपकारी रहे हैं। दूसरा आदि से अब तक सदा बाल ब्रह्मचारी रहे हैं। मरजीवा जीवन के आदिकाल से अर्थात् बालकाल से अब तक सदा ब्रह्मचारी रहे हैं! ब्रह्मचारी जीवन अर्थात् ब्रह्मा समान पवित्र जीवन। जिसको ब्रह्मचारी कहो या ब्रह्माचारी कहो – आदि से अन्त तक अखण्ड रहे हैं। अगर बार-बार खण्डित रहे हैं, तो बाल ब्रह्मचारी वा सदा ब्रह्माचारी नहीं कहला

22.01.82...सदा ब्रह्मचारी हैं लेकिन किसी आत्मा के प्रति विशेष झुकाव है जिसका रायल रूप स्नेह है। लेकिन एकस्ट्रा स्नेह अर्थात् काम का अंश। स्नेह राइट है लेकिन ''एकस्ट्रा'' अंश है।

24.03.82...वर्तमान समय के प्रमाण फ़रिश्ते-पन की सम्पन्न स्टेज के वा बाप समान स्टेज के समीप आ रहे हो, उसी प्रमाण पवित्रता की परिभाषा भी अति सूक्ष्म समझो। सिर्फ ब्रह्मचारी बनना भविष्य पवित्रता नहीं लेकिन ब्रह्मचारी के साथ 'ब्रह्मा आचार्य' भी चाहिए। शिव आचार्य भी चाहिए। अर्थात् ब्रह्मा बाप के आचरण पर चलने वाला। शिव बाप के उच्चारण किये हुए बोल पर चलनेवाला। फुट स्टैप अर्थात् ब्रह्मा बाप के हर कर्म रूपी कदम पर कदम रखने वाले। इसको कहा जाता है 'ब्रह्मा आचार्य'।

20.02.87...याद वा सेवा की सफ़लता का आधार है – पवित्रता। सिर्फ ब्रह्मचारी बनना – यह पवित्रता नहीं लेकिन पवित्रता का सम्पूर्ण रूप है – ब्रह्मचारी के साथ-साथ ब्रह्माचारी बनना। ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा के आचरण पर चलने वाले, जिसको फ़ालो फ़ादर कहा जाता है क्योंकि फ़ालो ब्रह्मा बाप को करना है। शिव बाप के समान स्थिति में बनना है लेकिन आचरण वा कर्म में ब्रह्मा बाप को फ़ालो करना है। हर कदम में ब्रह्मचारी। ब्रह्मचर्य का व्रत सदा संकल्प और स्वप्न तक हो। पवित्रता का अर्थ है – सदा बाप को कम्पैनियन (साथी) बनाना और बाप की कम्पनी (Company) में सदा रहना।

16.03.92...पवित्रता की परिभाषा अति सूक्ष्म है। सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं। तन से ब्रह्मचारी बनना इसको सम्पूर्ण पवित्रता नहीं कहते। मन से भी ब्रह्मचारी हो अर्थात मन भी सिवाय बाप के और किसी भी प्रकार के लगाव में नहीं आए। तन से भी ब्रह्मचारी, सम्बन्ध में भी ब्रह्मचारी, संस्कार में भी ब्रह्मचारी। इसकी परिभाषा अति प्यारी और अति गुह्य है।

30.03.98...आगे के लिए सदा स्वप्न मात्र भी, संकल्प मात्र भी पवित्रता का खण्डन नहीं हो। अखण्ड पवित्रता- यह है बाल ब्रह्मचारियों का लक्ष्य और लक्षण।

पवित्रता का व्रत सिर्फ ब्रह्मचर्य का व्रत नहीं लेकिन ब्रह्मा समान हर संकल्प, बोल और कर्म में पवित्रता – इसको कहा जाता है ब्रह्मचारी और ब्रह्माचारी। हर बोल में पवित्रता का वायब्रेशन समाया हुआ हो। हर संकल्प में पवित्रता का महत्त्व हो। हर कर्म में, कर्म और योग अर्थात् कर्मयोगी का अनुभव हो – इसको कहा जाता है ब्रह्माचारी। ब्रह्मा बाप को देखा हर बोल महावाक्य, साधारण वाक्य नहीं क्योंकि आपका जन्म ही साधारण नहीं, अलौकिक है। अलौकिकता का अर्थ ही है पवित्रता।

7. सहनशीलता

25.1.69_.. ..जो श्वांसों श्वाँस स्मृति में रहता होगा उसमें सहनशी-लता का गुण जरूर होगा और सहनशील होने के कारण एक तो हर्षित और शक्ति दिखाई देगी। उनके चेहरे पर निर्बलता नहीं। यह जो कभी-कभी मुख से निकलता है, कैसे करें, क्या होगा, यह जो शब्द निर्बलता के हैं, वह नहीं निकलनें चाहिए।

17.04.69... ब्राह्मणों का मुख्य संस्कार है – सर्वस्व त्यागी। इस त्याग से मुख्य गुण कौन से आते हैं? सरलता और सहनशी-लता। जिसमें सरलता, सहनशीलता होगी वह दूसरों को भी आकर्षण जरूर करेंगे। और एक दो के स्नेही बन सकेंगे। अगर सरलता नहीं तो स्नेह भी नहीं हो सकता। एक दो में स्नेही बनना है तो उसका तरीका यह है। एक तो सर्वस्व त्यागी देह सहित। इस सर्वस्व त्यागी से सरलता, सह-नशीलता आपे ही आयेगी। सर्वस्व त्यागी की यह निशानी होगी – सरलता और सहनशीलता। साकर रूप में भी देखा ना। जितना ही नालेजफुल उतना ही सरल स्वभाव। जिसको कहते हैं बचपन के संस्कार। बुजुर्ग का बुजुर्ग, बचपन का बचपन। एक दो के स्नेही कैसे बन सकेंगे? सिर्फ पत्र व्यवहार करना, संगठन करना? इससे नहीं बनेंगे। यह तो स्थूल बात है। लेकिन एक दो के स्नेही तब बनेंगे जबकि संस्कार और संकल्पों को एक दो से मिलायेंगे। उसका तरीका भी बताया (सर्वस्व त्यागी) सर्वस्व त्यागी की निशानी क्या होगी? (सरलता, सहनशीलता) यह बातें जब धारण करेंगे तब स्नेही बनेंगे। सरलता लाने के लिए सिर्फ एक बात जरूर वर्तमान समय ध्यान में रखनी है। वर्तमान समय देखा जाता है – आजकल की स्थिति जो है वह कुछ स्तुति के आधार पर है। स्तुति और निंदा दो शब्द है ना। तो वर्तमान समय स्तुति के आधार पर स्थिति है। अर्थात् जो कर्म करते हैं उनके फल की इच्छा वा लोभ रहता है। कत्तव्य के फल की इच्छा ज्यादा रखते हो। स्तुति नहीं मिलती है तो स्थिति भी नहीं रहती। स्तुति होती है तो स्थिति भी रहती है। अगर निंदा होती है तो निधन के बन जाते हैं। अपनी स्टेज को छोड़ देते हैं और धनी को भी भूल जाते हैं। तो यह कभी नहीं सोचना कि हमारी स्तुति हो। स्तुति के आधार पर स्थिति नहीं रखना। स्तुति के आधार पर स्थिति रखी तो डगमग होते रहेंगे

5.3.70.. ..जैसे संगठन का बल है, स्नेह का बल भी है, एक दो को सहयोग देने का बल भी है। अभी सिर्फ़ एक बल चाहिए, जिसकी कमी होने कारण ही माया की प्रवेशता हो जाती है। वह है सहनशीलता का बल। अगर सहनशीलता का बल हो तो माया कभी वार कर नहीं सकती। तो यह चारों बल चाहिए।
5.4.70... सहयोग और स्नेह के साथ अभी शक्ति भरनी है। अभी शक्तिरूप बनना है। शक्तियों में विशेष कौन सी शक्ति भरनी है? सहनशक्ति। जिसमें सहन शक्ति कम उसमें सम्पूर्णता भी कम। विशेष इस शक्ति को धारण करके शक्ति स्वरूप बन जाना है। तृप्त आत्मा जो होती है उनका विशेष गुण है निर्भयता और सन्तुष्ट रहना। जो स्वयं संतुष्ट रहता है और दूसरों को सन्तुष्ट रखता है उसमें सर्वगुण आ जाते हैं। जितना-जितना शक्तिस्वरूप होंगे तो कमज़ोरी सामने रह नहीं सकती। तो शक्तिरूप बनकर जाना। ब्रह्माकुमारी भी नहीं, कुमारी रूप में कहाँ-कहाँ कमज़ोरी आ जाती है। शक्ति-रूप में संहार की शक्ति है। शक्ति सदैव विजयी है। शक्तियों के गले में सदैव

विजय की माला होती है। शक्ति-रूप की विस्मृति से विजय भी दूर हो जाती है इसलिये सदा अपने को शक्ति समझना।

7.6.70.. .. आज हरेक की सरलता, श्रेष्ठता और सहनशीलता यह तीन चीज़ें एक-एक की देख रहे हैं। इन तीनों बातों में से कोई एक भी ठीक रीति धारण है तो दर्पण स्पष्ट है। अगर एक भी बात की कमी है तो दर्पण पर भी कमी का दाग दिखाई पड़ेगा। इसलिए जो भी कार्य करते हो, हर कार्य में तीन बातें चेक करो। सभी प्रकार से सरलता भी हो, सहनशीलता भी हो और श्रेष्ठता भी हो। साधारणपन भी न हो। अभी कहाँ श्रेष्ठता के बजाय साधारता दिखाई पड़ती है। साधारणपन को श्रेष्ठता में बदली करो और हर कार्य में सहनशीलता को सामने रखो। और अपने चेहरे पर, वाणी पर सरलता को धारण करो। फिर देखो सर्विस वा कर्त्तव्य की सफ़लता कितनी श्रेष्ठ होती है।

8.6.71.. .. .. सफलतामूर्त बनने के लिए मुख गुण चाहिए सहनशीलता। सहनशीलता और सरलता कोई भी कार्य को सफल बना देंगी। जैसे कोई धैर्यता वाला मनुष्य सोच समझकर कार्य करते है तो सफलता प्राप्त होती है। वैसे ही सहनशील जो होते हैं वह अपनी ही सहनशीलता की शक्ति से, कैसा भी कठोर संस्कार वाला हो वा कैसे भी कठिन कार्य हो, उनको शीतल बना देते हैं वा सहज कर देते हैं। सहनशीलता का गुण जिसमें होगा वह गम्भीर भी ज़रूर होगा। जो गम्भीर होता है वह गहराई में जाने वाला होता है और जो गहराई में जाने वाला होता है वह कोई भी कार्य में कभी घबरोगा नहीं। गहराई में जाकर सफलता प्राप्त करेगा। सहनशीलता वाले बाहरमुखता के वाब्रेशन को ही नहीं, लेकिन मन के संकल्प भी जो उत्पन्न होते हैं उन संकल्पों की उत्पत्ति को देखकर भी घबरोंगे नहीं। अपनी सहनशीलता से सामना करेंगे। और सहनशीलता के गुण वाले की सूरत से क्या दिखाई देगा? जिसमें सहनशीलता का गुण होता है वह सूरत से सदैव सन्तुष्ट दिखाई देगा। उनके नैन-चैन कभी भी असन्तुष्टता के नहीं दिखाई देंगे। तो जो स्वयं सन्तुष्टमूर्त रहते हैं वह औरों को भी सन्तुष्ट बना देंगे। और चलते-फिरते वह फरिश्ता अनुभव होगा। सहनशीलता बहुत मुख्य धारणा है। जितनी सहनशीलता अपने में देखेंगे उतना समझो स्वयं से भी सन्तुष्ट हैं, दूसरे भी सन्तुष्ट हैं। सन्तुष्ट होना माना सफलता पाना। जो कोई भी बात को सहन कर लेता है तो सहन करना अर्थात् उसकी गहराई में जाना। जैसे सागर के तले में जाते हैं तो रत्न लेकर आते हैं। ऐसे ही जो सहनशील होते हैं वह गहराई में जाते हैं, जिस गहराई से बहुत शक्तिाों की प्राप्ति होती है। सहनशील ही मनन-शक्ति को प्राप्त कर सकते हैं। सहनशील जो होता है वह ज्ञान स्वरूप बनो तो अन्दर ही अन्दर अपने मनन में तत्पर रहता है और जो मनन में तत्पर रहता है वही मग्न रहता है। तो सहनशीलता बहुत आवश्यक है। उनका चेहरा ही गुणमूर्त बन जायेगा। सहनशीलता की धारणा पर इतना अटेन्शन रखना है। सहनशील ही ड्रामा की ढाल पर ठहर सकता है। सहनशीलता नहीं तो ड्रामा की ढाल को पकड़ना भी मुश्किल है। सहनशीलता वाला ही साक्षी बन सकता है और ड्रामा की ढाल को पकड़ सकता है।

8.6.71.. .. जिसमें सहनशीलता का गुण होता है वह सूरत से सदैव सन्तुष्ट दिखाई देगा। उनके नैन-चैन कभी भी असन्तुष्टता के नहीं दिखाई देंगे। तो जो स्वयं सन्तुष्टमूर्त रहते हैं वह औरों को भी सन्तुष्ट बना देंगे। और चलते-

फिरते वह फरिश्ता अनुभव होगा। सन्तुष्ट होना माना सफलता पाना। श्रेष्ठ पुरुषार्थी बनने के लिो आपका सोचना, बोलना और करना एक समान हो

10.5.72.. .. सरलचित बहुत बनो लेकिन जितना सरलचित हो उतना ही सहनशील हों। कि सहनशीलता भी सरलता है? सरलता के साथ समाने की, सहन करने की शक्ति भी चाहिए। अगर समाने और सहन करने की शक्ति नहीं तो सरलता बहुत भोला रूप धारण कर लेती और कहां-कहां भोलापन बहुत भारी नुकसान कर देता है।

5.4.81.. .. इस वर्ष विशेष सहनशीलता का गुण हरेक को धारण करना है – संगठन में अगर कोई एक के लिए कुछ बोलता भी है तो दूसरा चुप रहे तो बोलने वाला कब तक बोलेगा? आख़िर तो चुप ही हो जायेगा। सिर्फ़ उसमें 10 बारी सुनने की हिम्मत चाहिए। दूसरे को बदलने के लिए थोड़ा तो सहन करना पड़ेगा। इसमें सहनशक्ति बहुत चाहिए। दो बारी में ही दिलशिकस्त नहीं हो जाओ। 10-12 बार तो सुनकर सहन करो।

1.4.82.. .. अगर एक शक्ति वा एक सहनशीलता के गुण को धारण कर लेंगे और समाने की शक्ति वा गुण को साथ-साथ यूज़ नहीं कर सकेंगे और कहेंगे कि इतना सहन तो किया ना? यह कोई कम किया क्या! यह भी मुझे मालूम है, मैंने कितना सहन किया, लेकिन सहन करने के बाद अगर समाया नहीं, समाने की शक्ति को यूज नहीं किया तो क्या होगा? यहाँ-वहाँ वर्णन होगा इसने यह किया, मैंने यह किया, तो सहन किया, यह कमाल ज़रूर की लेकिन कमाल का वर्णन कर कमाल को धमाल में चेन्ज कर लिया। क्योंकि वर्णन करने से एक तो देह अभिमान और दूसरा परचिन्तन दोनों ही स्वरूप कर्म में आ जाते हैं। इसी प्रकार से एक गुण को धारण किया दूसरे को नहीं किया तो जो धारणा स्वरूप होना चाहिए वह नहीं बन पाते। इस कारण मिले हुए खज़ाने को सदा धारण नहीं कर सकते अर्थात् सम्भाल नहीं सकते। सम्भाला नहीं अर्थात् गंवा दिया ना! कोई सम्भालता है कोई गंवा देता है। नम्बर तो होंगे ही ना! ऐसे सेवा में लगाना अर्थात् भाग्य की प्रापर्टी को बढ़ाना। इसमें भी सेवा तो सभी करते ही हो लेकिन सच्चे दिल से, लगन से सेवा करना, सेवाधारी बन करके सेवा करना इसमें भी अन्तर हो जाता है। कोई सच्चे दिल से सेवा करते हैं और कोई दिमाग के आधार पर सेवा करते हैं। अन्तर तो होगा ना!

31.12.82.. .. वैरायटी सेट का श्रृंगार बाक्स। जिस समय जो श्रृंगार चाहिए उस समय वही सेट धारण कर सदा सजे-सजाये रहना। कभी सहनशीलता का सेट पहनना, लेकिन फुलसेट पहनना। सिर्फ एक सेट नहीं पहनना। कानों द्वारा भी सहनशीलता हो, हाथों द्वारा भी सहनशीलता का श्रृंगार हो। ऐसे समय-समय पर भिन्न-भिन्न श्रृंगार करते हुए विश्व के आगे फ़रिश्ते रूप और देव रूप में प्रख्यात हो जायेंगे। यह त्रिमूर्ति सौगात सदा साथ रखना।

9.1.83.. .. सहन करने के संस्कार शुरू से नहीं है, इसलिए जल्दी घबरा जाते हो। स्थान को बदलेंगे या जिनसे तंग होंगे उनको बदल लेंगे। अपने को नहीं बदलेंगे। यह जो संस्कार है वह बदलना है। ''मुझे अपने को बदलना

है'', स्थान को वा दूसरे को नहीं बदलना है लेकिन अपने को बदलना है। यह ज़्यादा स्मृति में रखो, समझा! अब विदेशी से स्वदेशी संस्कार बना लो। 'सहनशीलता' का अवतार बन जाओ। जिसको आप लोग कहते हो अपने को एडजस्ट करना है। किनारा नहीं करना है, छोड़ना नहीं है।

3.3.84.. .. आर्डर करो सहनशीलता के गुण को और आवे हलचल का अवगुण। सभी शक्तियाँ, सभी गुण, हे स्व राजे, आपके आर्डर में हैं? यही तो आपके राज्य के साथी हैं। तो सभी आर्डर में हैं? जैसे राजे लोग आर्डर करते और सभी सेकण्ड में जी हजूर कर सलाम करते हैं, ऐसे कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर हैं? इसमें एवररेडी हो? स्व की कमजोरी, स्व का बन्धन धोखा तो नहीं देगा?

11.12.85.. .. दूसरे को यह शक्ति देना – यह है शक्ति को सेवा में लगाना। सिर्फ़ यह नहीं सोचो, मैं तो सहनशील रहता हूँ। लेकिन आपके सहनशीलता के गुण की लाइट-माइट दूसरे तक पहुँचनी चाहिए। लाइट-हाउस की लाइट सिर्फ़ अपने प्रति नहीं होती है। दूसरों को रोशनी देने वा रास्ता बताने के लिए होती है। ऐसे शक्ति रूप अर्थात् लाइट-हाउस, माइट-हाउस बन दूसरों को उसके लाभ का अनुभव कराओ। वह अनुभव करें कि निर्बलता के अंधकार से शक्ति की रोशनी में आ गये हैं वा समझें कि यह आत्मा शक्ति द्वारा मुझे भी शक्तिशाली बनाने में मददगार है।

20.3.87.. .. सबसे बड़े-ते-बड़ी युक्ति है – 'सहनशीलता के गुण को अपनाना'। जितना सहनशील होंगे, सत्यता की शक्ति होगी, उतना सहज अपना राज्य सतयुग ला सकेंगे। आप सब अनुभव की अथॉर्टी वाली आत्मायें हो। अनुभव की अथॉर्टी वाली आत्मा का प्रभाव बहुत जल्दी पड़ता है। अनुभव की अथॉर्टी बिना सेवा करते तो सफ़लता बहुत मुश्किल होती।

30.1.88.. .. दूसरा कदम – ''सहनशीलता''। जब समर्पण हुए तो बाप से सर्व श्रेष्ठ वर्सा तो मिला लेकिन दुनिया वालों से क्या मिला? सबसे ज़्यादा गालियों की वर्षा किस पर हुई? चाहे आप आत्माओं को भी गालियाँ मिली या अत्याचार हुए लेकिन ज़्यादा क्रोध वा गुस्सा ब्रह्मा को ही मिलता रहा। लौकिक जीवन में जो कभी एक अपशब्द भी नहीं सुना लेकिन ब्रह्मा बना तो अपशब्द सुनने में भी नम्बरवन रहा। सबसे ज़्यादा सर्व के स्नेही जीवन व्यतीत की लेकिन जितना ही लौकिक जीवन में सर्व के स्नेही रहे, उतना ही अलौकिक जीवन में सर्व के दुश्मन रूप में बने। बच्चों के ऊपर अत्याचार हुआ तो स्वत: ही इन्डायरेक्ट बाप के ऊपर अत्याचार हुए। लेकिन सहनशीलता के गुण से वा सहनशीलता की धारणा से मुस्कराते रहे, कभी मुरझाये नहीं। कोई प्रशंसा करे और मुस्कराये – इसको सहनशीलता नहीं कहते। लेकिन दुश्मन बन, क्रोधित हो अपशब्दों की वर्षा करे, ऐसे समय पर भी सदा मुस्कराते रहना, संकल्पमात्र भी मुरझाने का चिह्न चेहरे पर न हो। इसको कहा जाता है – सहनशील। दुश्मन आत्मा को भी रहमदिल भावना से देखना, बोलना, सम्पर्क में आना। इसको कहते हैं सहनशीलता। स्थापना के कार्य में, सेवा के कार्य में कभी छोटे, कभी बड़े तूफान आये। जैसे यादगार शास्त्रों में महावीर हनुमान के लिए

दिखाते हैं कि इतना बड़ा पहाड़ भी हथेली पर एक गेंद के समान ले आया। ऐसे, कितनी भी बड़ी पहाड़ समान समस्या हो, तूफान हो, विघ्न हो लेकिन पहाड़ अर्थात् बड़ी बात को छोटा-सा खिलौना बनाए खेल की रीति से सदा पार किया वा बड़ी भारी बात को सदा हल्का बनाए स्वयं भी हल्के रहे और दूसरों को भी हल्का बनाया। इसको कहते हैं – सहनशीलता। छोटे से पत्थर को पहाड़ नहीं लेकिन पहाड़ को गेंद बनाया। विस्तार को सार में लाना, यह है सहनशीलता। विघ्नों को, समस्या को अपने मन में वा दूसरों को आगे विस्तार करना अर्थात् पहाड़ बनाना है। लेकिन विस्तार में न जाये, 'नथिंग न्यू' के फुल स्टाप से बिन्दी लगाए बिन्दी बन आगे बढ़े - इसको कहते हैं विस्तार को सार में लाना। सहनशील श्रेष्ठ आत्मा सदा ज्ञान-योग के सार में स्थित हो ऐसे विस्तार को, समस्या को, विघ्नों को भी सार में ले आती है जैसे ब्रह्मा बाप ने किया। जैसे लम्बा रास्ता पार करने में समय, शक्तियाँ समाप्त हो जाती अर्थात् ज्यादा यूज़ होतीं। ऐसे 'विस्तार' है लम्बा रास्ता पार करना और 'सार' है शार्टकट रास्ता पार करना। पार दोनों ही करते हैं लेकिन शार्टकट करने वाले समय और शक्तियों की बचत होने कारण निराश नहीं होते, दिलशिकस्त नहीं होते, सदा मौज में मुस्कराते पार करते हैं। इसको कहा जाता है – सहनशीलता। सहनशीलता की शक्ति वाला कभी घबरायेगा नहीं कि क्या ऐसा भी होता है क्या! सदा सम्पन्न होने कारण ज्ञान की, याद की गहराई में जायेगा। घबराने वाला कभी गहराई में नहीं जा सकता। सार वाला सदा भरपूर होता है, इसलिए भरपूर, सम्पन्न चीज़ की गहराई होती है। विस्तार वाला खाली होता है, इसलिए खाली चीज़ सदा उछलती रहती है। तो विस्तार वाला यह क्यों, यह क्या, ऐसा नहीं वैसा, ऐसा होना नहीं चाहिए... ऐसे संकल्पों में भी उछलता रहेगा और वाणी में भी सबके आगे उछलता रहेगा। और जो हद से ज़्यादा उछलता है तो क्या होगा? हाँफता रहेगा। स्वयं ही उछलता, स्वयं ही हाँफता और स्वयं ही फिर थकता। सहनशील इन सब बातों से बच जाता है। इसलिए सदा मौज में रहता, उछलता नहीं, उड़ता है। दूसरा कदम – सहनशीलता। यह ब्रह्मा बाप ने चल करके दिखाया। सदा अटल, अचल, सहज स्वरूप में मौज से रहे, मेहनत से नहीं। इसका अनुभव 14 वर्ष तपस्या करने वाले बच्चों ने किया। 14 वर्ष महसूस हुए या कुछ घड़ियाँ लगीं? मौज से रहे या मेहनत लगी? वैसे स्थूल मेहनत का पेपर भी खूब लिया। कहाँ नाज से पलने वाले और कहाँ गोबर के गोले भी बनवाये, मैकेनिक (Mechanic) भी बनाया। चप्पल भी सिलवाई! मोची भी बनाया ना। माली भी बनाया। लेकिन मेहनत लगी या मौज लगी? सब कुछ पार किया लेकिन सदा मौज की जीवन का अनुभव रहा। जो मूँझे, वह भाग गये और जो मौज में रहे वह अनेकों को मौज की जीवन का अनुभव करा रहे हैं। अभी भी अगर वही 14 वर्ष रिपीट करें तो पसन्द है ना। अभी तो सेन्टर पर अगर थोड़ा-सा स्थूल काम भी करना पड़ता तो सोचते हैं – इसीलिए संन्यास किया, क्या हम इस काम के लिए हैं? मौज से जीवन जीना - इसको ही ब्राह्मण जीवन कहा जाता है। चाहे स्थूल साधारण काम हो, चाहे हजारों की सभा बीच स्टेज पर स्पीच करनी हो - दोनों मौज से करें। इसको कहा जाता – मौज की जीवन जीना। मूँझे नहीं - हमने तो समझा नहीं था कि सरेन्डर होना अर्थात् यह सब करना होगा, मैं तो टीचर बनकर आई हूँ, स्थूल काम करने के लिए थोड़े ही संन्यास किया है, क्या यही ब्रह्माकुमारी जीवन होती है?

इसको कहते हैं – मूँझने वाली जीवन। ब्रह्माकुमारी बनना अर्थात् दिल की मौज में रहना, न कि स्थूल मौजों में रहना। दिल की मौज से किसी भी परिस्थिति में, किसी भी कार्य में मूँझने को मौज में बदल देंगे और दिल के मूँझने वाले, श्रेष्ठ साधन होते भी, स्पष्ट बात होते भी सदा स्वयं मूँझे हुए होने के कारण स्पष्ट बात को भी मूँझा देगा, अच्छे साधन होते हुए भी साधनों से मौज नहीं ले सकेंगे। यह कैसे होगा, ऐसा नहीं ऐसा होगा - इसमें खुद भी मूँझेगा, दूसरे को भी मूँझा देगा। जैसे कहते हैं ना – 'सूत मूँझ जाता है तो मुश्किल ही सुधरता है।' अच्छी बात में भी मूँझेगा तो घबराने वाली बात में भी मूँझेगा। क्योंकि वृत्ति मूँझी हुई है, मन मूँझा हुआ है तो स्वत: ही वृत्ति का प्रभाव दृष्टि पर और दृष्टि के कारण सृष्टि भी मूँझी हुई दिखाई देगी। ब्रह्माकुमारी जीवन अर्थात् ब्रह्मा बाप समान मौज की जीवन। लेकिन इसका आधार है 'सहनशीलता'। तो सहनशीलता की इतनी विशेषता है! इसी विशेषता के कारण ब्रह्मा बाप सदा अटल, अचल रहे। दो प्रकार के सहनशीलता के पेपर सुनाये। पहला पेपर – लोगों द्वारा अपशब्द वा अत्याचार। दूसरा – यज्ञ की स्थापना में भिन्न-भिन्न आये हुए विघ्न। तीसरा – कई ब्राह्मण बच्चों द्वारा भी ट्रेटर होना वा छोटी-मोटी बातों में असन्तुष्टता का सामना करना। लेकिन इसमें भी सदा असन्तुष्ट को सन्तुष्ट करने की भावना से परवश समझ सदा कल्याण की भावना से, सहनशीलता की साइलेन्स पावर से हर एक को आगे बढ़ाया। सामना करने वाले को भी मधुरता और शुभ भावना, शुभ कामना से सहनशीलता का पाठ पढ़ाया। जो आज सामना करता और कल क्षमा मांगता, उनके मुख से भी यही बोल निकलते – 'बाबा तो बाबा है!' इसको कहा जाता है सहनशीलता द्वारा फेल को भी पास बनाए विघ्न को पास करना। तो दूसरा कदम सुना। किसलिए? कदम-पर-कदम रखो। इसको कहा जाता है – फ़ालो फ़ादर अर्थात् बाप समान बनना। बनना है या सिर्फ

आपके जड़ चित्र तो अभी तक वरदान दे रहे हैं। तो वरदान देने की विधि है–जो भी आत्मा सम्बन्ध-सम्पर्क में आो उनको अपने स्थिति के वायुमण्डल द्वारा और अपने वृत्ति के वायब्रेशन्स द्वारा सहयोग देना दुखी को खुशी देना यह सबसे बड़ा पुण्य है।अर्थात् वरदान देना। कैसी भी आत्मा हो, गाली देने वाली भी हो, निन्दा करने वाली हो लेकिन अपनी शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा, वृत्ति द्वारा, स्थिति द्वारा ऐसी आत्मा को भी गुण दान या सहनशीलता की शक्ति का वरदान दो।

25.10.2002.. .. वह गाली दे रहा है, आप सहनशील देवी, सहनशील देव बन जाओ। आपकी सहनशीलता से गाली देने वाले भी आपको गले लगायेंगे। सहनशीलता में इतनी शक्ति है, लेकिन थोड़ा समय सहन करना पड़ता है। तो सहनशीलता के देव वा देवियां हो ना? हो? सदा यही स्मृति रखो - मसहनशील का देवता हूँ, मैं सहनशीलता की देवी हूँ। तो देवता अर्थात् देने वाला दाता, कोई गाली देता है, रिस्पेक्ट नहीं करता है तो किचड़ा है ना कि अच्छी चीज़ है? तो आप लेते क्यों हो? किचड़ा लिया जाता है क्या? कोई आपको किचड़ा देवे तो आप लेगें? नहीं लेंगे ना। तो रिस्पेक्ट नहीं करता, इन्सल्ट करता, गाली देता, आपको डिस्टर्व करता, तो यह क्या है? अच्छी चीज़ें हैं। फिर आप लेते क्यों हो? थोड़ा-थोड़ा तो ले लेते हो, पीछे सोचते हो नहीं लेना था। तो अभी लेना

नहीं। लेना अर्थात् मन में धारण करना, फील करना। तो अपने अनादिकाल, आदिकाल, मध्यकाल, संगम काल, सारे कल्प के प्युरिटी की रॉयल्टी, पर्सनाल्टी याद करो। कोई क्या भी करे आपकी पर्सनाल्टी को कोई छीन नहीं सकता। यह रूहानी नशा है ना? और डबल फारेनर्स को तो डबल नशा है ना! डबल नशा है ना? सब बात का डबल नशा। प्युरिटी का भी डबल नशा, सहनशील देवी-देवता बनने का भी डबल नशा। है ना डबल? सिर्फ अमर रहना। अमर भव का वरदान कभी नहीं भूलना।

02.02.08.. .. आपका टाइटल है सहनशीलता की देवी, सहनशीलता का देव। तो आप कौन हो? सहनशीलता की देवियां हो, सहनशीलता के देव हो? कि नहीं? कभी-कभी हो जाते हैं। अपना पोज़ीशन याद करो, स्वमान याद करो। मैं कौन! यह स्मृति में लाओ। सारे कल्प के विशेष स्वरूप की स्मृति को लाओ।

सरलता

17.04.69... ब्राह्मणों का मुख्य संस्कार है – सर्वस्व त्यागी। इस त्याग से मुख्य गुण कौन से आते हैं? सरलता और सहनशी-लता। जिसमें सरलता, सहनशीलता होगी वह दूसरों को भी आकर्षण जरूर करेंगे। और एक दो के स्नेही बन सकेंगे। अगर सरलता नहीं तो स्नेह भी नहीं हो सकता। एक दो में स्नेही बनना है तो उसका तरीका यह है। एक तो सर्वस्व त्यागी देह सहित। इस सर्वस्व त्यागी से सरलता, सह-नशीलता आपे ही आयेगी। सर्वस्व त्यागी की यह निशानी होगी – सरलता और सहनशीलता। साकर रूप में भी देखा ना। जितना ही नालेजफुल उतना ही सरल स्वभाव। जिसको कहते हैं बचपन के संस्कार। बुजुर्ग का बुजुर्ग, बचपन का बचपन। एक दो के स्नेही कैसे बन सकेंगे? सिर्फ पत्र व्यवहार करना, संगठन करना? इससे नहीं बनेंगे। यह तो स्थूल बात है। लेकिन एक दो के स्नेही तब बनेंगे जबकि संस्कार और संकल्पों को एक दो से मिलायेंगे। उसका तरीका भी बताया (सर्वस्व त्यागी) सर्वस्व त्यागी की निशानी क्या होगी? (सरलता, सहनशीलता) यह बातें जब धारण करेंगे तब स्नेही बनेंगे। सरलता लाने के लिए सिर्फ एक बात जरूर वर्तमान समय ध्यान में रखनी है। वर्तमान समय देखा जाता है – आजकल की स्थिति जो है वह कुछ स्तुति के आधार पर है। स्तुति और निंदा दो शब्द है ना। तो वर्तमान समय स्तुति के आधार पर स्थिति है। अर्थात् जो कर्म करते हैं उनके फल की इच्छा वा लोभ रहता है। कत्र्तव्य के फल की इच्छा ज्यादा रखते हो। स्तुति नहीं मिलती है तो स्थिति भी नहीं रहती। स्तुति होती है तो स्थिति भी रहती है। अगर निंदा होती है तो निधन के बन जाते हैं। अपनी स्टेज को छोड़ देते हैं और धनी को भी भूल जाते हैं। तो यह कभी नहीं सोचना कि हमारी स्तुति हो। स्तुति के आधार पर स्थिति नहीं रखना। स्तुति के आधार पर स्थिति रखी तो डगमग होते रहेंगे

6.12.69... जो सरल स्वभाव वाले होंगे उसमें समेटने की शक्ति सहज आ सकती है। जो सरल स्वभाव वाला होगा वह सभी का सहयोगी भी होगा। जो सभी का स्नेही होता है उनको सभी द्वारा सहयोग प्राप्त होता है। इस-लिए सभी बातों का सामना करना वा समेटना सहज ही कर सकता है। और जितना सरल स्वभाव वाले होंगे उतना माया कम सामना करेगी। वह सभी को प्रिय लगता है। सरल स्वभाव_वाले का व्यर्थ संकल्प कभी नहीं चलता। समय व्यर्थ नहीं जाता। व्यर्थ संकल्प न चलने के कारण उनकी बुद्धि विशाल और दूरांदेशी रहती है। इसलिए उनके आगे कोई भी समस्या सामना नहीं कर सकती। जितनी सरलता होगी उतनी स्वच्छता भी होगी। स्वच्छता सभी को अपने तरफ आकर्षित करती है। स्वच्छता अर्थात् सच्चाई और सफाई। सच्चाई और सफाई तब होगी जब अपने स्वभाव को सरल बनायेंगे। सरल स्वभाव वाला बहुरूपी भी बन सकता है। वाले का व्यर्थ संकल्प कभी नहीं चलता। समय व्यर्थ नहीं जाता। व्यर्थ संकल्प न चलने के कारण उनकी बुद्धि विशाल और दूरांदेशी रहती है। इसलिए उनके आगे कोई भी समस्या सामना नहीं कर सकती। जितनी सरलता होगी उतनी स्वच्छता भी होगी। स्वच्छता सभी को अपने तरफ आकर्षित करती है। स्वच्छता अर्थात् सच्चाई और सफाई। सच्चाई और सफाई तब होगी जब अपने स्वभाव को सरल बनायेंगे। सरल स्वभाव वाला बहुरूपी भी बन सकता है।

25.01.70... बाप के समीप आने के लिए उदारता और सरलता का गुण धारण करो।

23.03.70... अपने वा दूसरे की बीती को न देखने से सरल चित हो जाते हैं और जो सरलचित जो स्पष्ट होता है वही सरल और श्रेष्ठ होता है।

26.3.70... जैसे संस्कार होंगे वैसा स्वरूप होगा। किसके संस्कार सरल, मधुर होते हैं तो वह संस्कार स्वरूप में आते हैं।

2.4.70... याद की यात्रा, सर्विस दोनों ही पुरुषार्थ में आ जाते हैं। जब दोनों में सरल अनुभव हो तब समझो सम्पूर्णता की अवस्था प्राप्त होने वाली है।

5.4.70... मन,वाणी, कर्म से सरलता और सहनशीलता यह दोनों आवश्यक हैं। अगर सरलता है सहनशीलता नहीं तो भी श्रेष्ठ नहीं। इसलिए सरलता और सहनशीलता दोनों साथ-साथ चाहिएं। सरलता के साथ सहनशीलता है तो शक्ति स्वरूप कहा जाता है।

21.5.70... जितना जो स्वयं सरल होंगे उतना याद भी सरल रहती है। अपने में सरलता की कमी के कारण याद भी सरल नहीं रहती है। जितना हर बात में जो स्पष्ट होगा अर्थात् साफ़ होगा उतना सरल होगा। जितना सरल होगा उतना सरल याद भी होगी। और दूसरों को भी सरल पुरुषार्थी बना सकेंगे।

7.6.70... अपने चेहरे पर, वाणी पर सरलता को धारण करो। फिर देखो सर्विस वा कर्त्तव्य की सफ़लता कितनी श्रेष्ठ होती है।

7.6.70... कोई भी बात हो पहले हाँ जी। हाँ जी, हाँ जी कहना ही दूसरे के संस्कार को सरल बनाने का साधन है।

4.7.71.. .. देवताओं के चित्र भी जो बनाते हैं तो उनकी सूरत में सरलता ज़रूर दिखाते हैं। यह विशेष गुण दिखाते हैं। फीचर्स में सरलता, जिसको आप भोलापन कहते हो। जितना जो सहज पुरुषार्थी होगा वह मन्सा में भी सरल, वाचा में भी सरल, कर्म में भी सरल होगा। इनको ही फरिश्ता कहते हैं।

10.5.72.. .. सरलचित बहुत बनो लेकिन जितना सरलचित हो उतना ही सहनशील हों। कि सहनशीलता भी सरलता है? सरलता के साथ समाने की, सहन करने की शक्ति भी चाहिए। अगर समाने और सहन करने की शक्ति नहीं तो सरलता बहुत भोला रूप धारण कर लेती और कहां-कहां भोलापन बहुत भारी नुकसान कर देता है। तो ऐसा सरलचित भी नहीं बनना है।

31.12.83.. .. सदा सरल स्वभाव, सरल बोल, सरलता सम्पन्न कर्म हों। ऐसे सरल स्वरूप रहे। सदा एक की मत पर, एक से सर्व सम्बन्ध, एक से सर्व प्राप्ति ऐसे एक द्वारा सदा एक रस रहने के सहज अभ्यासी रहो। सदा ख़ुश रहो, ख़ुशी का ख़ज़ाना बाँटो। ख़ुशी की लहर सर्व में फैलाओ। ऐस सदा ख़ुशी की मुस्कराहट चेहरे पर चमकती रहे। ऐसे हर्षित मुख रहो। सदा याद में रहो। वृद्धि को पाओ। ऐसे वरदान माला सदा साथ रहे। समझा। यह है नये वर्ष की सौगात! अच्छा

7.5.84.. .. हर गुण के प्रैक्टिकल स्वरूप एक्जैम्पल बनो। 'सरलता' जीवन में देखनी हो तो इस सेन्टर में जाकर इस परिवार को देखो।

19.3.2001.. .. सरलता की निशानी है - दिल, दिमाग, बोल एक समान। दिल में एक, बोल में और (दूसरा) - यह सरलता की निशानी नहीं है। सरल स्वभाव वाले सदा निर्माणचित, निरहंकारी, निर-स्वार्थी होते हैं। होलीहंस की विशेषता – सरल-चित, सरल वाणी, सरल वृत्ति, सरल दृष्टि।

8. सन्तुष्टता

21.1.69 (sandesh).. .. आज के दिन इस संगठन के बीच कुछ देने भी आये हो तो कुछ लेने भी आये हो। तो जो लेंगे वह देने के लिए तैयार हैं? जिसके दिल में कुछ संकल्प आता हो कि नामालूम क्या हो-ऐसी तो कोई बात नहीं होगी वह हाथ उठावें – अगर सभी सन्तुष्ट हैं तो जो लेंगे उसको देने में भी सन्तुष्ट रहेंगे। दो बातों का आज इस संगठन के बीच दान देना है। कौनसी दो बातें? एक मुख्य बात कि आज से आपस में एक दो का अवगुण न देखना, न सुनना, न चित पर रखना।

9.6.69.. ..अपने पुरुषार्थ में सन्तुष्ट हो? चल तो रहे हो लेकिन कितनी परसेन्टेज में? अच्छा मुख्य श्रीमत क्या है? मुख्य श्रीमत यही है कि ज्यादा से ज्यादा समय याद की यात्रा में रहना। क्योंकि इस याद की यात्रा से ही पवित्रता, दैवीगुण और सर्विस की सफलता भी होगी।

9.11.69 .. ..सभी के दिलों पर विजय किन गुणों से प्राप्त कर सकते हो? सभी को सन्तुष्ट करना। बाप में यह विशेष गुण था। वही फालो करना है।

25.1.70.. ..सारे कल्प में यही समय है। अब नहीं तो कब नहीं, यह मन्त्र याद रखना है। जो भी पुराने संस्कार हैं और पुरानी नेचर है वह बदल कर ईश्वरीय बन जाये। कोई भी पुराना संस्कार, पुरानी आदतें न रहें। आपके परिवर्तन से अनेक लोग सन्तुष्ट होंगे। सदैव यही कोशिश करनी है कि हमारी चलन द्वारा कोई को भी दुःख न हो। मेरी चलन, संकल्प, वाणी, हर कर्म सुखदाई हो। यह है ब्राह्मण कुल की रीति।

2.4.70 (sandesh).. ..जितना समीप उतना ही स्वयं भी स्पष्ट और दूसरे भी उनके आगे स्पष्ट दिखाई देंगे। जितना-जितना जिसका पुरुषार्थ स्पष्ट होता जाता है उतना ही उनकी प्रालब्ध स्पष्ट होती जाती है, और अन्य भी उनके आगे स्पष्ट होते जाते हैं। स्पष्ट अर्थात् सन्तुष्ट। जितना सन्तुष्ट होंगे उतना ही स्पष्ट होंगे। स्पष्ट बच्चों को साकार रूप में कौन से शब्द कहते थे? साफ़ और सच्चा।

5.4.70(sandesh).. ..तृप्त आत्मा जो होती है उनका विशेष गुण है निर्भयता और सन्तुष्ट रहना। जो स्वयं संतुष्ट रहता है और दूसरों को सन्तुष्ट रखता है उसमें सर्वगुण आ जाते हैं। जितना-जितना शक्तिस्वरूप होंगे तो कमज़ोरी सामने रह नहीं सकती।

29.10.70.. .. सफाई और कमाई का दोनों कार्य आप सभी ने किया है? अपने आप से सन्तुष्ट हो? जब कमाई है तो सफाई तो जरूर होगी ना। इन दोनों बातों में सन्तुष्टता होना आवशक है। लेकिन यह सन्तुष्टता आयेगी उनको जो सदैव दिव्यगुणों का आह्वान करते रहेंगे। जितना जो आह्वान करेंगे उतना इन दोनों बातों में सदा सन्तुष्ट रहेंगे। जितना-जितना दिव्यगुणों का आह्वान करते जायेंगे उतना अवगुण आहुति रूप में खत्म होते जायेंगे। फिर क्या होगा? नो संस्कारों के नो वस्त्र धारण करेंगे।

21-1-71.. ..सन्तुष्टता में सर्टीफिकेट मिला है? मनपसन्दी के साथ-साथ लोक पसन्द बनना है। सर्टीफिकेट एक तो जो रेसपान्सिबुल हैं उन्होंने दिया तो लोकपसन्द हुए, रचना को भी सन्तुष्ट रखना है। उन्हों की चलन से ही कैच करना है कि सन्तुष्ट हैं? जब कोई मधुबन में आते हैं तो निमित्त बनी हुई बहनों द्वारा अपना सर्टीफिकेट ले जावें। यह सभी सर्टीफिकेट धर्मराज पुरी में काम आयेंगे। इसलिए जितना हो सके सर्टीफिकेट लेते जाओ। अनेकों को सैटिस्फाय करने की युक्ति है सर्टीफिकेट।

21-1-71.. ..जो अपने से सन्तुष्ट होता है वह दूसरों से भी सन्तुष्ट रहता है। और कोई असन्तुष्ट करे भी परन्तु स्वयं सन्तुष्ट हैं, तो सभी उनसे सन्तुष्ट हो जायेंगे । दूसरे की कमी को अपनी कमी समझकर चलेंगे तो खुद भी सम्पूर्ण बन जायेंगे । यह कभी नहीं सोचो कि इस कारण से मेरा पुरुषार्थ ठीक नहीं चलता। मेरी कमजोरी है, ऐसा समझने से उन्नति जल्दी हो सकती है। नहीं तो दूसरे की कमी के फैसले में ही समा बहुत जाता है।

सदा उमंग हुल्लास में एकरस रहने के लिए कौन सी पॉइन्ट याद रहे? उसके लिए जो सदैव सम्बन्ध में आते – चाहे स्टूडेन्ट, चाहे साथी सभी को सन्तुष्ट करने की उत्कंठा हो। उत्साह में रहने से जो ईश्वरीय उमंग उत्साह है वह सदा एकरस रहेगा। जिसको देखो उससे हर समय गुण उठाते रहो। सर्व के गुणों का बल मिलने से सदाकाल के लिए उत्साह रहेगा। उत्साह कम होने का कारण औरों के भिन्न-भिन्न स्वरूप, भिन्न-भिन्न बातें देखना, सुनना, गुण देखने की उत्कण्ठा हो तो एकरस उत्साह रहे। गुण चोर होने से और चोर भाग जायेंगे ।

15.4.71 .. ..वाचा के दानी बनने वाले को विशेष प्राप्ति एक तो खुशी रहती है, क्योंकि धन को देख हर्षित होता है ना। और दूसरा वह कभी भी असंतुष्ट नहीं होंगे। क्योंकि खजाना भरपूर होने के कारण, कोई अप्राप्त वस्तु न होने के कारण सदैव सन्तुष्ट और हर्षित रहेंगे। उनका एक-एक बोल तीर समान लगेगा। जिसको जो बोलेंगे उनको वह लग जायेगा। उनके बोल प्रभावशाली होते हैं। वाणी का दान करने से वाणी में बहुत गुण आ जाते हैं। अवस्था में सहज ही खुशी की प्राप्ति होगी।

8.6.71 .. ..जिसमें सहनशीलता का गुण होता है वह सूरत से सदैव सन्तुष्ट दिखाई देगा। उनके नैन-चैन कभी भी असन्तुष्टता के नहीं दिखाई देंगे। तो जो स्वयं सन्तुष्टमूर्त रहते हैं वह औरों को भी सन्तुष्ट बना देंगे। और चलते-फिरते वह फरिश्ता अनुभव होगा। सहनशीलता बहुत मुख धारणा है। जितनी सहनशीलता अपने में देखेंगे उतना समझो स्वयं से भी सन्तुष्ट हैं, दूसरे भी सन्तुष्ट हैं। सन्तुष्ट होना माना सफलता पाना।

31.11.71.. ..सभी से पावरफुल स्टेज है अपना अनुभव–क्योंकि अनुभवी आत्मा में विल-पावर होती है। अनुभव के विल-पावर से माया की कोई भी पावर का सामना कर सकेंगे। जिसमें विल- पावर होती है वह सहज ही सर्व बातों का, सर्व समस्याओं का सामना भी कर सकते हैं और सर्व आत्माओं को सदा सन्तुष्ट भी कर सकते हैं। तो सामना करने की शक्ति से सर्व को सन्तुष्ट करने की शक्ति अपने अनुभव के विल- पावर से सहज प्राप्त हो जाती है।

2.4.72 .. ..पुरुषार्थ में, सर्विस में और सम्पर्क में – तीनों में ही सर्व आत्माओं के द्वारा सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट मिलना चाहिए। सर्टीफिकेट कोई कागज पर लिखत नहीं मिलेगा लेकिन हरेक द्वारा अनुभव होगा। ऐसे सर्व आत्माओं के सम्पर्क में अपने को सन्तुष्ट रखना वा सर्व को सन्तुष्ट करना— इसी में ही जो विजयी बनते हैं वही अष्ट देवता विजयी रत्न बनते हैं। सर्व को सन्तुष्ट करने के लिए वा अपने सम्पर्क को सन्तुष्ट करने के लिए वा अपने सम्पर्क को श्रेष्ठ बनाने के लिए मुख्य बात अपने में सहन करने की वा समाने की शक्ति होनी चाहिए।

कोई का भी कोई संस्कार वा शब्द वा कर्म देख आप समझते हो – यह यथार्थ नहीं है वा नहीं होना चाहिए; फिर भी अगर उस समय समाने की वा सहन करने की शक्तियां धारण करो तो आपकी सहन शक्ति वा समाने की शक्ति आटोमेटिकली उसको अपने अयथार्थ चलन का साक्षात्कार करायेगी। लेकिन होता क्या है–वाणी द्वारा वा नैन-चैन द्वारा उसको महसूस कराने वा साक्षात्कार कराने लिए आप लोग भी अपने संस्कारों के वश हो जाते हो। इस कारण न स्वयं सन्तुष्ट, न दूसरा सन्तुष्ट होता है। उसी समय अगर समाने की शक्ति हो तो उसके आधार से वा सहन करने की शक्ति के आधार से उनके कर्म वा संस्कार को थोड़े समय के लिए अवाइड कर लो तो आपकी

सहन शक्ति वा समाने की शक्ति उस आत्मा के ऊपर सन्तुष्टता का बाण लगा सकती है। यह न होने कारण असन्तुष्टता होती है। तो सभी के सम्पर्क में सर्व को सन्तुष्ट करने वा सन्तुष्ट रहने के लिए यह दो गुण वा दो शक्तियां बहुत आवश्यक हैं।

20.5.72 .. ..ज्ञानस्वरूप होने के बाद वा मास्टर नालेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान होने के बाद अगर कोई ऐसा कर्म जो युक्तियुक्त नहीं है वह कर लेते हो, तो इस कर्म का बन्धन अज्ञान काल के कर्मबन्धन से पद्मगुणा जादा है। इस कारण बन्धन-युक्त आत्मा स्वतन्त्र न होने कारण जो चाहे वह नहीं कर पाती। महसूस करते हैं कि यह न होना चाहिए, यह होना चाहिए, यह मिट जाए, खुशी का अनुभव हो जाए, हल्कापन आ जाए, सन्तुष्टता का अनुभव हो जाए, सर्विस सक्सेसफुल हो जाए वा दैवी परिवार के समीप और स्नेही बन जाएं। लेकिन किये हुए कर्मों के बन्धन कारण चाहते हुए भी वह अनुभव नहीं कर पाते हैं। इस कारण अपने आपसे वा अपने पुरुषार्थ से अनेक आत्माओं को सन्तुष्ट नहीं कर सकते हैं और न रह सकते हैं। इसलिए इस कर्मों की गुह्य गति को जानकर अर्थात् त्रिकालदर्शी बनकर हर कर्म करो, तब ही कर्मातीत बन सकेंगे। छोटी गलतियां संकल्प रूप में भी हो जाती हैं, उनका हिसाब-किताब बहुत कड़ा बनता है। छोटी गलती अब बड़ी समझनी है।

8.6.72.. ..ना महिमा का नशा, ना ग्लानि से घृणा आनी चाहिए। दोनों में बैलेन्स ठीक रहे; तो फिर स्वयं ही साक्षी हो अपने आपको देखो तो कमाल अनुभव होगी। अपने आपसे सन्तुष्टता का अनुभव होगा, और भी आपके इस कर्म से सन्तुष्ट होंगे।

22.11.72.. ..शक्ति दल को सदैव हर समस्या जानी- पहचानी हुई अनुभव होगी। वह कभी भी आश्चर्यवत नहीं होंगे। आश्चर्यवत के बजाये सदा सन्तुष्ट रहेंगे। कोई सहज साधन है वा जो भी सम्बन्ध में बातें आती हैं वह अपने अनुकूल हों – इस कारण संतुष्ट रहे तो इसको कोई संतुष्टता नहीं कहेंगे। जो अपने संबंध में वा अपनी स्थिति के प्रमाण अनुकूल न भी महसूस हों तो भी उसमें संतुष्ट रहें – ऐसी स्थिति होनी चाहिए।

30.5.74.. ..अपनी वर्तमान सर्वशक्तिमान् स्थिति से किसी अन्य आत्मा की परिस्थिति-वश स्थिति को परिवर्तन करो तो क्या आप कर सकते हो? ऑर्डर हो, कि मास्टर रचयिता बन अपनी रचना को शुभ भावना से व शुभ-चिन्तक बन, भिखारियों को उनकी माँग प्रमाण सन्तुष्ट करो तथा महादानी और वरदानी बनो तो क्या सर्व को संतुष्ट कर सकते हो? या तो कोई संतुष्ट होंगे और या कोई वंचित रह जावेंगे? सर्व-शक्तियों के भण्डारे से क्या स्वयं को भरपूर अनुभव करते हो? क्या सर्व-शस्त्र आपके सदा साथ रहते हैं? सर्व-शस्त्र अर्थात् सर्व-शक्तियाँ।

18.6.74.. .. पानी के बदले चाहे आप उसे हीरा दे दो, परन्तु उस समय उस आत्मा के लिए पानी की एक बूंद की कीमत अनेक हीरों से ज्यादा है, ऐसे ही अगर अपने पास सर्वशक्तियों का स्टॉक जमा नहीं होगा तो, सर्व-आत्माओं को सन्तुष्ट करने वाली सन्तुष्टमणियाँ नहीं बन सकेंगे, वा सर्व-आत्मायें आपको जी-दाता, सर्व-शक्ति दाता नहीं मानेंगी। अगर विश्व की सर्व- आत्माओं द्वारा विश्व-कल्याणी माननीय नहीं बनेंगे, तो माननीय के बिना पूज्यनीय भी नहीं बन सकेंगे। सन्तुष्ट मणि बनने के बिना बाप-दादा के मस्तक की मणियाँ नहीं बन सकते हो।

14.7.74.. .. गायन भी है कि 'जैसे कर्म हम करेंगे, हमको देख और सभी करेंगे' ऐसे उनके हर कर्म, अनेक आत्माओं को, एक पाठ पढ़ाने के निमित्त बन जावेंगे और उनका हर कर्म शिक्षा-स्वरूप होगा। इसको ही कहा जाता है–समर्थ-कर्म। ऐसे संकल्प, बोल और कर्म वाला ही हर बात में सदा स्वयं से सन्तुष्ट होगा। सन्तुष्ट होने के कारण ही वह हर्षित भी होगा लेकिन उसे हर्षित बनाना नहीं पड़ेगा बल्कि वह स्वत: ही सदा हर्षित होगा।

7.2.75.. .. सन्तुष्टता ही सम्पूर्णता की निशानी है। जितना-जितना सर्व आत्माओं की सन्तुष्टता का आशीर्वाद व सूक्ष्म स्नेह तथा सहयोग का हर समय रेसपॉन्स (Response) मिले – इससे समझो कि इतना सम्पूर्णता के समीप आये हैं।

7.2.75.. ..कैसे भी संस्कारों वाली, असन्तुष्ट रहने वाली आत्मा सम्पर्क में आये, वह भी सम्पर्क में यह अनुभव करे कि मैं अपने संस्कारों के कारण ही असन्तुष्ट रहती हूँ लेकिन इन विशेष आत्माओं में मेरे प्रति स्नेह व सहयोग की व रहमदिल की शुभ भावना सदा नजर आती है। अर्थात् वह अपनी ही कमजोरी महसूस करे। वह कम्पलेन्ट (Complaint) यह न निकाले कि यह निमित्त बनी हुई आत्मायें मुझ आत्मा को सन्तुष्ट नहीं कर सकती। सर्व आत्माओं द्वारा ऐसी सन्तुष्टमणि का सर्टिफिकेट प्राप्त हो, तब कहेगे कि यह सम्पूर्णता के समीप हैं। जितनी सम्पूर्णता भरती जायेगी, उतनी ही सर्व आत्माओं की सन्तुष्टता भी बढ़ती जायेगी।

15.10.75.. ..टीचर्स का स्लोगन फॉलो फादर। 'फॉलो फादर' (Follow Father) नहीं तो सफल टीचर्स नहीं। टीचर का पहला सर्टीफिकेट है स्वयं संतुष्ट रहना और दूसरों को सन्तुष्ट करना। फर्स्ट नम्बर टीचर की निशानी सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना।

16.10.75.. ..बाप-दादा भी जानते हैं कि जब इतनी आत्माओं को देने के निमित्त बनते हैं तो ज़रूर देने के प्लैन्स व संकल्प चलेंगे। तब तो सन्तुष्टता का सर्टिफिकेट ऑटोमेटिकली मिल जाता है। सब की सन्तुष्टता यह भी अपने पुरुषार्थ में हाई- जम्प देने में सहयोग देती है।

23.10.75.. ..रूहानी यात्री जो डबल यात्रा करने आते हैं – एक मधुबन की यात्रा, दूसरी विशेष मधुबन में रूहानी यात्रा। तो डबल यात्रा करने वाले यात्री जो भी आते हैं वह आराम से अपनी यात्रा सफल करके जाते हैं। सब सन्तुष्ट रहते हैं।

31.10.75.. ..महारथियों की विशेषता यह है जो सर्व की सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट (Certificate) लेवें। तब कहेगे महारथी। सन्तुष्टता ही श्रेष्ठता व महानता है। प्रजा भी इस आधार से बनेगी। सन्तुष्ट हुई आत्मायें उनको राजा मानेंगी। कोई-न-कोई सेवा सहयोग द्वारा प्राप्त कराई हो – स्नेह की, सहयोग की, हिम्मत-उल्लास की और शक्ति दिलाने की प्राप्ति कराई हो तो महारथी.

महारथी में स्वयं को मोल्ड (Mould) करने की शक्ति होनी चाहिए। मोल्ड करने वाला ही गोल्ड (Gold) होता है। जो मोल्ड नहीं कर सकते वो रीयल (Real) गोल्ड नहीं हैं, मिक्स (Mixed) हैं। मिक्स होना अर्थात् घोड़ेसवार। महारथी मोल्ड होता है। प्लैन बनाना अर्थात् बीज बोना। तो बीज पॉवरफुल (Powerfull) होना चाहिए। सर्व के सन्तुष्टता की और स्नेह की दुआयें, आशीर्वाद और स्नेह का पानी ज़रूर चाहिये।

16.1.77.. ..शक्तियों को विशेष रूप में 'वरदानी' कह कर पुकारते हैं। तो अभी अन्त के समय में महादानी से भी ज्यादा, वरदानी रूप की सेवा होगी। स्वयं की अन्तिम स्टेज पावरफुल होने के कारण, सम्पन्न होने के कारण ऐसी प्रजा आत्माएं थोड़े समय में, थोड़ी-सी प्राप्ति में भी बहुत खुश हो जाती हैं। स्वयं की संतुष्ट स्थिति होने के कारण वे आत्माएं भी जल्दी संतुष्ट हो जाती हैं और खुश हो कर बार-बार महान आत्माओं के गुण गायेंगी। 'कमाल है' यही आवाज़ चारों ओर अनेक आत्माओं के मुख से निकलेगा। बाप का शुक्रिया और निमित्त बनी आत्माओं का शुक्रियां, यही गीतो के रूप में चारों ओर गूंजेगा। प्राप्ति के आधारपर हर एक आत्मा अपने दिल से महिमा के फूलों की वर्षा करेगी। अब ऐसे वरदानी मूर्त बनने के लिए विशेष अटेंशन एक बात का रखना है। सदा

स्वयं से और सर्व से संतुष्ट – संतुष्ट आत्मा ही अनेक आत्माओं का इष्ट बन सकती है व अष्ट देवता बन सकती है। सबसे बड़े से बड़ा गुण कहो या दान कहो या विशेषता कहो या श्रेष्ठता कहो, वह संतुष्टता ही है। संतुष्ट आत्मा ही प्रभु प्रिय, लोक प्रिय और स्वयं प्रिय होती है। संतुष्ट आत्मा की परख इन तीनों बातों से होती है। ऐसी संतुष्ट आत्मा ही वरदानी रूप में प्रसिद्ध होगी। तो अपने को चेक करो कि कहाँ तक सन्तुष्ट आत्मा सो वरदानी आत्मा बने हैं? समझा?

5.2.77.. ..दिव्य गुणधारी का मुख्य लक्षण क्या होगा? सन्तुष्ट रहना और सबको सन्तुष्ट करना। उनको सब की सन्तुष्टता का आशीर्वाद प्राप्त होगा अर्थात् गाडली यूनिवर्सिटी (Godly University;ईश्वरीय विश्वविद्यालय) का सर्टीफिकेट प्राप्त होगा।

18.7.77.. ..टीचर्स जितना चाहे उतना अपना भविष्य सहज उज्वल बना सकती है – लेकिन वह टीचर जो योग्य टीचर हो। थोड़े में खुश होने वाली टीचर तो नहीं हो ना? बाप-दादा तो टीचर्स को किस नज़र से देखते हैं? हमजिन्स की नज़र से। क्योंकि बाप भी टीचर है ना। टीचर, टीचर को देखेंगे तो हमजिन्स की नज़र से देखेंगे। हमजिन्स को देख खुश होंगे। टीचर्स तो सदा सन्तुष्ट होंगी। पूछना अर्थात् हमजिन्स की इनसल्ट करना। अच्छा।

5.5.77.. ..विश्व परिक्रमा लगाते हो? कितने समय में? क्योंकि जितनी जिसकी दिव्य बुद्धि होती है, तो दिव्यता के आधार पर स्पीड है। जैसे ऐरोप्लेन भी उड़ते हैं, तो जितनी पावर वाला होगा उतनी स्पीड तेज़ होगी। तो यहाँ भी जिसकी जितनी दिव्यता है, 'दिव्यता ही स्वच्छता' है। अर्थात् डबल रिफ़ाइननेस (Refineness) है। जिसकी बुद्धि दिव्य है, उतनी उसकी स्पीड तेज होगी। एक सैकन्ड में और स्पष्ट रूप में चक्कर लगा सकेंगे। क्योंकि यहाँ से ही सर्व को सन्तुष्ट अर्थात् सर्व प्राप्ति कराने का संस्कार भरना है। तब ही, जब विश्व-महाराजन बनेंगे तो राज्य में कोई अप्राप्त वस्तु नहीं, सदा सन्तुष्ट, सर्व प्राप्ति स्वरूप होंगे।

सदा सन्तुष्ट रहने वाला ही बाप के समीप रह सकता है। सन्तुष्टता सदा बाप के समीप ले जाने का साधन है। सन्तुष्टता नहीं तो सदा बाप से दूर हैं। जो कुछ होता उसको बीती सो बीती करते हुए, परखने की शक्ति से परखते हुए चलते चलो तो सदा सन्तुष्ट रहेंगे।

29.5.77.. ..सारा दिन संकल्प, बोल और कर्म बाप के याद और सेवा में ही लगे रहते हैं? हर संकल्प बाप की याद व सेवा। ऐसे ही हर बोल द्वारा बाप की याद दिलाना या दिया हुआ खजाना दूसरों को देना। कर्म द्वारा भी बाप के चरित्रों को सिद्ध करना। तो ऐसे याद और सेवा में सदैव रहते हो? अगर याद और सेवा इन दोनों में सदा बिजी रहो तो माया आ सकती है? अगर याद और सेवा को भूलते तो माया का गेट (Gate;द्वार) खोल देते हैं। तो यह गेट नहीं खोलो। विस्मृति अर्थात् माया का गेट खोलना, स्मृति अर्थात् पक्का गाडरेज का लॉक लगाना। याद और सेवा की स्मृति डबल लॉक है। डबल लॉक लगायेंगे तो माया कभी नहीं आ सकती। अगर सिंगल लॉक सिर्फ याद का लगाते, सेवा नहीं तो भी माया आ जायेगी। ब्राह्मण जीवन ही है याद और सेवा। तो जीवन का कार्य कोई भूलता है क्या? अगर भूलते तो माया से धोखा खाते। धोखा खाने से दु:ख की लहर आती। तो डबल लॉक सदैव बन्द रखना। इससे सदा सेफ रहेंगे, खुश रहेंगे, सन्तुष्ट रहेंगे।

29.5.77.. ..श्रीमत और मनमत को परखने का साधन यही है कि अगर श्रीमत पर कदम होगा तो चेकिंग का अर्थ ही है – चेन्ज करना। कभी भी अपना मन असन्तुष्ट नहीं होगा। मन में किसी प्रकार की हलचल नहीं होगी।

स्वत: श्रीमत पर चलने से नैचुरल (Natural;वास्तविक) खुशी रहेगी। जैसे कोई अच्छा कर्म किया जाता तो उसकी स्वत: अन्दर से खुशी होती है।

31.5.77.. ..सदा अपने को विशेष पार्टधारी समझ पार्ट बजाते हो? जो विशेष पार्टधारी होते हैं उनकी हर एक्ट विशेष होती है। तो आपका भी हर कर्म के ऊपर इतना अटेंशन है? कोई भी कर्म साधारण न हो। साधारण आत्मा जो भी कर्म करेगी वह देह अभिमान से। विशेष आत्मा देही अभिमानी बन कर्म करेगी। देही अभिमानी बन पार्ट बजाने वाले की रिजल्ट क्या होगी? वह स्वयं भी सन्तुष्ट और सर्व भी उनसे संतुष्ट होंगे।

28.6.77.. ..सदैव यह ध्यान पर रखना है कि ज्ञानी तू आत्मा कहलाते अथवा सर्विसएबुल कहलाते ऐसा कोई कर्म वा वातावरण फैलाने के वायब्रेशन उत्पन्न होने के निमित्त न बने जिससे सर्विस के बजाए डिस सर्विस हो। क्योंकि सर्विस भी हो लेकिन एक बार की डिस-सर्विस दस बार की सर्विस को समाप्त कर देती है। जैसे रबड़ मिट जाता है वैसे एक बार की डिस-सर्विस दस बार के सर्विस के खाते को खत्म कर देती है। और वह समझता रहता कि मैं बहुत सर्विस करता हूँ। लेकिन खाता खाली होने के कारण निशानी दिखाई भी देती हैं लेकिन अभिमान के वश बाहर से मियामिट्ठू बन जाते हैं। निशानी क्या होती है? एक तो याद में शक्ति वा प्राप्ति का अनुभव नहीं होता। अन्दर की सन्तुष्टता नहीं होगी। हर समय कोई न कोई परिस्थिति वा व्यक्ति वा प्रकृति का वैभव, स्थिति को हलचल में लाने के वा खुशी, शक्ति खत्म करने के निमित्त बनेंगे। बाहर का दिखावा इतना सुन्दर होगा जो अनेक आत्माएं उन्हें न परखने कारण सबसे अच्छा खुश मिजाज और पुरुषार्थी समझेंगे। लेकिन अन्दर बिल्कुल उलझन में खोखलापन होता है। नाम, शान का खाता फुल होता है – लेकिन खज़ानों का खाता, अनुभूतियों का खाता खाली के बराबर होता है अर्थात् नाम मात्र होता है।

13.1.78.. ..सभी सन्तुष्ट मणियाँ हो ना। मणि सदैव मस्तक के बीच में चमकती है। ताज के अन्दर सुन्दर मणियाँ होती हैं। तो जो सन्तुष्ट मणि हैं वह सदैव बाप के मस्तक में रहते हैं। अर्थात् बाप की याद में रहती हैं, बाप भी उनको याद करते। जब बच्चे बाप को याद करते तो बाप भी रिटन (Return) देते हैं। सदा बाप की याद में रहने वाले हर परिस्थिति में सन्तुष्ट रहेंगे। चाहे परिस्थिति असन्तोष की हो, दु:ख की घटना हो लेकिन सदा सुखी। दु:ख की परिस्थिति में सुख की स्थिति हो, ऐसी नालेज की शक्ति है। कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन स्थिति एकरस। नालेज की शक्ति के आधार पर परिस्थिति जो पहाड़ के मुआफ़िक है वह भी राई अनुभव होगी। अर्थात् कुछ नहीं। क्योंकि नथिंग-न्यू। ऐसी स्थिति है? कुछ भी हो जाये, नथिंग-न्यू, इसको कहा जाता है महावीर।

29.11.78.. ..सबसे विशेष गुण, जो चेहरे से चमके वह सन्तुष्टता है। सन्तुष्टता तीनों ही प्रकार की चाहिए। एक-बाप से सन्तुष्ट। दूसरा-सदा अपने आप से सन्तुष्ट। तीसरा -- सर्व सम्बन्ध और सम्पर्क से सन्तुष्ट। इसमें चैतन्य आत्मायें और प्रकृति दोनों आ जाते हैं। सन्तुष्टता की निशानी प्रत्यक्ष रूप में प्रसन्नता दिखाई देगी। सदा प्रसन्नचित। इस प्रसन्नता के आधार पर प्रत्यक्ष फल ऐसी आत्मा की सदा स्वत: ही सर्व से प्रशन्सा होगी। विशेषता है सन्तुष्टता, उसकी निशानी प्रसन्नता, उसका प्रत्यक्षफल प्रशन्सा। अब अपने आपको देखो। प्रशंसा को प्रसन्नता से ही प्राप्त कर सकते हो। जो सदा स्वयं सन्तुष्ट वा प्रसन्न रहते उसकी प्रशंसा हरेक अवश्य करते हैं।

3.12.78.. .. जो सन्तुष्ट मणियाँ हैं वही बाप का श्रेष्ठ श्रृंगार हैं। जो सदा सन्तुष्ट रहते हैं उन्हें सन्तुष्टमणि कहा जाता है। सदा सन्तुष्टता की झलक मस्तक से चमकती रहे, ऐसे ही साक्षात्-मूर्त बन सकते हैं।

3.1.79.. .. समय की समीपता प्रमाण हर श्रेष्ठ कर्म का फल सदा सन्तुष्टता के रूप में वर्तमान और भविष्य दोनों ही काल में प्राप्त होंगे।

6.1.79.. .. जो सदा सर्व खजानों से सम्पन्न होगा वह सदा सन्तुष्ट होगा। असन्तुष्टता का कारण है अप्राप्ती। जो भरपूर आत्मायें हैं वह अन्य आत्माओं को भी दे सकेंगी। अगर स्वयं में कमी होगी तो औरों को भी दे नहीं सकते। सन्तुष्टता अर्थात् सम्पन्नता। जैसे बाप सम्पन्न है इसलिए बाप की महिमा में सागर शब्द कहते हैं, यह सम्पन्नता को सिद्ध करता है। तो बाप समान मास्टर सागर बनो। नदी तो फिर भी सूख जाती है। सम्पन्न आत्मायें सदा खुशी में नाचती रहेंगी। खुशी के सिवाए और कुछ अन्दर आ नहीं सकता। सन्तुष्ट आत्मायें सम्पन्न होने के कारण किसी से भी तंग नहीं होगी। सम्बन्ध में भी कोई खिटखिट नहीं होगी। अगर होगी भी तो उसका असर नहीं आयेगा। किसी भी प्रकार की उलझन या विघ्न एक खेल अनुभव होगा। समस्या भी मनोरंजन का साधन बन जायेगी क्योंकि नालेज़फुल होकर देखेंगे। वह सदा निश्चयबुद्धि होने के कारण निश्चय के आधार पर विजयी होंगे। सदा हर्षित होंगे।

14.1.79.. .. कर्मणा में सदा नम्रता और सन्तुष्टता इसका प्रत्यक्ष फल सदा हर्षितमुखता होगी, इस विशेषता के आधार पर कर्मणा में मार्क्स मिलती हैं।

16.1.79.. .. टीचर्स का आक्यूपेशन है सदा सन्तुष्टता की खान रहना और सर्व को सन्तुष्ट बनाना :- टीचर्स तो हैं ही सदा सन्तुष्ट। टीचर्स अर्थात् सर्व को संतुष्ट बनाने की सेवा पर उपस्थित। जितना स्वयं सम्पन्न होंगे उतना औरों को भी बना सकेंगे। टीचर्स की विशेषता ही है हर बात में सन्तुष्ट। सनतुष्ट भी तब रह सकेंगे जब सदा बाप के गुणों और कर्त्तव्य में समान बनेंगे। सदा यह चैक करो कि जो बाप का गुण वही मेरा है, जो बाप का कर्त्तव्य वही मेरा कर्त्तव्य है। ऐसे चैक कर चलने वाले सदा सन्तुष्ट रहते भी हैं और सर्व को भी बनाते हैं। टीचर्स अर्थात् सन्तुष्टता की खान। सदा सम्पन्न, खान के समान अखुट हो। यही टीचर्स का अक्यूपेशन है।

27.3.81.. .. एक – बाप पसन्द अर्थात् बाप का सर्टीफिकेट। दूसरा – लोक पसन्द अर्थात् दैवी परिवार से सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट। तीसरा – मन पसन्द। अपने मन में भी सन्तुष्टता हो। अपने आप से भी मूंझा हुआ न हो – पता नहीं कर सकूंगा, चल सकूंगा? तो अपने मन पसन्द अर्थात् मन की सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट। यह तीन सर्टीफिकेट चाहिए। त्रिमूर्ति हैं ना। तो यह त्रिमूर्ति सर्टीफिकेट चाहिए। दो से भी काम नहीं चलेगा। तीनों चाहिए। कोई समझते हैं – हम अपने से सन्तुष्ट हैं, बाप भी सन्तुष्ट है। चल जायेगा। लेकिन नहीं। जब बाप सन्तुष्ट है, आप भी सन्तुष्ट हो तो परिवार सन्तुष्ट न हो, यह हो नहीं सकता। परिवार को सन्तुष्ट करने के लिए सिर्फ़ छोटी-सी एक बात है। '' रिगार्ड दो और रिगार्ड लो।'' यह रिकार्ड दिन रात चलता रहे। रिगार्ड का रिकार्ड निरन्तर चलता रहे। कोई कैसा भी हो लेकिन आप दाता बन देते जाओ। रिटर्न दे वा न दे लेकिन आप देते जाओ। इसमे निष्काम बनो। मैंने इतना दिया। उसने तो कुछ दिया नहीं। हमने सौ बार दिया, उसने एक बार भी नहीं। इसमें निष्काम बनो तो परिवार स्वत: ही सन्तुष्ट होंगे। आज नहीं तो कल। आपका देना जमा होता जायेगा, वह जमा हुआ फल ज़रूर देगा। और बाप पसन्द बनने के लिए क्या चाहिए? बाप तो बड़े भोले हैं। बाप जिसको भी देखते हैं, सब अच्छे ते अच्छे हैं। 'अच्छा नहीं' ऐसा तो कोई नज़र ही नहीं आता। एक एक

पाण्डव, एक एक शक्ति एक से एक आगे है। तो बाप पसन्द बनने के लिए –''सच्ची दिल पर साहेब राजी।''जो भी हो सच्चाई, सत्यता बाप को जीत लेती है। और मन पसन्द बनने के लिए क्या चाहिए? मनमत पर नहीं चलना। मनपसन्द औरचीज़ हैं। मन पसन्द बनने के लिए बहुत सहज साधन है – श्रीमत की लकीर के अन्दर रहो। संकल्प

करो तो भी श्रीमत की लकीर के अन्दर। बोलो, कर्म करो, जो कुछ भी करो लकीर के अन्दर। तो सदा स्वयं से भी सन्तुष्ट और सर्व को भी सन्तुष्ट कर सकेंगे। संकल्प रूपी नाखून भी बाहर न हो।

6.11.81.. .. जैसे बीज को समय पर कार्य में नहीं लगाओ तो फल दायक बीज नहीं रहता। कोई फिर क्या करते? बीज को सेवा की धरनी में ड़ालते भी हैं लेकिन फल निकलने से पहले वृक्ष को देख उसी में ही खुश हो जाते हैं कि मैंने बीज को कार्य में लगाया। इसकी रिजल्ट क्या होती? वृक्ष बढ़ जाता, डाल-डालियाँ शाखायें उपशाखायें निकलती रहती, लेकिन वृक्ष बढ़ता लेकिन फल नहीं आता। देखने में वृक्ष बड़ा सुन्दर होता लेकिन फल नहीं निकलता। अर्थात् जो जन्मसिद्ध अधिकार रूप में विशेषता मिली उससे न स्वयं सफलता रूपी फल पायेगा, न औरों को उस विशेषता द्वारा सफलता स्वरूप बना सकेगा। विशे-षता के बीज का सबसे श्रेष्ठ फल है – ''सन्तुष्टता''। इसीलिए आजकल के भक्त सन्तोषी माँ की पूजा ज्यादा करते हैं। तो सन्तुष्ट रहना और सर्व को सन्तुष्ट रखना – यह है विशेष युग का विशेष फल।

6.11.81.. ..कई बच्चे ऐसे फलदायक नहीं बनते। वृक्ष का विस्तार अर्थात् सेवा का विस्तार कर लेंगे लेकिन बिना सन्तुष्टता के फल के वृक्ष क्या काम का? तो विशेषता के वरदान वा बीज को सर्वशक्तियों के जल से सींचो तो फल दायक हो जायेंगे। नहीं तो विस्तार हुआ वृक्ष भी समय प्रति समय आये हुए तूफान से हिलते-हिलते कब कोई डाली,कब कोई डाली टूटती रहेगी। फिर क्या होगा? वृक्ष होगा सूखा हुआ वृक्ष। कहाँ एक तरफ सूखा वृक्ष- जिसमें आगे बढ़ने का उमंग, उत्साह, खुशी, रूहानी नशा कोई भी हरियाली नहीं, न बीज में हरियाली, न वृक्ष में। और साथ-साथ दूसरे तरफ सदा हराभरा फलदायक वृक्ष। कौन-सा अच्छा लगेगा? इसलिए बाप-दादा ने विशेषता के वरदान का शक्तिशाली बीज सब बच्चों को दिया है। सिर्फ़ विधिपूर्वक फलदायक बनाओ। यह रही स्व के विशेषता की बात। अब विशेष आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में सदा रहते हो क्योंकि ब्राह्मण परिवार अर्थात् विशेष आत्माओं का परिवार। तो परिवार के सम्पर्क में आते हरेक की विशेषता को देखो। विशेषता देखने की ही दृष्टि धारण करो। अर्थात् विशेष चश्मा पहन लो।

11.11.81.. .. जो सम्पन्न होंगे वह सदा सन्तुष्ट होंगे और सर्व को सन्तुष्ट करेंगे। किसी भी प्रकार की अप्राप्ति, असन्तुष्टता पैदा करती है। सर्व प्राप्ति हैं तो सदा सन्तुष्ट। सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना, उसकी विधि है – सम्पन्न और दाता। दोनों बातें चाहिए। कोई सम्पन्न हो लेकिन दाता न हो तो भी सन्तुष्ट नहीं कर सकते। तो दाता भी और सम्पन्न भी।

28.11.81.. .. आजकल मैजारिटी-सच्चे सुख और शान्ति के वा सच्ची खुशी के प्यासे होने के कारण रास्ता ढूंढ़ रहे हैं। अनेक अल्पकाल के रास्ते अनुभव करते, सन्तुष्टता न मिलने के कारण अब धीरे-धीरे उन अनेक रास्तों से लौट रहे हैं, यह भी नहीं, यह भी नहीं। अब नेती-नेती के अनुभव में आ रहे हैं। अभी, ''सही रास्ता कुछ और है'',– ऐसी अनुभूति करने लगे हैं। ऐसे समय पर आप पूर्वजों का कार्य है– ऐसी आत्माओं को शमा बन रास्ता दिखाना। अमर ज्योति बन अंधकार से ठिकाने पर लाना। ऐसे संकल्प आते हैं? यह स्मृति रहती है कि हम पूर्वज आत्मायें सर्व वंशावली के आगे जो करेंगे वही सारे वंशावली तक पहुँचता है? आप पूर्वजों की वृत्ति विश्व के वातावरण को परिव-र्तन करने वाली है। आप पूर्वजों की दृष्टि सर्व वंशावली को ब्रदरहुड की स्मृति दिलाने वाली है। आप पूर्वजों की बाप की स्मृति, सर्व वंशावली को स्मृति दिलायेगी कि हमारा बाप आया है। आप पूर्वजों के श्रेष्ठ कर्म वंशावली को श्रेष्ठ चरित्र अर्थात् चरित्र निर्माण की शुभ आशा उत्पन्न करेंगे।

14.3.82.. .. **प्रश्न-** हम बुद्धि से सरेन्डर हैं या नहीं, उसकी परख क्या है? **उत्तर-** बुद्धि से सरेन्डर का अर्थ है – बुद्धि जो भी निर्णय करे वह श्रीमत के अनुकूल हो। क्योंकि बुद्धि का कार्य है निर्णय करना। तो बुद्धि में श्रीमत के सिवाए और कोई बात आये ही नहीं। बुद्धि में सदा बाबा की स्मृति होने के कारण आटोमेटिकली निर्णय शक्ति वही होगी और उसकी प्रैक्टिकल निशानी यह होगी – कि उनकी जजमेन्ट सत्य होगी तथा सफलता वाली होगी। उनकी बात स्वयं को भी जँचेगी और औरों को भी जँचेगी कि बात बड़ी अच्छी कही है। सभी महसूस करेंगे कि इनकी बुद्धि बड़ी क्लीयर और सरेन्डर है। अपनी बुद्धि पर सन्तुष्टता होगी। क्वेश्चन नहीं होगा कि पता नहीं राइट है या रांग है।

16.4.82.. .. सेवाधारी जब स्व से और सर्व से सन्तुष्ट होते हैं तो सेवा का, सहयोग का उमंग उत्साह स्वत: होता है। कहना कराना नहीं पड़ता, सन्तुष्टता सहज ही उमंग उल्लास में लाती है। सेवाधारी का विशेष यही लक्ष्य हो कि सन्तुष्ट रहना है और करना है।

9.5.83.. .. सदा स्व के पुरुषार्थ से और सेवा से सन्तुष्ट रहो तब ही जिन्हों के निमित्त बनते हैं उन्हों में सन्तुष्टता होगी। सदा सन्तुष्ट रहना और दूसरों को रखना यही विशेषता है।

31.12.83.. .. नये वर्ष की विशेष सौगात – बापदादा 'वरदान माला' दे रहे हैं। सेरीमनी बनाते हैं तो वरमाला डालते हैं। बापदादा सभी आशिकों को वरदान माला की सौगात दे रहे हैं। सदा सन्तुष्टता से सन्तुष्ट रहो और सन्तुष्ट करो। हर संकल्प में विशेषता हो, हर बोल और कर्म में विशेषता हो। ऐसे विशेषता सम्पन्न सदा रहो। सदा सरल स्वभाव, सरल बोल, सरलता सम्पन्न कर्म हों। ऐसे सरल स्वरूप रहे। सदा एक की मत पर, एक से सर्व सम्बन्ध, एक से सर्व प्राप्ति ऐसे एक द्वारा सदा एक रस रहने के सहज अभ्यासी रहो। सदा ख़ुश रहो, ख़ुशी का ख़ज़ाना बाँटो। ख़ुशी की लहर सर्व में फैलाओ। ऐस सदा ख़ुशी की मुस्कराहट चेहरे पर चमकती रहे। ऐसे हर्षित मुख रहो। सदा याद में रहो। वृद्धि को पाओ। ऐसे वरदान माला सदा साथ रहे। समझा। यह है नये वर्ष की सौगात!

20.1.84.. .. आजकल सन्तोषी माँ को बहुत पुकारते हैं। क्योंकि सन्तुष्टता वा संतोष सर्व प्राप्तियों का आधार स्वरूप है। जहाँ सन्तुष्टता है वहाँ अप्राप्ति का अभाव है। सन्तुष्टता के आधार पर स्थूल धन में भी बरकत अनुभव करते हैं। सन्तुष्टता वाले का धन दो रुपया भी दो लाख समान है। करोड़पति हो लेकिन सन्तुष्टता नहीं तो करोड़-करोड़ नहीं। इच्छाओं के भिखारी हैं।

12.3.84.. .. सन्तुष्टता रूहानियत की सहज विधि है। प्रसन्नता सहज सिद्धि है। जिसके पास सन्तुष्टता है वह सदा प्रसन्न स्वरूप अवश्य दिखाई देगा। सन्तुष्टता सर्व प्राप्ति स्वरूप है। सन्तुष्टता सदा हर विशेषता को धारण करने में सहज साधन है। सन्तुष्टता का खज़ाना सर्व खज़ानों को स्वत: ही अपनी तरफ़ आकर्षित करता है। सन्तुष्टता ज्ञान की सब्जेक्ट का प्रत्यक्ष प्रमाण है। सन्तुष्टता बेफिकर बादशाह बनाती है। सन्तुष्टता सदा स्वमान की सीट पर सेट रहने का साधन है। सन्तुष्टता महादानी, विश्व कल्याणी वरदानी सदा और सहज बनाती है। सन्तुष्टता हद के मेरे तेरे के चक्र से मुक्त कराए स्वदर्शन चक्रधारी बनाती है। सन्तुष्टता सदा निर्विकल्प, एकरस के विजयी आसन की अधिकारी बनाती है। सदा बापदादा के दिलतख्त-नशीन, सहज स्मृति के तिलकधारी, विश्व परिवर्तन के सेवा के ताजधारी इसी अधिकार के सम्पन्न स्वरूप में स्थित करती है। सन्तुष्टता ब्राह्मण जीवन का जीयदान है। ब्राह्मण जीवन के उन्नति का सहज साधन है। स्व से सन्तुष्ट, परिवार से सन्तुष्ट और परिवार उनसे सन्तुष्ट। किसी भी परिस्थिति में रहते हुए, वायुमण्डल वायब्रेशन की हलचल में भी सन्तुष्ट। ऐसे सन्तुष्टता स्वरूप, श्रेष्ठ आत्मा विजयी रत्न के सर्टीफिकेट के अधिकारी है। तीन सर्टीफिकेट लेने पड़ें – **(1)** स्व की स्व से सन्तुष्टता **(2)** बाप द्वारा सदा

सन्तुष्टता (3) ब्राह्मण परिवार द्वारा सन्तुष्टता। इससे अपने वर्तमान और भविष्य को श्रेष्ठ बना सकते हो। अभी भी सर्टिफ़िकेट लेने का समय है। ले सकते हैं लेकिन ज़्यादा समय नहीं है। अभी लेट हैं लेकिन टूलेट नहीं हैं। अभी भी सन्तुष्टता की विशेषता से आगे बढ़ सकते हो। अभी लास्ट सो फ़ास्ट सो फ़र्स्ट की मार्जिन है। फिर लास्ट सो लास्ट हो जायेंगे। तो आज बापदादा इसी सर्टिफ़िकेट को चेक कर रहे थे। स्वयं भी स्वयं को चेक कर सकते हो। प्रसन्नचित हैं या प्रश्नचित हैं? डबल विदेशी प्रसन्नचित वा सन्तुष्ट हैं? प्रश्न खत्म हुए तो प्रसन्न हो ही गये। सन्तुष्टता का समय ही संगमयुग है। सन्तुष्टता का ज्ञान अभी है। वहां इस सन्तुष्ट-असन्तुष्ट के ज्ञान से परे होंगे। अभी संगमयुग का ही यह खजाना है। सभी सन्तुष्ट आत्मायें सर्व को सन्तुष्टता का खजाना देने वाली हो। दाता के बच्चे मास्टर दाता हो। इतना जमा किया है ना! स्टाक फुल कर दिया है या थोड़ा कम रह गया है? अगर स्टाक कम है तो विश्व-कल्याणकारी नहीं बन सकते। सिर्फ़ कल्याणी बन जायेंगे। बनना तो बाप समान है ना।

2.4.84.. .. कई बच्चे सदा और सर्व सम्बन्ध में बन्धन मुक्त रहते। और कई बच्चे समय प्रमाण मतलब से सम्बन्ध जोड़ते हैं। इसलिए ब्राह्मण जीवन का अलौकिक रूहानी मजा पाने से वंचित रह जाते हैं। न स्वयं, स्वयं से सन्तुष्ट और न दूसरों से सन्तुष्टता का आशीर्वाद ले सकते। ब्राह्मण जीवन श्रेष्ठ सम्बन्धों का जीवन है ही – बाप और सर्व ब्राह्मण परिवार का आशीर्वाद लेने का जीवन। आशीर्वाद अर्थात् शुभ भावनायें, शुभ कामनायें। आप ब्राह्मणों का जन्म ही बापदादा की आशीर्वाद कहो, वरदान कहो इसी आधार से हुआ है। बाप ने कहा – आप भाग्यवान, श्रेष्ठ विशेष आत्मा हो। इसी स्मृति रूपी आशीर्वाद वा वरदान से शुभ भावना, शुभ कामना से आप ब्राह्मणों का नया जीवन, नया जन्म हुआ है। सदा आशीर्वाद लेते रहना। यही संगमयुग की विशेषता है

4.4.84.. .. तस्वीर तो सभी बना रहे हो लेकिन किसकी तस्वीर सम्पन्न है और किसकी तस्वीर कुछ न कुछ किसी बात में कम रह जाती है। अर्थात् प्रैक्टिकल जीवन में लाने में किसकी मस्तक रेखा अर्थात् मंसा, नयन रेखा अर्थात् रूहानी दृष्टि, मुख की मुस्कराहट की रेखा अर्थात् सदा सर्व प्राप्ति स्वरूप सन्तुष्ट आत्मा। सन्तुष्टता ही मुस्कराहट की रेखा है। हाथों की रेखा अर्थात् श्रेष्ठ कर्म की रेखा। पांव की रेखा अर्थात हर कदम श्रीमत प्रमाण चलने की शक्ति। इसी प्रकार तकदीर की तस्वीर बनाने में किसका किस में, किसका किस में अन्तर पड़ जाता है।

11.5.84.. .. सबसे बड़े ते बड़ा खज़ाना 'सन्तुष्टता' का बाप द्वारा आप सबने प्राप्त किया है। इसलिए सन्तुष्टता लेने के लिए सन्तोषी देवी की पूजा करते रहते हैं। सभी सन्तुष्ट आत्मायें – सन्तोषी माँ हो ना। सब सन्तोषी हो ना! आप सभी सन्तुष्ट आत्मायें सन्तोषी 1 मूर्त हो। बापदादा द्वारा सफ़लता जन्म-सिद्ध अधिकार रूप में प्राप्त की है इसलिए सफ़लता का दान, वरदान आपके चित्रों से मांगते हैं।

सारे विश्व की नजर आप आत्माओं की तरफ है। जो मैं करूँगा वो विश्व के लिए विधान और यादगार बनेगा। मैं हलचल में आऊंगी तो दुनिया हलचल में आयेगी। मैं सन्तुष्टताप्रसन्नता में रहूँगी, तो दुनिया सन्तुष्ट और प्रसन्न बनेगी। इतनी ज़िम्मेवारी हर विश्व नव-निर्माण के निमित्त आत्माओं की है। लेकिन जितनी बड़ी है उतनी हल्की है। क्योंकि सर्वशक्तिवान बाप साथ है।

21.11.84.. ..सभी सन्तुष्ट और खुश हैं ना! सेवा में सन्तुष्ट, स्व से सन्तुष्ट और आने वाले परिवार से सन्तुष्ट। तीनों ही सन्तुष्टता, इसको कहते हैं – सन्तुष्ट आत्मा। टीचर का अर्थ ही है – मास्टर दाता बन सहयोग देने वाली। ड्रामा में टीचर बनना यह भी एक गोल्डन चान्स है। इसी गोल्डन चांस को कामय रखते उड़ते रहो और उड़ाते रहो।..

किसी भी लौकिक चाहे अलौकिक कार्य अर्थ निमित्त हैं, उसी अपने-अपने कार्य में सन्तुष्टता वा सफलता सहज पा लेंगे। इस एक शब्द के अन्तर का मन्त्र हर वर्ग वाले को सुनाना।

7.1.85.. .. मास्टर विधाता की शान में रहो। मेरा मेरा नहीं करो। सब तेरा-तेरा। आप तेरा करेंगे तो सब कहेंगे तेरा-तेरा। मेरा-मेरा कहने से जो आता है वह भी गँवा देंगे। क्योंकि जहाँ सन्तुष्टता नहीं वहाँ प्राप्ति भी अप्राप्ति के समान है। जहाँ सन्तुष्टता है वहाँ थोड़ा भी सर्व समान है तो तेरा-तेरा कहने से प्राप्ति स्वरूप बन जायेंगे। जैसे यहाँ गुम्बद के अन्दर आवाज करते हो तो वही आवाज वापस आता है। ऐसे इस बेहद के गुम्बद के अन्दर अगर आप मन से मेरा कहते हो तो सबकी तरफ़ से वही 'मेरा' का ही आवाज़ सुनते हो!

15.3.85.. ..एक हैं, एक ही हैं'' यह गीत निकलेंगे। बस ड्रामा का यही पार्ट रहा हुआ है। यह हुआ और समाप्ति हुई। अब इस पार्ट को समीप लाना है। इसके लिए अनुभव कराना ही विशेष आकर्षण का साधन है। ज्ञान सुनाते जाओ और अनुभव कराते जाओ। ज्ञान सिर्फ़ सुनने से सन्तुष्ट नहीं होते लेकिन ज्ञान सुनाते हुए अनुभव भी कराते जाओ तो ज्ञान का भी महत्व है और प्राप्ति के कारण आगे उत्साह में भी आ जाते हैं।

18.3.85.. ..कुछ भी हो जाए लेकिन जो सन्तुष्ट आत्मायें हैं वह कब भी अपनी सन्तुष्टता की विशेषता को छोड़ नहीं सकते हैं। 'सन्तुष्टता' – ब्राह्मण जीवन का विशेष गुण कहो या खज़ाना कहो या विशेष जीवन का शृंगार है। जैसे कोई प्रिय वस्तु होती है तो प्रिय वस्तु को कभी छोड़ते नहीं हैं। सन्तुष्टता विशेषता है। सन्तुष्टता ब्राह्मण जीवन का विशेष परिवर्तन का दर्पण है।

ब्राह्मण जीवन में सन्तुष्टता की विशेषता को देख अज्ञानी भी प्रभावित होते हैं। यह परिवर्तन अनेक आत्माओं का परिवर्तन करने के निमित्त बन जाता है। सभी के मुख से यही निकलता कि यह 'सदा सन्तुष्ट अर्थात् खुश रहते हैं।' जहाँ सन्तुष्टता है वहाँ खुशी ज़रूर है। असन्तुष्टता खुशी को गायब करती है। यही ब्राह्मण जीवन की महिमा है। सदा सन्तुष्टता नहीं तो साधारण जीवन है।

सन्तुष्टता सफ़लता का सहज आधार है। सन्तुष्टता सर्व ब्राह्मण परिवार के स्नेही बनाने में श्रेष्ठ साधन है। जो सन्तुष्ट रहेगा उसके प्रति स्वत: ही सभी का स्नेह रहेगा। सन्तुष्ट आत्मा को सदा सभी स्वयं ही समीप लाने वा हर श्रेष्ठ कार्य में सहयोगी बनाने का प्रयत्न करेंगे। सन्तुष्टता की विशेषता स्वयं ही हर कार्य में गोल्डन चांसलर बना देती है।

संतुष्टता सदा सर्व के स्वभाव संस्कार को मिलाने वाली होती है। सन्तुष्ट आत्मा कभी किसी के भी स्वभाव संस्कार से घबराने वाली नहीं होती है। ऐसी सन्तुष्ट आत्मायें बनी हो ना! जैसे भगवान आपके पास आया आप नहीं गये। भाग्य स्वयं आपके पास आया। घर बैठे भगवान मिला। भाग्य मिला। घर बैठे सर्व खज़ानों की चाबी मिली। जब चाहो जो चाहो खज़ाने आपके हैं। क्योंकि अधिकारी बन गये हो ना। तो ऐसे सर्व के समीप आने का, सेवा में समीप आने का चांस भी स्वत: ही मिलता है। विशेषता स्वयं ही आगे बढ़ाती है।

जो सदा सन्तुष्ट रहता है उससे सभी का स्वत: ही दिल का प्यार होता है। बाहर का प्यार नहीं। एक होता है – किसी को राज़ी करने के लिए बाहर का प्यार करना। एक होता है – दिल का प्यार। नाराज न हो उसके लिए भी प्यार करना पड़ता है। लेकिन वह प्यार को सदा लेने का पात्र नहीं बनता। सन्तुष्ट आत्मा को सदा सभी का दिल का प्यार मिलता है। चाहे कोई नया हो वा पुराना हो, कोई किसको परिचय के रूप से जानता हो या नहीं जानता हो लेकिन सन्तुष्टता उस आत्मा की पहचान दिलाती है। हर एक की दिल होगी इससे बातें करें, इससे बैठें। तो ऐसे सन्तुष्ट हो? पक्के हो ना!

सन्तुष्ट आत्मायें सदा मायाजीत हैं ही। आती सबके पास है लेकिन कोई घबराता है कोई पहचान लेता है इसलिए संभल जाता है। मर्यादा की लकीर के अन्दर रहने वाले बाप के आज्ञाकारी बच्चे माया को दूर से ही पहचान लेते हैं। पहचानने में देरी करते हैं, वा गलती करते हैं तब माया से घबरा जाते हैं। जैसे यादगार में कहानी सुनी है – सीता ने धोखा क्यों खाया? क्योंकि पहचाना नहीं। माया के स्वरूप को न पहचानने कारण धोखा खाया। अगर पहचान लें कि यह ब्राह्मण नहीं, भिखारी नहीं, रावण है तो शोक वाटिका का इतना अनुभव नहीं करना पड़ता। लेकिन पहचान देरी से आई तब धोखा खाया और धोखे के कारण दु:ख उठाना पड़ा। योगी से वियोगी बन गई। सदा साथ रहने से दूर हो गई। पहचान कम क्यों होती है, समय पर पहचान नहीं आती, पीछे क्यों आती। इसका कारण? क्योंकि सदा बाप की श्रेष्ठ मत पर नहीं चलते। इसलिए मायाजीत बनने का बहुत सहज साधन है – 'सदा बाप के साथ रहो।' तो साथ रहो, सन्तुष्ट रहो तो माया क्या करेगी! सरेण्डर हो जायेगी।

सन्तुष्टता का गुण सभी गुणों की धारणा का दर्पण है। तो गुणों में सन्तुष्टता का स्व प्रति और दूसरों से सर्टिफिकेट लेना होता। यह है पास विद ऑनर की निशानी। अष्ट रत्नों की निशानी।

11.4.85 .. ..सेवा करो और सन्तुष्टता लो। सिर्फ सेवा नहीं करना लेकिन ऐसी सेवा करो जिसमें सन्तुष्टता हो। सभी की दुआयें मिले। दुआओं वाली सेवा सहज सफलता दिलाती है।

27.11.85 .. .. जब भी कोई कर्म करते हो तो यह लक्ष्य रखो कि जो कर्म हम कर रहे हैं उसमें ऐसा परिवर्तन हो जो दूसरे देख करके परिवर्तित हो जाएं। इससे स्वयं भी सन्तुष्ट और खुश रहेंगे और दूसरों का भी कल्याण करेंगे। तो हर कर्म सेवार्थ करो। अगर यह स्मृति रहेगी कि मेरा हर कर्म सेवा अर्थ है तो स्वत: ही श्रेष्ठ कर्म करेंगे। याद रखो – 'स्व परिवर्तन से औरों का परिवर्तन करना है'। यह सेवा सहज भी है और श्रेष्ठ भी है। मुख का भी भाषण और जीवन का भी भाषण। इसको कहते हैं सेवाधारी। सदा अपनी दृष्टि द्वारा औरों की दृष्टि बदलने के सेवाधारी। जितनी दृष्टि शक्तिशाली होगी उतना अनेकों का परिवर्तन कर सकेंगे। सदा दृष्टि और श्रेष्ठ कर्म द्वारा औरों की सेवा करने के निमित्त बनो।

14.12.85 .. ..बापदादा सभी बच्चों से यही श्रेष्ठ आशा रखते हैं कि हर एक बाप समान बने। सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना यही विशेषता है। पहली मुख्य बात है स्वयं से अर्थात् अपने पुरुषार्थ से, अपने स्वभाव संस्कार से, बाप को सामने रखते हुए सन्तुष्ट हैं – यह चेक करना है। हाँ, मैं सन्तुष्ट हूँ। यथाशक्ति वाला – वह अलग बात है। लेकिन वास्तविक स्वरूप के हिसाब से स्वयं से सन्तुष्ट होना और फ़िर दूसरों को सन्तुष्ट करना – यह सन्तुष्टता की

महानता है। दूसरे भी महसूस करें कि यह यथार्थ रूप में सन्तुष्ट आत्मा है। सन्तुष्टता में सब कुछ आ जाता है। न डिस्टर्ब हो ना डिस्टर्ब करें। इसको कहते हैं – 'सन्तुष्टता'। डिस्टर्ब करने वाले बहुत होंगे लेकिन स्वयं डिस्टर्ब न हों। आग की सेक से स्वयं को स्वयं किनारा कर सेफ रहें। दूसरे को नहीं देखें। अपने को देखें – मुझे क्या करना है। मुझे निमित्त बन ओरों को शुभ भावना और शुभ कामना का सहयोग देना है। यह है विशेष धारणा। इसमें सब कुछ आ जायेगा। इसकी तो गोल्डन जुबली मना सकते हो ना! निमित्त मधुबन वालों के लिए कहते हैं लेकिन है सभी के प्रति। मोह जीत की कहानी सुनी है ना! एसी सन्तुष्टता की कहानी बनाओ। जिसके पास भी कोई जावे, कितना भी क्रास एग्जामिन करे लेकिन सबके मुख से, सबके मन से सन्तुष्टता की विशेषता अनुभव हो। यह तो ऐसा है। नहीं। मैं कैसे बनके और बनाऊँ। बस, यह छोटी-सी बात स्टेज पर दिखाओ। अच्छा!

23.12.85 .. ..समय पर आप सभी सन्तुष्टमणियाँ बन सन्तुष्टता की रोशनी दो। अपने सन्तुष्टता की रोशनी से औरों को भी सन्तुष्ट बनाओ। पहले स्वं से स्वयं सन्तुष्ट रहो फ़िर सेवा में सन्तुष्ट रहो, फ़िर सम्बन्ध में सन्तुष्ट रहो तब ही सन्तुष्टमणि कहलायेंगे। सन्तुष्टता के भी तीन सर्टिफ़िकेट चाहिए। अपने आप से, सेवा से, फ़िर साथियों से।

31.3.86 .. ..सन्तुष्टता और विशालता का प्रत्यक्ष स्वरूप हर ब्राह्मण आत्मा के चेहरे पर, मन पर प्रसन्नता की निशानी दिखाई दे। प्रश्नचित नहीं लेकिन प्रसन्नचित। चेहरे पर संकल्प और स्वरूप की अविनाशी प्रसन्नता। तो **'सन्तुष्टता, विशालता और प्रसन्नता'** यह है 18 अध्याय की समाप्ति। समझा!

9.4.86 .. ..सच्चे सेवाधारी की निशानी है – त्याग अर्थात् नम्रता, और तपस्या अर्थात् एक बाप के निश्चय, नशे में दृढ़ता। यथार्थ सेवा इसको कहा जाता है। बापदादा निरन्तर सच्चे सेवाधारी बनने के लिए कहते हैं। नाम सेवा हो और स्वयं भी डिस्टर्ब हो, दूसरे को भी डिस्टर्ब करें, इस सेवा से मुक्त होने के लिए बापदादा कह रहे हैं। ऐसी सेवा न करना अच्छा है। क्योंकि सेवा का विशेष गुण 'सन्तुष्टता' है। जहाँ सन्तुष्टता नहीं, चाहे स्वयं से चाहे सम्पर्क वालों से, वह सेवा – न स्वयं को फल की प्राप्ति करायेगी, न दूसरों को। इससे स्वयं अपने को पहले 'सन्तुष्टमणी' बनाए फिर सेवा में आवे वह अच्छा है।

18.3.87 .. ..जो रॉयल होते हैं, वह थोड़े में तृप्त होते हैं। रॉयल आत्माओं की निशानी – सदा ही भरपूर होंगे, एक रोटी में भी तृप्त तो 36 प्रकार के भोजन में भी तृप्त होंगे। और जो अतृप्त होंगे, वह 36 प्रकार के भोजन मिलते भी तृप्त नहीं होंगे क्योंकि मन की भूख है। सच्चे आशिक की निशानी – सदा तृप्त आत्मा होंगे। तो तीनों ही निशानीयां चेक करो। सदैव यह सोचो – 'हम किसके आशिक हैं! जो सदा सम्पन्न है, ऐसे माशूक के आशिक हैं!' तो सन्तुष्टता कभी नहीं छोड़ो। सेवा छोड़ दो लेकिन सन्तुष्टता नहीं छोड़ो। जो सेवा असन्तुष्ट बनावे वो सेवा, सेवा नहीं। सेवा का अर्थ ही है – मेवा देने वाली सेवा। तो सच्चे आशिक सर्व हद की चाहना से परे, सदा ही सम्पन्न और समान होंगे।

5.10.87 .. ..संगमयुग का विशेष वरदान सन्तुष्टता है, फिर भी वरदाता से वरदान प्राप्त वरदानी आत्मायें दूसरे नम्बर की माला में क्यों आती? सन्तुष्टता का बीज सर्व प्राप्तियाँ हैं। असन्तुष्टता का बीज स्थूल वा सूक्ष्म अप्राप्ति है। जब ब्राह्मणों का गायन है – 'अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खज़ाने में अथवा ब्राह्मणों के जीवन में', फिर असन्तुष्टता क्यों? कारण? प्राप्तियों के खज़ानों को स्मृतिस्वरूप बन कार्य में नहीं लगाते। स्मृति रहती है लेकिन स्मृतिस्वरूप में नहीं आते।

सन्तुष्टता की निशानी – वह मन से, दिल से, सर्व से, बाप से, ड्रामा से सन्तुष्ट होंगे; उनके मन और तन में सदा प्रसन्नता की लहर दिखाई देगी। चाहे कोई भी परिस्थिति आ जाए, चाहे कोई आत्मा हिसाब-किताब चुक्तू करने

वाली सामना करने भी आती रहे, चाहे शरीर का कर्म-भोग सामना करने आता रहे लेकिन हद की कामना से मुक्त आत्मा सन्तुष्टता के कारण सदा प्रसन्नता की झलक में चमकता हुआ सितारा दिखाई देगी। प्रसन्नचित्त कभी कोई बात में प्रश्नचित्त नहीं होंगे। प्रश्न हैं तो प्रसन्न नहीं। प्रसन्नचित्त की निशानी – वह सदा नि:स्वार्थी और सदा सभी को निर्दोष अनुभव करेगा; किसी और के ऊपर दोष नहीं रखेगा - न भाग्यविधाता के ऊपर कि मेरा भाग्य ऐसा बनाया, न ड्रामा पर कि मेरा ड्रामा में ही पार्ट ऐसा है, न व्यक्ति पर कि इसका स्वभाव-संस्कार ऐसा है, न प्रकृति के ऊपर कि प्रकृति का वायुमण्डल ऐसा है, न शरीर के हिसाबकिताब पर कि मेरा शरीर ही ऐसा है। प्रसन्नचित्त अर्थात् सदा नि:स्वार्थ, निर्दोष वृत्ति-दृष्टि वाले। तो संगमयुग की विशेषता 'सन्तुष्टता' है और सन्तुष्टता की निशानी 'प्रसन्नता' है। यह है ब्राह्मण जीवन की विशेष प्राप्ति।

2.11.87 .. ..कोई भी कार्य शुरू करने के पहले सभी की शुभ भावनायें, शुभ कामनायें लो, सर्व के सन्तुष्ट ता का बल भरो, तब शक्तिशाली फल निकलेगा।

30.1.88 .. ..दो प्रकार के सहनशीलता के पेपर सुनाये। **पहला पेपर –** लोगों द्वारा अपशब्द वा अत्याचार। **दूसरा –** यज्ञ की स्थापना में भिन्न-भिन्न आये हुए विघ्न। **तीसरा –** कई ब्राह्मण बच्चों द्वारा भी ट्रेटर होना वा छोटी-मोटी बातों में असन्तुष्टता का सामना करना। लेकिन इसमें भी सदा असन्तुष्ट को सन्तुष्ट करने की भावना से परवश समझ सदा कल्याण की भावना से, सहनशीलता की साइलेन्स पावर से हर एक को आगे बढ़ाया। सामना करने वाले को भी मधुरता और शुभ भावना, शुभ कामना से सहनशीलता का पाठ पढ़ाया। जो आज सामना करता और कल क्षमा मांगता, उनके मुख से भी यही बोल निकलते – 'बाबा तो बाबा है!' इसको कहा जाता है सहनशीलता द्वारा फेल को भी पास बनाए विघ्न को पास करना।

3.2.88 .. ..सेवा अर्थात् जिसमें स्व के और सर्व के सहयोग वा सन्तुष्टता का फल प्रत्यक्ष दिखाई दे। अगर सर्व की शुभ भावना-शुभ कामना का सहयोग वा सन्तुष्टता प्रत्यक्ष फल के रूप में नहीं प्राप्त होती है तो चेक करो - क्या कारण है, फल क्यों नहीं मिला? और विधि को चेक करके चेन्ज करो।

27.3.88 .. ..'सदा अपने को सर्वशक्तिवान बाप की शक्तिशाली आत्मा हूँ' – ऐसा अनुभव करते हो? शक्तिशाली आत्मा सदा स्वयं भी सन्तुष्ट रहती है और दूसरों को भी सन्तुष्ट करती है। ऐसे शक्तिशाली हो? सन्तुष्टता ही महानता है। शक्तिशाली आत्मा अर्थात् सन्तुष्टता के खज़ाने से भरपूर आत्मा। इसी स्मृति से सदा आगे बढ़ते चलो। यही खज़ाना सर्व को भरपूर करने वाला है।

3.3.88 .. ..एक हैं अपने वरदान वा वर्से की प्राप्ति के पुरुषार्थ के आधार से महारथी और दूसरे हैं कोई न कोई सेवा की विशेषता के आधार से महारथी। कहलाते दोनों ही महारथी हैं लेकिन जो पहला नम्बर सुनाया - स्थिति के आधार वाले, वह सदा मन से अतीन्द्रिय सुख के, सन्तुष्टता के, सर्व के दिल के स्नेह के प्राप्ति स्वरूप के झूले में झूलते रहते हैं। और दूसरा नम्बर सेवा की विशेषता के आधार वाले तन से अर्थात् बाहर से सेवा की विशेषता के फलस्वरूप सन्तुष्ट दिखाई देंगे। सेवा की विशेषता के कारण सेवा के आधार पर मन की सन्तुष्टता है। सेवा की

विशेषता – कारण सर्व का स्नेह भी होगा लेकिन मन से वा दिल से सदा नहीं होगा। कभी बाहर से, कभी दिल से। लेकिन सेवा की विशेषता महारथी बना देती है। गिनती में महारथी की लाइन में आता है।

31.3.88 .. ..जैसे सेवा में एक दो से अच्छे ते अच्छी रिजल्ट निकालने की शुभ-भावना से आगे बढ़ रहे हो, ऐसे सेवा में संगठित रूप में सदा सन्तुष्ट रहने और सन्तुष्ट करने का विशेष संकल्प - यह भी सदा साथ-साथ रहे। क्योंकि एक ही समय तीन प्रकार की सेवा साथ-साथ होती है। **एक** – अपनी सन्तुष्टता, यह है स्व की सेवा। **दूसरी** – संगठन में सन्तुष्टता, यह है परिवार की सेवा। **तीसरी** – भाषा द्वारा वा किसी भी विधि द्वारा विश्व के आत्माओं की सेवा। एक ही समय पर तीन सेवा होती हैं। कोई भी प्रोग्राम बनाते हो तो उसमें तीनों सेवा समाई हुई हैं। जैसे विश्व की सेवा की रिज़ल्ट वा विधि अटेन्शन में रखते हो, ऐसे दोनों सेवायें 'स्व' और 'संगठन' की - तीनों ही निर्विघ्न हों, तब कहेंगे – सेवा की नम्बरवन सफ़लता। तीनों सफ़लता साथ होना ही नम्बर लेना है।

25.2.91.. .. जो आत्मा स्वराज्य चलाने में सफल रहती है तो सफल राज्य अधिकारी की निशानी है वह सदा अपने पुरुषार्थ से और साथ-साथ जो भी सम्पर्क में आने वाली आत्माएं हैं वह भी सदा उस सफल आत्मा से सन्तुष्ट होंगी और सदा दिल से उस आत्मा के प्रति शुक्रिया निकलता रहेगा। सर्व के दिल से, सदा दिल के साज से वाह-वाह के गीत बजते रहेंगे, उनके कानों में सर्व द्वारा यह वाह-वाह का शुक्रिया का संगीत सुनाई देगा।

17.3.91.. .. संगमयुग है ही सन्तुष्ट रहने और सन्तुष्ट बनाने का युग। ब्राह्मण जीवन की विशेषता सन्तुष्टता है। सन्तुष्टता ही बड़े ते बड़ा खजाना है। सन्तुष्टता ही ब्राह्मण जीवन के प्योरिटी की पर्सनालिटी है। इस पर्सनालिटी से विशेष आत्मा सहज बन जाते हैं। सन्तुष्टता की पर्सनालिटी नहीं तो विशेष आत्मा कहला नहीं सकते हैं। आजकल दो प्रकार की पर्सनालिटी गाई जाती है – एक शारीरिक पर्सनालिटी, दूसरी पोजीशन की पर्सनालिटी। ब्राह्मण जीवन में जिस ब्राह्मण आत्मा में सन्तुष्टता की महानता है – उनकी सूरत में, उनके चेहरे में भी सन्तुष्टता की पर्सनालिटी दिखाई देती है और श्रेष्ठ स्थिति के पोजीशन की पर्सनालिटी दिखाई देती है। सन्तुष्टता का आधार है बाप द्वारा सर्व प्राप्त हुए प्राप्तियों की सन्तुष्टता अर्थात् भरपूर आत्मा।

तपस्या का अर्थ ही है सन्तुष्टता की पर्सनालिटी नयनों में, चैन में, चेहरे में, चलन में दिखाई दे। ऐसे सन्तुष्ट मणियों की माला बना रहे थे। कितनी माला बनी होगी? सन्तुष्ट मणि अर्थात् बेदाग मणि। सन्तुष्टता की निशानी है – सन्तुष्ट आत्मा सदा प्रसन्नचित्त स्वयं को भी अनुभव करेगी और दूसरे भी प्रसन्न होंगे। प्रसन्नचित्त स्थिति में प्रश्न चित्त नहीं होता। एक होता है प्रसन्नचित्त, दूसरा है प्रश्न- चित्त। प्रश्न अर्थात् क्वेश्चन। प्रसन्नचित्त ड्रामा के नॉलेजफुल होने के कारण प्रसन्न रहता, प्रश्न नहीं करता। जो भी प्रश्न अपने प्रति या किसके प्रति भी उठता उसका उत्तर स्वयं को पहले आता। पहले भी सुनाया था व्हाट (What) और व्हाई (Why) नहीं, लेकिन डॉट। क्या, क्यों नहीं, फुलस्टॉप बिन्दु। एक सेकेण्ड में विस्तार, एक सेकेण्ड में सार। ऐसा प्रसन्नचित्त सदा निश्चिन्त रहता है। तो चेक करो – ऐसी निशानियाँ मुझ सन्तुष्ट मणि में हैं? बापदादा ने तो सबको टाइटिल दिये हैं – सन्तुष्ट मणि का। तो बापदादा पूछ रहे

हैं कि हे सन्तुष्ट मणियो, सन्तुष्ट हो? फिर प्रश्न है – स्वयं से अर्थात् स्वयं के पुरुषार्थ से, स्वयं के संस्कार परिवर्तन के पुरुषार्थ से, स्वयं के पुरुषार्थ की परसेन्टेज में, स्टेज में सदा सन्तुष्ट हो? अच्छा दूसरा प्रश्न – स्वयं के मन्सा, वाचा और कर्म, अर्थात् सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा सेवा में सदा सन्तुष्ट हो? तीनों ही सेवा, सिर्फ एक सेवा नहीं। तीनों ही सेवा में और सदा सन्तुष्ट हो? सोच रहे हैं, अपने को देख रहे हैं कि कहाँ तक सन्तुष्ट हैं? अच्छा, तीसरा प्रश्न – सर्व आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में स्वयं द्वारा वा सर्व द्वारा सदा सन्तुष्ट हो? क्योंकि तपस्या वर्ष में तपस्या का, सफलता का फल यही प्राप्त करना है। स्वयं में, सेवा में और सर्व में सन्तुष्टता। चार घण्टा तो योग किया – बहुत अच्छा, और चार से आठ घण्टा तक भी पहुँच जायेंगे। यह भी बहुत अच्छा। योग का सिद्धि स्वरूप हो। योग विधि है। लेकिन इस विधि से सिद्धि क्या मिली? योग लगाना यह विधि है, योग की प्राप्ति यह सिद्धि है। तो जैसे 8 घण्टे का लक्ष्य रखा है तो कम से कम यह तीन प्रकार की सन्तुष्टता की सिद्धि का स्पष्ट श्रेष्ठ लक्ष्य रखो। कई बच्चे स्वयं को मियाँ मिटठु माफिक भी सन्तुष्ट समझते हैं। ऐसे सन्तुष्ट नहीं बनना। एक है दिल माने, दूसरा है दिमाग माने। दिमाग से अपने को समझते सन्तुष्ट हैं ही, क्या परवाह है। हम तो बेपरवाह हैं। तो दिमाग से स्वयं को सन्तुष्ट समझना – ऐसी सन्तुष्टता नहीं, यथार्थ सम- झना है। सन्तुष्टता की निशानियाँ स्वयं में अनुभव हो। चित्त सदा प्रसन्न हो, पर्सनालिटी हो। स्वयं को पर्सनालिटी समझें और दूसरे नहीं समझें इसको कहा जाता है – मियाँमिट्ठू। ऐसे सन्तुष्ट नहीं। लेकिन यथार्थ अनुभव द्वारा सन्तुष्ट आत्मा बनो। सन्तुष्टता अर्थात् दिल-दिमाग सदा आराम में होंगे। सुख-चैन की स्थिति में होंगे। बेचैन नहीं होंगे। सुख चैन होगा। ऐसी सन्तुष्ट मणियाँ सदा बाप के मस्तक में मस्तक मणियों समान चमकती हैं। तो स्वयं को चेक करो। सन्तुष्टता बाप की और सर्व की दुवाएं दिलाती है। सन्तुष्ट आत्मा समय प्रति समय सदा अपने को बाप और सर्व की दुवाओं के विमान में उड़ता हुआ अनुभव करेगा। यह दुवाएं उनका विमान है। सदा अपने को विमान में उड़ता हुआ अनुभव करेगा। दुवा मांगेगा नहीं, लेकिन दुवाएं स्वयं उसके आगे स्वत: ही आयेगी। ऐसे सन्तुष्ट मणि अर्थात् सिद्धि स्वरूप तपस्वी। अल्प काल की सिद्धियाँ नहीं, यह अविनाशी और रूहानी सिद्धियाँ हैं। ऐसी सन्तुष्ट मणियों को देख रहे थे। हरेक अपने आपसे पूछे – मैं कौन?

3.4.91.. .. टीचर्स और मधुबन निवासियों को सेवा का प्रत्यक्षफल सबके सन्तुष्टता की दुआएं मिलती है। यह ब्राह्मण आत्माओं की या बाप की दुआएं एक्स्ट्रा लिफ्ट के रूप में काम में आती हैं। यह ब्राह्मण आत्माओं के दिल की दुआएं कम नहीं है।

10.4.91.. .. पुण्य आत्मा की वृत्ति, दृष्टि औरों को भी दुआयें अनुभव कराती हैं। पुण्य आत्मा के चेहरे पर सदा प्रसन्नता, सन्तुष्टता की झलक दिखाई देती है। पुण्य आत्मा सदा प्राप्त हुए फल के कारण अभिमान और अपमान से परे रहती है। क्योंकि वह भरपूर बादशाह है।

31.12.91.. .. तपस्या वर्ष में यही नवीनता लाओ। पुरुषार्थ वा सेवा के सफलता की, सन्तुष्टता की परसेन्टेज़ कभी बहुत ऊंची, कभी नीची- इसमें सदा श्रेष्ठ परसेन्टेज़ की नवीनता लाओ। जैसे आजकल के डॉक्टर्स ज्यादा क्या चेक करते हैं? सबसे ज्यादा आजकल ब्लड प्रेशर बहुत चेक करते हैं। अगर ब्लड का प्रेशर कभी बहुत ऊंचा हो,

कभी नीचा चला जाये तो क्या होगा? तो बापदादा पुरुषार्थ का प्रेशर देखते हैं, बहुत अच्छा जाता है, लेकिन कभी कभी जम्प मारता है । यह कभी कभी का शब्द समाप्त करो। अभी तो सभी इनाम लेने की तैयारी कर रहे हो ना? इस सारी सभा में ऐसे कौन हैं जो समझते हैं कि हम इनाम के पात्र बने हैं? कभी कभी वाले इनाम लेंगे? इनाम लेने के पहले यह विशेषता देखो कि इन 6 मास के अन्दर तीन प्रकार की सन्तुष्टता प्राप्त की है? पहला- स्वयं अपना साक्षी बन चेक करो- स्व के चार्ट से, स्वयं सच्चे मन, सच्चे दिल से सन्तुष्ट हैं? दूसरा- जिस विधि-पूर्वक बापदादा याद के परसेन्ट को चाहते हैं, उस विधि-पूर्वक मन-वचन-कर्म और सम्पर्क में सम्पूर्ण चार्ट रहा? अर्थात् बाप भी सन्तुष्ट हो। तीसरा- ब्राह्मण परिवार हमारे श्रेष्ठ योगी जीवन से सन्तुष्ट रहा? तो तीनों प्रकार की सन्तुष्टता अनुभव करना अर्थात् प्राइज़ के योग्य बनना। विधि-पूर्वक आज्ञाकारी बन चार्ट रखने की आज्ञा पालन की? तो ऐसे आज्ञाकारी को भी मार्क्स मिलती है। लेकिन सम्पूर्ण पास मार्क्स उनको मिलती है जो आज्ञाकारी बन चार्ट रखने के साथ पुरुषार्थ की विधि और वृद्धि की भी मार्क्स लें। जिन्होंने इस नियम का पालन किया है, जो एक्यूरेट रीति से चार्ट लिखा है, वह भी बापदादा द्वारा, ब्राह्मण परिवार द्वारा बधाइयाँ लेने के पात्र हैं। लेकिन इनाम लेने योग्य सर्व के सन्तुष्टता की बधाइयाँ लेने वाला पात्र है।

31.12.91.. .. एक्यूरेट चार्ट रखने वालों के भी नामों की माला बनेगी। अभी भी बहुत नहीं तो थोड़ा समय तो रहा है, इस थोड़े समय में भी विधि-पूर्वक पुरुषार्थ की वृद्धि कर अपने मन-बुद्धि-कर्म और सम्बन्ध को सदा अचल-अडोल बनाया तो इस थोड़े समय के अचल- अडोल स्थिति का पुरुषार्थ आगे चलकर बहुत काम में आयेगा और सफलता की खुशी स्वयं भी अनुभव करेंगे और औरों द्वारा भी

सन्तुष्टता की दुआएं प्राप्त करते रहेंगे। इसलिए ऐसे नहीं समझना कि समय बीत गया, लेकिन अभी भी वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ बना सकते हो। अभी भी विशेष स्मृति मास एक्स्ट्रा वरदान प्राप्त करने का मास है। जैसे तपस्या वर्ष का चांस मिला ऐसे स्मृति मास का विशेष चांस है। इस मास के 30 दिन भी अगर सहज, स्वत:, शक्तिशाली, विजयी आत्मा का अनुभव किया, तो यह भी सदा के लिए नेचुरल संस्कार बनाने की गिफ्ट प्राप्त कर सकते हो। कुछ भी आवे, कुछ भी हो जाये, परिस्थिति रूपी बड़े ते बड़ा पहाड़ भी आजाये, संस्कार टक्कर खाने के बादल भी आ जायें, प्रकृति भी पेपर ले, लेकिन अंगद समान मन-बुद्धि रूपी पांव को हिलाना नहीं,अचल रहना। बीती में अगर कोई हलचल भी हुई हो उसको संकल्प में भी स्मृति में नहीं लाना। फुल स्टॉप लगाना। वर्तमान को बाप समान श्रेष्ठ, सहज बनाना और भविष्य को सदा सफलता के अधिकार से देखना। इस विधि से सिद्धि को प्राप्त करना। कल से नहीं, अभी से करना। स्मृति मास के थोड़े समय को बहुत काल का संस्कार बनाओ। यह विशेष वरदान विधि-पूर्वक प्राप्त करना। वरदान का अर्थ यह नहीं कि अलबेले बनो। अलबेला नहीं बनना, लेकिन सहज पुरुषार्थी बनना। अच्छा-

8.4.92.. .. कई बच्चे कहते हैं कि हम तो ठीक हैं, लेकिन कोई कोई आत्मा को कोई कड़ा हिसाब है हमारे से, जो कितना भी उसको सन्तुष्ट करते लेकिन वह सन्तुष्ट नहीं होता बापदादा ने पहले भी कहा था कि अगर ऐसा कोई कड़ा हिसाब किताब है भी तो भी कम से कम सर्टीफिकेट मिलने चाहिएं। का कड़ा हिसाब किताब है, वह भी माफ है। लेकिन दिल से दुआएं दें। कई ऐसे कहते हैं कि सबसे सन्तुष्ट कौन हैं? ऐसा तो एक भी दिखाई नहीं देता। बड़ों के लिए भी सोचते हैं कि इनसे ही नाराज है तो हमसे हुए तो क्या बड़ी बात है। लेकिन उन्हों से दिल से राजी हैं। बड़ों की बात दूसरी है। बड़ों को जज बनना पड़ता है। तो दो में से एक की बात हाँ करेंगे वह कहेंगे बहुत अच्छे, और जिसको ना करेंगे वह कहेंगे ये भी अच्छे नहीं हैं। तो जज एक को हाँ करेगा या दोनों को? तो वह

बाते अलग बात हैं। लेकिन दिल की तपस्या, दिल का प्यार, निमित्त भाव, शुभ भाव वो सर्टीफिकेट सामने देखो। यह नहीं कॉपी करो कि बड़ों से भी सन्तुष्ट नहीं हैं हम तो पास हो जायेंगे। ऐसे नहीं सोचो। अगर सन्तुष्ट हैं तो नम्बर मिल जायेगा। समझा! अच्छा –

15.4.92.. ..राजधानी में आना अर्थात ब्राह्मण परिवार में सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट काना, श्रेष्ठ सम्बन्ध में आना।

24.9.92.. .. सबसे अच्छे ते अच्छा ग्रुप किसको कहा जायेगा, उसकी विशेषता क्या होगी? सबसे अच्छा ग्रुप वह है जो ग्रुप में रहते हुए भी निर्विघ्न रहे, सन्तुष्ट रहे। कोई अकेला निर्विघ्न रहता है, यह कोई बड़ी बात नहीं। लेकिन बड़े संगठन में भी हो और निर्विघ्न भी हो। तो आप सभी संगठन में रहते निर्विघ्न रहते हो? कितना भी हंगामा हो लेकिन स्वयं अचल हो–ऐसे ग्रुप के हो? जैसे बाप अकेला तो नहीं है ना, परिवार वाला है। सबसे बड़े ते बड़ा परिवार बाप का है और जितना बड़ा परिवार उतना ही न्यारा और सर्व का प्यारा है। जितनी सेवा उतना न्यारा। तो फालो फादर करने वाले हो ना। इसीलिये आप सबका यादगार यहाँ अचलघर बना हुआ है। कितना भी कोई हिलावे, हिलेंगे नहीं। एक तरफ एक डिस्टर्ब करे, दूसरी तरफ दूसरा डिस्टर्ब करे–तो क्या करेंगे? कोई सैलवेशन नहीं मिले, फिर हलचल होगी? कोई इन्सल्ट कर दे, फिर हलचल होगी? अचल अर्थात् चारों ओर कितना भी कोई

हिलाने की कोशिश करे लेकिन संकल्प में भी अचल।

3.11.92.. .. तृप्त आत्मा हर परिस्थिति में, हर आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हुए, जानते हुए सन्तुष्ट रहती है। चाहे कोई कितना भी असन्तुष्ट करने की परिस्थितियां उनके आगे लाये लेकिन सम्पन्न, तृप्त आत्मा असन्तुष्ट करने वाले को भी सन्तुष्टता का गुण सहयोग के रूप में देगी। ऐसी आत्मा के प्रति रहमदिल बन शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा उनको भी परिवर्तन करने का प्रयत्न करेंगे। रूहानी रॉयल आत्माओं का यही श्रेष्ठ कर्म है।

30.11.92.. .. दुआएं किसको मिलती हैं? जो सन्तुष्ट रह सबको सन्तुष्ट करे। जहाँ सन्तुष्टता होगी वहाँ दुआएं होंगी। और कुछ भी नहीं आता हो–कोई बात नहीं। भाषण नहीं करना आता है–कोई बात नहीं। सर्व गुण धारण करने में मेहनत लगती हो, सर्व शक्तियों को कन्ट्रोल करने में मेहनत लगती हो–उसको भी छोड़ दो। लेकिन एक बात यह धारण करो कि दुआएं सबको देनी हैं और दुआएं लेनी हैं। इसमें कोई मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। करके देखो। एक दिन अमृतवेले से लेकर रात तक यही कार्य करो–दुआएं देनी हैं, दुआएं लेनी हैं। और फिर रात को चार्ट चेक करो–सहज पुरुषार्थ रहा या मेहनत रही? और कुछ भी नहीं करो लेकिन दुआएं दो और दुआएं लो। इसमें सब आ जायेगा। दिव्य गुण, शक्तियां आपे ही आ जायेंगी।

20.12.92.. .. सभी सन्तुष्ट हो ना। ब्राह्मण जीवन में अगर सन्तुष्ट नहीं रहे तो कब रहेंगे। अभी ही सन्तुष्टता का मजा है। ब्राह्मण जीवन का लक्षण ही है सन्तुष्ट रहना। सन्तुष्ट हैं तो खुश हैं, अगर सन्तुष्ट नहीं तो खुश नहीं।

18.11.93.. .. सम्पन्नता की निशानी है–सम्पन्नता अर्थात् सदा सन्तुष्टता, अप्राप्ति का नाम-निशान नहीं। हद के इच्छाओं की अविद्या–इसको कहा जाता है सम्पत्तिवान। और राजा का अर्थ ही है दाता। अगर हद की इच्छा वा प्राप्ति की उत्पत्ति है तो वो राजा के बजाय मंगता (मांगने वाला) बन जाता है। इसलिये अपने स्वराज अधिकार को अच्छी तरह से चेक करो कि पवित्रता के संस्कार ही भविष्य संसार का फाउन्डेशन हैं। मेरा स्वराज्य एक राज्य, एक धर्म, सुख-शान्ति सम्पन्न बना है?

सभी सन्तुष्ट आत्मायें हो ना। संगम पर सन्तुष्ट नहीं रहेंगे तो कब रहेंगे? संगमयुग है ही सन्तुष्टता का युग। तो सभी सन्तुष्ट हैं कि थोड़ी खिटखिट है? न स्वयं में, न दूसरों के सम्पर्क में आने में। स्वयं सन्तुष्ट हैं लेकिन सम्पर्क में आने में सन्तुष्टता, इसमें थोड़ा फ़र्क है। माला के मणके हो ना। तो माला कैसे बनती है? सम्बन्ध से। अगर दाने का दाने से सम्पर्क नहीं हो तो माला बनेगी? तो माला के मणके हैं इसलिए सम्बन्ध-सम्पर्क में भी सदा सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना। सिर्फ़ रहना नहीं है, करना भी है तब माला के मणके बनते हैं। क्योंकि सभी परिवार वाले हो, निवृत्ति वाले नहीं। परिवार का अर्थ ही है सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना।

16.12.93.. ..जो स्नेह में समाये हुए हैं उन आत्माओं के नयनों में, मुख में, संकल्प में, हर कर्म में सहज और स्वत: स्नेही बाप का साथ सदा ही अनुभव होता है। बाप उससे जुदा नहीं और वो बाप से जुदा नहीं। हर समय बाप के स्नेह के रिटर्न में प्राप्त हुई सर्व प्राप्तियों में सम्पन्न और सन्तुष्ट रहते हैं। इसलिये और किसी भी प्रकार का सहारा उन्हों को आकर्षित नहीं कर सकता। क्योंकि कोई न कोई अल्पकाल की प्राप्ति की आवश्यकता किसी और को सहारा बनाती है अर्थात् सम्पूर्ण स्नेह में अन्तर डालती है। स्नेह में समाई हुई आत्मायें सदा सर्व प्राप्ति सम्पन्न होने के कारण सहज ही 'एक बाप दूसरा न कोई' इस अनुभूति में रहती हैं।

16.12.93 .. ..जो थोड़े में सन्तुष्ट रहता है उसको सदा सर्व प्राप्तियों की अनुभूति होती है। सन्तुष्टता सबसे बड़े से बड़ा ख़ज़ाना है। जिसके पास सन्तुष्टता है, उसके पास सब-कुछ है। जिसके पास सन्तुष्टता नहीं है तो सब-कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है। क्योंकि असन्तुष्ट आत्मा सदा इच्छाओं के वश होगी। एक इच्छा पूरी होगी और 10 इच्छाों उत्पन्न होगी। तो आप क्या हो? हद के इच्छा मात्रम् अविद्या। ऐसे हो कि कभी-कभी छोटी-मोटी इच्छा हो जाती है? सन्तुष्ट हो? सदा यह गीत गाते रहो पाना था वो पा लिया। अच्छा। सभी सन्तुष्ट मणियाँ हो ना?

31.12.93 .. ..ब्राह्मण जीवन का सबसे बड़े से बड़ा ख़ज़ाना है सन्तुष्ट रहना। जहाँ सन्तुष्टता है वहाँ सब-कुछ है। तो जहाँ सर्व प्राप्तियां हैं वहाँ सन्तुष्टता होगी ही।

श्रेष्ठ कर्म की निशानी होगी–स्वयं सन्तुष्ट और दूसरे भी सन्तुष्ट। ऐसे नहीं–मैं तो सन्तुष्ट हूँ, दूसरे हों या नहीं हो। योगी जीवन वाले का प्रभाव स्वत: दूसरों के ऊपर पड़ेगा। अगर कोई स्वयं से असन्तुष्ट है वा और उससे असन्तुष्ट रहते हैं तो समझना चाहिये कि योगयुक्त बनने में कोई कमी है।

कुछ भी हो जाये, दाता के बच्चे दाता हैं तो किसी भी बात में असन्तुष्ट नहीं हो सकते। सन्तुष्टता ब्राह्मणों का विशेष लक्षण है। स्वयं से भी सन्तुष्ट और औरों से भी सन्तुष्ट। जो पार्ट मिला है उसमें सन्तुष्ट रहना ही आगे बढ़ना है।

3.4.94 .. ..इस संगमयुग में विशेष बापदादा की देन सन्तुष्टता है। एक सन्तुष्टता की विशेषता और विशेषताओं को भी सहज अपने समीप लाती है। लेकिन सदा सन्तुष्ट हो। परिस्थिति कितनी भी बदले लेकिन सन्तुष्टता की स्थिति को परिस्थिति बदल नहीं सकती। पर-स्थिति है ही बदलने वाली। लेकिन स्व- सन्तुष्टता की स्थिति सदा प्रगतिशील है।

कोई भी परिस्थिति आए तो यही समझो एक बेहद के स्क्रीन पर कार्टून शो चल रहा है वा पपेट शो चल रहा है। तो वह देखकर के परेशान नहीं होंगे। माया का वा प्रकृति का यह भी एक शो है। जिसको साक्षी स्थिति में सदा सन्तुष्टता के स्वरूप में देखते रहो। अपनी शान में रहते हुए देखो–सन्तुष्ट मणि हूँ, सन्तोषी आत्मा हूँ।

प्राप्तियों में विशेष सम्बन्ध और सम्पत्ति आवशक है। सम्बन्ध में भी अगर एक भी सम्बन्ध अप्राप्त है तो सम्पूर्ण सन्तुष्टता नहीं होगी। तो सम्बन्ध में भी सर्व चाहिये और अविनाशी चाहिये। अगर कोई भी सम्बन्ध विनाशी है तो अप्राप्ति और असन्तुष्टता स्वत: हो जाती है। लेकिन एक ही वर्तमान संगमयुग है जिसमें सर्व अविनाशी सम्बन्ध एक

बाप से अनुभव कर सकते हो। सतयुग में भी सम्बन्ध बहुत थोड़े हैं, सर्व नहीं हैं, लेकिन इस समय जिस सम्बन्ध की आकर्षण हो, अनुभूति करना चाहे वो सम्बन्ध परम आत्मा द्वारा अनुभव कर सकते हो। हर एक के जीवन में सम्बन्ध की भी अलग-अलग पसन्दी होती है। किसको बाप का सम्बन्ध इतना अच्छा नहीं लगेगा, फ्रैण्ड जादा अच्छा लगेगा। लेकिन एक समय पर और एक से सर्व सम्बन्ध प्राप्त हैं? सर्व प्राप्ति है कि कुछ रहा हुआ है?

19.1.95 .. ..तो दिल की सन्तुष्टता वा आज्ञाकारी की दुआएं स्वयं को भी लाइट और दूसरे को भी लाइट बनायेंगी। इससे समझो कि आज्ञाकारी कहाँ तक हैं? जैसे ब्रह्मा बाप को देखा हर एक छोटाबड़ा सन्तुष्ट होकर खुशी में नाचता। नाचने के टाइम तो हल्के होंगे ना तभी तो नाचेंगे ना। चाहे कोई मोटा है लेकिन मन से हल्का है तो भी नाचता है और पतला है लेकिन भारी है तो नहीं नाचेगा। तो बोल ऐसे हों जो स्वयं भी अपने आपसे सन्तुष्ट हो और दूसरे भी सन्तुष्ट रहें।

जितना अभी बाप और ब्राह्मण आत्माओं की दुआओं के पात्र बनेंगे उतना ही राज के पात्र बनेंगे। अगर अभी ब्राह्मण परिवार को सन्तुष्ट नहीं कर सकते, तो राज क्या चलायेंगे! राज्य को क्या सन्तुष्ट करेंगे! क्योंकि ब्राह्मण आत्मायें आपकी रॉयल फैमिली बनेंगे तो जो फैमिली को सन्तुष्ट नहीं कर सकते वो प्रजा को क्या करेंगे? संस्कार तो यहाँ भरना है ना! कि वहाँ योग करके भरेंगे! यहाँ ही भरना है।

7.3.95 .. ..तो शान्ति की शक्ति की निशानी है–जहाँ शान्ति होगी, वहाँ सदा सन्तुष्ट होंगे। क्योंकि अशान्त करती है असन्तुष्टता। जहाँ सन्तुष्टता होगी वहाँ शान्ति होगी और जहाँ शान्ति होगी वहाँ सन्तुष्टता होगी। और शान्ति की शक्ति वाला सदा ही खुश मिज़ाज़ होगा। जितनी शान्ति उतनी खुशी उसके चेहरे से, चलन से अनुभव होगी। तो शान्ति की शक्ति की निशानी दिखाना। सदैव सबका चेहरा हर्षित हो। कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन खुशी को नहीं छोड़े।

16.3.95 .. ..सबसे सहज सदा सन्तुष्ट रहने की विधि है–सदा अपने सामने कोई न कोई विशेष प्राप्ति को रखो। क्योंकि प्राप्ति भूलती नहीं है। ज्ञान की पॉइन्ट्स भूल सकती हैं लेकिन कोई भी प्राप्ति भूलती नहीं है।

6.4.95 .. ..व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता है। क्यों? आप सोचेंगे कि हमने पाप तो किया ही नहीं, किसको दु:ख तो दिया ही नहीं लेकिन अगर व्यर्थ चला, समय गया, संकल्प गया, सन्तुष्टता गई तो आपके पवित्रता की फाइनल स्टेज के डिग्री में फर्क पड़ जायेगा। 16 कला नहीं बन सकेंगे। 15 कला, 14 कला, साढ़े पन्द्रह कला..... नम्बरवार हो जोगा।

22.3.96 .. ..सर्व प्राप्तियों की निशानी है – सदा उसके चेहरे और चलन में प्रसन्नता की पर्सनेलिटी दिखाई देगी। पर्सनेलिटी ही किसी को भी आकर्षित करती है। तो सर्व प्राप्तियों की निशानी – प्रसन्नता की पर्सनेलिटी है, जिसको सन्तुष्टता भी कहते हैं।

18.1.97 .. ..परिवार की जितनी आत्माओं से सर्टीफिकेट जिसको मिलता है, जितने ब्राह्मण सन्तुष्ट हैं उतने ही भगत भी आपकी पूजा सन्तुष्टता से करेंगे, काम चलाऊ नहीं, दिल से करेंगे। तो यहाँ ब्राह्मण जीवन में जितने

ब्राह्मणों का आपके प्रति स्नेह, सम्मान अर्थात् रिगार्ड होगा, दिल से सन्तुष्ट होंगे, उतना ही पूज्य बनेंगे। पूज्य के लिए स्नेह और सम्मान होता है।

1.3.99 .. ..ब्राह्मण जीवन का जो आन्तरिक वर्सा सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप, मन की सन्तुष्टता है, उसका अनुभव करने के लिए मन्सा की पवित्रता चाहिए। बाहर के साधनों द्वारा या सेवा द्वारा अपने आपको ख़ुश करना – यह भी अपने को धोखा देना है।

बापदादा देखते हैं कभी-कभी बच्चे अपने को इसी आधार पर अच्छा समझ, ख़ुश समझ धोखा दे देते हैं, दे भी रहे हैं। दे देते हैं और दे भी रहे हैं, यह भी एक गुह्य राज़ है। क्या होता है, बाप दाता है, दाता के बच्चे हैं, तो सेवा युक्तियुक्त नहीं भी है, मिक्स है, कुछ याद और कुछ बाहर के साधनों वा ख़ुशी के आधार पर है, दिल के आधार पर नहीं लेकिन दिमाग के आधार पर सेवा करते हैं तो सेवा का प्रत्यक्ष फल उन्हों को भी मिलता है; क्योंकि बाप दाता है और वह उसी में ही ख़ुश रहते हैं कि वाह हमको तो फल मिल गया, हमारी अच्छी सेवा है। लेकिन वह मन की सन्तुष्टता सदाकाल नहीं रहती और आत्मा योगयुक्त पावरफुल याद का अनुभव नहीं कर सकती, उससे वंचित रह जाते। बाकी कुछ भी नहीं मिलता हो, ऐसा नहीं है। कुछ-न-कुछ मिलता है लेकिन जमा नहीं होता। कमाया, खाया और खत्म। इसलिए यह भी अटेन्शन रखना। सेवा बहुत अच्छी कर रहे हैं, फल भी अच्छा मिल गया, तो खाया और खत्म। जमा क्या हुआ? अच्छी सेवा की, अच्छी रिज़ल्ट निकली, लेकिन वह सेवा का फल मिला, जमा नहीं होता। इसलिए जमा करने की विधि है – मन्सा, वाचा, कर्मणा - पवित्रता। फाउण्डेशन पवित्रता है। सेवा में भी फाउण्डेशन पवित्रता है। स्वच्छ हो, साफ़ हो। और कोई भी भाव मिक्स नहीं हो। भाव में भी पवित्रता, भावना में भी पवित्रता।

19.3.2000 .. ..कोई भी सेवा शुरू करते हो, चाहे देश में, चाहे विदेश में बापदादा यही कहते हैं कि पहले एकमत, एक बल, एक भरोसा और एकतासाथि यों में, सेवा में, वायुमण्डल में हो। जैसे नारियल तोड़कर उद्घाटन करते हो, रिबन काटकर उद्घाटन करते हो, तो पहले इन चार बातों की रिबन काटो और फिर सर्व के सन्तुष्टता, प्रसन्नता का नारियल तोड़ो। यह पानी धरनी में डालो। जो भी कार्य की धरनी है, उसमें पहले यह नारियल का पानी डालो फिर देखो सफलता कितनी होती है। नहीं तो कोई-न-कोई विघ्न ज़रूर आता है।

25.11.2000 .. ..सन्तुष्टता का सबसे सहज आधार है **''पहले आप''।** पहले आप कहते जाओ, साथी बनाते जाओ और आगे बढ़ते जाओ। पहले मैं नहीं, पहले आप।

31.12.2000 .. ..सेवा की रूह-रूहान चली। सेवा तो बहुत करते हैं, दिनरात बिजी भी रहते हैं। प्लैन भी बहुत अच्छे-अच्छे बनाते हैं और सेवा में वृद्धि भी बहुत अच्छी हो रही है। फिर भी मैजॉरिटी का जमा का खाता कम क्यों? तो रूह-रूहान में यह निकला कि सेवा तो सब कर रहे हैं, अपने को बिजी रखने का पुरुषार्थ भी अच्छा

कर रहे हैं। फिर कारण क्या है? तो यही कारण निकला सेवा का बल भी मिलता है, फल भी मिलता है। बल है स्वयं के दिल की सन्तुष्टता और फल है सर्व की सन्तुष्टता। अगर सेवा की, मेहनत और समय लगाया तो दिल की सन्तुष्टता और सर्व की सन्तुष्टता, चाहे साथी, चाहे जिन्हों की सेवा की दिल में सन्तुष्टता अनुभव करें, बहुत अच्छा, बहुत अच्छा कहके चले जायें, नहीं। दिल में सन्तुष्टता की लहर अनुभव हो। कुछ मिला, बहुत अच्छा सुना, वह अलग बात है। कुछ मिला, कुछ पाया, जिसको बापदादा ने पहले भी सुनाया – एक है दिमाग तक तीर लगना और दूसरा है दिल पर तीर लगना। अगर सेवा की और स्व की सन्तुष्टता, अपने को खुश करने की सन्तुष्टता नहीं, बहुत अच्छा हुआ, बहुत अच्छा हुआ, नहीं। दिल माने स्व की भी और सर्व की भी। और दूसरी बात है कि सेवा की और उसकी रिजल्ट अपनी मेहनत या मैंने किया... मैंने किया यह स्वीकार किया अर्थात् सेवा का फल खा लिया। जमा नहीं हुआ। बापदादा ने कराया, बापदादा के तरफ अटेन्शन दिलाया, अपने आत्मा की तरफ नहीं। यह बहन बहुत अच्छी, यह भाई बहुत अच्छा, नहीं। बापदादा इन्हों का बहुत अच्छा, यह अनुभव कराना - यह है जमा खाता बढ़ाना। इसलिए देखा गया टोटल रिज़ल्ट में मेहनत ज़्यादा, समय एनर्जी ज़्यादा और थोड़ा-थोड़ा शो ज़्यादा। इसलिए जमा का खाता कम हो जाता है। जमा के खाते की चाबी बहुत सहज है, वह डायमण्ड चाबी है, गोल्डन चाबी लगाते हो लेकिन जमा की डायमण्ड चाबी है **''निमित्त भाव और निर्मान भाव''।** अगर हर एक आत्मा के प्रति, चाहे साथी, चाहे सेवा जिस आत्मा की करते हो, दोनों में सेवा के समय, आगे पीछे नहीं सेवा करने के समय **निमित्त भाव, निर्मान भाव, नि:स्वार्थ शुभ भावना और शुभ स्नेह** इमर्ज हो तो जमा का खाता बढ़ता जायेगा।

बापदादा ने जगत अम्बा माँ को दिखाया कि इस विधि से सेवा करने वाले का जमा का खाता कैसे बढ़ता जाता है। बस, सेकण्ड में अनेक घण्टों का जमा खाता जमा हो जाता है। जैसे टिक-टिक-टिक जोर से जल्दी-जल्दी करो, ऐसे मशीन चलती है। तो जगत अम्बा बड़ी खुश हो रही थी कि जमा का खाता, जमा करना तो बहुत सहज है। तो दोनों की (बापदादा और जगत अम्बा की) राय हुई कि अब नया वर्ष शुरू हो रहा है तो जमा का खाता चेक करो, सारे दिन में ग़लती नहीं की लेकिन समय, संकल्प, सेवा, सम्बन्ध-सम्पर्क में स्नेह, सन्तुष्टता द्वारा जमा कितना किया? कई बच्चे सिर्फ यह चेक कर लेते हैं - आज बुरा कुछ नहीं हुआ। कोई को दु:ख नहीं दिया। लेकिन अब यह चेक करो कि सारे दिन में श्रेष्ठ संकल्पों का खाता कितना जमा किया? श्रेष्ठ संकल्प द्वारा सेवा का खाता कितना जमा हुआ? कितनी आत्माओं को किसी भी कार्य से सुख कितनों को दिया? योग लगाया लेकिन योग की परसेन्टेज किस प्रकार की रही? आज के दिन दुआओं का खाता कितना जमा किया?

देवी का अर्थ ही है देने वाली। तो आप चैतन्य देवी देवतायें दाता बनो, दो। अगर सभी देने वाले दाता बन जायेंगे, तो लेने वाले तो खत्म हो जायेंगे ना! फिर चारों ओर सन्तुष्टता की, रूहानी गुलाब की खुशबू फैल जायेगी। सुना!

5.3.2001 .. ..अपनी जमा सर्व शक्तियों से शुभ संकल्प द्वारा कमज़ोर आत्माओं को मन में प्रसन्नता और सन्तुष्टता का सहयोग दो। किसी की कमज़ोरी को मन में न रख उसको हिम्मत-उमंग-उत्साह बढ़ाओ।

18.3.2001 .. ..जैसे मोहजीत परिवार की कहानी सुनाते हैं कि चपरासी सहित, सर्वेन्ट सहित जिससे भी पूछा वह 'नष्टोमोहा' की झलक वाला दिखाई दिया। ऐसे सेवाकेन्द्र का हर एक छोटा-बड़ा चाहे सफाई करने वाला हो, चाहे भोजन बनाने वाला हो, चाहे किसी भी ड्युटी वाला हो लेकिन उसका चेहरा, उसके मन की स्थिति ''सन्तुष्टता और प्रसन्नता'' सम्पन्न हो। हर एक के चलन और चेहरे से सन्तुष्टता और प्रसन्नता ही दिखाई दे।

18.1.2002 .. ..जिन्होंने सेवा का बड़े से बड़ा पुण्य जमा किया है उनको सेवा के पुण्य की मुबारक हो। यह पुण्य कम नहीं है। यह भी एक जीवन में सहज जमा का खाता बढ़ जाता है क्योंकि ब्राह्मणों की प्रसन्नता, सन्तुष्टता पुण्य का खाता बढ़ाती है।

31.12.2003 .. ..बापदादा कभी-कभी बच्चों के जमा का खाता देखते हैं। तो कहाँ-कहाँ मेहनत ज्यादा है, लेकिन जमा का फल कम है। कारण? दोनों तरफ की सन्तुष्टता की कमी। अगर सन्तुष्टता का अनुभव नहीं किया, चाहे स्वयं, चाहे दूसरे तो जमा का खाता कम होता है।बापदादा ने जमा का खाता बहुत सहज बढ़ाने की गोल्डन चाबी बच्चों को दी है। जानते हो वह चाबी क्या है? मिली तो है ना! शहज जमा का खाता भरपूर करने की गोल्डन चाबी है - कोई भी मन्सा-वाचा-कर्म, किसी में भी सेवा करने के समय एक तो अपने अन्दर निमित्त भाव की स्मृति। निमित्त भाव, निर्माण भाव, शुभ भाव, आत्मिक स्नेह का भाव, अगर इस भाव की स्थिति में स्थित होकर सेवा करते हो तो सहज आपके इस भाव से आत्माओं की भावना पूर्ण हो जाती है। आज के लोग हर एक का भाव क्या है, वह नोट करते हैं। क्या निमित्त भाव से कर रहे हैं, वा अभिमान के भाव से! जहाँ निमित्त भाव है वहाँ निर्मान भाव ऑटोमेटिकली आ जाता है। तो चेक करो - क्या जमा हुआ? कितना जमा हुआ? क्योंकि इस समय संगमयुग ही जमा करने का युग है। फिर तो सारा कल्प जमा की प्रालब्ध है।

5.3.2004 .. ..चाहे भाषण नहीं करो, सेन्टर पर बैठकर मुरली नहीं सुनाओ, लेकिन एक्जैम्पुल बनना, यह सबसे बड़ी सेवा है। सबको सन्तुष्टता का अनुभव कराना, यह बहुत बड़ी सेवा है।

31.1.2014 .. ..तो आज बापदादा सेवा और स्वयं दोनों को एवररेडी करने के लिए इशारा दे रहे हैं। सन्तुष्टता का वायुमण्डल हर स्थान पर होना चाहिए। अगर असन्तुष्टता है तो किसी भी सहयोग से, क्योंकि होना है छोटा छोटा हो या बड़ा हो लेकिन उसके लिए स्वयं को पावरफुल जरूर बनना है।

9. संयम

18.9.69.....स्वयं को और सर्वशक्तिमान बाप को पूर्ण रीति जानने के लिए संयम चाहिये। जब संयम को भूलते हो तो स्वयं को भी भूलते और सर्वशक्तिमान को भी भूलते हैं। अलबेलेपन का संस्कार भी क्यों आता है? कोई न कोई संयम को भूलते हो। तो संयम जो है वो स्वयं को और सर्वशक्तिमान बाप को समीप लाता है। अगर संयम में कमी है तो स्वयं और सर्वशक्तिमान से मिलन में कमी है। तो बीच की जो बात है वह संयम है। कोई ना कोई संयम जब छोड़ते हो तो यह याद भी छूटती है। अगर संयम ठीक है तो स्वयं की स्थिति ठीक है और स्वयं की स्थिति ठीक है तो सब बातें ठीक हैं। तो यह देह की जो आकर्षण है वो बार-बार अपनी तरफ आकर्षित करती है। अगर बीच में यह संयम (नियम) रख दो तो यह देह की आकर्षण आकर्षित नहीं करेगी। इसके लिये तीन बातें ध्यान में रखो। एक स्वयं की याद। एक संयम और समय। यह तीन बातें याद रखेंगे तो क्या बन जायेंगे? त्रिनेत्री त्रिकालदर्शी-त्रिलोकी-नाथ।

7-3-90 .....इस विशेष तीन शक्तियों – ''मन-बुद्धि-संस्कार'' पर कंट्रोल हो तो इसको ही स्वराज्य अधिकारी कहा जाता है। तो यह सूक्ष्म शक्तियाँ ही स्थूल कर्मेन्द्रियों को संयम और नियम में चला सकती हैं।

31-12-98... बापदादा ने अब तक रिज़ल्ट में देखा है, कल तो बदल जायेगा लेकिन अब तक देखा है कि बोल में जो संयम और स्नेह होना चाहिए वह स्नेह भी कम हो जाता है और संयम भी कम हो जाता है। इसलिए ऐसा बोल बोलो जो रत्न हो। आप स्वयं जब हीरे तुल्य हो तो हर बोल भी रत्न समान हो। ऐसा मूल्यवान हो।

10. संतुलन / बैलेन्स

17.7.69.. ..अभी सभी को यह खास ध्यान रखना चाहिए। अपना बैलेन्स बढ़ाना चाहिए। कम से कम इतना तो होना चाहिए जो खुद सन्तुष्ट रहें। अपनी कमाई से खुद भी सन्तुष्ट नहीं रहेंगे तो औरों को क्या कहेंगे। एक एक को इतना जमा करना है। क्या सिर्फ अपने लिए ही जमा करना है या औरों के लिए भी करना है। औरों को दान करने के लिये जमा नहीं करना है?

31.12.70.. .. सेवा का सम्बन्ध अर्थात् त्याग और तपस्वी रूप। सच्ची सेवा के लक्षण यही त्याग और तपस्या है। ऐसे ही व्यवहार में भी डायरेक्शन प्रमाण निमित्त मात्र शरीर निर्वाह लेकिन मूल आधार आत्मा का निर्वाह, शरीर निर्वाह के पीछे आत्मा का निर्वाह भूल नहीं जाना चाहिए। व्यवहार करते शरीर निर्वाह और आत्म निर्वाह दोनों का बैलेन्स हो। नहीं तो व्यवहार माया जाल बन जायेगा। ऐसी जाल जो जितना बढ़ाते जोंगे उतना फंसते जोंगे। धन की वृद्धि करते हुए भी याद की विधि भूलनी नहीं चाहिए। याद की विधि और धन की वृद्धि दोनों साथ-साथ होना चाहिए। धन की वृद्धि के पीछे विधि को छोड़ नहीं देना है। इसको कहा जाता है लौकिक स्थूल कर्म भी कर्मयोगी की स्टेज में परिवर्तन करो। सिर्फ कर्म करने वाले नहीं लेकिन कर्मयोगी हो। कर्म अर्थात् व्यवहार योग अर्थात् परमार्थ। परमार्थ अर्थात् परमापिता की सेवा अर्थ कर रहे हैं। तो व्यवहार और परमार्थ दोनों साथ-साथ रहे। इसको कहा जाता है श्रीमत् पर चलने वाले कर्मयोगी। व्यवहार के समय परिवर्तन क्या करना है? मैं सिर्फ व्यवहारी नहीं लेकिन व्यवहारी और परमार्थी अर्थात् जो कर रहा हूँ वह ईश्वरीय सेवा अर्थ कर रहा हूँ। व्यवहारी और परमार्थी कम्बाइंड हूँ। यही परिवर्तन संकल्प सदा स्मृति में रहे तो मन और तन डबल कमाई करते रहेंगे। स्थूल धन भी आता रहेगा। और मन से अविनाशी धन भी जमा होता रहेगा। एक ही तन द्वारा एक ही समय मन और धन की डबल कमाई होती रहेगी। तो सदा यह याद रहे कि डबल कमाई करने वाला हूँ। इस ईश्वरीय सेवा में सदा निमित्त मात्र का मंत्र वा करनहार की स्मृति का संकल्प सदा याद रहे। करावनहार भूले नहीं। तो सेवा में सदा निर्माण ही निर्माण करते रहेंगे।

08.06.72.. .. अगर अपने ऊपर ब्लिस करनी है वा बाप की ब्लिस लेनी है तो इसके लिए एक ही साधन है -- सदैव दोनों बातों का बैलेन्स ठीक रहे। जैसे स्नेह और शक्ति – दोनों का बैलेन्स ठीक रहे तो अपने आपको ब्लिस वा बाप की ब्लिस मिलती रहेगी। बैलेन्स ठीक रखने नहीं आता है। जैसे वह नट होते हैं ना। उनकी विशेषता क्या होती है? बैलेन्स की। बात साधारण होती है लेकिन कमाल बैलेन्स की होती है। खेल देखा है ना नट का। यहाँ भी कमाल बैलेन्स ठीक रखने की है। बैलेन्स ठीक नहीं रखते हो। महिमा सुनते हो तो और ही नशा चढ़ जाता है, ग्लानि से घृणा आ जाती। वास्तव में ना महिमा का नशा, ना ग्लानि से घृणा आनी चाहिए। दोनों में बैलेन्स ठीक रहे; तो फिर स्वां ही साक्षी हो अपने आपको देखो तो कमाल अनुभव होगी। अपने आपसे सन्तुष्टता का अनुभव होगा, और भी आपके इस कर्म से सन्तुष्ट होंगे। तो इसी पुरुषार्थ की कमी होने के कारण बैलेन्स की कमी कारण

ब्लिसफुल लाइफ जो होनी चाहिए वह नहीं है। तो अब क्या करना पड़े? बैलेन्स ठीक रखो। कई ऐसी दो-दो बातें होती हैं – न्यारा और प्यारा, महिमा और ग्लानि। तुम्हारा प्रवृति मार्ग है ना। आत्मा और शरीर भी दो हैं। बाप और दादा भी दो हैं। दोनों के कर्त्तव्य से विश्व-परिवर्तन होता है। तो प्रवृति-मार्ग अनादि, अविनाशी है। लौकिक प्रवृति में भी अगर एक ठीक चलता है, दूसरा ढीला होता है, बैलेन्स ठीक नहीं होता है तो खिटखिट होती है, समय वेस्ट जाता है। जो श्रेष्ठ प्राप्ति होनी चाहिए वह नहीं कर पाते हैं। एक पांव से चलने वाले को क्या कहा जाता है? लंगड़ा। वह हाई जम्प दे सकेगा वा तेज दौड़ लगा सकेगा? तो इसमें भी अगर समानता नहीं है तो ऐसे पुरुषार्थी को क्या कहा जावेगा? अगर पुरुषार्थ में एक चीज की प्राप्ति अधिक होती है और दूसरे की कमी महसूस करते हैं तो समझना चाहिए कि हाई जम्प नहीं दे सकेंगे, दौड़ नहीं सकेंगे। तो जब हाई जम्प नहीं दे सकेंगे, दौड़ नहीं सकेंगे तो सम्पूर्णता के समीप कैसे ओंगे? यह कमी आ जाती है जो स्वयं भी वर्णन करते हो। स्नेह के समय शक्ति मर्ज हो जाती है, शक्ति के समय स्नेह मर्ज हो जाता है। तो बैलेन्स ठीक नहीं रहा ना। दोनों का बैलेन्स ठीक रहे, इसको कहा जाता है कमाल। एक समय एक जोर है; दूसरे समय पर दूसरा जोर है तो भी दूसरी बात। लेकिन एक ही समय पर दोनों बैलेन्स ठीक रहें, इसको कहा जाता है सम्पूर्ण। एक मर्ज हो दूसरा इमर्ज होता है तो प्रभाव एक का पड़ता है। शक्तियों के चित्रों में सदैव दो गुणों की समानता दिखाते हैं -- स्नेही भी और शक्ति-रूप भी। नैनों में सदैव स्नेह और कर्म में शक्ति- रूप। तो शक्तियों को चित्रकार भी जानते हैं कि यह शिव-शक्तियाँ दोनों गुणों की समानता रखने वाली हैं। इसलिए वह लोग भी चित्र में इसी भाव को प्रकट करते हैं। जब प्रैक्टिकल में किया है तभी तो चित्र बना है। तो ऐसी कमी को अभी सम्पन्न बनाओ, तब जो प्रभाव निकलना चाहिए वह निकल सकेगा। अभी इस बात का प्रभाव जास्ती, दूसरों का कम होने कारण थोड़ा प्रभाव होता है। एक बात का वर्णन कर देते हैं, सभी का नहीं कर सकते। बनना तो सर्व गुण सम्पन्न है ना। तो ऐसे सम्पूर्णता को समीप लाओ। जैसे धर्म और कर्म, दोनों का सहोग बताते हो। लोग दोनों को अलग करते है, आप दोनों का सहयोग बताते हो। तो कर्म करते हुए। धर्म अर्थात् धारणा भी सम्पूर्ण हो तो धर्म और कर्म दोनों का बैलेन्स ठीक होने से प्रभाव बढ़ेगा। कर्म करने समय कर्म में तो लग जाते और धारणा पूरी नहीं होती; तो इसको क्या कहा जोगा? लोगों को कहते हो – धर्म और कर्म को अलग करने के कारण आज की जीवन वा परिस्थितियाँ ऐसी हो गई हैं। तो अपने आप से पूछो कि धर्म और कर्म अर्थात् धारणायें और कर्म, दोनों की समानता रहती है वा कर्म करते फिर भूल जाते हो? जब कर्म समाप्त होता तब धारणा स्मृति में आती है। जब बहुत कर्म में बिजी रहते हो, उस समय इतनी धारणा भी रहती है वा जब कार्य हल्का होता है तब धारणा भारी होती है? जब धारणा भारी है तो कर्म हल्का हो जाता है? तराजू का दोनों तरफ एक समान चलता रहे तब तराजू का मूल्य होता है। नहीं तो तराजू का मूल्य ही नहीं। तराजू है बुद्धि। बुद्धि में दोनों बातों का बैलेन्स ठीक है तो उनको श्रेष्ठ बुद्धिवान वा दिव्य बुद्धिवान, तेज बुद्धिवान कहेंगे। नहीं तो साधारण बुद्धि। कर्म भी साधारण, धारणायें भी साधारण होती हैं। तो साधारणता में समानता नहीं लानी है लेकिन श्रेष्ठता में समानता हो। जैसे कर्म श्रेष्ठ वैसी धारणा भी श्रेष्ठ। कर्म धारणा अर्थात् धर्म को मर्ज ना कर दे, धारणा

कर्म को मर्ज न करे तो धर्म और कर्म – दोनों ही श्रेष्ठता में समान रहें – इसको कहा जाता है धर्मात्मा। धर्मात्मा कहो वा महान् आत्मा वा कर्मयोगी कहो, बात एक ही है। ऐसे धर्मात्मा बने हो? ऐसे कर्मयोगी बने हो? ऐसे ब्लिसफुल बने हो? एकान्तवासी भी और साथ-साथ रमणीकता भी इतनी ही हो। कहाँ एकान्तवासी और कहाँ रमणीकता! शब्दों में तो बहुत अन्तर है, लेकिन सम्पूर्णता में दोनों की समानता रहे। जितना ही एकान्तवासी उतना ही फिर साथ-साथ रमणीकता भी होगी। एकान्त में रमणीकता गायब नहीं होनी चाहिए। दोनों समान और साथ-साथ रहें। आप जब रमणीकता में आते हो तो कहते हो अन्तर्मुखता से नीचे आ गये और अन्तर्मुखता में आते हो तो कहते हो आज रमणीकता कैसे हो सकती है? लेकिन दोनों साथ-साथ हों। अभी-अभी एकान्तवासी, अभी-अभी रमणीक। जितनी गम्भीरता उतना ही मिलनसार भी हों। ऐसे भी नहीं – सिर्फ गम्भीरमूर्त हों। मिलनसार अर्थात् सर्व के संस्कार और स्वभाव से मिलने वाला। गम्भीरता का अर्थ यह नहीं कि मिलने से दूर रहें। कोई भी बात अति में अच्छी नहीं होती है। कोई बात अति में जाती है तो उसको तूफान कहा जाता है। एक गुण तूफान मिसल हो, दूसरा मर्ज हो तो अच्छा लगेगा? नहीं। तो ऐसे अपने में पावरफुल धारणा करनी है। जैसे चाहो वहां अपने को टिका सको। ऐसे नहीं कि बुद्धि रूपी पांव टिक ना सके। बैलेन्स ठीक ना होने के कारण टिक नहीं सकते। कब कहां, कब कहां गिर जाते वा हिलते-जुलते रहते हैं। यह बुद्धि की हलचल होने का कारण समानता नहीं है अर्थात् सम्पन्न नहीं हैं। कोई भी चीज अगर फुल हो तो उसके बीच में कब हलचल नहीं हो सकती। हलचल तब होती है जब कमी होती है, सम्पन्न नहीं होता है। तो यह बुद्धि में व्यर्थ संकल्पों की वा माया की हलचल तब मचती है जब फूल (Full) नहीं हो, सम्पन्न नहीं हो। दोनों में सम्पन्न वा समानता हो तो हलचल हो ही नहीं सकती। तो अपने आपको किसी भी हलचल से बचाने के लिए सम्पन्न बनते जाओ तो सम्पूर्ण हो जायेंगे।

अगर बैलेन्स ठीक नहीं होता है तो हिलने-जुलने का जो खेल करते हो, वह साक्षी हो देखो तो अपने ऊपर भी बहुत हंसी आवे। जैसे कोई अपने पूरे होश में नहीं होता है तो उनकी चलन देख हंसी आती है ना। तो अपने आपको भी देखो – जब माया थोड़ा-बहुत भी बेहोश कर देती है, अपनी श्रेष्ठ स्मृति का होश गायब कर देती है; तो उस समय चाल कैसी होती है? वह नजारा सामने आता है? उस समय अगर साक्षी हो देखो तो अपने आप पर हंसी आवेगी। बापदादा साक्षी होकर खेल देखते हैं। हरेक बच्चे का तो...ऐसा खेल दिखाना अच्छा लगता है? बापदादा क्या देखना चाहते हैं, उसको भी तुम जानते हो। जब जानते हो, मानते भी हो, फिर चलते क्यों क्यों नहीं हो? तीन कोने ठीक हों बाकी एक ठीक ना हो; तो क्या होगा? चारों ही बातें जानते हुए भी, मानते हुए भी, वर्णन भी करते हो लेकिन कुछ चलते हो, कुछ नहीं चलते हो। तो कमी हो गई ना। अभी इस कमी को भरने का प्रात्न करो। जैसे दो- दो बातें सुनाईं ना। तो ऐसे ही नॉलेजफुल और पावरफुल – इन दोनों का बैलेन्स ठीक रखो तो सम्पूर्णता के समीप आ जोंगे। नॉलेजफुल बहुत बनते हो, पावरफुल कम बनते हो; तो बैलेन्स ठीक नहीं रहता। शक्तिाों को और शक्ति को बैलेन्सड दिखाते हैं, आशीर्वाद देता हुआ दिखाते हैं। तो स्वां अपने बैलेन्स में ठीक ना होंगे, अपने ऊपर ही बैलेन्स नहीं कर सकेंगे तो अनेकों के लिए मास्टर ब्लिसफुल कैसे बन सकेंगे? अभी तो इस

चीज के सभी भिखारी हैं। ब्लिस के वरदानी वा महादानी शिव और शक्तिाों के सिवाए कोई नहीं हैं। तो जिस चीज के वरदानी वा महादानी हो वह पहले स्वां में सम्पन्न होंगी तभी तो दूसरों को दे सकेंगे ना। ऐसे मास्टर नॉलेजफुल, ब्लिसफुल और इतना ही फिर केारफुल, श्रेष्ठ अगर बैलेन्स ठीक नहीं होता है तो हिलने-जुलने का जो खेल करते हो, वह साक्षी हो देखो तो अपने ऊपर भी बहुत हंसी आवे। जैसे कोई अपने पूरे होश में नहीं होता है तो उनकी चलन देख हंसी आती है ना। तो अपने आपको भी देखो – जब माा थोड़ा-बहुत भी बेहोश कर देती है, अपनी श्रेष्ठ स्मृति का होश गााब कर देती है; तो उस समय चाल कैसी होती है? वह नजारा सामने आता है? उस समय अगर साक्षी हो देखो तो अपने आप पर हंसी आवेगी। बापदादा साक्षी होकर खेल देखते हैं। हरेक बच्चे का तो...ऐसा खेल दिखाना अच्छा लगता है? बापदादा क्या देखना चाहते हैं, उसको भी तुम जानते हो। जब जानते हो, मानते भी हो, फिर चलते क्यों नहीं हो? तीन कोने ठीक हों बाकी एक ठीक ना हो; तो क्या होगा? चारों ही बातें जानते हुए भी, मानते हुए भी, वर्णन भी करते हो लेकिन कुछ चलते हो, कुछ नहीं चलते हो। तो कमी हो गई ना। अभी इस कमी को भरने का प्रयत्न करो। जैसे दो- दो बातें सुनाईं ना। तो ऐसे ही नॉलेजफुल और पावरफुल – इन दोनों का बैलेन्स ठीक रखो तो सम्पूर्णता के समीप आ जोंगे। नॉलेजफुल बहुत बनते हो, पावरफुल कम बनते हो; तो बैलेन्स ठीक नहीं रहता। शक्तियों को और शक्ति को बैलेन्स दिखाते हैं, आशीर्वाद देता हुआ दिखाते हैं। तो स्वयं अपने बैलेन्स में ठीक ना होंगे, अपने ऊपर ही बैलेन्स नहीं कर सकेंगे तो अनेकों के लिए मास्टर ब्लिसफुल कैसे बन सकेंगे? अभी तो इस चीज के सभी भिखारी हैं। ब्लिस के वरदानी वा महादानी शिव और शक्तियों के सिवाए कोई नहीं हैं। तो जिस चीज के वरदानी वा महादानी हो वह पहले स्वयं में सम्पन्न होंगी तभी तो दूसरों को दे सकेंगे ना। ऐसे मास्टर नॉलेजफुल, ब्लिसफुल और इतना ही फिर केारफुल, श्रेष्ठ आत्माओं को नमस्ते।

11.04.73.. .. एक तरफ भाषण हो, लेकिन दूसरी तरफ फिर प्रैक्टिकल मूर्त्त भी हो। तब धर्म-युद्ध में सक्सेसफुल होंगे; इसलिए जैसे सर्विस का प्रोग्राम बनाते हो, साथ-साथ अपने प्रोग्राम में भी प्रोग्रेस करो। यह भी होना आवश्यक है। अपने पुरुषार्थ के प्रोग्रेस का, अपने-अपने पुरुषार्थ के भिन्न-भिन्न अनुभव का लेन-देन करने का भी प्रोग्राम साथ-साथ होना चाहिए। दोनों का बैलेन्स साथ-साथ हो। अच्छा।

19.04.73.. .. सर्विस की रिजल्ट वा उमंग उत्साह में रिजल्ट बहुत अच्छी है। लेकिन बैलेन्स कहाँ है? अगर बैलेन्स ठीक रखो तो बहुत शीघ्र ही मास्टर सक्सेसफुल हो कर अपनी प्रजा और भक्तों को ब्लिस देकर इस दु:ख की दुनिया से पार कर सकेंगे। अभी भक्तों की पुकार स्पष्ट और समीप नहीं सुनाई देती है क्योंकि आपको स्वयं ही अपनी स्टेज स्पष्ट नहीं हैं।

21.04.73.. .. जितना साज़-युक्त उतना राज-युक्त बनो। राज-युक्त जो होता है उनके हर कदम में राज़ भरा हुआ होता है। ऐसे राज़-युक्त वा साज़-युक्त दोनों का बैलेन्स ठीक रखना है।

8.5.73 .. ..एक तरफ अति नशा, दूसरी तरफ अति नम्रता। जैसे सुनाया कि ऊँच-ते ऊँच बाप भी बच्चों के आगे गुलाम बन कर आते हैं तो नम्रता हुई ना? जितना ऊँच उतनी ही नम्रता–ऐसा बैलेन्स रहता है? अथवा जिस समय नशे में रहते हो, तो कुछ सुझता ही नहीं? क्योंकि जब अपने इस स्वमान के नशे में रहते हैं कि हम विश्व के रचयिता के भी मालिक हैं तो ऐसे नशे में रहने वाले का कर्त्तव्य क्या होगा? विश्व का कल्याण नम्रता के बिना हो नहीं सकता। बाप को भी अपना तब बनाया जब बाप भी नम्रता से बच्चों का सेवाधारी बना। ऐसे ही फॉलो फादर।

17.05.73.. .. एक है सैल्फ-सर्विस (Self-service) दूसरी विश्व-कल्याण के प्रति सर्विस। क्या दोनों का बैलेन्स (Balance) ठीक रहता है? अभी इस प्रमाण अपने श्रेष्ठ संकल्प को प्रैक्टिकल में लाओ। सिर्फ सोचो नहीं। जैसे लोगों को भी कहते हो ना कि सोचते-सोचते समय न बीत जाए। इसी प्रकार अपनी उन्नति के प्लान सोचने के साथ-साथ प्रैक्टिकल में दृढ़-संकल्प से करो। अगर रोज एक विशेषता को सामने रखते हुए अपने प्लान को प्रैक्टिकल में लाओ तो थोड़े ही दिनों में अपने में महान् अन्तर महसूस होगा। इस विशेष वरदान भूमि में अपनी उन्नति के प्रति भी कुछ प्लान बनाते हो वा सिर्फ सर्विस करके, मीटिंग कर के चले जाते हो। अपनी उन्नति के लिए रात का समय तो सभी को है। जब विशेष सर्विस प्लान प्रैक्टिकल में लाते हो तो क्या उन दिनों में निद्राजीत नहीं बनते हो? अपनी उन्नति के प्रति अगर निद्रा का भी त्याग किया तो क्या समय नहीं मिल सकता है? यहाँ तो और कार्य ही क्या है? जैसे और प्लान्स बनाते हो वैसे अपनी उन्नति के प्रति भी कोई विशेष प्लान प्रैक्टिकल में लाना चाहिए। यहाँ जो भी उन्नति का साधन प्रैक्टिकल में लायेंगे उसमें सभी तरफ से सहयोग की लिफ्ट मिलेगी। जो लक्ष्य रखते हो इस प्रमाण प्रैक्टिकल में लक्षण नहीं हो पाते, जब कि कारण को भी और निवारण को भी समझते हो?

नॉलेजफुल तो हो गए हो बाकी कमी क्या है जो कि प्रैक्टिकल में नहीं हो पाता? पॉवरफुल न होने के कारण नॉलेज को प्रैक्टिकल में नहीं कर पाते हो। पॉवरफुल बनने के लिए क्या करना पड़े?–प्रैक्टिकल प्लान बनाओ। अगर अभी तक आप लोग ही तैयार नहीं होंगे तो आप लोगों की वंशावली कब तैयार होगी? प्रजा कब तैयार होगी? इस बारी प्रैक्टिकल में कुछ करके दिखाना। पुरुषार्थ में हरएक के बहुत अच्छे अनुभव होते हैं। जिस अनुभव के लेन-देन से एक-दूसरे की उन्नति के साधन सुनते अपने में भी बल भर जाता है। ऐसा क्लास कभी करते हो? अच्छा।

21.07.73.. .. जैसे तराजू की सही परख तब होती है जब काँटा एकाग्र हो जाता है, हलचल बन्द हो जाती है और दोनों तरफ समान हो जाती है। ऐसे ही जिसका बुद्धि-योग रूपी काँटा एकाग्र है, जिसकी बुद्धि में कोई हलचल नहीं और निर्विकल्प स्टेज व स्थिति है और जिसके बोल और कर्म में, लव और लॉ में, और स्नेह और शक्ति में अर्थात् इन दोनों का बैलेन्स है, तो ऐसा जस्टिस यथार्थ जज़मेन्ट दे सकता है। ऐसी आत्मा सहज ही किसी को परख सकती है। क्या ऐसी परखने की शक्ति व जज़मेन्ट करने की शक्ति अपने में अनुभव करते हो?

हरेक की प्राप्ति की इच्छा को परखने वाला ही सम्पूर्ण और यथार्थ जज़मेन्ट कर सकता है। ऐसी सर्व की इच्छाओं को जानने वाले की विशेष क्वॉलिफिकेशन्स (Qualifications) कौन-सी होगी कि जिससे बुद्धि रूपी काँटा एकाग्र हो? लव और लॉ का बैलेन्स हो, उसके लिये मुख्य विशेष धारणा क्या होगी? (सभी ने बताया) बातें तो बहुत अच्छी-अच्छी सुनाई। इन सभी का सार हुआ कि स्वयं जो 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्थिति में स्थित होगा, वही किसी की भी इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है। अगर स्वयं में ही कोई इच्छा रही होगी तो वह दूसरे की इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर सकते। 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्टेज तब रह सकती है जब स्वयं युक्ति-युक्त, सम्पन्न, नॉलेज़फुल (Knowledgeful) और सदा सक्सेसफुल (Successful) अर्थात् सफ़लता-मूर्त्त होंगे। जो स्वयं सफ़लता-मूर्त्त नहीं होगा तो वह अनेक आत्माओं में संकल्प को भी सफ़ल नहीं कर सकता। इसलिये जो सम्पन्न नहीं तो उसकी इच्छायें ज़रूर होंगी क्योंकि सम्पन्न होने के बाद ही 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्टेज आती है। तब कोई अप्राप्त वस्तु नहीं रह जाती तो ऐसी स्टेज को ही 'कर्मातीत' अथवा 'फरिश्तेपन' की स्टेज कहा जाता है। ऐसी स्थिति वाला ही हर आत्मा को यथार्थ परख सकता है और दूसरों को प्राप्ति करा सकता है।

23.9.73 .. ..अब लाइट और माइट दोनों का बैलेन्स होना चाहिए। सिर्फ लाइट से भी काम न होगा और सिर्फ माइट से भी काम नहीं होगा। दोनों का बैलेन्स जब ठीक होगा तब सब अन्धों की औलाद अन्धों को (शास्त्रों में भी कौरव सम्प्रदाय के लिए गाया हुआ है कि अन्धों की औलाद अन्धे हैं) अपनी लाइट और माइट के द्वारा कौन-सा वरदान देंगे और वे वरदान में क्या प्राप्त करेंगे? डिवाइन इनसाइट अर्थात् उन्हें तीसरे नेत्र का वरदान दो।

वैसे भी 'नेत्र-दान' सबसे श्रेष्ठ दान कहा जाता है। नेत्र नहीं तो जहान नहीं। सबसे बड़े-से-बड़ा जीय दान कहो या वरदान कहो या महादान कहो वास्तव में वह यही है। तो अन्धों को डिवाइन इनसाइट या तीसरे नेत्र का दान दो जिससे कि वह मुक्ति और जीवनमुक्ति के ठिकाने को देख भी सकें। अगर वे देखेंगे नहीं तो फिर पहुंचेंगे कैसे? इसलिये डबल लाइट और माइट हाउस बन, दोनों का बैलेन्स ठीक रख हर आत्मा को तीसरे नेत्र का वरदान दो।–यह है श्रेष्ठ आत्माओं का कर्त्तव्य।

24.04.74.. .. यदि स्मृति में आता है लेकिन स्वरूप में नहीं आ पाता हो तो आपको सफ़लता कैसे होगी? यदि युद्ध स्थल में समय पर शस्त्र उपयोग में न ला सको, तो क्या विजय होगी? पहले स्वयं को सम्पन्न बनाने के प्रैक्टिकल प्लैन बनाओ, तो सहज सफ़लता आपके सम्मुख आ जायेगी। अब तक रिज़ल्ट क्या देखी है? स्वयं की और अन्य आत्माओं की दोनों की सेवा साथ-साथ और सदा रही। दोनों का बैलेन्स समान रहे यह दिखाई देता है? दोनों का बैलेन्स विश्व की सर्व-आत्माओं को ब्लिस दिलाने के निमित्त बनेगी।

18.06.74.. .. नॉलेज तो बुद्धि में फुल (full) है, लेकिन जितना नॉलेजफुल, क्या उतना ही साथ-साथ पॉवरफुल (powerful) भी हो? यह बैलेन्स (balance) ठीक न होने के कारण, जानते हुए भी कर नहीं पाते हो। तो जो चैकिंग नहीं कर पाते, उन आत्माओं का, बैलेन्स में रहने वाले ब्लिसफुल (blissful) का टाइटल कट हो जाता है, वह न् स्वयं को ब्लिस दे सकते हैं, न बाप से ब्लिस ले सकते हैं और न अन्य आत्माओं को ही दे सकते है। क्योंकि चैक करने के निजी संस्कार नहीं बनते, तो चैकिंग नहीं होती और चेन्ज (change) भी नहीं होते। जो चैकर नहीं बन सकते, वह मेकर (maker) भी नहीं बन सकते, वह न स्वयं के, न अन्य आत्माओं के और न विश्व के नई दुनिया बनाने वाले और नया जीवन बनाने वाले इस महिमा के अधिकारी नहीं बन सकते। इसलिए अब चैकर बनो।

16.01.75.. .. इस वर्ष में अपनी लास्ट स्टेज, सर्व कर्म-बन्धनों से मुक्त, कर्मातीत अवस्था, न्यारे और प्यारेपन का बैलेन्स सदा ठीक रहे। ऐसी निराकारी स्टेज संगठन रूप में बनाओ। तब विनाश के नजारे और साथ-साथ नई दुनिया के नजारे स्पष्ट दिखाई देंगे। सबको इस वर्ष यह पुरुषार्थ करना है। इस लास्ट पुरुषार्थ से ही स्वयं की और विनाश की गति फास्ट होगी।

04.02.75.. .. विजयी का अर्थ ही है – सर्वशस्त्रधारी। चैकिंग के साथ चेन्ज क्यों नहीं कर पाते हो? चेन्ज तब होंगे जब सर्वशक्तियाँ स्वयं में समायी होंगी, अर्थात् नॉलेजफुल के साथ-साथ पॉवरफुल दोनों का बैलेन्स चाहिए। अगर नॉलेजफुल 75ः और पॉवरफुल में तीन-चार मार्क्स भी कम हैं, तो भी बैलेन्स बराबर-बराबर चाहिए। नॉलेजफुल का रिजल्ट है – प्लैनिंग, पॉवरफुल की रिजल्ट है – प्रैक्टिकल। नॉलेजफुल का रिजल्ट है – संकल्प और पॉवरफुल का रिजल्ट है – स्वरूप में आना। दोनों की समीपता और समानता ही दोनों का समान रूप बनना अर्थात् सम्पूर्ण बनना। योग में और सेवा में जितना समय स्वयं को बिजी रखोगे तो ऑटोमेटिकली कर्जदार को आने की हिम्मत व फुर्सत नहीं मिलेगी। अच्छा!

09.02.75.. .. यह वरदान सदा स्मृति में रखना कि मैं बाप-समान शक्तियों का स्वरूप दिखाने वाला हूँ – अर्थात् शक्ति स्वरूप हूँ। सम्बन्ध रहने से यहाँ तक पहुँच सकते हो। लेकिन अब बाप का स्नेह, बाप के कार्य से स्नेह और बाप द्वारा मिली हुई नॉलेज से स्नेह – इन तीनों का बैलेन्स रखो। अभी बैलेन्स में बाप का स्नेह ज्यादा है, बाकी दो तरफ हल्का है। नॉलेज से शक्ति आयेगी। एक-एक दर्शन (Version) पदमपति बनाने वाला है। इतना महत्व रखते हुए उन वर्शन्स को धारण करो, तो महत्व से स्नेह होता है। जब तक महत्व को नहीं जानते तब तक स्नेह नहीं होता। महत्व को जानेंगे तो ही स्नेह ऑटोमेटिकली रहेगा।

13.09.75.. .. फाइनल (अन्तिम) पेपर की रूप-रेखा तो इससे कई गुना भयानक रूप की होगी। फिर क्या करेंगे। कइयों का संकल्प चलता है – कौनसा? कई स्नेह और हुज्जत में कहते हैं कि इस दृश्य के पहले ही

हमको बुलाना, हम भी वतन से देखेंगे। लेकिन शक्ति स्वरूप का प्रैक्टिकल पार्ट व शक्ति अवतार की प्रत्यक्षता का पार्ट, स्वयं द्वारा सर्वशक्तिवान् बाप को प्रत्यक्ष करने का पार्ट ऐसी ही परिस्थिति में होना है। इसलिये ऐसे नजायें को, अकाले मृत्यु के नगाड़ों को देखने और सुनने के लिये परिवर्तन की शक्ति को बढ़ाओ। एक सेकेण्ड में परिवर्तन करो, क्योंकि खेल ही एक सेकेण्ड के आधार पर है। ऐसे समय पर एक तरफ नथिंग न्यू का पाठ भी याद रहना चाहिए – जिससे मिरुआं मौत मलूकाँ शिकार की स्थिति होगी तो साक्षीपन की स्थिति अर्थात् देखने में मजा भी आयेगा और साथ-साथ विश्व-कल्याणकारी की स्थिति जिसमें तरस भी होगा। दोनों का बैलेन्स (सन्तुलन) चाहिए। साक्षीपन की स्टेज भी और विश्व-कल्याणकारी स्टेज भी। समझा?

07.10.75.. .. जितना राज्य का नशा उतना ही बेहद का वैराग अर्थात् ऋषि रूप सदा स्मृति में रहता है? दोनों का बैलेन्स (Balance) है। वा एक स्वरूप याद रहता है, दूसरा भूल जाता है? इस पुरानी देह और देह की दुनिया से बेहद के वैरागी बन गये हो? वा अभी भी यह पुरानी देह और दुनिया अपनी तरफ आकर्षित करती है? यह कब्रिस्तान अनुभव होता है? सभी मूर्च्छित हुई आत्मायें नजर आती हैं या सिर्फ कहने मात्र हैं? ये सब मरे पड़े हैं अर्थात् कब्रिस्तान है, जब तक वह अनुभव न होगा तो बेहद के वैरागी नहीं बन सकेंगे।

जितना राज्य का नशा उतना ही बेहद का वैराग अर्थात् ऋषि रूप सदा स्मृति में रहता है? दोनों का बैलेन्स है। वा एक स्वरूप याद रहता है, दूसरा भूल जाता है? इस पुरानी देह और देह की दुनिया से बेहद के वैरागी बन गये हो? वा अभी भी यह पुरानी देह और दुनिया अपनी तरफ आकर्षित करती है? यह कब्रिस्तान अनुभव होता है? सभी मूर्च्छित हुई आत्मायें नजर आती हैं या सिर्फ कहने मात्र हैं? ये सब मरे पड़े हैं अर्थात् कब्रिस्तान है, जब तक वह अनुभव न होगा तो बेहद के वैरागी नहीं बन सकेंगे।

11.10.75.. .. जो अपने को निमित्त बनी हुई समझती हैं, उन्हों में मुख्य यह विशेषता होगी – जितनी महानता उतनी नम्रता। दोनों का बैलेन्स होगा। तब ही निमित्त बने हुए कार्य में सफ़लतामूर्त बनेंगे।

15.10.75..... सर्व बातों में बैलेन्स रख सकें अर्थात् अभी-अभी लवफुल और अभी-अभी लॉ-फुल बन सकें। अभी-अभी महाकाली रूप और अभी-अभी शीतला रूप बन सकें। ऐसी सर्व विशेषताएँ अर्थात् सोलह कला सम्पन्न। इसके लिये सर्व-कर्मेन्द्रियों और सर्व-आत्मिक शक्तियों, मन, बुद्धि और संस्कार – इन सर्व पर अधिकार चाहिए। ऐसा अधिकारी ही सोलह कला सम्पन्न बन सकता है।

जैसे ब्रह्मा बाप निमित्त बने वैसे आप सब निमित्त हैं। तो आप सबको ब्रह्मा बाबा को फॉलो करना चाहिए। जिम्मेवारी और हल्कापन दोनों का बैलेन्स था, ऐसे ही फॉलो फादर। टीचर्स का स्लोगन फॉलो फादर।

18.01.76.. .. जैसे बाप ज्ञान का सागर है, तो सागर की विशेषता क्या होती है? जितनी लहरें, उतना ही शान्त। लेकिन एक ही समय दोनों विशेषतायें हैं। वैसे ही बाप के समान बनने वालों की भी यह विशेषता है कि बाहर से

स्मृति-स्वरूप और अन्दर से समर्थी-स्वरूप। जितना ही साकार स्वरूप में स्मृति-स्वरूप उतना ही अन्दर समर्थी-स्वरूप हो। दोनों का साथ-साथ बैलेन्स हो। ऐसा बैलेन्स रहा? जैसा समय व जैसा दिन वैसा स्वरूप तो होता ही है। लेकिन अलौकिकता यह है कि दोनों के बैलेन्स का स्वरूप स्पष्ट दिखाई दे। पार्ट भी बजा रहे हैं, लेकिन साथ-साथ साक्षीपन की स्टेज भी हो। 'साक्षीपन' की स्टेज होने से पार्ट भी एक्यूरेट (Accurate) बजायेंगे। लेकिन पार्ट का स्वरूप नहीं बन जायेंगे अर्थात् पार्ट के वश नहीं होंगे। विल-पॉवर होगी।

22.01.76.. .. स्वयं की और सर्व की सेवा का बैलेन्स हो, उसको कहेंगे महारथी।

08.02.76.. .. जो करेक्शन और कनेक्शन करना जानते हैं, वह सदा रूहानी नशे में होंगे। उनका न्यारापन और प्यारापन का बैलेन्स होगा। देखो, सिर्फ बैलेन्स का खेल दिखाने के लिये कितनी कमाई का साधन बना है, वह है सर्कस। बैलेन्स को कमाल के रूप में दिखाते हैं। तो यहाँ भी अगर बैलेन्स होगा तो कमाल भी होगा और कमाई भी होगी। अगर ज़रा भी कम अथवा ज्यादा हो जाता है तो न कमाल होता है, न कमाई। जैसे कोई भी खाने की चीज़ बनाते हैं, अगर उसमें सब चीजों का बैलेन्स न हो तो कितनी भी अच्छी चीज़ हो पर उसमें टेस्ट नहीं आयेगा। तो अपने जीवन को भी श्रेष्ठ और सफ़ल बनाने के लिये बैलेन्स रखो अर्थात् समानता रखो।

जो करेक्शन और कनेक्शन करना जानते हैं, वह सदा रूहानी नशे में होंगे। उनका न्यारापन और प्यारापन का बैलेन्स (Balance) होगा। देखो, सिर्फ बैलेन्स का खेल दिखाने के लिये कितनी कमाई का साधन बना है, वह है सर्कस। बैलेन्स को कमाल के रूप में दिखाते हैं। तो यहाँ भी अगर बैलेन्स होगा तो कमाल भी होगा और कमाई भी होगी। अगर ज़रा भी कम अथवा ज्यादा हो जाता है तो न कमाल होता है, न कमाई। जैसे कोई भी खाने की चीज़ बनाते हैं, अगर उसमें सब चीजों का बैलेन्स न हो तो कितनी भी अच्छी चीज़ हो पर उसमें टेस्ट नहीं आयेगा। तो अपने जीवन को भी श्रेष्ठ और सफ़ल बनाने के लिये बैलेन्स रखो अर्थात् समानता रखो।

दूसरी बात – जैसी समस्या हो, जैसा समय हो, तो वैसे अपने शक्तिशाली रूप को बना सको। अगर परिस्थिति सामना करने की है, तो सामना करने की शक्ति का स्वरूप हो जाओ। अगर परिस्थिति सहन करने की है, तो सहन शक्ति का स्वरूप हो जाओ। ऐसा अभ्यास हो। टीचर्स माना बैलेन्स। जैसा समय, वैसा स्वरूप धारण करने की शक्ति हो। स्नेह की जगह अगर शक्ति को धारण करते हो और शक्ति की जगह अगर स्नेह को धारण किया तो इसको क्या कहेंगे? अर्थात् जैसा समय, वैसा स्वरूप धारण करने की शक्ति नहीं है। तो सर्विस की रिजल्ट भी नहीं निकलती और सफ़ल भी नहीं होते हैं।

दूसरी बात – जैसी समस्या हो, जैसा समय हो, तो वैसे अपने शक्तिशाली रूप को बना सको। अगर परिस्थिति सामना करने की है, तो सामना करने की शक्ति का स्वरूप हो जाओ। अगर परिस्थिति सहन करने की है, तो सहन शक्ति का स्वरूप हो जाओ। ऐसा अभ्यास हो। टीचर्स माना बैलेन्स। जैसा समय, वैसा स्वरूप धारण करने

की शक्ति हो। स्नेह की जगह अगर शक्ति को धारण करते हो और शक्ति की जगह अगर स्नेह को धारण किया तो इसको क्या कहेंगे? अर्थात् जैसा समय, वैसा स्वरूप धारण करने की शक्ति नहीं है। तो सर्विस की रिजल्ट भी नहीं निकलती और सफ़ल भी नहीं होते हैं।

सदैव यह स्लोगन याद रखो – शिक्षक अर्थात् शिक्षा-स्वरूप और बैलेन्स रखने वाला। अब क्वॉलिटी की टीचर बनना है। क्वॉन्टिटी पर नज़र न हो। क्वॉलिटी ही सबके कल्याण के निमित्त बन सकती है। तो अब टीचर की क्वॉन्टिटी नहीं बढ़ानी है लेकिन क्वॉलिटी बढ़ानी है।

07.01.77.. ..कहा जाता है – साइलेन्स इज़ गोल्ड ,यही गोल्डन ऐजड स्टेज कही जाती है। इस स्टेज पर स्थित रहने से 'कम खर्च बाला नशीन' बनेंगे। समय रूपी खज़ाना, एनर्जी का खज़ाना और स्थूल खज़ाना में 'कम खर्च बाला नशीन' हो जायेंगे। इसके लिए एक शब्द याद रखो। वह कौन-सा है? 'बैलेन्स'। हर कर्म में, हर संकल्प और बोल, सम्बन्ध वा सम्पर्क में बैलेन्स हो। तो बोल, कर्म, संकल्प, सम्बन्ध वा सम्पर्क साधारण के बजाए अलौकिक दिखाई देगा अर्थात् चमत्कारी दिखाई देगा। हर एक के मुख से, मन से यही आवाज़ निकलेगा कि यह तो चमत्कार है।

आवाज़ द्वारा सर्विस, स्थूल साधनों द्वारा सर्विस और आवाज़ से परे 'सूक्ष्म साधन संकल्प' की श्रेष्ठता, संकल्प शक्ति द्वारा सर्विस का बैलेन्स प्रत्यक्ष रूप में दिखाओ तब विनाश का नगाड़ा बजेगा। समझा?

प्लान्स योजनाएं) बहुत बना रहे हो, बाप-दादा भी प्लान बता रहे हैं। बैलेन्स ठीक न होने के कारण मेहनत ज्यादा करनी पड़ती है।

06.02.77.. .. राज्य-पद के संस्कार अर्थात् श्रेष्ठ पद के संस्कार क्या दिखाई देंगे? 'अधिकारी और सत्कारी, निराकारी और निरहंकारी।' ये विशेष धारणायें राज्य-पद का विशेष आसन है। यह आसन ही सिंहासन की प्राप्ति कराता है। चारों ही बातों का बैलेन्स हो। ऐसा आसन मजबूत है या हिलता रहता है?

05.05.77.. .. स्वयं और सेवा – दोनों का बैलेन्स (Balance;सन्तुलन) रखो। स्वयं को भी नहीं भूलो और विश्व-सेवा को भी नहीं भूलो।

स्वयं और दूसरों की सेवा का बैलेन्स हो तो मेहनत कम और सफ़लता ज्यादा होगी।

25.06.77.. .. जैसे देवियों के चित्र में दो विशेषताएं दिखाते हैं। आंखों में मात्र भावना और हाथों से शस्त्रधारी अर्थात् असुर का संघार करने वाली। मात्र भावना अर्थात् रहम की भावना और संघार की भावना भी। संघार करना अर्थात् उन्होंके आसुरी संस्कारों के खत्म करने का प्लान भी हो और रहम भी हो। लॉफुल (Lawful) और लवफुल (Loveful) का बैलेन्स हो। दोनों साथ-साथ हों।

14.11.78.. .. इस वर्ष में विशेष स्वयं और सेवा का बैलेन्स (Balance) चाहिए। सेवा के साथ स्वयं की पर्सनेलिटी (Personality) और प्रभाव या धारणामूर्त का प्रभाव सोने पर सुहागे का काम करेगा। कोई भी देखे तो अनुभव करे ज्ञानमूर्त और गुणमूर्त। दोनों की समानता दिखाई दे। अभी तक आवाज़ आती है कि ज्ञान ऊँचा है लेकिन चलन ऐसी नहीं। तो दोनों के बैलेन्स का अटेन्शन रखने से प्रजा व वारिस दिखाई देंगे।

10.12.78.. .. ऐसा अभ्यास आप सबका हो – कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म होता रहे लेकिन मन्सा शक्ति द्वारा वायुमण्डल शक्तिशाली, स्नेह सम्पन्न, सर्व के सहयोग के वायब्रे- शन का फैला हुआ हो - जिस भी स्थान पर जाएं तो यह फ़रिश्ता रूप दिखाई दे। कर्म कर रहे हैं लेकिन एक ही समय पर कर्म ओर मन्सा दोनों सेवा का बैलेन्स हो। जैसे शुरू-शुरू में यह अभ्यास कराया था कर्म भल बहुत साधारण हो लेकिन स्थिति ऐसी महान हो जो साधारण काम होते हुए भी साक्षात्कार मूर्त दिखाई दें - कोई भी स्थूल कार्य धोबीघाट या सफाई आदि का कर रहे हैं, भण्ड़ारे का कार्य कर रहे हैं लेकिन स्थिति ऐसी महान हो - ऐसा भी समय प्रैक्टिकल में आवेगा जो देखने वाले यही वर्णन करेंगे कि इतनी महान आत्मायें फ़रिश्ता रूप और कार्य क्या कर रही हैं। कार्य साधारण और स्थिति अति श्रेष्ठ।

16.01.79... सेवा वृद्धि को पा रही है, सेवाधारी आत्मायें स्वयं के पुरुषार्थ में क्या वृद्धि पा रही हैं, दोनों का बैलेन्स जब समान होगा तब समाप्ति होगी।

18.1.79.. .. बैलेन्स रखने वाले बच्चे बाप द्वारा ब्लिसफुल के वरदान को प्राप्त करते हैं।

25.01.79.. .. सर्विस में कोई न कोई प्रकार का विघ्न वा टैन्शन आने का कारण है – स्वयं और सेवा का बैलेन्स नहीं, स्वयं का अटैन्शन कम हो जाने के कारण सर्विस में भी कोई न कोई प्रकार का विघ्न वा टैन्शन पैदा हो जाता है। सर्विस के प्लैन के साथ पहले अपना प्लैन बनाओ। मर्यादाओं के लकीर के अन्दर रहते हुए सर्विस करो। लकीर से बाहर निकल सर्विस करेंगे तो सफलता नहीं मिल सकती।

05.02.79 ..... आपका बोल और स्वरूप दोनों साथसाथ हों – स्पष्ट भी हों, स्नेह भी हो, नम्रता भी, मधुरता भी और महानता भी हो, सत्यता भी हो लेकिन स्वरूप की नम्रता भी हो, इसी रूप से बाप को प्रत्यक्ष करना है। निर्भय हो लेकिन बोल मर्यादा के अन्दर हों – दोनों बातों का बैलेन्स हो – जहाँ बैलेन्स होता है वहाँ कमाल दिखाई देती है और वह शब्द कड़े नहीं, मीठे लगते हैं तो अथार्टी और नम्रता दोनों के बैलेन्स की कमाल दिखाओ। इसको कहा जाता है बाप की प्रत्यक्षता का साधन।

21.11.79.. .. जब रूप-बसन्त दोनों की सेवा का बैलेन्स हो जायेगा तब ही अन्तिम समाप्ति होगी। इसके लिए सर्व संगठित रूप का पुरुषार्थ कौन-सा है? जानते हो? उसी पुरुषार्थ का वर्णन और चित्र अब तक भक्ति में चल रहा है। कौन-सा? पुरुषार्थ का चित्र वा गायन क्या है? समाप्ति का चित्र क्या दिखाया है? स्थापना के वर्णन का

चित्र भी वही है और समाप्ति का भी चित्र वही है। ब्रह्मा ने ब्राह्मणों के साथ क्या किया? यज्ञ रचा तो स्थापना का चित्र भी यज्ञ रचा। और समाप्ति में भी यज्ञ में सर्व ब्राह्मणों के संगठित रूप में ''स्वाहा'' के दृढ़ संकल्प की आहुति पड़े तब यज्ञ समाप्त होना है अर्थात् विश्व-परिवर्तन का कार्य समाप्त होना है। तो पुरुषार्थ कौन-सा रहा? एक ही शब्द का पुरुषार्थ रहा कौन-सा? ''स्वाहा'' जब स्वाहा हो जाता है तो हाय-हाय के बजाए आहा हो जाती है। परिवर्तन हो गया ना। शब्द कहने में ही मज़ा आता है। अब अपने से पूछो सर्व बातों में स्वाहा किया है? स्वाहा करना आता है। जब संगठित रूप में पुराने संस्कार, स्वभाव व पुरानी चलन के तिल व जौं स्वाहा करेंगे तब यज्ञ की समाप्ति होगी।

जैसे आपकी दुनिया में टी.वी. पर मिक्की माऊस का खेल आता है ऐसे कभी नयन बड़े हो जाते, कभी मुख बड़ा हो जाता, कभी बहुत तीव्रगति से उतरती कला की सीढ़ी टप-टप करके उतर आते हैं, कभी माया के तूफ़ान में उड़ जाते हैं, बैलेन्स नहीं रख सकते। अभी-अभी हँसते अभी-अभी रोते हैं। ऐसे बाप-दादा भी कई खेल देखते रहते हैं। जैसे सुनने में हँसी आती है तो करते समय स्वयं पर भी हँसी आ जाए तो समाप्त हो जाए। तो सुनाया ''स्वाहा'' नहीं करते।

सेन्स अर्थात् ज्ञान की पाइन्टस अर्थात् समझ। इसेन्स अर्थात सर्व शक्ति स्वरूप, स्मृति और समर्थ स्वरूप। सिर्फ़ सेन्स होने के कारण ज्ञान को विवाद में ला देते हो। यह तो होगा ही, यह तो होना ही चाहिए। इसेन्स से शक्तियों के आधार पर ज्ञान के विस्तार को प्रैक्टिकल जीवन के सार में ले आते हो। इसीलिए विस्तार व विवाद खत्म हो जाता है। थोड़े समय में स्वाहा कर आहा मैं! और आहा मेरा बाबा! इसी में समय जाते हो। तो सेन्स और इसेन्स दोनों का बैलेन्स रखो तो हर सेकेण्ड स्वाहा होते रहेंगे। संकल्प भी सेवा प्रति ''स्वाहा'' बोल भी विश्व-कल्याण प्रति ''स्वाह'' हर कर्म भी विश्व परिवर्तन प्रति स्वाहा। तो अपनापन अर्थात् पुरानापन स्वाहा हो जायेगा। बाकी रह जायेगा – बाप और सेवा। तो समझा, क्या पुरुषार्थ करना है। अपने देह की स्मृति सहित-स्वाहा। तब एक सेकेण्ड में वायब्रेशन्स द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकेंगे। समझा?

28.11.79 .. ..प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों का बैलेन्स रखने वाले बहुत अच्छा श्रेष्ठ पार्ट बजा रहे हैं। सदा बाप के साथी और साक्षी हो बहुत अच्छा पार्ट बजाते, विश्व के आगे प्रत्यक्ष प्रमाण बने हुए हैं। सदा बाप की याद की छत्रछाया के अन्दर किसी भी प्रकार की माया के वार से व माया के अनेक आकर्षण से सदा सेफ़ रहने वाले हैं। ऐसे विश्व से न्यारे और निराले बच्चों को देख कर बाप भी बच्चों के गुण गाते हैं। कई ऐसे बच्चे देखे जो रहते प्रवृत्ति के स्थान पर हैं। लेकिन सच्चे बच्चे होने के कारण साहेब उन पर सदा राज़ी रहते हैं। न्यारे और प्यारे के राज़ को जानने के कारण सदा स्वयं भी स्वयं से राज़ी रहते हैं। प्रवृत्ति को भी राज़ी रखते हैं। साथ-साथ बाप-दादा भी सदैव उन पर राज़ी रहते हैं। ऐसे स्वयं को और सर्व को राज़ी रखने वाले राज़ युक्त बच्चों को कभी भी अपने प्रति व अन्य किसी के प्रति किसी को काज़ी बनाने की ज़रुरत नहीं रहती।

10.12.79.. ..हर कार्य में सम्पन्न। कभी-कभी टीचर्स समझती हैं कि क्लास कराना, इन्टरनल कार्य करना हमारा काम है और स्थूल सेवा, वह दूसरों का काम है, लेकिन नहीं। स्थूल कार्य भी इन्टरनल कार्य की सबजेक्ट है। यह भी पढ़ाई की सबजेक्ट है, तो इसको हल्की बात नहीं समझो। अगर कर्मणा में मार्क्स कम होंगी तो भी पास विद ऑनर नहीं बन सकेंगी। बैलेन्स होना चाहिए। इसको सेवा न समझना यह भी राँग हैं। इन्टरनल सेवा का यह भी एक भाग है। अगर प्यार से योगयुक्त होकर भोजन न बनाओ तो अन्न का मन पर प्रभाव कैसे होगा। स्थूल कार्य नहीं करेंगे तो कर्मणा की मार्क्स कैसे जमा होगी। तो टीचर्स अर्थात स्पीकर नहीं, क्लास कराने वाली, कोर्स कराने वाली नहीं, जैसा समय जैसी सबजेक्ट उसमें ऐसे ही रुचि पूर्वक सेवा में सफ़लता प्राप्त करें, इसको कहा जाता है – ऑलराउन्डर। ऐसे हो ना कि इन्टरनल वाली और हैं, एक्सटर्नल वालीं और हैं। दोनों का ही आपस में सम्बन्ध है।

10.12.79.. ..हर कार्य में सम्पन्न। कभी-कभी टीचर्स समझती हैं कि क्लास कराना, इन्टरनल कार्य करना हमारा काम है और स्थूल सेवा, वह दूसरों का काम है, लेकिन नहीं। स्थूल कार्य भी इन्टरनल कार्य की सबजेक्ट है। यह भी पढ़ाई की सबजेक्ट है, तो इसको हल्की बात नहीं समझो। अगर कर्मणा में मार्क्स कम होंगी तो भी पास विद ऑनर नहीं बन सकेंगी। बैलेन्स होना चाहिए। इसको सेवा न समझना यह भी राँग हैं। इन्टरनल सेवा का यह भी एक भाग है। अगर प्यार से योगयुक्त होकर भोजन न बनाओ तो अन्न का मन पर प्रभाव कैसे होगा। स्थूल कार्य नहीं करेंगे तो कर्मणा की मार्क्स कैसे जमा होगी। तो टीचर्स अर्थात स्पीकर नहीं, क्लास कराने वाली, कोर्स कराने वाली नहीं, जैसा समय जैसी सबजेक्ट उसमें ऐसे ही रुचि पूर्वक सेवा में सफ़लता प्राप्त करें, इसको कहा जाता है – ऑलराउन्डर। ऐसे हो ना कि इन्टरनल वाली और हैं, एक्सटर्नल वालीं और हैं। दोनों का ही आपस में सम्बन्ध है।

15.12.79.. .. टीचर्स का अर्थ ही है – बाप-समान अपने संकल्प, बोल और हर कर्म द्वारा अनेकों का परिवर्तन करने वाली। सिर्फ बोल से नहीं लेकिन संकल्प से भी सेवाधारी, कर्म से भी सेवधारी। जो तीनों ही सेवा में सफलतामूर्त होते हैं, वही पास विद आनर बन जाते हैं। तीनों में मार्क्स समान हों। तो ऐसे ही पास विद आनर होने वाली टीचर्स हो ना? पास होने वाले तो बहुत होंगे लेकिन पास विद आनर विशेष ही होंगे। तो क्या लक्ष्य रखा है? रोज़ अपनी दिनचर्या को चेक करो कि आज सारे दिन में तीनों सेवाओं का बैलेन्स रहा। बैलेन्स रखने से सर्वगुणों की अनुभूति करते रहेंगे। चलते-फिरते स्वयं को और सर्व को सर्वगुणों का अनुभव करा सकेंगे। सब कहेंगे, ये गुणदान करती हैं क्योंकि दिव्यगुणों का श्रृंगार स्पष्ट दिखाई देगा। तभी तो अन्त में देवी जी, देवी जी कहकर नमस्कार करेंगे और यही अन्त के संस्कार द्वापर से देवी की पूजा के रूप में चलेंगे। तो ऐसे हो ना? एक-दूसरे को बाप के गुणों का वा स्वयं की धारणा के गुणों का सहयोग देते हुए गुणमूर्त बनाना, यह सबसे बड़े-ते-बड़ी सेवा है। गुणों का भी दान है। जैसे ज्ञान का दान है वैसे गुणों का भी दान है।

19.12.79.. .. टीचर्स का विशेष पुरुषार्थी किस बात का होना चाहिए? सर्विसएबुल बच्चों का महीन पुरूषार्थ क्या है? महीन पुरुषार्थ है – संकल्प की भी चैकिंग। संकल्प में याद और सेवा का बैलेन्स रहा! हर संकल्प पावरफुल रहा। सर्विसएबुल बच्चों के संकल्प कभी भी व्यर्थ नहीं होने चाहिए क्योंकि आप विश्व कल्याणकारी हो, विश्व की स्टेज पर एक्ट करने वाले हो।

26.12.79.. .. विश्व-सेवा और स्व की सेवा दोनों का बैलेन्स रखने से सफलता होगी। अगर स्व-सेवा को छोड़ विश्व-सेवा में लग जाते, या विश्व-सेवा भूल स्व-सेवा ही करते तो सफलता मिल नहीं सकती। दोनों सेवायें साथ-साथ चाहिए। मन्सा और वाचा – दोनों सेवा इकट्ठी होंगी तो मेहनत से बच जायेंगे। जब भी कोई सेवार्थ जाते हो तो पहले चेक करो कि स्व-स्थिति में स्थित होकर जा रहे हैं। हलचल में तो नहीं जा रहे हैं। अगर स्वयं हलचल में होंगे तो सुनने वाले भी एकाग्र नहीं होते, अनुभव नही करते।

02.01.80.. .. आप सब विशेष कौन-सी ज़िम्मेवारी लेकर राजधानी तैयार कर रहे हो? राजधानी को सजाने वाले सेवा और याद के बैलेन्स में रहो। हर संकल्प में भी सेवा हो। जब हर संकल्प में सेवा होगी तो व्यर्थ से छूट जायेंगे। तो चेक करना चाहिए जो संकल्प उठा, जो सेकेण्ड बीता उसमें सेवा और याद का बैलेन्स रहा? तो रिज़ल्ट क्या होगी? हर कदम में चढ़ती कला। हर कदम में पद्म जमा होते रहेंगे तब तो राज्य-अधिकारी बनेंगे। तो सेवा और याद का चार्ट रखो। सेवा एक जीवन का अंग बन जाए।

14.01.80.. .. डबल सेवाधारी हो? लौकिक और ईश्वरीय। शरीर निर्वाह अर्थ और आत्म निर्वाह अर्थ डबल सेवा मिली हुई है। और दोनों ही सेवा बाप-दादा के डायरेक्शन प्रमाण मिली हुई हैं, लेकिन दोनों ही सेवाओं में समय का, शक्तियों का समान अटेन्शन देते हो? तराज़ू के दोनों तरफ़ समान रखते हो? काँटा ठीक रखते हो कि बिना काँटे के तराज़ू रखते हो? काँटा है – 'श्रीमत'। अगर श्रीमत का काँटा ठीक है तो दोनों साइड समान होंगी। अर्थात् तराज़ू का बैलेन्स ठीक होगा। अगर काँटा ही ठीक नहीं है तो बैलेन्स रह नहीं सकता। कोई-कोई बच्चे एक तरफ़ का वज़न ज्यादा रखते हैं। कैसे? लौकिक ज़िम्मेवारियाँ निभानी ही हैं, ऐसे समझते हैं और ईश्वरीय ज़िम्मेवारीयाँ निभानी तो हैं, ऐसे कहते हैं। वह निभानी ही हैं और वह निभानी तो है। इसलिए एक तरफ का वज़न ज़्यादा हो जाता है और रिज़ल्ट क्या होती है? बोझ उनको ही नीचे ले आता है। ऊपर नहीं उठ सकते। बोझ वाला साइड सदा नीचे धरती पर लग जाता है और हल्का ऊपर उठ जाता है। और समान वाला भी ऊँचा उठता, नीचे धरती पर नहीं लगेगा। धरती पर लगने के कारण धरती के आकर्षण वश हो जाते हैं। बोझ के कारण ईश्वरीय सेवा के मैदान पर हल्के होकर सदा सफलता मूर्त नहीं बन सकते। कर्म बन्धन के, लोकलाज के बोझ नीचे ले आते हैं। जिस लोक को छोड़ चुके उस लोक की लाज रखते हैं और जिस संगमयुग वा संगम लोक के बन चुके, उस लोक की लाज रखना भूल जाते हैं। जो लोक भस्म होने वाला है उस लोक की लाज सदा स्मृति में रखते और जो लोक अविनाशी है और इसी लोक से भविष्य लोक बनना है उस लोक की स्मृति दिलाते भी कभी-कभी स्मृति स्वरूप

बनते हैं। गृहस्थ व्यवहार और ईश्वरीय व्यवहार दोनों में समानता रखना अर्थात सदा दोनों में हल्के और सफल होना।

30.01.80.. .. विदेश सेवा में सफलता मूर्त बनने के लिए बाप-दादा का इशारा–चाहे ड्रामा करो, चाहे भाषण करो, लेकिन भाषण भी ऐसे हों जैसे प्रेम स्वरूप और शान्त स्वरूप। दोनों का बैलेन्स हो। मुख्य टॉपिक यह हो, बाकी भिन्न-भिन्न रूप हो। भाषण से भी वही अनुभव कराओ और ड्रामा से भी वही अनुभव कराओ तो वैराइटी प्रकार से एक ही अनुभव कराने से छाप लगती है।

01.02.80.. .. जो सदा अचल अडोल बन करके श्रेष्ठ पार्ट बजाने वाले हैं, उनको कहा जाता है विशेष पार्टधारी। विशेष पार्टधारी हो या साधारण? विशेष पार्टधारी का विशेष गुण है – स्व सेवा और विश्व सेवा, दोनों का बैलेन्स।

04.02.80.. .. प्रवृत्ति में रहते खेल कर रहे हो, बन्धन में नहीं। स्नेह और सहज योग के साथ-साथ शक्ति की और एडीशन करो तो तीनों के बैलेन्स से हाईजम्प लगा लेंगे।

18.01.81.. .. याद और सेवा देनों का बैलेन्स स्मृति स्वरूप स्वत: ही बना देता है। बुद्धि में भी बाबा मुख से भी बाबा। हर कदम विश्व कल्याण की सेवा प्रति। संकल्प में याद और कर्म में सेवा हो यही ब्राह्मण जीवन है। याद और सेवा नहीं तो ब्राह्मण जीवन ही नहीं।

27.03.81.. .. स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति – दोनों का बैलेन्स हो तो सदा वृद्धि होती रहेगी।

01.11.81.. .. सेवा के क्षेत्र में जो भिन्न-भिन्न प्रकार के स्व प्रति वा सेवा प्रति विघ्न आते हैं, उसका भी कारण सिर्फ़ यही होता, जो स्वयं को सिर्फ़ सेवाधारी समझते हो। लेकिन ईश्वरीय सेवाधारी, सिर्फ़ सर्विस नहीं लेकिन गाडली-सर्विस – इसी स्मृति से याद और सेवा स्वत: ही कम्बाइन्ड हो जाती है। याद और सेवा का सदा बैलेन्स रहता है। जहाँ बैलेन्स है वहाँ स्वयं सदा ब्लिसफुल अर्थात् आनन्द स्वरूप और अन्य के प्रति सदा ब्लैसिंग अर्थात् कृपा-दृष्टि सहज ही रहती है। इसके ऊपर कृपा करूँ, यह सोचने की भी आवश्यकता नहीं।

29.12.81.. .. जैसे स्थूल डाक्टरी द्वारा पेशन्ट को फेथ में लाते हो ना कि यह डाक्टर बड़ा अच्छा है, यहाँ से शफा मिल जायेगी। ऐसे रूहानी डाक्टरी में भी ऐसी शक्ति- शाली स्टेज हो जो सबका फेथ हो जाए कि यहाँ पहुँचे हैं तो प्राप्ति अवश्य होगी। दोनों ही बातें निकाली हैं ना? दोनों का बैलेन्स हो।

20.1.82.. .. सदा निर्विघ्न, सदा विघ्न-विनाशक और सदा सन्तुष्ट रहना तथा सर्व को सन्तुष्ट करना। यही सर्टीफिकेट सदा लेते रहना। यही सर्टीफिकेट लेना अर्थात् तख्तनशीन होना। सन्तुष्ट रहने का और सर्व को सन्तुष्ट करने का लक्ष्य रखो। दोनों का बैलेन्स रखो।

07.3.82.. ..तीन शब्द सदा याद रखो। एक – सदा बैलेन्स रखना है। दूसरा – सदा ब्लिसफुल रहना है। तीसरा – सर्व को ब्लैसिंग देना है। सेवा और स्व की सेवा दोनों का सदा बैलेन्स। बैलेन्स द्वारा कितनी कलायें दिखाते हैं। आप भी बुद्धि के बैलेन्स द्वारा सदा 16 कला सम्पन्न स्वरूप हो जायेंगे। आपका हर कर्म कला हो जायेगा। देखना भी कला! क्योंकि आत्मा होकर सुनते हो ना। ऐसे बोलना, चलना हर कदम में हर कर्म में कला। लेकिन इन सबका आधार है – 'बुद्धि का बैलेंस'। ऐसे ही सदा ब्लिसफुल अर्थात् आनन्द स्वरूप। आनन्द के सागर के बच्चे सदा आनन्द स्वरूप।

14.03.82.. ..प्रश्न- कई निश्चयबुद्धि बच्चे 4-5 साल चलने के बाद चले गये, यह लहर क्यों? इस लहर को कैसे समाप्त करें? उत्तर- जाने का विशेष कारण – सेवा में बहुत बिजी रहते है लेकिन सेवा और स्व का बैलेन्स खो देते हैं। तो जो अच्छे-अच्छे बच्चे रुक जाते हैं उन्हों का एक तो यह कारण होता और दूसरा उन्हों का कोई विशेष संस्कार ऐसा होता है जो शुरू से ही उसमें कमज़ोर होते हैं लेकिन उसे छिपाते हैं, युद्ध करते रहते हैं अपने आप से। बापदादा को वा निमित्त बनी हुई आत्माओं को अपनी कम.स्पष्ट सुनाकर उसे खत्म नहीं करते। छिपाने के कारण वह बीमारी अन्दर ही अन्दर विकराल रूप लेती जाती है और आगे बढ़ने का अनुभव नहीं होता, फिर दिलशिकस्त हो छोड़ देते हैं। तीसरा कारण यह भी होता – कि आपस में संस्कार नहीं मिलते हैं। संस्कारों का टक्कर हो जाता है।

06.04.82.. .. अधिकारी और त्यागी दोनों का बैलेन्स हो। अधिकारी भी पूरा हो और त्यागी भी पूरा हो। दोनों ही इकट्ठे हो सकता है? इसको जाना है वा अनुभवी भी हो? बिना त्याग के राज्य पा सकते हो? स्व का अधिकार अर्थात् स्वराज्य पा सकते हो? त्याग किया तब स्वराज्य अधिकारी बने। यह तो अनुभव है ना! त्याग की परिभाषा पहले भी सुनाई है। त्याग का पहला कदम है – देहभान का त्याग। जब देह के भान का त्याग हो जाता है तो दूसरा कदम है – देह के सर्व सम्बन्ध का त्याग। जब देह का भान छूट जाता तो क्या बन जाते? आत्मा, देही वा मालिक। देह के बन्धन से मुक्त अर्थात् जीवनमुक्त राज्य अधिकारी। जब राज्य अधिकारी बन गये तो सर्व प्रकार की अधीनता समाप्त हो जाती।

8.4.82.. .. अगर प्यार से सेवा न करो तो भी ठीक नहीं और प्यार में फँसकर सेवा करो तो भी ठीक नहीं। तो प्यार से सेवा करनी है लेकिन न्यारी स्थिति में स्थित होकर करनी है तब सेवा में सफलता होगी। अगर मेहनत के हिसाब से सफलता कम मिलती है तो ज़रूर प्यारे और न्यारे बनने के बैलेन्स में कमी है। इसलिए सेवाधारी अर्थात् बाप का प्यारा और दुनिया से न्यारा। यही सबसे अच्छी स्थिति है। इसी को ही 'कमल पुष्प समान' जीवन कहा जाता है।

कुमार सेवा में तो बहुत आगे चले जाते हैं लेकिन सेवा करते अगर स्व की सेवा भूले तो फिर विघ्न आ जाता है। कुमार अर्थात् हार्ड वर्कर तो हो ही लेकिन निर्विघ्न बनना है। स्व की सेवा और विश्व की सेवा दोनों का बैलेन्स हो। सेवा में इतने बिजी न हो जाओ जो स्व की सेवा में अलबेले हो जाओ।

16.4.82.. ..सेवाधारियों को सदा बुद्धि में क्या याद रहता है? सिर्फ सेवा या याद और सेवा? जब याद और सेवा दोनों का बैलेन्स होगा तो वृद्धि स्वत: होती रहेगी। वृद्धि का सहज उपाय ही है – ''बैलेन्स''।

30.4.82.. .. सदा अपनी अन्तिम स्थिति का वाहन – न्यारे और प्यारे बनने का श्रेष्ठ साधन – सेवा के साधनों में भूल नहीं जाना। खूब सेवा करो लेकिन न्यारेपन की खूबी को नहीं छोड़ना। अभी इसी अभ्यास की आवश्यकता है। या तो बिल्कुल न्यारे हो जाते या तो बिल्कुल प्यारे हो जाते। इसलिए 'न्यारे और प्यारेपन का बैलेन्स' रखो। सेवा करो लेकिन 'मेरेपन' से न्यारे होकर करो। समझा क्या करना है?

21.2.83.. .. याद और सेवा इसी बैलन्स द्वारा बाप की ब्लैसिंग मिलती रहेगी। बैलेन्स सबसे बड़ी कला है। हर बात में बैलेन्स हो तो नम्बरवन सहज ही बन जायेंगे। बैलेन्स ही अनेक आत्माओं के आगे ब्लिसफुल जीवन का साक्षात्कार करायेगा। बैलेन्स को सदा स्मृति में रखते, सर्व प्राप्तियों का अनुभव करते स्वयं भी आगे बढ़ो और औरों को भी बढ़ाओ।

21.3.83.. .. याद और सेवा इसी बैलन्स द्वारा बाप की ब्लैसिंग मिलती रहेगी। बैलेन्स सबसे बड़ी कला है। हर बात में बैलेन्स हो तो नम्बरवन सहज ही बन जायेंगे। बैलेन्स ही अनेक आत्माओं के आगे ब्लिसफुल जीवन का साक्षात्कार करायेगा। बैलेन्स को सदा स्मृति में रखते, सर्व प्राप्तियों का अनुभव करते स्वयं भी आगे बढ़ो और औरों को भी बढ़ाओ।

21.4.83.. .. वर्तमान समय के प्रमाण स्वयं और सेवा, दोनों की रफ्तार का बैलेन्स चाहिए। हरेक को सोचना चाहिए जितनी सेवा ली है उतना रिटर्न दे रहे हैं। अभी समय है सेवा करने का। जितना आगे बढ़ेंगे, सेवा के योग्य समय होता जायेगा लेकिन उस समय परिस्थितियाँ भी अनेक होंगी। उन परिस्थितियों में सेवा करने के लिए अभी से ही सेवा का अभ्यास चाहिए। उस समय आना जाना भी मुश्किल होगा। मंसा द्वारा ही आगे बढ़ाने की सेवा करनी पड़ेगी। वह देने का समय होगा, स्वयं में भरने का नहीं। इसलिए पहले से ही अपना स्टाक चेक करो कि सर्वशक्तियों का स्टाक भर लिया है। सर्वशक्तियाँ, सर्वगुण, सर्वज्ञान के खज़ाने, याद की शक्ति से सदा भरपूर। किसी भी चीज़ की कमी नहीं चाहिए।

24.4.83.. .. स्व सेवा और सर्व की सेवा दोनों का बैलेन्स सदा रहता है। बैलेन्स नहीं होगा तो सेवा की भाग दौड़ में माया भी बुद्धि की भाग दौड़ करा देती है। बैलेन्स से कमाल होती है। बैलेन्स रखने वाले का परिणाम सेवा

में भी कमाल होगी। नहीं तो बाहरमुखता के कारण कमाल के बजाए अपने वा दूसरों के भाव स्वभाव की धमाल में आ जाते हो। तो सदा सर्व की सेवा के साथ-साथ पहले स्व सेवा आवश्यक है।

30.4.83.. .. जो राज़युक्त हैं उन बच्चों पर बाप को सदा नाज़ है। राज़युक्त, योगयुक्त, गुण युक्त...सबका बैलेन्स रखने वाले सदा बाप की ब्लैसिंग की छाया में रहने वाले। ब्लैसिंग की सदा ही वर्षा होती रहती है। जन्मते ही यह ब्लैसिंग की वर्षा शुरू हुई है और अन्त तक इसी छत्रछाया के अन्दर गोल्डन फूलों की वर्षा होती रहेगी। इसी छाया के अन्दर चले हैं, पले हैं और अन्त तक चलते रहेंगे। सदा ब्लैसिंग के गोल्डन फूलों की वर्षा। हर कदम बाप साथ है अर्थात् ब्लैसिंग साथ है। इसी छाया में सदा रहे हो।

कुमारों को सदा सेवा के शक्तिशाली प्लैन बनाने चाहिए। परन्तु याद और सेवा का सदा बैलेन्स रहे।

31.12.83.. .. सदा पुण्य आत्मा समझते हुए हर कर्म पुण्य का करते रहो। पाप का खाता खत्म। पिछला पाप का खाता भी खत्म। क्योंकि पुण्य करतेकरते पुण्य का तरफ ऊँचा हो जायेंगा तो पाप नीचे दब जायेगा। पुण्य करते रहो तो पुण्य का बैलेन्स बढ़ जायेगा और पाप नीचे हो जायेगा अर्थात् खत्म हो जायेगा। सिर्फ़ चेक करो – हर संकल्प पुण्य का संकल्प हुआ, हर बोल पुण्य के बोल हुए?

24.2.84.. .. बाप एक है और एक के ही सब हैं। यह निमित्त टीचर्स जैसी भाषा बोलेंगे वैसे और भी बोलेंगे। इसलिए बहुत युक्तियुक्त एक-एक शब्द बोलना। योगयुक्त और युक्तियुक्त दोनों ही साथ-साथ चलें। कोई योग में बहुत आगे जाने का करते लेकिन कर्म में युक्तियुक्त नहीं होते। दोनों का बैलेन्स हो। योगयुक्त की निशानी है ही – युक्तियुक्त''।

सेवा होती है लेकिन वातावरण शक्तिशाली नहीं होता है। इसके लिए अपने ऊपर विशेष अटेन्शन रखना पड़े। कर्म और योग, कर्म के साथ शक्ति- शाली स्टेज, इस बैलेन्स की थोड़ी कमी है। सिर्फ सेवा में बिजी होने के कारण स्व की स्थिति शक्तिशाली नहीं रहती। जितना समय सेवा में देते हो, जितना तन-मन-धन सेवा में लगाते हैं, उसी प्रमाण एक का लाख गुणा जो मिलना चाहिए वह नहीं मिलता है। इसका कारण है, कर्म और योग का बैलेन्स नहीं है। जैसे सेवा के प्लैन बनाते हो, पर्चे छपाते हो, टी.वी., रेडियो में करना है। जैसे वह बाहर के साधन बनाते हो वैसे पहले अपनी मंसा शक्तिशाली का साधन विशेष होना चाहिए। यह अटेन्शन कम है। फिर कह देते हो, बिजी रहे इसलिए थोड़ा-सा मिस हो गया। फिर डबल फायदा नहीं हो सकता।

3.3.84.. .. याद और सेवा ही डबल लाक है। सिर्फ़ सेवा सिंगल लाक है। सिर्फ़ याद, सेवा नहीं तो भी सिंगल लाक है। दोनों का बैलेन्स यह है – डबल लाक।

9.3.84.. .. छोटी-सी बात में घबराते जल्दी हो। घबराने के कारण छोटीसी बात को भी बड़ा बना देते हो। होती चींटी है उसको बना देते हो हाथी। इसलिए बैलेन्स नहीं रहता। बैलेन्स न होने के कारण जीवन से भारी हो जाते हो। या तो नशे में बिल्कुल ऊँचे चढ़ जाते वा छोटी-सी कंकड़ी भी नीचे बिठा देती। नालेजफुल बन सेकण्ड में उसको हटाने के बजाए कंकड़ी आ गई, रुक गये, नीचे आ गये, यह हो गया, इसको सोचने लग जाते हो। बीमार हो गया, बुखार वा दर्द आ गया। अगर यही सोचते और कहते रहें तो क्या हाल होगा! ऐसे जो छोटी-छोटी बातें आती हैं उनको मिटाओ, हटाओ और उड़ो।

26.4.84.. .. टीचर्स से:- सदा याद और सेवा का बैलेन्स रखने वाली और सदा बाप की ब्लैसिंग लेने वाली। जहाँ बैलेन्स हैं वहाँ बाप द्वारा स्वत: ही आशीर्वाद तो क्या वरदान प्राप्त होते हैं। जहाँ बैलेन्स नहीं वहाँ वरदान भी नहीं। और जहाँ वरदान नहीं होगा वहाँ मेहनत करनी पड़ेगी। वरदान प्राप्त हो रहे हैं अर्थात् सर्व प्राप्तियाँ सहज हो रही हैं। ऐसे वरदानों को प्राप्त करने वाले सेवाधारी हो ना!

7.5.84.. सब कुछ जानते हैं और सब कुछ सबको प्राप्त भी है, विधि का भी ज्ञान है, सिद्धि का भी ज्ञान है। 'कर्म और फल' दोनों का ज्ञान है। लेकिन सदा बैलेन्स में रहना नहीं आता। यह 'बैलेन्स की ईश्वरीय नीति' समय पर निभाने नहीं आती। इसलिए हर संकल्प में, हर कर्म में बापदादा तथा सर्व श्रेष्ठ आत्माओं की श्रेष्ठ आशीर्वाद, ब्लैसिंग प्राप्त नहीं होती। मेहनत करनी पड़ती है। सहज सफलता अनुभव नहीं होती। किस बात का बैलेन्स भूल जाता है? एक तो 'याद और सेवा'। याद में रह सेवा करना – 'यह है याद और सेवा का बैलेन्स'। लेकिन सेवा में रह समय प्रमाण याद करना, समय मिला याद किया, नहीं तो सेवा को ही याद समझना इसको कहा जाता है – अनबैलेन्स। सिर्फ़ सेवा ही याद है और याद में ही सेवा है। यह थोड़ा-सा विधि का अन्तर सिद्धि को बदल लेता है। फिर जब रिजल्ट पूछते कि याद की परसेन्टज कैसी रही? तो क्या कहते? सेवा में इतने बिज़ी थे, कोई भी बात याद नहीं थी। समय ही नहीं था या कहते सेवा भी बाप की ही थी, बाप तो याद ही था। लेकिन जितना सेवा में समय और लगन रहीं उतना ही याद की शक्तिशाली अनुभूति रहीं? जितना सेवा में स्वमान रहा उतना ही निर्मान भाव रहा? ये बैलेन्स रहा? बहुत बड़ी, बहुत अच्छी सेवा की यह स्वमान तो अच्छा है लेकिन जितना स्वमान उतना निर्मान भाव रहे। करावनहार बाप ने निमित्त बन सेवा कराई। यह है निमित्त, निर्मान भाव। निमित्त बने, सेवा अच्छी हुई, वृद्धि हुई, सफ़लता स्वरूप बनें, यह स्वमान तो अच्छा है लेकिन सिर्फ़ स्वमान नहीं, निर्मान भाव का भी बैलेन्स हो। यह बैलेन्स सदा ही सहज सफ़लता स्वरूप बना देता है। स्वमान भी ज़रूरी है। देह भान नहीं, स्वमान। लेकिन स्वमान और निर्माण दोनों का बैलेन्स न होने कारण स्वमान, देह अभिमान में बदल जाता है। सेवा हुई, सफ़लता हुई, यह खुशी तो होनी चाहिए। वाह बाबा! आपने निमित्त बनाया मैंने नहीं किया, यह मैं-पन स्वमान को देह अभिमान में ले आता है। याद और सेवा का बैलेन्स रखने वाले स्वमान और निर्मान का भी बैलेन्स रखते। तो समझा बैलेन्स किस बात में नीचे ऊपर होता है!

ऐसे ही ज़िम्मेवारी के ताजधारी होने के कारण हर कार्य में जिम्मेवारी भी पूरी निभानी है। चाहे लौकिक सो अलौकिक प्रवृत्ति है, चाहे ईश्वरीय सेवा की प्रवृत्ति है। दोनों प्रवृत्ति की अपनी-अपनी जिम्मेवारी निभाने में जितना न्यारा उतना प्यारा! यह बैलेन्स हो। हर ज़िम्मावारी को निभाना यह भी आवश्यक है लेकिन जितनी बड़ी ज़िम्मेवारी उतना ही डबल लाइट। ज़िम्मेवारी निभाते हुए ज़िम्मेवारी के बोझ 1 से न्यारे हो। इसको कहते हैं – बाप का प्यारा। घबरावे नहीं क्या करूँ, बहुत जिम्मेवारी है। यह करूँ, वा नहीं। क्या करूँ, यह भी करूँ वह भी करूँ, बड़ा मुश्किल है। यह महसूसता अर्थात् बोझ है! तो डबल लाइट तो नहीं हुए ना। डबल लाइट अर्थात् न्यारा। कोई भी जिम्मेवारी के कर्म के हलचल का बोझ नहीं। इसको कहा जाता है – न्यारे और प्यारे का बैलेन्स रखने वाले ।

7.5.84.. ..पुरुषार्थी जीवन में जितना पाया उसका नशा भी हो और हर कदम में उन्नति का अनुभव भी हो। इसको कहा जाता है – ''बैलेन्स''। यह बैलेन्स सदा रहे। ऐसे नहीं समझना हम तो सब जान गये। अनुभवी बन गये। बहुत अच्छी रीति चल रहे हैं। अच्छे बने हो यह तो बहुत अच्छा है लेकिन और आगे उन्नति को पाना है। ऐसे विशेष कर्म कर सर्व आत्माओं के आगे निमित्त एक्जैम्पुल बनना है। यह नहीं भूलना। समझा, किन-किन बातों में बैलेन्स रखना है? इस बैलेन्स द्वारा स्वत: ही ब्लैसिंग मिलती रहती है। तो समझा नम्बर क्यों बनते हैं? कोई किस बात के बैलेन्स में कोई किस बात के बैलेन्स में अलबेले बन जाते हैं।

हर गुण के प्रैक्टिकल स्वरूप एक्जैम्पल बनो। 'सरलता' जीवन में देखनी हो तो इस सेन्टर में जाकर इस परिवार को देखो। 'सहनशीलता' देखनी हो तो इस सेन्टर में इस परिवार में जाकर देखो। 'बैलेन्स' देखना हो तो इन विशेष आत्माओं में देखो। ऐसी कमाल करने वाले हो ना!

21.11.84.. ..सदा ज्वालास्व रूप, शक्ति-स्वरूप। स्नेही भी हैं लेकिन स्नेह अकेला नहीं। स्नेह के साथ शक्ति रूप भी हो। अगर अकेला स्नेही रूप है, शक्ति रूप नहीं है तो कभी भी धोखा मिल सकता है। इसलिए स्नेही और शक्ति रूप दोनों कम्बाइन्ड। दोनों का बैलेन्स। इसको कहा जाता है – नम्बरवन योग्य टीचर। तो सदा इस स्मृति में रहने वाले विजयी हैं ही।

31.12.84.. .. जो याद और सेवा में सदा मस्त रहते हैं वही सेफ़ रहते हैं, विजयी रहते हैं। याद और सेवा ऐसी शक्ति है जिससे सदा आगे से आगे बढ़ते रहेंगे। सिर्फ़ याद और सेवा का बैलेन्स ज़रूर रखना है। बैलेन्स ही ब्लैसिंग दिलायेगा।

9.1.85.. .. मधुबन निवासी अर्थात् सदा अपने मधुरता से सर्व को मधुर बनाने वाले और सदा अपने बेहद के वैराग वृत्ति द्वारा बेहद का वैराग दिलाने वाले। यही मधुबन निवासियों की विशेषता है। मधुरता भी अति और वैरागवृत्ति भी अति। ऐसे बैलेन्स रखने वाले सदा ही सहज और स्वत: आगे बढ़ने का अनुभव करते हैं।

6-3-85.. .. याद की शक्ति से सफ़लता सहज प्राप्त होती है। जितना याद और सेवा साथ-साथ रहती है तो याद और सेवा का बैलेन्स सदा की सफ़लता की आशीर्वाद स्वत: प्राप्त कराता है। इसलिए सदा शक्तिशाली याद स्वरूप का वातावरण बनने से शक्तिशाली आत्माओं का आह्वान होता है और सफ़लता मिलती है।

24.3.85... कर्मयोगी का पार्ट बजाते भी कर्म और योग का बैलेन्स चेक करना कि कर्म और याद अर्थात् योग दोनों ही शक्तिशाली रहे? अगर कर्म शक्ति- शाली रहा और याद कम रही तो बैलेन्स नहीं। और याद शक्तिशाली रही और कर्म शक्तिशाली नहीं तो भी बैलेन्स नहीं। तो कर्म और याद का बैलेन्स रखते रहना। सारा दिन इसी श्रेष्ठ स्थिति में रहने से अपनी कर्मातीत अवस्था के नजदीक आने का अनुभव करेंगे। सारा दिन कर्मातीत स्थिति वा अव्यक्त फ़रिश्ते स्वरूप स्थिति में चलते फिरते रहना।

30-3-85 ...आज तीन का पाठ पढ़ा रहे हैं। सदा अपने जीवन में – एक बैलेन्स रखना है। सब बात में बैलेन्स हो। याद में, सेवा में बैलेन्स। स्वमान, अभिमान को समाप्त करता। स्वमान में स्थित रहना। यह सब बातें स्मृति में रहे। ज़्यादा रमणीक भी नहीं,.ज़्यादा गम्भीर भी नहीं। बैलेन्स हो। समय पर रमणीक, समय पर गम्भीर। तो एक है 'बैलेन्स'। दूसरा सदा अमृतवेले बाप से विशेष ब्लैसिंग लेनी है! रोज़ अमृतवेले बापदादा बच्चों प्रति ब्लैसिंग की झोली खोलते हैं। उससे जितना लेने चाहो उतना ले सकते हो। 'तो बैलेन्स, ब्लैसिंग तीसरा ब्लिसफुल लाइफ'। तीनों बातें स्मृति में रहने से वह तीनों बातें जो अटेन्शन देने की हैं, वह स्वत: ही समाप्त हो जायेंगी। समझा!

30.3.85.. .. स्व स्थिति ही सेवा की उन्नति के लिए सहज सिद्धि वा सहज साधन है। स्व की उन्नति के बिना सेवा की उन्नति अविनाशी, निर्विघ्न नहीं बनेगी। इसलिए दोनों का बैलेन्स हो। स्व उन्नति को छोड़ सिर्फ सेवा की उन्नति नहीं करो। साथ-साथ करो। नहीं तो जिनके निमित्त बनते हैं वह भी कमजोर होते। उन्हों को भी बहुत मेहनत करनी पड़ती। इसलिए स्व उन्नति, सेवा की उन्नति सदा ही साथ रखते हुए उड़ते चलो। अच्छा –

सेवा के साथ-साथ स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति का बैलेन्स रख आगे बढ़ते चलो तो बापदादा और सर्व आत्माओं द्वारा जिन्हों के निमित्त बनते हो, उन्हों के दिल की दुआयें प्राप्त होती रहेंगी। तो सदा बैलेन्स द्वारा ब्लैसिंग लेते हुए आगे बढ़ते चलो। स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति दोनों साथ-साथ रहने से सदा और सहज सफ़लता स्वरूप बन जायेंगे।

2.9.85.. .. वर्तमान समय याद और सेवा के बैलेन्स के साथ 'स्नेह और सेवा' का बैलेन्स सफ़लता का साधन है।

18.11.85.. .. हद की और बेहद की सेवा का बैलेन्स है? उस सेवा से तो हिसाब चुक्तू होता है, वह हद की सेवा है। आप तो बेहद की सेवाधारी हो। जितना सेवा का उमंग-उत्साह स्वयं में होगा उतनी सफ़लता होगी।

18.1.86.. .. सेवा वर्तमान और भविष्य दोनों को ही श्रेष्ठ बनाती है। सेवा का बल कम नहीं है। याद और सेवा दोनों का बैलन्स चाहिए। तो सेवा उन्नति का अनुभव करायेगी। याद में सेवा करना नैचुरल हो। ब्राह्मण जीवन की नेचर क्या है? याद में रहना। ब्राह्मण जन्म लेना अर्थात् याद का बन्धन बांधना। जैसे वह ब्राह्मण जीवन में कोई न कोई निशानी रखते हैं- तो इस ब्राह्मण जीवन की निशानी है – 'याद'। याद में रहना नैचुरल हो। इसलिए याद अलग की, सेवा अलग की, नहीं। दोनों इकट्ठे हों। इतना टाइम कहाँ है जो याद अलग करो, सेवा अलग करो।। इसलिए याद और सेवा सदा साथ है ही। इसी में ही अनुभवी भी बनते हैं, सफलता भी प्राप्त करते हैं।

31.3.86.. .. कोई भी सेवा का प्लैन भी बनाते हो तो दोनों तीनों मिलकर, चाहे छोटी भी हो, तो भी उससे 'हाँ जी' करायेंगे तो वह भी खुश हो जायेगी। वह भी समझेगी की इसमें मेरा हाथ है, और विशेष जो सर्विसएबुल सलाह देने वाले हैं उन्हों की भी मीटिंग ज़रूर करनी चाहिए, क्योंकि उनके सहयोग के बिना आप भी क्या कर सकेंगे? स्नेह और शक्ति का बैलेन्स रखते हुए हैन्डिल करो और आगे बढ़ो। अच्छा!

20.3.87.. .. जैसे ब्रह्मा बाप को देखा वा अभी भी मुरली सुनते हो। प्रत्यक्ष प्रमाण है। तो बच्चे-बच्चे भी कहेगा लेकिन अथॉर्टी भी दिखायेगा। स्नेह से बच्चे भी कहेगा और अथॉर्टी से शिक्षा भी देगा। सत्य ज्ञान को प्रत्यक्ष भी करेंगे लेकिन बच्चे-बच्चे कहते नया ज्ञान सारा स्पष्ट कर देंगे। इसको कहते हैं स्नेह और सत्यता की अथॉर्टी का बैलेन्स (सन्तुलन) तो वर्तमान समय सेवा में इस बैलेन्स को अण्डरलाइन करो।

17.10.87.. .... .. जहाँ याद और सेवा का बैलेन्स है अर्थात् समानता है, वहाँ बाप की विशेष मदद अनुभव होती है। तो मदद ही आशीर्वाद है। क्योंकि बापदादा, और अन्य आत्माओं के माफिक आशीर्वाद नहीं देते हैं। बाप तो है ही अशरीरी, तो बापदादा की आशीर्वाद है - सहज, स्वत: मदद मिलना जिससे जो असम्भव बात हो वह सम्भव हो जाए। यही मदद अर्थात् आशीर्वाद है।

6.11.87.. .. याद और सेवा - दोनों का बैलेन्स (Balance) सदा ब्राह्मण जीवन में बापदादा और सर्व श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं द्वारा ब्लैसिंग (Blessing आशीर्वाद) का पात्र बनाता है। इस संगमयुग पर ही ब्राह्मण जीवन में परमात्म-आशीर्वादें और ब्राह्मण परिवार की आशीर्वादें प्राप्त होती हैं। इसलिए इस छोटी-सी जीवन में सर्व प्राप्तियाँ और सदाकाल की प्राप्तियाँ सहज प्राप्त होती हैं। इस संगमयुग को विशेष 'ब्लैसिंग युग' कह सकते हैं, इसलिए ही इस युग को महान युग कहते हैं।

कभी आशीर्वाद के कारण सहज स्व वा सेवा में उन्नति अनुभव करते हो और कभी मेहनत के बाद सफलता अनुभव करते हो क्योंकि निरन्तर याद और सेवा का बैलेन्स नहीं है।

6.11.87.. .. श्वांसों श्वांस याद और श्वांसों श्वांस सेवा हो - इसको कहते हैं बैलेन्स। तब ही हर समय ब्लैसिंग प्राप्त होने का अनुभव सदा करते रहेंगे और दिल से सदा स्वत: ही यह आवाज़ निकलेगा कि आशीर्वादों से पल रहे हैं, आशीर्वाद से, उड़ती कला के अनुभव से उड़ रहे हैं।

27.11.87.. .. एक तरफ़ सर्व प्राप्ति के अधिकार का नशा और दूसरे तरफ बेहद के वैराग का अलौकिक नशा। जितना ही श्रेष्ठ भाग्य उतना ही श्रेष्ठ त्याग। दोनों का बैलेन्स। इसको कहते हैं राजऋषि।

3.2.88.. .. विजयी बनने के लिए एक बैलेन्स की आवश्यकता है। याद और सेवा का बैलेन्स तो सदा सुनते रहते हैं लेकिन याद और सेवा का बैलेन्स चाहते हुए भी रहता क्यों नहीं है? समझते हुए भी कर्म में क्यों नहीं आता है? उसके लिए एक और बैलेन्स की आवश्यकता है, वही बैलेन्स ब्रह्मा बाप की दूसरी आशा है। एक आशा तो बाप प्रति हुई – समान बनने की। दूसरी आशा परिवार प्रति, वह है - हर ब्राह्मण आत्मा के प्रति सदा शुभ भावना-शुभ कामना कर्म में रहे, सिर्फ संकल्प तक वा चाहना तक नहीं। चाहते तो हैं। कई कहते हैं चाहना तो यही है कि शुभ भावना रखें लेकिन कर्म में बदल जाता है। इसका विस्तार पहले भी सुनाया है। परिवार प्रति सदा शुभ भावना-शुभ कामना क्यों नहीं रहती, इसका कारण? जैसे बाप से दिल का स्नेह, जिगर का स्नेह है और दिल के जिगर के स्नेह की निशानी है कि 'अटूट' है। बाप प्रति कोई कितना भी आपको मिस अन्डरस्टैंड (गलतफहमी) करे वा कोई भी आपको कैसी भी बातें आकर सुनाए वा कभी साकार में स्वयं बाप भी कोई बच्चों को आगे बढ़ने के लिए कोई ईशारा वा शिक्षा दे लेकिन जहाँ स्नेह होता है वहाँ शिक्षा वा कोई भी परिवर्तन का ईशारा मिस अण्डरस्टैन्डिग पैदा नहीं करेगा। सदैव यही भावना रहती वा रही है कि बाबा जो कहता है उसमें कल्याण है। कभी स्नेह की कमी नहीं हुई, और ही अपने को बाप के दिल के समीप समझते रहे कि यह अपनापन का स्नेह है। इसको कहते हैं दिल का ज़िगरी स्नेह जो भावना को परिवर्तन कर देता है। बाप के प्रति ऐसा स्नेह है ना? ऐसे, ब्राह्मण परिवार में भी दिल का स्नेह हो। जैसे बाप से स्नेह की निशानी – सदा ही बाप ने कहा और 'हाँ जी' किया, ऐसे ब्राह्मण परिवार के प्रति सदा ही ऐसा दिल का स्नेह हो, भावना परिवर्तन की विधि हो। तब बाप और परिवार में स्नेह का बैलेन्स, याद और सेवा का बैलेन्स स्वत: ही प्रैक्टिकल में दिखाएगा। तो बाप के स्नेह का पलड़ा भारी है लेकिन सर्व ब्राह्मण परिवार में स्नेह का पलड़ा बदलता रहता है। कभी भारी, कभी हल्का। किसके प्रति भारी, किसके प्रति हल्का। यह बाप और बच्चों के स्नेह का बैलेन्स रहे - यही ब्रह्मा बाप की दूसरी शुभ आशा है। समझा? इसमें बाप समान बनो।

स्नेह ऐसी श्रेष्ठता है जिसमें आपने किया या दूसरे ने किया, इसमें दोनों में समान खुशी का अनुभव हो। जैसे बापदादा स्थापना के कार्य अर्थ निमित्त बने लेकिन जब बच्चों को सेवा में साथी बनाया, अगर प्रैक्टिकल में बाप से भी बच्चे ज्यादा सेवा करते हैं, करते रहे हैं तो बापदादा सदा बच्चों को सेवा में आगे बढ़ते, स्नेह के कारण ख़ुश रहें। यह संकल्प कभी भी दिल के स्नेह में उत्पन्न नहीं हो सकता कि बच्चे क्यों सेवा में आगे जायें, निमित्त तो मैं

हूँ, मैंने ही इनको निमित्त बनाया। कभी स्वप्न-मात्र भी यह भावना उत्पन्न नहीं हुई। इसको कहा जाता है – सच्चा स्नेह, नि:स्वार्थ स्नेह, रूहानी स्नेह! सदा बच्चों को आगे निमित्त बनाने में हर्षित रहे। बच्चों ने किया या बाप ने किया, मैं-पन नहीं रहा। मेरा काम है, मेरी ड्यूटी है, मेरा अधिकार है, मेरी बुद्धि है, मेरा प्लैन है – नहीं। स्नेह यह मेरा-पन मिटा देता है। आपने किया सो मैंने किया, मैंने किया सो आपने किया - यह शुभ भावना वा शुभ कामना, इसको कहा जाता है – दिल का स्नेह। स्नेह में कभी अपना या पराया नहीं लगता। स्नेह में कभी स्नेह का बोल कैसा भी साधारण, हुज़्ज़त का बोल हो लेकिन फील नहीं होगा। फीलिंग नहीं आएगी - इसने यह क्यों कहा? स्नेही, स्नेही आत्मा के प्रति अनुमान पैदा नहीं करेगा - ऐसा होगा, यह होगा! सदा स्नेही के प्रति फेथ होने के कारण उसका हल्का बोल भी ऐसे लगेगा कि इसने अवश्य कोई मतलब से कहा है। बेमतलब, व्यर्थ नहीं लगेगा। जहाँ स्नेह होगा, वहाँ फेथ ज़रूर होगा। स्नेह नहीं तो फेथ भी नहीं होगा। तो ब्राह्मण परिवार के प्रति स्नेह वा फेथ होना – इसको कहते हैं ब्रह्मा बाप की दूसरी आशा पूर्ण करना। जैसे बाप के प्रति स्नेह के लिए बापदादा ने सर्टिफिकेट दिया, ऐसे ब्राह्मण परिवार के प्रति जो स्नेह की परिभाषा सुनाई वा उस विधि से प्रत्यक्ष कर्म में आना – यह भी सर्टिफिकेट लेना है। यह बैलेन्स चाहिए।

22.2.88.. .. दिन-प्रतिदिन सेवा का तो और ही तीव्रगति से आगे बढ़ने का समय आता जा रहा है। आप समझते हो - अच्छा, यह एक वर्ष का कार्य पूरा हो जायेगा, फ़िर रेस्ट कर लेंगे, ठीक कर लेंगे, याद को फ़िर ज़्यादा बढ़ा लेंगे। लेकिन सेवा के कार्य को दिन-प्रतिदिन नये-से-नये और बड़े-से-बड़े होने हैं। इसलिए सदा बैलेन्स रखो। अमृतवेले फ्रेश हो, फ़िर वही काम सारे दिन में समय प्रमाण करो तो बाप की ब्लैसिंग भी एकस्ट्रा मिलेगी और बुद्धि भी फ्रेश होने के कारण बहुत जल्दी और सफ़लतापूर्वक कार्य कर सकेगी। समझा?

20.2.88.. .. दिन-प्रतिदिन सेवा का तो और ही तीव्रगति से आगे बढ़ने का समय आता जा रहा है। आप समझते हो - अच्छा, यह एक वर्ष का कार्य पूरा हो जायेगा, फ़िर रेस्ट कर लेंगे, ठीक कर लेंगे, याद को फ़िर ज़्यादा बढ़ा लेंगे। लेकिन सेवा के कार्य को दिन-प्रतिदिन नये-से-नये और बड़े-से-बड़े होने हैं। इसलिए सदा बैलेन्स रखो। अमृतवेले फ्रेश हो, फ़िर वही काम सारे दिन में समय प्रमाण करो तो बाप की ब्लैसिंग भी एकस्ट्रा मिलेगी और बुद्धि भी फ्रेश होने के कारण बहुत जल्दी और सफ़लतापूर्वक कार्य कर सकेगी। समझा?

बापदादा देख रहे हैं - बच्चों में उमंग बहुत है, इसलिए शरीर का भी नहीं सोचते। उमंग-उत्साह से आगे बढ़ रहे हैं। आगे बढ़ना बापदादा को अच्छा लगता है, फ़िर भी बैलेन्स अवश्य चाहिए। भल करते रहते हो, चलते रहते हो लेकिन कभी-कभी जैसे बहुत काम होता है तो बहुत काम में एक तो बुद्धि की थकावट होने के कारण जितना चाहते उतना नहीं कर पाते और दूसरा – बहुत काम होने के कारण थोड़ा-सा भी किसी द्वारा थोड़ी हलचल होगी तो थकावट के कारण चिड़चिड़ापन हो जाता। उससे ख़ुशी कम हो जाती है। वैसे अन्दर ठीक रहते हो, सेवा का बल भी मिल रहा है, ख़ुशी भी मिल रही है, फ़िर भी शरीर तो पुराना है ना। इसलिए टू-मच (अत्यधिक) में नहीं

जाओ। बैलेन्स रखो। याद के चार्ट पर थकावट का असर नहीं होना चाहिए। जितना सेवा में बिज़ी रहते हो, भल कितना भी बिज़ी रहो लेकिन थकावट मिटाने का विशेष साधन हर घण्टे वा दो घण्टे में एक मिनट भी शक्तिशाली याद का अवश्य निकालो! जैसे कोई शरीर में कमज़ोर होता है तो शरीर को शक्ति देने के लिए डॉक्टर्स दो-दो घण्टे बाद ताकत की दवाई पीने लिए देते हैं। टाइम निकाल दवाई पीनी पड़ती है ना। तो बीच-बीच में एक मिनट भी अगर शक्तिशाली याद का निकालो तो उसमें ए, बी, सी, - सब विमाटमिन्स आ जायेंगे।

जैसे सेवा के प्लैन किये दो घण्टे का टाइम निकाल फ़िक्स करते हो - चाहे मीटिंग करते हो, चाहे प्रैक्टिकल करते हो, तो दो घण्टे के साथ-साथ यह भी बीच-बीच में करना ही है - यह ऐड करो। जो एक घण्टे में प्लैन बनायेंगे, वह आधा घण्टे में हो जायेगा। करके देखो। आपे ही फ्रेशनेस से दो बजे आँख खुलती है, वह दूसरी बात है। लेकिन कार्य के कारण जागना पड़ता है तो उसका इफैक्ट (प्रभाव) शरीर पर आता है। इसलिए बैलेन्स के ऊपर सदा अटेन्शन रखो।

जैसे सेवा के प्लैन किये दो घण्टे का टाइम निकाल फ़िक्स करते हो - चाहे मीटिंग करते हो, चाहे प्रैक्टिकल करते हो, तो दो घण्टे के साथ-साथ यह भी बीच-बीच में करना ही है - यह ऐड करो। जो एक घण्टे में प्लैन बनायेंगे, वह आधा घण्टे में हो जायेगा। करके देखो। आपे ही फ्रेशनेस से दो बजे आँख खुलती है, वह दूसरी बात है। लेकिन कार्य के कारण जागना पड़ता है तो उसका इफैक्ट (प्रभाव) शरीर पर आता है। इसलिए बैलेन्स के ऊपर सदा अटेन्शन रखो।

बापदादा ख़ुश होते हैं – इतना मिलकर प्लैन बनाते हो वा प्रैक्टिकल में ला रहे हो और लाते रहोगे। बापदादा को और क्या चाहिए! इसलिए बापदादा को पसन्द है। बाकी कोई मुश्किल हो तो बापदादा सहज कर सकते हैं। यह बुद्धि का चलना भी एक वरदान है। सिर्फ बैलेन्स रखकर के चलो। जब बैलेन्स होगा तो बुद्धि निर्णय बहुत जल्दी करेगी और 4 घण्टे जो डिस्कस करते हो, उसमें एक घण्टा भी नहीं लगेगा। एक जैसा ही विचार निकलेगा।

पुरुषार्थ सभी करते हो लेकिन कोई ज़्यादा पुरुषार्थ को भारी कर देते और कोई फ़िर बिल्कुल अलबेले हो जाते – जो होना होगा हो जायेगा, देखा जायेगा, कौन देखता है, कौन सुनता है..। तो न वह अच्छा, न वह अच्छा है। इसलिए बैलेन्स से बाप की ब्लैसिंग, वरदानों का अनुभव करो। सदा बाप का हाथ मेरे ऊपर है – इस अनुभव को सदा स्मृति में रखो।

28.2.88.. .. स्नेह और शक्ति - दोनों के बैलेन्स से सदा आगे बढ़ते और बढ़ाते चलो। बैलेन्स ही बाप की ब्लैसिंग दिलाता है और दिलाता रहेगा। बड़ो की छत्रछाया भी सदा आगे बढ़ाती रहेगी। बाप की छत्रछाया तो है ही लेकिन बड़ों की छत्रछाया भी गोल्डन आफ़र है। तो सदा आफ़रीन (शाबास) मनाते हुए आगे बढ़ते चलो तो भविष्य स्पष्ट होता जायेगा।

31.12.89.. .. नये वर्ष में जादू का मन्त्र यूज़ करो। यह नवीनता वा विशेषता करो और जादू का मन्त्र क्या है? मन्सा और वाचा-दोनों का मेल करो। दोनों का बैलेन्स, दोनों का मिलन – यही जादू का मन्त्र है। जब मन्सा में सदा शुभ भावना वा शुभ दुआयें देने का नेचुरल अभ्यास हो जायेगा तो मन्सा आपकी बिजी हो जायेगी। मन में जो हलचल होती है, उससे स्वत: ही किनारे हो जायेंगे। अपने पुरुषार्थ में जो कभी दिलशिकस्त होते हो वह नहीं होंगे। जादूमन्त्र हो जायेगा।

25.2.91.. .. एक प्वाइन्ट बुद्धि में रखना, यह है एक विधि, और दूसरा है प्वाइन्ट बन प्वाइन्ट को कार्य में लगाना। प्वाइन्ट रूप भी हो और प्वाइन्ट्स भी हों। दोनों का बैलेन्स हो। यह है नम्बरवन विधि से से नम्बरवन सिद्धि प्राप्त करना। कभी प्वाइन्ट के विस्तार में चले जाते हो। कभी प्वाइन्ट रूप में टिक जाते हैं। प्वाइन्ट रूप और प्वाइन्ट साथ-साथ चाहिए। कार्य शक्ति को बढ़ाओ। समझा। नम्बरवन आना है तो यह करना पड़ेगा।

जब साइन्स के साधन कार्य-शक्ति को तीव्र बना सकते हैं, कई ऐसी इन्वेन्शन निकली भी हैं और निकल भी रही हैं, तो ब्राह्मण आत्माओं की साइलेन्स की शक्ति कितना तीव्र कार्य यथार्थ सफल कर सकती है। सेकेण्ड में निर्णय हो, सेकेण्ड में कार्य को प्रैक्टिकल में सफल करो। सोचना और करना – इसका भी बैलेन्स चाहिए। कई ब्राह्मण आत्माएं सोचती बहुत है, लेकिन करने के समय जितना सोचते हैं उतना करते नहीं हैं और कई फिर करने में लग जाते हैं – सोचते पीछे हैं कि ठीक किया वा नहीं किया? क्या करना है अभी? तो सोचना और करना – दोनों साथ-साथ हो।

25.3.90.. .. मैजारिटी 5 वर्ष से 10 वर्ष के अन्दर अपने में कभी कैसे, कभी कैसे अनुभव करने लगते हैं। इसका कारण क्या है? पहले वर्ष से 10 वर्ष में उमंग-उत्साह 10 गुणा बढ़ना चाहिए ना। लेकिन कम क्यों हो गया? उसका कारण यही है कि साधना की स्थिति में रह साधनों को कार्य में नहीं लगाते। कोई-न-कोई आधार को अपनी उन्नति का आधार बना देते हैं और वह आधार हिलता है, उमंग-उत्साह भी हिल जाता है। वैसे आधार लेना कोई बुरी चीज नहीं। लेकिन आधार को ही फाउण्डेशन बना देते हैं। बाप बीच से निकल जाता है और आधार को फाउण्डेशन बना देते हैं। इसलिए हल- चल क्या होती, यह होता तो ऐसा नहीं होता, यह होगा तो ऐसे होगा। यह तो बहुत आवश्यक है – ऐसे अनुभव होने लगता है। साधना और साधन का बैलेन्स नहीं रहता। साधनों की तरफ बुद्धि ज्यादा जाती है। साधना की तरफ बुद्धि कम हो जाती। इसलिए कोई भी कार्य में, सेवा में बाप की ब्लैसिंग अनुभव नहीं करते। और ब्लैसिंग का अनुभव न होने के कारण साधन द्वारा सफलता मिल जाती तो उमंग-उत्साह बहुत अच्छा रहता और सफलता कम होती तो उमंग-उत्साह भी कम हो जाता है।

31.12.91.. .. सदा बाप की ब्लैसिंग स्वत: ही प्राप्त होती रहे – उसकी विधि क्या है? ब्लैसिंग प्राप्त करने के लिए हर समय, हर कर्म में बैलेन्स रखो। जिस समय कर्म और योग दोनों का बैलन्स होता है तो क्या अनुभव होता है? ब्लैसिंग मिलती है ना। ऐसे ही याद और सेवा दोनों का बैलेन्स है तो सेवा में सफलता की ब्लैसिंग मिलती है।

अगर याद साधारण है और सेवा बहुत करते हैं तो ब्लैसिंग कम होने से सफलता कम मिलती है। तो हर समय अपने कर्म-योग का बैलेन्स चेक करो। कि कर्म ही सब कुछ है लेकिन बापदादा कहते हैं कि कर्म अलग नहीं, कर्म और योग दोनों साथ-साथ हैं। ऐसे कर्मयोगी कैसा भी कर्म होगा उसमें सहज सफलता प्राप्त करेंगे। जब कर्म में ऐसे बिजी हो, मुश्किल काम हो उस समय योग, मुश्किल कर्म को सहज करेगा। तो ऐसे नहीं सोचना कि यह काम पूरा करेंगे फिर योग लगायेंगे। कर्म के साथ-साथ योग को सदा साथ रखो। दिन- प्रतिदन समस्यायें, सरकमस्टांश और टाइट होने हैं, ऐसे समय पर कर्म और योग का बैलेन्स नहीं होगा तो बुद्धि जजमेन्ट ठीक नहीं कर सकती। इसलिए योगऔर कर्म के बैलेन्स द्वारा अपनी निर्णय शक्ति को बढ़ाओ। समझा। फिर ऐसे नहीं कहना कि यह तो मालूम ही नहीं था – ऐसे भी होता है। यह पहले पता होता तो मैं योग ज्यादा कर लेता। लेकिन अभी से यह अभ्यास करो। जिस आत्मा को बापदादा की बैलेन्स के कारण ब्लैसिंग प्राप्त होती है उसकी निशानी क्या होगी? जो सदा ही बाप की ब्लैसिंग का अनुभव करते रहते हैं उसके संकल्प में भी कभी - यह क्या हुआ, यह क्यों हुआ, यह आश्चर्य की निशानी नहीं होगी। क्या होगा – यह क्वेश्चन भी नहीं उठेगा। सदैव इस निश्चय में पक्का होगा कि जो हो रहा है उसमें कल्याण छिपा हुआ है। क्योंकि कल्याणकारी युग है, कल्याणकारी बाप है और आप सबका काम भी विश्व कल्याण का है, कल्याण ही समाया हुआ है। बाहर से कितना भी कोई कर्म हलचल का दिखाई दे लेकिन उस हलचल में भी कोई गुप्त कल्याण समाया हुआ होता है और बाप के श्रीमत तरफ, बाप के सम्बन्ध तरफ अटेन्शन खिंचवाने का कल्याण होता है। ब्राह्मण लाइफ में क्या नहीं हो सकता? अकल्याण नहीं हो सकता। इतना निश्चय है या थोड़ा बहुत आयेगा तो हिल जायेंगे? समस्यायें आयें तो मिक्की माउस का खेल तो नहीं करेंगे? मिक्की माउस का खेल देखो भले लेकिन करना नहीं। तो नये वर्ष का यही वरदान याद रखना है कि सदा बैलेन्स से हर घड़ी ब्लैसिंग लेते हुए उड़ते रहना है और उड़ाते रहना है। उड़ती कला वाले हैं, नीचे ऊपर होने वाले नहीं। साइड सीन देखने के लिए नीचे नहीं आना। नीचे आयेंगे ना तो फँस जायेंगे। इसलिए सदा उड़ते रहना। अच्छा।

13.2.92 .. ..इस तपस्या वर्ष के सम्पन्न होने के बाद प्राइज़ तो ले लेना लेकिन आगे जो कर्म और योग, सेवा और योग, जो भी बैलेन्स की स्थिति बताई हुई है, बैलन्स का अर्थ ही समानता, याद, तपस्या और सेवा-यह समानता हो, शक्ति और स्नेह में समानता हो, प्यारे और न्यारेपन में समानता हो। कर्म करते हुए और कर्म से न्यारा हो अलग बैठने में स्थिति की समानता हो। जो इस समानता के बैलेन्स की कला में नम्बर जीतेगा वो महान होगा। तो दोनों कर सकते हो कि नहीं सर्विस शुरु करेंगे तो ऊपर से नीचे आ जायेंगे ? यह वर्ष तो पक्के हो गये हो ना। अभी बैलेन्स रख सकते हो या नहीं। सर्विस में खिटखिट होती है। इसमें भी पास तो होना है ना। पहले सुनाया ना कि कर्म करते भी, कर्मयोगी बनते भी लवलीन हो सकते हैं, फिर तो विजयी हो जायेंगे ना! अभी प्राइज़ उसको मिलेगा जो बैलेन्स में विजयी होगा। ऐसे नहीं कि तपस्या वर्ष पूरा हो गया, अभी अलबेले बन जाये। नहीं, और बड़ी प्राइज़ लेनी है। सुनाया ना - कर्म और योग के बैलेन्स की प्राइज़ लेनी है, सेवा और तपस्या के बैलेन्स की ब्लेसिंग अनुभव करनी है और निमित्त मात्र प्राइज़ लेनी है। सच्ची प्राइज़ तो बाप और परिवार की ब्लैसिंग की प्राइज़ है। वह तो सबको मिल रही है।

2.3.92.. .. सेवा अर्थात स्व और सर्व आत्माओं की साथ-साथ सेवा। पहले स्व क्योंकि स्व स्थिति वाले ही अन्य आत्माओं को परिस्थितियों से निकाल सकते हैं। सेवा की सफलता ही है - स्व और सर्व के बैलेन्स की स्थिति। ऐसे कभी भी नहीं कहो कि सेवा में बहुत बिज़ी थे ना इसीलिए स्व के स्थिति का चार्ट ढीला हो गया। एक

तरफ कमाया, दूसरे तरफ गँवाया तो बाकी बचा क्या? इसलिए जैसे बाप और आप कम्बाइन्ड हो, शरीर और आत्मा कम्बाइन्ड है, आपका भविष्य विष्णु स्वरुप कम्बाइन्ड है, ऐसे स्व-सेवा और सर्व की सेवा कम्बाइन्ड हो। इसको अलग नहीं करो, नहीं तो मेहनत ज्यादा और सफलता कम मिलती है। अधूरा हो गया ना!

16.3.92.. .. स्पष्ट का अर्थ है श्रेष्ठ। चेक करने की शक्ति बहुत अच्छी है, डबल विदेशियों में। अभी सिर्फ चेन्ज करने की शक्ति उतनी मात्रा में रखो। चेकिग की मात्रा ज्यादा है, चेंज की थोड़ी कम है तो इसका भी बैलेन्स रखो। स्पष्ट बहुत दिल से देते हैं और लेते भी हैं। रिटर्न उसी समय मिल जाता है। अगर सच्ची दिल से कोई अपनी कमजोरी भी लिखता है तो बाप क्षमा का सागर उसी समय रिटर्न में क्षमा कर देता है। बहुत प्यार के कार्ड, बहुत प्यार के पत्र बापदादा देखते हैं। गिफ्ट देने वाले स्वयं ही बाप की गिफ्ट हैं। गिफ्ट देना अर्थात लिफ्ट लेना। तो सिर्फ गिफ्ट देना नहीं, लेकिन लिफ्ट लेना भी है।

1.4.92.. ..भावना का फल समय प्रमाण बाप द्वारा प्राप्त हो ही जाता है। लेकिन समान बनने में ज्ञानी योगी तू आत्मायें समीप हैं। इसलिए भावना और ज्ञान स्वरुप बनने का लक्ष्य रखो। जितनी भावना हो उतना ही ज्ञान स्वरुप भी हो। सिर्फ भावना वा सिर्फ ज्ञान यह भी सम्पूर्णता नहीं। ज्ञान-युक्त भावना, स्नेह-सम्पन्न योगी आत्मा - यह दोनों का बैलेन्स सहज उड़ती कला का अनुभव कराता है। बाप समान अर्थात दोनों की समानता। राजधानी की वृद्धि तो अच्छी हो रही है। लेकिन विश्व परिवर्तन में दोनों स्वरुप के बैलेन्स वाली आत्माएं ही निमित्त बनती हैं। क्योंकि विश्व परिवर्तन के लिए बहुत सूक्ष्म शक्तिशाली स्थिति वाली आत्माएं चाहिएं। जो अपने वृत्ति द्वारा, श्रेष्ठ संकल्प द्वारा अनेक आत्माओं को परिवर्तन कर सके। स्वयं स्नेही वा भावुक आत्मा स्वयं में बहुत अच्छे चलते हैं लेकिन वह स्नेह व भावना विश्व के प्रति नहीं होती। स्वयं के व्रति वा कुछ समीप आत्माओं के प्रति होती है। बेहद की सेवा वा विश्व प्रति सेवा बैलेन्स वाली आत्माएं कर सकती हैं। बेहद की सेवा वा अपनी शक्तिशाली मन्सा शक्ति द्वारा, शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा होती है। सिर्फ स्वयं के प्रति भावुक नहीं लेकिन औरों को भी शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा परिवर्तित कर सकते हो। तो ऐसे भावना और ज्ञान, स्नेह और योग शक्ति हो, ऐसी आत्माएं बने हो कि सिर्फ स्नेही भावुक आत्माओं को देख खुश हो रहे हो? कल्याणकारी बने हो? या बेहद विश्व कल्याणकारी बने हो - यह चेक करो।

3.11.92.. .. बापदादा बच्चों के सेवा की वृद्धि को देख खुश होते हैं। क्वान्टिटी और क्वालिटी–दोनों हैं ना। दोनों की सेवा का बैलेन्स है? या क्वान्टिटी ज्यादा है, क्वालिटी कम है? बाप को तो क्वान्टिटी भी चाहिए, क्वालिटी भी चाहिए। क्वालिटी की सेवा प्रति किसलिए कहते हैं? क्योंकि एक क्वालिटी वाला अनेक क्वान्टिटी को लायेगा।

10.12.92.. .. स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति–दोनों का बैलेन्स बढ़ाते हुए आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ा रहे हैं। सेवा भी हो रही है और याद में भी बैठते ही हैं। लेकिन अभी बैलेन्स के ऊपर और अटेन्शन दिलाते चलो। कभी सेवा में बहुत आगे चले जाते, कभी स्व-उन्नति की भी लग्न लग जाती है। लेकिन दोनों साथ-साथ हों तो सफलता सहज और जो चाहते हैं वही हो जाती है। तो यही अटेन्शन दिलाते रहते हो ना। जिनको बैलेन्स रखना आता है वे सदा दुआएं लेते हैं और दुआएं देते हैं। बैलेन्स की प्राप्ति है–ब्लैसिंग। बैलेन्स वाले को ब्लैसिंग नहीं मिले–यह हो नहीं सकता। तो बैलेन्स की निशानी है–ब्लैसिंग। यदि नहीं मिलती तो बैलेन्स की कमी है। आप सभी की पालना किससे हुई? दुआओं से आगे बढ़े ना। कि मेहनत करनी पड़ी? माता, पिता और परिवार की दुआओं से सहज

आगे बढ़ते गये और अभी भी दुआएं मिल रही हैं। महारथियों की पालना क्या है? दुआएं ना। आपको कितनी दुआएं मिलती हैं! तो महारथी की पालना ही दुआएं हैं।

20.12.92.. .. वर्तमान समय कौनसा बैलेन्स चल रहा है? एक तरफ धमाल, दूसरे तरफ कमाल। कुछ भी हो लेकिन कमाल ही हो रही है ना। हर क्षेत्र में आप लोग तो आगे ही बढ़ रहे हो ना। तो दुनिया में है धमाल और आपके पास समाचारों में कमाल है। जितनी धमाल होगा उतनी आपकी कमाल होगी और प्रत्यक्ष होते जायेंगे। दुनिया वाले डरते हैं और आप और ही निर्भय होते हैं। निर्भय हो या धमाल से डरते हो? जितनी धमाल देखते हो उतना यही सोचते हैं कि आज धमाल है और कल हमारी कमाल हुई ही पड़ी है! बैलेन्स चल रहा है ना। देखो, डिग्री भी मिल रही है, (दादी जी को उदयपुर युनिवर्सिटी से डॉक्टरेट की डिग्री मिलने वाली है) मकान भी मिल रहे हैं। जो असम्भव बातें हैं वो सम्भव हो रही हैं। तो यह कमाल है ना। निमन्त्रण भी मिल रहे हैं। कुछ समय पहले यह नहीं था, अभी बढ़ रहा है। तो कमाल बढ़ रही है ना। ये बाप ब्रह्मा द्वारा फास्ट गति की सेवा का सबूत दिखा रहे हैं। जो मुश्किल बातें होती हैं वे समय अनुसार ऐसी सहज होती जायेंगी जैसे हुई ही पड़ी हों! इसलिए आपको भय नहीं है। सोचते हो कि ये कब धमाल तो होनी ही है और हमारी कमाल भी होनी ही है। कोई डरते हैं–कर्फ्यू लगा, ये सिविल-वार हो रही है, क्या होगा! डरते हो? ड्रामा अनुसार यह सभी

और पुरुषार्थ को मजबूत करते हैं। अच्छा! और सब ठीक है? (दादी जी को थोड़ी खांसी है) तबियत का हिसाब चुक्तू कर रही हो। एक तो आयु के हिसाब से भी हिसाब चुक्तू होता है और दूसरा रहस्य यह है कि महारथियों को सब हिसाब यहीं चुक्तू करना है, जरा भी रहना नहीं है। बापदादा को तो खेल लगता है। जब ब्रह्मा बाप ने क्रॉस (ण्दे; पार) किया तो आप सबको भी क्रॉस तो करना ही है। या तो है योगबल से सहज क्रॉस करना, या तो है धर्मराज के क्रॉस (शूली) पर चढ़ना। तो ये क्रॉस कर रहे हैं, इसलिए क्रॉस पर नहीं चढ़ेंगे।

31.12.92.. .. ब्रह्मा बाप भी सदा हर्षित और गम्भीर–दोनों के बैलेन्स की एकरस स्थिति में रहे। तो फालो फादर। और कोई माया तो नहीं आती है ना। सदा अपने को विजयी अर्थात् मायाजीत अनुभव करते उड़ते चलो।

18.1.93.. .. सम्पूर्ण प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजाने के लिए सिर्फ एक बात करनी है। प्रत्यक्षता का आधार आप बच्चे हैं और बच्चों में विशेष एक बात की अन्डरलाइन करनी है। प्रत्यक्षता और प्रतिज्ञा–दोनों का बैलेन्स सर्व आत्माओं को बापदादा द्वारा ब्लैसिंग प्राप्त होने का आधार है। प्रतिज्ञा तो रोज़ करते हो, फिर प्रत्यक्षता में देरी क्यों? अभी-अभी हो जानी चाहिए ना।

16.12.93.. .. जिसमें स्नेह और शक्ति दोनों का बैलेन्स है, वही बाप समान बनता है। ऐसे समाई हुई आत्माओं का अनुभव यही होगा–बाप के स्नेह से दूर होना, यह मुश्किल है। समाना सहज है, दूर होना मुश्किल है। क्योंकि समाई हुई आत्माओं के लिो एक बाप ही संसार है।

जब योग में बैठे तो योगी हैं और कर्म में जायें तो योग साधारण हो जाये और कर्म महान् हो जाये। सदा दोनों का साथ रहे, बैलेन्स रहे। तो ऐसे कर्मयोगी हो या जब कर्म में लग जाते हो तो योग कम हो जाता है? और जब योग में बैठते हो तो लगता है कि बैठे ही रहें तो अच्छा है। कर्मयोगी आत्मा सदा ही कर्म और योग का साथ रखने वाली अर्थात् बैलेन्स रखने वाली। कर्म और योग का बैलेन्स है तो हर कर्म में बाप द्वारा तो ब्लैसिंग मिलती ही है लेकिन जिसके सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं उनसे भी दुआयें मिलती हैं। कोई अच्छा काम करता है तो दिल से उसके लिये दुआयें निकलती हैं ना कि बहुत अच्छा है। तो बहुत अच्छा मानना–यह दुआयें है। और जो अच्छा कार्य करता है

उसके संग में रहना सदा सभी को अच्छा लगता है। उसके सहयोगी बहुत बन जाते हैं। तो दुआयें भी मिलती हैं, सहयोग भी मिलता है। तो जहाँ दुआयें हैं, सहयोग है वहाँ सफलता तो है ही। तो कितनी प्राप्ति हैं?

याद की शक्ति द्वारा सेकण्ड में मन-बुद्धि को एकाग्र करना और सेवा द्वारा ख़ज़ानों को बढ़ाना–यह बैलेन्स ही ब्लैसिंग प्राप्त करने का साधन है

9.3.94.. .. पुरुषार्थ निमित्त बनता है, पुरुषार्थ धरनी बनाता है, वो भी ज़रूरी है। लेकिन सफ़लता का बीज उत्पन्न होने का साधन, बाहर आने का साधन फिर भी योग का प्रयोग ही रहा। यह सबको अनुभव है ना। धरनी को बनाना भी ज़रूरी है लेकिन बीज से फल प्रत्यक्षरूप में आये उसके लिये बैलेन्स चाहिये। बैलेन्स में ज़रा भी, 5%, 10% भी कमी पड़ती है तो फ़र्क हो जाता है।

17.11.94.. .. जैसे दुनिया वाले कहते हैं कि कर्म ही योग है। कर्म योग अलग नहीं मानते। कर्म ही योग मानते हैं। कर्म से योग लगाना, इसी को ही कर्मयोग समझते हैं। लेकिन कर्म और योग दोनों का बैलेन्स चाहिये। कर्म में बिज़ी रहना योग नहीं है। कर्म करते योग का अनुभव होना चाहिये। कर्म में बिज़ी हो जाते हैं तो कर्म ही श्रेष्ठ हो जाता है, योग किनारे हो जाता है। चलतेचलते यही अलबेलापन आता है। तो कर्म में योग का अनुभव होना–इसको कहा जाता है कर्मयोगी।

5.12.94.. .. यथार्थ वैराग वृत्ति का सहज अर्थ है–चाहे आत्माओं के सम्पर्क में आयें, चाहे साधनों के सम्बन्ध में आयें, चाहे सेवा के चांस में चांसलर बनने का भाग मिले लेकिन सर्व के सम्बन्धसम्पर्क में जितना न्यारा, उतना प्यारा–इसका बैलेन्स रहे।

9.1.95.. .. कर्नाटक वालों को क्या ाद रखना है–निर्विघ्न राज अधिकारी और निर्विघ्न साथी बनाना। वृद्धि में बहुत अच्छे हैं लेकिन सिर्फ बैलेन्स रखना–जितना स्नेह उतना ही निर्विघ्न स्थिति। दोनों के बैलेन्स से सदा स्वत: ही कर्नाटक वालों को ब्लैसिंग मिलती रहेगी। तो कर्नाटक वाले अण्डरलाइन करना–निर्विघ्न वृद्धि।

19.1.95.. .. याद और सेवा दोनों के बैलेन्स में सदा रहना अर्थात् डबल लॉक लगाना। तो सभी के पास डबल लॉक है या एक लॉक है एक ढीला है? देखना चाबी तो नहीं खो गई है। आप समझो चाबी बहुत सम्भाल के रखी है लेकिन जब आवश्यकता हो तो दिखाई न दे, ऐसे तो नहीं?

25.3.95.. .. ब्रह्मा बाप को इकॉनॉमी का अवतार कहते हैं। आप सभी कौन हो? आप भी मास्टर हो या नहीं? इकॉनॉमी नहीं आती है? खर्च करना आता है! वैसे डबल फॉरेनर्स को लौकिक जीवन के हिसाब से जमा का खाता बनाना कम आता है। खाया और खर्चा, खत्म। बैंक बैलेन्स कम रखते हैं। लेकिन इसमें तो इकॉनॉमी का अवतार बनना पड़ेगा। तो बापदादा देख रहे थे कि जितना मिला है, जितना संकल्प का श्रेष्ठ खजाना जमा होना चाहिये उतना नहीं है, व्यर्थ का हिसाब जादा देखा। अगर संकल्प व्यर्थ हुआ तो और खजाने व्यर्थ स्वत: ही हो जाते हैं। संकल्प व्यर्थ तो कर्म और बोल क्या होगा? व्यर्थ ही होगा ना! फाउण्डेशन है संकल्प। तो संकल्प को चेक करो।

16.2.96.. .. कई बार बच्चे दिमाग यूज़ करते हैं लेकिन दिल और दिमाग दोनों मिलाके नहीं करते। दिमाग मिला है उसको कार्य में लगाना अच्छा है लेकिन सिर्फ दिमाग नहीं। जो दिल से करते हैं तो दिल से करने वाले के दिल में बाप की याद भी सदा रहती है। सिर्फ दिमाग से करते हैं तो थोड़ा टाइम दिमाग में याद रहेगा–हाँ, बाबा ही

कराने वाला है, हाँ बाबा ही कराने वाला है लेकिन कुछ समय के बाद फिर वो ही मैं-पन आ जायेगा। इसलिए दिमाग और दिल दोनों का बैलेन्स रखो।

27.2.96.. .. जितना अन्तर्मुखता के कमरे में बैठ रिसर्च करेंगे उतना अच्छे से अच्छी टचिंग होंगी। और इसी टचिंग से अनेक आत्माओं को लाभ मिलेगा। तो अच्छा है। करते रहो लेकिन प्रयोग और योग दोनों का बैलेन्स रखते आगे बढ़ते चलो। बाकी अच्छा है। जितना मनन करो उतना ही मक्खन निकलता है। तो कोई न कोई अच्छा माखन निकालेंगे जो सबमें शक्ति भरे। अच्छा।

10.3.96.. .. आज बापदादा ने चारों ओर के सेवा की गति देखी। साथ में स्व-पुरुषार्थ की भी गति को देखा। तो सेवा और स्व-पुरुषार्थ दोनों के गति में क्या देखा होगा? आप जानते हो? सेवा की गति तीव्र है वा स्व-पुरुषार्थ की गति तीव्र है? क्या है? दोनों का बैलेन्स है? नहीं है? तो विश्व परिवर्तन की आत्माओं को वा प्रकृति को ब्लैसिंग कब मिलेगी? क्योंकि बैलेन्स से जो आप सभी को ब्लैसिंग मिली हैं वह औरों को मिलेंगी।

बापदादा ने देखा कि सेवा वा कर्म और स्व-पुरुषार्थ अर्थात् योगयुक्त। तो दोनों का बैलेन्स रखने के लिए विशेष एक ही शब्द याद रखो–वह कौनसा? बाप 'करावनहार' है और मैं आत्मा, (मैं फलानी नहीं) आत्मा 'करनहार' हूँ। तो करन-'करावनहार', यह एक शब्द आपका बैलेन्स बहुत सहज बनायेगा। स्व-पुरुषार्थ का बैलेन्स या गति कभी भी कम होती है, उसका कारण क्या? 'करनहार' के बजाए मैं ही करने वाली या वाला हूँ, 'करनहार' के बजाए अपने को 'करावनहार' समझ लेते हो। मैं कर रहा हूँ, जो भी जिस प्रकार की भी माया आती है, उसका गेट कौन सा है? माया का सबसे अच्छा सहज गेट जानते तो हो ही – 'मैं'। तो यह गेट अभी पूरा बन्द नहीं किया है। ऐसा बन्द करते हो जो माया सहज ही खोल लेती है और आ जाती है। अगर 'करनहार' हूँ तो कराने वाला अवश्य याद आयेगा। कर रही हूँ, कर रहा हूँ, लेकिन कराने वाला बाप है। बिना 'करावनहार' के 'करनहार' बन नहीं सकते हैं। डबल रूप से 'करावनहार' की स्मृति चाहिए। एक तो बाप 'करावनहार' है और दूसरा मैं आत्मा भी इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाली हूँ। इससे क्या होगा कि कर्म करते भी कर्म के अच्छे या बुरे प्रभाव में नहीं आयेंगे। इसको कहते हैं–कर्मातीत अवस्था।

ऐसे नहीं कि सेवा में बहुत बिजी थे ना इसलिए स्व-पुरुषार्थ कम हो गया। नहीं। और ही सेवा में स्व-पुरुषार्थ का अटेन्शन ज्यादा चाहिए। क्योंकि माया को आने की मार्जिन सेवा में बहुत प्रकार से होती है। नाम सेवा लेकिन होता है स्वार्थ। अपने को आगे बढ़ाना है लेकिन बढ़ाते हुए बैलेन्स को नहीं भूलना है क्योंकि सेवा में ही स्वभाव, संबंध का विस्तार होता है और माया चांस भी लेती है। थोड़ा सा बैलेन्स कम हुआ और माया नया-नया रूप धारण कर लेती है, पुराने रूप में नहीं आयेगी। नये-नये रूप में, नई-नई परिस्थिति के रूप में, सम्पर्क के रूप में आती है। तो अलग में सेवा को छोड़कर अगर बापदादा बिठा दे, एक मास बिठाये, 15 दिन बिठाये तो कर्मातीत हो जायेंगे? एक मास दें बस कुछ नहीं करो, बैठे रहो, तपस्या करो, खाना भी एक बार बनाओ बस। फिर कर्मातीत बन जायेंगे? नहीं बनेंगे? अगर बैलेन्स का अभ्यास नहीं है तो कितना भी एक मास क्या, दो मास भी बैठ जाओ लेकिन मन नहीं बैठेगा, तन बैठ जायेगा। और बिठाना है मन को न कि सिर्फ तन को। तन के साथ मन को भी बिठाना है, बैठ जाए बस बाप और मैं, दूसरा न कोई। तो एक मास ऐसी तपस्या कर सकते हो या सेवा याद आयेगी? बापदादा वा ड्रामा दिखाता रहता है कि दिन-प्रतिदिन सेवा बढ़नी ही है, तो बैठ कैसे जायेंगे? जो एक साल पहले आपकी सेवा थी और इस साल अब धरनी में परमात्म पहचान का बीज डालो तो प्रत्यक्षता होगी। जो सेवा की वह बढ़ी है

या कम हुई है? बढ़ गई है ना! न चाहते भी सेवा के बन्धन में बंधे हुए हो लेकिन बैलेन्स से सेवा का बन्धन, बन्धन नहीं संबंध होगा। जैसे लौकिक संबंध में समझते हो कि एक है कर्म बन्धन और एक है सेवा का संबंध। तो बन्धन का अनुभव नहीं होगा, सेवा का स्वीट संबंध है। तो क्या अटेन्शन देंगे? सेवा और स्व-पुरुषार्थ का बैलेन्स। सेवा के अति में नहीं जाओ। बस मेरे को ही करनी है, मैं ही कर सकती हूँ, नहीं। कराने वाला करा रहा है, मैं निमित्त 'करनहार' हूँ। तो जिम्मेवारी होते भी थकावट कम होगी। कई बच्चे कहते हैं – बहुत सेवा की है ना तो थक गये हैं, माथा भारी हो गया है। तो माथा भारी नहीं होगा। और ही 'करावनहार' बाप बहुत अच्छा मसाज़ करेगा। और माथा और ही फ्रेश हो जायेगा। थकावट नहीं होगी, एनर्जी एकस्ट्रा आयेगी। जब साइन्स की दवाइयों से शरीर में एनर्जी आ सकती है, तो क्या बाप की याद से आत्मा में एनर्जी नहीं आ सकती? और आत्मा में एनर्जी आई तो शरीर में प्रभाव आटोमेटिकली पड़ता है। अनुभवी भी हो, कभी-कभी तो अनुभव होता है। फिर चलते-चलते लाइन बदली हो जाती है और पता नहीं पड़ता है। जब कोई उदासी, थकावट या माथा भारी होता है ना फिर होश आता है, क्या हुआ? क्यों हुआ? लेकिन सिर्फ एक शब्द 'करनहार' और 'करावनहार' याद करो, मुश्किल है या सहज है? बोलो हाँ जी। अच्छा।

22.3.96.. .. सेवा की बापदादा मना नहीं करते हैं, लेकिन बैलेन्स। सभी के प्राण आपके शरीरों में हैं, तन ठीक है तो सेवा भी अच्छी होती जायेगी। इसलिए सेवा खूब करो लेकिन ज्यादा धक्का नहीं लगाओ, थोड़ा धक्का लगाओ। ज्यादा धक्का लगाने से क्या होता है? बैटरी स्लो हो जाती है। इसलिए बैलेन्स अभी से रखना आवश्यक है। ऐसे नहीं सोचो यह वर्ष तो कर लें, दूसरा वर्ष पता नहीं क्या है? नहीं। जीना है और उड़ाना है। अभी तो आपका पार्ट है ना? तो अपने पार्ट को समझकर धक्का लगाओ लेकिन बैलेन्स में धक्का लगाओ। ठीक है। फास्ट नहीं बनाओ, दो दिन यहाँ है तो तीसरे दिन वहाँ हैं, नहीं। अभी वह टाइम नहीं है, जब ऐसा टाइम आयेगा तो एक दिन में चार-चार स्थान पर भी जाना पड़ेगा लेकिन अभी नहीं।

3.4.96.. .. अभी बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। चाहे कितने भी साधन प्राप्त हैं और साधन तो आपको दिनप्रतिदिन ज्यादा ही मिलने हैं लेकिन बेहद के वैराग्य वृत्ति की साधना मर्ज नहीं हो, इमर्ज हो। साधन और साधना का बैलेन्स, क्योंकि आगे चलकर के प्रकृति आपकी दासी होगी। सत्कार मिलेगा, स्वमान मिलेगा। लेकिन सब कुछ होते वैराग्य वृत्ति कम नहीं हो। स्व पुरुषार्थ और सेवा के बैलेन्स द्वारा बंधन, संबंध में बदल जायेगा। कर्म के समय योग का बैलेन्स ठीक रखने वाले ही कर्मयोगी हैं। कर्म करते करन-करावनहार बाप की स्मृति रहे तो स्व-पुरुषार्थ और योग का बैलेन्स ठीक रहेगा।

3.4.97 बापदादा ने देखा तीन बातें हैं – एक है सोचना, संकल्प करना। दूसरा है बोलना, वर्णन करना और तीसरा है कर्म में प्रैक्टिकल अनुभव में और चलन में लाना, कम लैन्स कम है। जब बैलेन्स होता है तो निश्चय और नशा इमर्ज होता है और जब बैलेन्स कम है तो निश्चय और नशा 50 मर्ज हो जाता है। रिजल्ट में देखा गया कि सोचने की गति बहुत अच्छी भी है और फास्ट भी है। बोलने में रफ्तार और नशा वह भी 75 परसेन्ट ठीक है। बोलने में मैजारिटी होशियार भी हैं लेकिन प्रैक्टिकल चलन में लाने में टोटल मार्क्स कम हैं। तो दो बातों में ठीक हैं लेकिन तीसरी बात में बहुत कम हैं। कारण? जब संकल्प भी अच्छा है, बोल भी बहुत सुन्दर रूप में हैं फिर प्रैक्टिकल में कम क्यों होता है? कारण क्या, जानते हो? हाँ या ना बोलो। जानते बहुत अच्छा हैं। अगर किसी को भी कहेंगे इस टापिक पर भाषण करो या क्लास कराओ तो कितना अच्छा क्लास करायेंगे! और बड़े निश्चय, नशे, फलक से भाषण भी करेंगे, क्लास भी करायेंगे। कराते हैं। बापदादा सबके क्लासेज़ सुनते हैं क्या-क्या बोलते हैं।

मुस्कराते रहते हैं, वाह! वाह बच्चे वाह! मूल बात है – बापदादा ने पहले भी सुनाया है यह रिवाइज कोर्स चल रहा है। तो बाप कहते हैं कि कारण एक ही है, ज्यादा भी नहीं है, एक ही कारण है और बापदादा समझते हैं कि कारण को निवारण करना मुश्किल भी नहीं है, बहुत सहज है। लेकिन सहज को मुश्किल बना देते हैं। मुश्किल है नहीं, बना देते हैं, क्यों? नशा मर्ज हो जाता है। एक ही कारण है जो भी धारणा की बातें सुनते हो, करते भी हो, चाहे शक्तियों के रूप में, चाहे गुणों के रूप में, धारणा की बातें बहुत अच्छी-अच्छी करते हो, इतनी अच्छी करते हो जो सुनने वाले चाहे अज्ञानी, चाहे ज्ञानी सुनकर बहुत अच्छा, बहुत अच्छा कहकर खूब तालियां बजाते हैं, बहुत अच्छा कहा। लेकिन, कितने बार 'लेकिन' आया? यह 'लेकिन' ही विघ्न डाल देता है। 'लेकिन' शब्द समाप्त होना अर्थात् बाप समान समीप आना और बाप के समीप आना अर्थात् समय को समीप लाना।

साकार में ब्रह्मा बाप रहा, निराकार की तो बात छोड़ो। साकार में सर्व प्राप्ति का साधन होते हुए, सर्व बच्चों की जिम्मेवारी होते हुए, सरकमस्टांश, समस्यायें आते हुए पास हो गये ना! पास विद ऑनर का सर्टीफिकेट ले लिया। विशेष कारण बेहद की वैराग्य वृत्ति। अभी सूक्ष्म सोने की जंजीर के लगाव, बहुत महीन सूक्ष्म लगाव बहुत हैं। कई बच्चे तो लगाव को समझते भी नहीं हैं कि यह लगाव है। समझते हैं - यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है। मुक्त होना है, नहीं। लेकिन ऐसे तो चलता ही है। अनेक प्रकार के लगाव बेहद के वैरागी बनने नहीं देते हैं। चाहना है बनें, संकल्प भी करते हैं - बनना ही है। लेकिन चाहना और करना दोनों का बैलेन्स नहीं है। चाहना ज्यादा है, करना कम है। करना ही है - यह वैराग्य वृत्ति अभी इमर्ज नहीं है। बीच-बीच में इमर्ज होती है, फिर मर्ज हो जाती है। समय तो करेगा ही लेकिन पास विद ऑनर नहीं बन सकते। पास होंगे लेकिन पास विद ऑनर नहीं। समय की रफ्तार तेज है, पुरुषार्थ की रफ्तार कम है। मोटा-मोटा पुरुषार्थ तो है लेकिन सूक्ष्म लगाव में बंध जाते हैं। बापदादा जब बच्चों के गीत सुनते हैं – उड़ आयें, उड़ आयें... तो सोचते हैं उड़ा तो लें लेकिन लगाव उड़ने देंगे या न इधर के रहेंगे न उधर के रहेंगे? अभी समय प्रमाण लगाव-मुक्त बेहद के वैरागी बनो।

24.2.98.. .. अभी बापदादा सभी बच्चों के चेहरे पर सदा फरिश्ता रूप, वरदानी रूप, दाता रूप, रहमदिल, अथक, सहज योगी वा सहज पुरुषार्थी का रूप देखने चाहते हैं। यह नहीं कहो बात ही ऐसी थी ना। कैसी भी बात हो लेकिन रूप मुस्कराता हुआ, शीतल, गम्भीर और रमणीकता दोनों के बैलेन्स का हो।

21.11.98.. .. चारों ओर की सेवाओं के समाचार बापदादा सुनते रहते हैं और दिल से सभी अथक सेवाधारियों को मुबारक भी देते हैं, सेवा बहुत अच्छे उमंग-उत्साह से कर रहे हैं और आगे भी करते रहो लेकिन सेवा और स्थिति का बैलेन्स थोड़ा-सा कभी इस तरफ झुक जाता है, कभी उस तरफ इसलिए सेवा खूब करो, बापदादा सेवा के लिए मना नहीं करते और ज़ोर-शोर से करो लेकिन सेवा और स्थिति का सदा बैलेन्स रखते चलो। स्थिति बनाने में थोड़ी मेहनत लगती है और सेवा तो सहज हो जाती है। इसलिए सेवा का बल थोड़ा स्थिति से ऊँचा हो जाता है। बैलेन्स रखो और बापदादा की, सर्व सेवा करने वाले आत्माओं की, संबंध-सम्पर्क में आने वाले ब्राह्मण परिवार की ब्लैसिंग लेते चलो। यह दुआओं का खाता बहुत जमा करो। अभी की दुआओं का खाता आप आत्माओं में इतना सम्पन्न हो जाए जो द्वापर से आपके चित्रों द्वारा सभी को दुआयें मिलती रहेंगी। अनेक जन्म में दुआयें देनी हैं लेकिन जमा एक जन्म में करनी हैं। इसलिए क्या करेंगे? स्थिति को सदा आगे रख सेवा में आगे बढ़ते चलो। क्या होगा, यह नहीं सोचो। ब्राह्मण आत्माओं के लिए अच्छा है, अच्छा ही होना है। लेकिन बैलेन्स

वालों के लिए सदा अच्छा है। बैलेन्स कम तो कभी अच्छा, कभी थोड़ा अच्छा। सुना क्या करना है? क्वेश्चन मार्क सोचने के हिसाब से आश्चर्यवत् होके सोचने को फिनिश करो, यह तो नहीं होगा, यह तो नहीं होगा....। वह स्थिति को नीचे ऊपर करता है। समझा।

जैसे सेवा में चांस लेने का संकल्प रहता है, चांस लें, ऐसे ही स्वस्थिति में आगे बढ़ने का भी चांस लेते रहना। अच्छा है ना! बापदादा देखेंगे कौन नम्बर वन अर्थात् बैलेन्स में विन प्राप्त करने वाले हैं।

22.10.94(अव्यक्त सन्देश) बच्चों ने प्रोग्राम भी अच्छा बनाया है। लेकिन प्रोग्राम वा प्लैन को सदा प्लेन बुद्धि बन प्रैक्टिकल में लाने से अर्थात् प्रोग्राम और स्व-प्रोग्रेस के बैलेन्स से ही सर्व की, बाप की ब्लैसिंग से सहज सफ़ल होना है। जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त बन विदेही स्थिति द्वारा कर्मातीत बनें, तो अव्यक्त ब्रह्मा की विशेष पालना के पात्र हो इसलिए अव्यक्त पालना का बाप को रेसपाण्ड देना – विदेही बनने का। सेवा और स्थिति के बैलेन्स का। ठीक है, मंजूर है? करना ही है।

27.8.97(अव्यक्त सन्देश) बाप और सेवा से बहुत-बहुत प्यार है इसलिए सेवा का लव और दोनों तरफ़ के लॉज़, दोनों का बैलेन्स रखना आवश्यक है, इससे ही सेवा में ब्लैसिंग मिलती है।

10.5.99(अव्यक्त सन्देश) उसके बाद फ़ारेन वालों की खास याद दी तो बापदादा सुनते सभी को दिल से बहुत-बहुत यादप्यार दे रहे थे। उस समय ऐसे लग रहा था जैसे बाप बच्चों के स्नेह में ही समय गये और बोले, सभी बच्चे सदा सर्विसएबल, सेन्सीबुल और इसेंसफुल का बैलेन्स रखते ब्लैसिंग लेते समीप और समान बनते चलो।

23.10.99.. ..बापदादा तो कहते हैं कि काफी समय एक्शन-कान्सेस रहते हो। ऐसे होता है ना? एक्शन-कान्सेस की मार्क्स तो मिलती हैं, वेस्ट तो नहीं जाता है लेकिन सोल-कान्सेस की मार्क और एक्शन कान्सेस की मार्क में अन्तर तो होगा ना। फ़र्क होता है ना? तो अभी बैलेन्स रखो। लिंक को तोड़ो नहीं, जोड़ते रहो क्योंकि मैजारिटी डबल विदेशी काम करने में भी डबल बिज़ी रहते हैं। बापदादा जानते हैं कि मेहनत बहुत करते हैं लेकिन बैलेन्स रखो। जितना समय निकाल सको, सेकण्ड निकालो, मिनट निकालो, निकालो जरूर। हो सकता है?

15.12.99.. .. डाक्टर्स से बापदादा पूछते हैं - कि मैडीकल कार्य में तो अच्छे हो लेकिन 'मैडीसिन और मैडीटेशन' – आप डाक्टर्स का दोनों में बैलेन्स है? जितना इस कार्य में बिज़ी हो और प्रोग्रेस करते जाते हो, इतना ही मैडीटेशन में भी बढ़ता जाता है। बढ़ता है? जो समझते हैं हमारा बैलेन्स रहता है, मैडीटेशन और मैडीसिन का काम करने में, वह हाथ उठाओ। बैलेन्स है? इन्हों का भी फोटो निकालो। यह सब काम में आने वाले हैं इसीलिए आपका फोटो निकाल रहे हैं। अच्छा।

1.1.2000.. .. इस नये वर्ष में ब्रह्मा बाप के द्वारा उच्चारे हुए महावाक्य सदा याद रखना - निराकारी, निरंहकारी साथ में नव निर्माणधारी। सदा निर्मान और निर्माण के कर्तव्य का बैलेन्स रखते उड़ते रहना।

19.3.2000.. .. ब्रह्मा बाप ने कहा कि एक विशेषता अभी जल्दी-से-जल्दी सभी बच्चे धारण कर लेंगे तो माला तैयार हो जायेगी। कौन सी विशेषता? तो यही कहा कि जितनी सर्विस में उन्नति की है, सर्विस करते हुए आगे बढ़े हैं। अच्छे आगे बढ़े हैं लेकिन एक बात का बैलेन्स कम है। वह यही बात कि निर्माण करने में तो अच्छे आगे बढ़ गये हैं लेकिन निर्माण के साथ निर्मान - वह है निर्माण और वह है निर्मान। मात्रा का अन्तर है। लेकिन निर्माण और निर्मान दोनों के बैलेन्स में अन्तर है। सेवा की उन्नति में निर्मानता के बजाए कहाँ-कहाँ, कब-कब स्व-अभिमान भी मिक्स हो जाता है। जितना सेवा में आगे बढ़ते हैं, उतना ही वृत्ति में, दृष्टि में, बोल में, चाल में निर्मानता दिखाई दे, इस बैलेन्स की अभी बहुत आवश्यकता है।

अभी तक जो सभी सम्बन्ध-सम्पर्क वालों से ब्लैसिंग मिलनी चाहिए वह ब्लैसिंग नहीं मिलती है। और पुरुषार्थ कोई कितना भी करता है, अच्छा है लेकिन पुरुषार्थ के साथ अगर दुआओं का खाता जमा नहीं है तो दाता-पन की स्टेज, रहमदिल बनने की स्टेज की अनुभूति नहीं होगी। आवश्यक है - स्व पुरुषार्थ और साथ-साथ बापदादा और परिवार के छोटे-बड़ों की दुआयें। यह दुआयें जो हैं - यह पुण्य का खाता जमा करना है। यह मार्क्स में एडीशन होती है। कितनी भी सर्विस करो, अपनी सर्विस की धुन में आगे बढ़ते चलो, लेकिन बापदादा सभी बच्चों में यह विशेषता देखने चाहते हैं कि सेवा के साथ निर्मानता, मिलनसार - यह पुण्य का खाता जमा होना बहुत-बहुत आवश्यक है। ऐसे नहीं सोचो - यह तो है ही ऐसा, यह तो बदलना नहीं है। जब प्रकृति को बदल सकते हो, एडजेस्ट करेंगे ना प्रकृति को? तो क्या ब्राह्मण आत्मा को एडजेस्ट नहीं कर सकते हो? अगेन्स्ट को एडजेस्ट करो, यह है – निर्माण और निर्मान का बैलेन्स। सुना!

20.2.2001.. ..जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त रूप में माइट है, और आप बच्चों को माइक बनाया, ऐसे आप माइट बनो और ऐसे माइक तैयार करो। हैं, बहुत अच्छे-अच्छे, उम्मींदवार फास्ट जाने वाले हैं, सिर्फ अब और ऐसी आत्माओं के कनेक्शन को बढ़ाने की आवश्यकता है। वह चाहते हैं क्या करें, कैसे करें, उन्हों को माइट बन विधि ऐसी सुनाओ जो लौकिक आक्युपेशन और अलौकिक सेवा दोनों का बैलेन्स रखते हुए लास्ट सो फास्ट, फास्ट सो फर्स्ट के लाइन में आ जाएँ। ऐसे हैं, प्रत्यक्ष होने हैं। सिर्फ कनेक्शन और करेन्ट दो, रूहानियत की करेन्ट, वायब्रेशन, वायुमण्डल की करेन्ट और विधि, जो निमित्त बनें कि बैलेन्स रखने वाली जीवन बहुत अच्छी और सहज है। ठीक है ना! क्या करना है, वह सुन लिया ना!

15.12.2001.. .. अभी वाणी और मनसा सेवा के बैलेन्स में बिजी हो जायेंगे तो ब्लैसिंग बहुत मिलेंगी। डबल खाता जमा हो जायेगा - पुरुषार्थ का भी और दुआओं का भी। तो संकल्प द्वारा, बोल द्वारा, वाणी द्वारा, कर्म द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा दुआयें दो और दुआयें लो।

अभी टीचर्स को मनसा सेवा में रेस करनी है। लेकिन ऐसे नहीं करना कि सारा दिन बैठ जाओ, मैं मनसा सेवा कर रही हूँ। कोई कोर्स करने वाला आवे तो आप कहो नहीं, नहीं मैं तो मनसा सेवा कर रही हूँ। कोई कर्मयोग का टाइम आवे तो कहो मनसा सेवा कर रही हूँ, नहीं। बैलेन्स चाहिए। कोई कोई को ज्यादा नशा चढ़ जाता है ना! तो ऐसा नशा नहीं चढ़ाना। बैलेन्स से ब्लैसिंग है। बैलेन्स नहीं तो ब्लैसिंग नहीं।

3.2.2002.... कोई आत्मा सम्पर्क में आये तो आप सिर्फ मैसेन्जर बन यही मैसेज दो कि साइलेन्स और साइंस दोनों का बैलेन्स कैसे रहे, यह परमात्मा की ब्लैसिंग दिला देंगे। अभी यही मैसेज देना है।

12.5.2001 अव्यक्त संदेश.. .. उसके बाद बाबा को जगदीश भाई का समाचार सुनाया। सुनते ही बाबा के नयनों में जगदीश जी प्रति स्नेह समय गया और बहुत दिल व जान से स्नेह दे रहे थे। फिर बोले बच्चे ने दधीचि ऋषि समान अपनी हड्डियां सेवा में लगा दी। शरीर की नॉलेज में और सेवा के उमंग में बैलेन्स कम रखा इसलिए बीमारी बढ़ गई और सहन करना पड़ता है। बापदादा सभी बच्चों को कहते हैं डबल नॉलेजफुल बनो - शरीर और सेवा के। लेकिन आसक्त होकर नहीं, साक्षी होकर बैलेन्स रखो। फिर भी बच्चे ने सेवा दिल से की है। सेवा के नये-नये प्लैन्स और प्रैक्टिकल करने के निमित्त बने हैं, पुण्य जमा है। इसलिए सर्व का स्नेह, दुआयें, प्यार रिटर्न में मिल रहा है।

बच्चा डबल नॉलेजफुल बनने का बैलेन्स नहीं रख सका, सेवा खूब की, शरीर पर ध्यान कम दिया इसलिए बीमारी बढ़ गई और तकलीफ सहन करनी पड़ी। लेकिन मृत्यु बहुत सहज हुआ। यह इसकी सेवा का पुण्य है, जो ऐसे सहज गया जो सामने वालों को भी पता नहीं चला।

बाबा ने कहा कि जो याद में रहकर, याद और सेवा का बैलेन्स रखकर कोई भी कार्य करते हैं उसका यादगार बन जाता है। तो आप अपना यादगार छोड़कर आये हैं, जो आपको सब किसी ना किसी रीति से याद करते रहेंगे।

5.7.2001 अव्यक्त संदेश.. .. बापदादा बच्चों से यही चाहते हैं कि सेवा की वृद्धि के प्रोग्राम तो बहुत अच्छे बनाते हो लेकिन रूहानी स्वमान और सेवा में बैलेन्स आवश्यक है क्योंकि बापदादा और बच्चे भी जानते हैं कि अब समय की हालतों प्रमाण पहले स्व-स्थिति फिर सेवा की वृद्धि चाहिए। अब तो दिन प्रतिदिन ऐसी विचित्र-विचित्र परिस्थितियां आने वाली हैं जो आपके ख्याल-ख्वाब में भी नहीं होंगी, तो उन परिस्थितियों को सहज पार करने के लिए बच्चों की भी विचित्र आत्मिक स्थिति, अशरीरी स्थिति ज़रूरी है।

जैसे निमित्त विशेष दादियों का सिम्बल है, ऐसे सम्मान और स्वमान के बैलेन्स में दादियों समान सैम्पुल बनें''।

19.03.2002 अव्यक्त संदेश.. .. बापदादा तो यही चाहते हैं कि अब एक ही समय मनसा शक्ति द्वारा अनुभूति कराने का अनुभव और वाणी की शक्ति द्वारा सन्देश देने का कर्त्तव्य दोनों का बैलेन्स हो। अभी तक इसमें कमी

है। इसलिए जब तक दोनों साथ-साथ का अभ्यास कम है तो योग भट्ठी के प्रोग्राम्स होते भी मन-बुद्धि फ्री है तो और ही व्यर्थ संकल्प बोल-चाल में मन ज्यादा जायेगा, इसलिए सेवा के प्रोग्राम्स भी बनाने पड़ेंगे लेकिन टू मच जल्दी और एक दो को देख, हमारे वर्ग का भी प्रोग्राम 3 बार हो यह रेस की भावना बदलनी चाहिए। एक प्रोग्राम के बाद एक दिन विशेष याद का रखना ज़रूरी है, जिसमें स्थूल कर्म करते भी याद का चार्ट अच्छा रखने का, कर्म और योग के पावरफुल अभ्यास का अटेन्शन ज़रूरी है। सिर्फ सेवा में बिजी रहना है, यह आवश्यकता नहीं है लेकिन बैलेन्स द्वारा आत्माओं को अनुभूति करानी है। इसके लिए अपनी श्रेष्ठ स्थिति, अपना शुभ चिन्तन शुभ वृत्ति, निरसंकल्प स्टेज में बहुत ध्यान देना ज़रूरी है।

05.04.2002 अव्यक्त संदेश ...बापदादा अब इशारा देते हैं कि मनसा सेवा अपनी श्रेष्ठ स्टेज द्वारा, वाणी की सेवा मधुरता, निर्माणता और रूहानियत द्वारा और कर्मणा में कर्म और योग के बैलेन्स द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क में सर्व शक्तियों, गुणों की विशेषता द्वारा सेवा करने में ही सहज सफलता है।

8.10.2002...बापदादा यही चाहते हैं कि वर्तमान समय प्रमाण लव और लॉ का बैलेन्स रखना पड़ता है, लेकिन लॉ और लव का बैलेन्स मिलकरके लॉ नहीं लगे। लॉ में भी लव महसूस हो। जैसे साकार स्वरूप में बाप को देखा। लॉ के साथ लव इतना दिया जो हरेक के मुख से यही निकलता कि बाबा का मेरे से प्यार है। मेरा बाबा है। लॉ ज़रूर उठाओ लेकिन लॉ के साथ लव भी दो। सिर्फ लॉ नहीं। सिर्फ लॉ से कहाँ-कहाँ आत्मायें कमजोर होने के कारण दिलशिकस्त हो जाती हैं। जब स्वयं आत्मिक प्यार की मूर्ति बनेंगे तब दूसरों के प्यार की, (आत्मिक प्यार, दूसरा प्यार नहीं) आत्मिक प्यार अर्थात् हर समस्या को हल करने में सहयोगी बनना। सिर्फ शिक्षा देना नहीं, शिक्षा और सहयोग साथ-साथ देना – ये है आत्मिक प्यार की मूर्ति बनना। तो आज विशेष बापदादा हर ब्राह्मण आत्मा को, चाहे देश, चाहे विदेश चारों ओर के सर्व बच्चों को यही विशेष अण्डरलाइन करते हैं कि आत्मिक प्यार की मूर्ति बनो। और आत्माओं के आत्मिक प्यार की प्यास बुझाने वाले दाता-देवता बनो। ठीक है ना! अच्छा।

15.12.2002.. .. बापदादा देख रहे थे कि स्वमान का निश्चय और उसका रूहानी नशा दोनों का बैलेन्स कितना रहता है? निश्चय है - नॉलेजफुल बनना और रूहानी नशा है - पॉवरफुल बनना। तो नॉलेजफुल में भी दो प्रकार देखे - एक है नॉलेजफुल। दूसरे हैं नॉलेजेबुल (ज्ञान स्वरूप) तो अपने से पूछो - मैं कौन? बापदादा जानते हैं कि बच्चों का लक्ष्य बहुत ऊंचा है। लक्ष्य ऊंचा है ना, क्या ऊंचा है? सभी कहते हैं बाप समान बनेंगे। तो जैसे बाप ऊंचे ते ऊंचा है तो बाप समान बनने का लक्ष्य कितना ऊंचा है! तो लक्ष्य को देख बापदादा बहुत खुश होते हैं लेकिन.... लेकिन बतायें क्या? लेकिन क्या...वह टीचर्स वा डबल फारेनर्स सुनेंगे? समझ तो गये होंगे। बापदादा लक्ष्य और लक्षण समान चाहते हैं।

29.8.2002 अव्यक्त संदेश.. ..इस वातावरण के पोलूशन वा अन्य कोई भी समस्याओं का बीज क्या है? आप सब जानते हो कि इस एक्सटरनल पोलूशन के साथ मूल मनुष्यों के मन और दिमाग का पोलूशन भी काफी सीमा पार कर गया है। इसलिए समाधान के प्लैन वा विधि बहुत अच्छी बनती है, लेकिन वह आधी तो प्लैन तक रह जाती और मुश्किल से आधी प्रैक्टिकल में आती है, कारण मानव के मन में आजकल वेस्ट थाट्स, निगेटिव थाट्स का बहुत ही फोर्स का पोलूशन होने कारण जो सही समाधान वा विधि है उसके लिए न समय है, न हिम्मत-उमंग आता है, अपने ही टेन्शन अप्राप्तियों और अल्पकाल की इच्छाओं में मूंझे रहते हैं इसलिए यही शुभ संकल्प है कि एकस्टरनल पोलूशन वा अन्य समस्याओं के साथ सूक्ष्म बीज मेंटल पोलूशन के समाधान का भी कोई ठोस प्लैन बनें, जिससे आपका श्रेष्ठ संकल्प विश्व परिवर्तन का प्लैन और प्रैक्टिकल का बैलेन्स हो जाए, यही शुभ संकल्प की ब्लैसिंग आप सबके प्रति है।

29.9.2002 अव्यक्त संदेश.. .. समय की समीपता और सम्पूर्णता के बैलेन्स को सदा चेक करते शक्ति, स्नेह, संगठन को शक्तिशाली बनाते चलो। सदा हर संकल्प, बोल और कर्म में दुआयें देते, दुआयें लेते रहो।

4.2.2003 अव्यक्त संदेश.. .. अपने प्रति विघ्न-विनाशक बनने के लिए भी अब सिर्फ वाणी द्वारा वा भाग-दौड़ की सेवा द्वारा सफलता नहीं लेकिन योग शक्ति साथ सेवा चाहिए। योग शक्ति और वाणी की शक्ति दोनों साथ में इमर्ज चाहिए क्योंकि सिर्फ वाणी की शक्ति अच्छा है, अच्छा है यहाँ तक लाती है लेकिन योग शक्ति, वाणी की शक्ति का बैलेन्स अच्छा बनने की प्रेरणा देगी।

21.3.2003 अव्यक्त संदेश.. .. समय तो दिनप्रतिदिन हलचल का बढ़ना ही है। ऐसे समय के लिए पॉवरफुल योग के द्वारा शक्तिशाली वायब्रेशन फैलाने और सेवा का प्रोग्राम बनाने में बैलेन्स रखना ज़रूरी है।

18.1.2004.. .. सेवा बहुत अच्छी करो लेकिन सेवा और स्व दोनों कम्बाइन्ड हों। जैसे बापदादा कम्बाइण्ड है ना। आत्मा और शरीर कम्बाइण्ड है ना! ऐसे स्व स्थिति और सेवा दोनों कम्बाइण्ड। परसेन्टेज़ में कोई कमी नहीं हो। कभी सेवा की परसेन्टेज़ ज्यादा, कभी स्व की परसेन्टेज़ ज्यादा, नहीं, सदा बैलेन्स। तो आपके बैलेन्स द्वारा विश्व की आत्माओं को ब्लैसिंग मिलती रहेगी। तो अभी विश्व की आत्माओं को ब्लैसिंग चाहिए। मेहनत नहीं चाहिए, ब्लैसिंग चाहिए। तो आपका बैलेन्स स्वत: ही ब्लैसिंग दिलायेगी। अच्छा।

15.11.2005.. .. आज बापदादा सभी को चाहे सम्मुख बैठे हैं, चाहे दूर बैठे भी बाप के दिल में बैठे हैं, सभी को आज का दिन मेहनत मुक्त बनाने चाहते हैं। बनेंगे? ताली तो बजा दी, बनेंगे? कल से कोई दादियों के पास नहीं आयेगा। मेहनत नहीं करायेंगे? मौज से मिलेंगे। ज़ोन हेड के पास नहीं जायेंगे, कम्पलेन नहीं करेंगे, कम्पलीट। ठीक है? अभी हाथ उठाओ। देखो सोच के हाथ उठाना, ऐसे नहीं उठा लेना। पहली लाइन नहीं उठा रही है। आप लोगों ने उठाया। कोई कम्पलेन नहीं। कोई मेरा मेरा नहीं, कोई मेरा नहीं। मैं भी नहीं, मेरा भी नहीं, खत्म। देखो वायदा तो किया है, अच्छा है मुबारक हो लेकिन क्या है, वायदे का फायदा नहीं उठाते हो। वायदा बहुत जल्दी

कर लेते हो लेकिन फायदा उठाने के लिए रोज़ एक तो रियलाइजेशन दूसरा रिवाइज करो, वायदे को रोज़ रिवाइज करो क्या वायदा किया? अमृतवेले मिलने के बाद वायदा और फायदा दोनों के बैलेन्स का चार्ट बनाओ। वायदा क्या किया? और फायदा क्या उठा रहे हैं? रियलाइज़ करो, रिवाइज करो, बैलेन्स हो जायेगा तो ठीक हो जायेगा।

31.3.2007.. .. ''सपूत बन अपनी सूरत से बाप की सूरत दिखाना, निर्माण (सेवा) के साथ निर्मल वाणी, निर्मान स्थिति का बैलेन्स रखना''

सदा निर्मान, कार्य करते भी निर्मान, निर्माण और निर्मान दोनों का बैलेन्स चाहिए। क्यों? निर्मान बनकर कार्य करने में सर्व द्वारा दिल का स्नेह और दुआयें मिलती हैं। बापदादा ने देखा कि निर्माण अर्थात् सेवा के क्षेत्र में आजकल सभी अच्छे उमंग उत्साह से नये-नये प्लैन बना रहे हैं। इसकी बापदादा चारों ओर के बच्चों को मुबारक दे रहे हैं। बापदादा के पास निर्माण के, सेवा के प्लैन बहुत अच्छे-अच्छे आये हैं। लेकिन बापदादा ने देखा कि निर्माण के कार्य तो बहुत अच्छे लेकिन जितना सेवा के कार्य में उमंग-उत्साह है उतना अगर निर्मान स्टेज का बैलेन्स हो तो निर्माण अर्थात् सेवा के कार्य में और सफलता और ज्यादा प्रत्यक्ष रूप में हो सकती है। बापदादा ने पहले भी सुनाया है - निर्मान स्वभाव, निर्मान बोल और निर्मान स्थिति से सम्बन्ध-सम्पर्क में आना, देवताओं का गायन करते हैं लेकिन है ब्राह्मणों का गायन, देवताओं के लिए कहते हैं उनके मुख से जो बोल निकलते वह जैसे हीरे मोती, अमूल्य, निर्मल वाणी, निर्मल स्वभाव। अभी बापदादा देखते हैं, रिजल्ट सुना दें ना, क्योंकि इस सीजन का लास्ट टर्न है। तो बापदादा ने देखा कि निर्मल वाणी, निर्मान स्थिति उसमें अभी अटेन्शन चाहिए।

31.3.2007.. .. मधुबन, मधुबन ही है और आखिर में सभी को कहाँ पहुंचना है, मधुबन में ही पहुंचेंगे ना। सेवा अच्छी करते हो। ड्युटी अपनी अच्छी बजाते हो, सिर्फ जो आज बापदादा ने कहा है ना, स्व तीव्र पुरुषार्थ और सेवा दोनों का बैलेन्स इसका आपस में संगठन कर बैलेन्स करके दिखाओ। अगली सीजन में क्या करेंगे? मधुबन वाले करेंगे? आपस में मीटिंग कर दादियों का भी सहयोग लेकर बैलेन्स का जलवा दिखाओ। जिसको देखे वह जैसे कोई हालचाल पूछते हैं ना, आपका हाल क्या है? आपका चाल क्या है? तो जो भी आवे वह सबका कुशल हाल और फरिश्ते की चाल देखे।

अभी सेवा और स्व दोनों का बैलेन्स रखो। ऐसा सेवास्थान बनाओ जो सबके आगे एक एक्जैम्पुल हो। जैसे म्युजियम होता है ना तो सब एड्रेस देते हैं ना, शहर में कहाँ भी जाओ, तो एड्रेस देते हैं यहाँ जाओ, यहाँ जाओ। ऐसे जिसको शान्ति चाहिए, हिम्मत चाहिए, उमंग उत्साह चाहिए वह आपकी एड्रेस में पहुंचे। फैल जावे, अगर शान्ति का वायब्रेशन लेना हो तो यहाँ जाओ, अगर हिम्मत भरनी हो तो यहाँ जाओ। ऐसे स्पेशल बनाओ। ठीक है ना! बाकी म्युजियम तो जहाँ तहाँ आध्यात्मिक म्यूजियम भी हैं, भाषण भी करते सब कुछ है। लेकिन कोई विशेषता ऐसी स्थान की बनाओ जो ब्राह्मणों में भी और बाहर में भी यह प्रसिद्ध हो जाए कि यह चाहिए तो यहाँ

जाओ क्योंकि आजकल लोगों को सुनने की आदत तो है लेकिन अनुभव करने की आदत नहीं है तो अगर अनुभव करने चाहें तो आपके पास आयें, यह प्रसिद्ध हो जाए कि अगर आपको अनुभव करना है तो यह एड्रेस है।

15.10.2007.. .. रोज़ वायदा करते हो बाप समान बनना ही है। हाथ उठवाते हैं तो सभी क्या कहते हैं? लक्ष्मी नारायण बनना है। बापदादा को खुशी होती है, वायदा बहुत अच्छे अच्छे करते हैं लेकिन वायदे का फायदा नहीं उठाते हैं। वायदा और फायदा का बैलेन्स नहीं जानते। वायदों का फाइल बापदादा के पास बहुत बहुत बहुत बड़ा है, सभी का फाइल है। ऐसे ही फायदे का भी फाइल हो, बैलेन्स हो, तो कितना अच्छा लगेगा।

30.11.2007.. .. जो भी निमित्त बने हुए हैं उन्हों को आजकल के वायुमण्डल प्रमाण स्वयं तो सन्तुष्ट रहना ही है लेकिन सन्तुष्ट करना भी है। असन्तुष्टता का वायुमण्डल में प्रभाव नहीं हो क्यों कि आजकल सन्तुष्टता सबको चाहिए। लेकिन िहम्मत नहीं है। इसीलिए बीच-बीच में कुछ न कुछ ऐसा परवश होके कर लेते हैं लेकिन उन्हों को भी कुछ शिक्षा, कुछ क्षमा, कुछ रहम, कुछ आत्मिक स्नेह उसकी आवश्यकता है और देखा जाता है कि वायुमण्डल में मैजारिटी को बैलेन्स रखना नहीं आता। बैलेन्स से शिक्षा भी हो और फिर साथ-साथ उनको हिम्मत भी दो। सिर्फ शिक्षा से, अभी सभी शिक्षक बन गये हैं, इसीलिए शिक्षा के साथ हिम्मत और स्नेह दिल का, बाहर का नहीं लेकिन दिल का स्नेह दोनों का बैलेन्स रख करके देना है। और ऐसे प्लैन बनाओ जो चारों ओर कोई न कोई ऐसा प्लैन चलता रहे।

15.12.2007....बापदादा ने तो सुनाया कि सेवा में अच्छी रूचि भी रख रहे हैं और आगे भी बढ़ रहे हैं। लेकिन... लेकिन है स्व उन्नति, स्व परिवर्तन, स्व के अटेन्शन की सेवा। दोनों का बैलेन्स चाहिए। वह बैलेन्स अभी बनता जा रहा है। वह बैलेन्स जरूर अटेन्शन में रखो। आपका बैलेन्स होगा और विश्व में नारा लगेगा। अभी कुछ न कुछ क्रान्ति होनी ही है। अच्छा।

05.03.2008.. .. हर एक स्थान से बापदादा रिजल्ट चाहते हैं। यह एक मास ऐसा नेचरल नेचर बनाओ क्योंकि नेचरल नेचर जल्दी में बदलती नहीं है। तो नेचरल नेचर बनाओ जो बताया ना - सदा आपके चेहरे से बाप के गुण दिखाई दें, चलन से बाप की श्रीमत दिखाई दे। सदा मुस्कराता हुआ चेहरा हो। सदा सन्तुष्ट रहने और सन्तुष्ट करने की चाल हो। हर कर्म में, कर्म और योग का बैलेन्स हो।

05.02.2009.. .. अगर आप थोड़े समय को एक एक सेकण्ड को सफल करने का, क्योंकि थोड़े समय में बहुत पाना है, एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं गंवाना, कर्मयोगी बनके चलना, कर्म नहीं छोड़ना है लेकिन कर्म में योग एड करते, कर्म और योग का बैलेन्स रखना है। तो बैलेन्स रखने वाले को ब्लैसिंग एकस्ट्रा मिलती है।

जैसे सेवा पर अटेन्शन देते हो तो सेवा वृद्धि को तो पाई है ना, बापदादा खुश है लेकिन अभी धारणा के ऊपर अटेन्शन और चाहिए। क्योंकि अन्त में सेवा चाहेंगे तो भी नहीं कर सकेंगे, अभी कर ली सो कर ली, उस समय

फरिश्ता लाइफ या अशरीरी बनने का सेकण्ड में बिन्दु लगाने का यही काम में आना है। और अचानक होना है। इसका अभ्यास अगर सेवा भी की, लेकिन इसका अभ्यास कम होगा, सेवा में ही लगे रहे, सेवा में लगना है लेकिन दोनों का बैलेन्स चाहिए। बापदादा बार-बार इशारा दे रहा है कि अचानक होना है और ऐसी सरकमस्टांश में होना है इसीलिए बाप को उल्हना कोई नहीं दे कि आपने बताया नहीं। बार-बार भिन्न-भिन्न ईशारे दे रहे हैं।

07.04.2009.....आजकल सेवा द्वारा आपकी प्रशन्सा बढ़ेगी, आपकी प्रकृति दासी होगी । आपको अनुभव करेंगे, साधन बढ़ेंगे लेकिन बेहद की वैराग्य वृत्ति से साधन और साधना का बैलेन्स रहेगा। जैसे आप लोगों को प्रवृत्ति में रहने वालों को दृष्टान्त देते हो कि सब कुछ करते कर्मयोगी कमल पुष्प के समान रहो। ऐसे आप सभी को भी सेवा करते, साधन मिलते, साधना और साधन का बैलेन्स रहेगा। तो आजकल एडीशन सेवा के साथ बेहद की वैराग्य वृत्ति भी आवश्यक है। चलते फिरते भी अनुभव करे कि यह विशेष आत्मायें हैं। सिर्फ योग में बैठने के टाइम नहीं, भाषण करने के टाइम नहीं लेकिन चलते फिरते भी आपके मस्तक से शान्ति, शक्ति, खुशी की अनुभूति हो क्योंकि समय प्रति समय अभी समय बदलता जायेगा।

11. शीतलता

13.3.69.. ..जब देवियों के चित्र बनाते हें। काली के सिवाए बाकी जो भी देवियाँ हैं उन्हों के नयन हमेशा गीले दिखाते हैं। प्रेम में जैसे डूबे हुए नयन दिखाते हैं और साथ-साथ जो उनका चेहरा आदि बनाते हैं तो उनकी सूरत से ही शक्ति के संस्कार देखने में आते हैं। लेकिन नयनों में प्रेम, दया, शीतलता देखने में आती है। मातापन के प्रेम के संस्कार इन नयनों से दिखाई पड़ते हैं। उन्हों के ठहरने का ढंग वा सवारी अस्त्र-शस्त्र दिखाते हैं, वह शक्ति रूप प्रगट करता है। तो ऐसे ही आप शक्तियों में भी दोनों गुण समान होने चाहिए। जितना शक्ति स्वरूप उतना ही प्रेम स्वरूप। अभी तक दोनों नहीं हैं। कभी प्रेम की लहर में कभी शक्ति रूप में स्थित रहते हो। दोनों ही साथ और समान रहें। यह है शक्तिपन की अन्तिम सम्पूर्णता की निशानी।

23.7.69.. .. जब स्व-स्थिति में स्थित होगे तो भी अपने जो गुण हैं वह तो अनुभव होंगे ही। जिस स्थान पर पहुँचा जाता है उसके गुण ना चाहते हुए भी अनुभव होते हैं। आप किसी शीतल स्थान पर जायेंगे तो ना चाहते हुए भी शीतलता का अनुभव होगा। यह भी ऐसा ही है।

15.9.69.. .. आज माताओं को चन्द्रमा का टीका लगाया है। चन्द्रमा के जो गुण हैं वो अपने में धारण तो करने ही हैं परन्तु चन्द्रमा का सूर्य के साथ सम्बन्ध भी गहरा होता है। तो चंद्रमा जैसा सम्बन्ध और गुण धारण करने हैं। और चंद्रमा का कर्तव्य कौन-सा है? शीतलता के साथ-साथ रोशीनी भी देता है। अच्छा अब विदाई।

5.4.70.. .. देवियों के चित्र बहुत देखते हैं तो उनमें क्या देखा है? जितना ज्वाला उतनी शीतलता। कर्त्तव्य ज्वाला का है। सूरत शीतलता की है। यह है अन्तिम स्वरूप।

5.2.75.. .. रूहानी रॉयल्टी वाले के सम्पर्क में जो भी आत्मा आये, उसे थोड़े समय में भी, उस आत्मा के दातापन की व वरदातापन की अनुभूति होनी चाहिए, शीतलता व शान्ति की अनुभूति होनी चाहिए जो हर-एक के मन में यह गुणगान हो कि यह कौनसा फरिश्ता था, जो सम्पर्क में आया।

21.5.77.. .. ऐसा सेवाधारी, स्वयं के रात-दिन के आराम को भी त्यागकर सेवा में ही आराम महसूस करेंगे। ऐसे सेवाधारी हो? सेवाधारी के सम्पर्क में रहने वाली वा सम्बन्ध में आने वाली आत्माएं उनकी समीपता वा साथ से ऐसा अनुभव करेंगे जैसे शीतलता वा शक्ति, शान्ति के झरने के नीचे बैठे हैं, वा कोई सहारे वा किनारे की प्राप्ति का अनुभव करेंगे। ऐसे सेवाधारी के संकल्प वा शुभ भावनाएं, शुभ कामनाएं, सूर्य की किरणों मुवाफिक चारों ओर फैलेंगी।

2.6.77.. ..जैसे बादलों के बीच छिपा हुआ चाँद आकर्षित कर रहा है। ऐसे बहुत श्रेष्ठ वस्तु वा श्रेष्ठ व्यक्ति हैं ऐसे अनुभव करेंगे। लेकिन नालेज न होने के कारण बादलों के बीच में अभी अनुभव करेंगे। बादलों के बीच थोड़ी किरणें थोड़ी शीतलता नज़र आयेगी और आकर्षण होंगे स्पष्ट पाने लिए। तो पूर्वजों की प्रत्यक्षता की सेवा अर्थ निमित्त बन रहे हैं – कोई साकार में कोई आकार में। लेकिन सदा एक दो के सहयोगी हैं – ऐसा है ना?

2.1.81.. .. यह सेवा का यज्ञ है – विश्व की आत्माओं में वाणी द्वारा हल चलाना। हल चलाने में हलचल होती है। उसके बाद जो बीज डालेंगे उसको शीतलता के रूप से, साइलेन्स की पावन से शीतल जल डालेंगे तभी शीतल जल पड़ने से फल निक-लेगा। ऐसे नहीं समझना कि महायज्ञ हुआ तो सेवा का बहुत पार्ट समाप्त किया। यह तो हल चला करके बीज डालेंगे। मेहनत ज्यादा इसमें लगती है। उसके बाद फल निकालने के लिए महादानी के बाद वरदानी की सेवा करनी पड़े। वरदानी मूर्त्त अर्थात् स्वयं सदा वरदानों से सम्पन्न।

24.10.81.. .. आज रूहानी माशूक रूहानी आशिकों से मिलने आये हैं! कहाँ मिलने आये हैं? सबसे ज्यादा मिलने का प्रिय स्थान कौन-सा है? रूहानी माशूक आप आशिकों को आदि के समय में कहाँ पर ले जाते थे, याद है ना? (सागर पर) तो आज भी सर्व ख़ज़ानों और गुणों से सम्पन्न, सागर के कण्ठे पर, साथ में ऊंची स्थिति की पहाड़ी पर, शीतलता की चाँदनी में रूहानी माशूक, रूहानी आशिकों से मिल रहे हैं। सागर है सम्पन्नता का और पहाड़ी है ऊची स्थिति की। सदा शीतल-स्वरूप है चाँदनी। तीनों ही साथ में हैं।

24.3.82.. . पवित्रता के सम्पूर्णता की परिभाषा है – सदा स्वयं में भी सुख-शान्ति स्वरूप और दूसरों को भी सुख-शांति की प्राप्ति का अनुभव कराने वाले। ऐसी पवित्र आत्मा अपनी प्राप्ति के आधार पर औरों को भी सदा सुख और शान्ति, शीतलता की किरणें फैलाने वाली होगी। तो समझा सम्पूर्ण पवित्रता क्या है?

5.12.84.. .. जैसे झरना बह रहा हो तो जो भी झरने के नीचे आयेगा उसको शीतलता का, फ्रेश होने का अनुभव होगा ना! ऐसे वह भी शान्ति, शक्ति, प्रेम, आनंद, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करते जाएं। आज भी साइंस के साधन गर्मीसर्दी की अनुभूति कराते हैं ना। सारे कमरे में ही वह लहर फैल ज़ाती है। तो क्या यह इतनी शिव-शक्तियाँ, पाण्डव, मास्टर शान्ति, शक्ति सबके सागर...यह लहर नहीं फैला सकते!

21.5.85.. .. आज तारामण्डल का सैर करते भिन्न-भिन्न सितारों को देख बापदादा हर्षित हो रहे हैं। कैसे हर एक सितारा – ज्ञान सूर्य द्वारा सत्यता की लाइट माइट ले बाप समान सत्यता की शक्ति सम्पन्न सत्य स्वरूप बने हैं। और ज्ञान चन्द्रमा द्वारा शीतलता की शक्ति धारण कर चन्द्रमा समान 'शीतला' स्वरूप बने हैं। यह दोनों शक्तियाँ – 'सत्यता और शीतलता' सदा सहज सफ़लता को प्राप्त कराती हैं। एक तरफ़ सत्यता की शक्ति का ऊँचा नशा दूसरे तरफ़ जितना ऊँचा नशा उतना ही शीतलता के आधार से कैसे भी उल्टे नशे वा क्रोधित आत्मा को भी शीतल बनाने वाले। कैसा भी अहंकार के नशे में 'मैं, मैं' करने वाला हो लेकिन शीतलता की शक्ति से मैं, मैं के बजाए 'बाबा-बाबा' कहने लग पड़े। सत्यता को भी शीतलता की शक्ति से सिद्ध करने से सिद्धि प्राप्त होती है। नहीं तो सिवाए शीतलता की शक्ति के सत्यता को सिद्ध करने के लक्ष्य से, करते सिद्ध हैं लेकिन अज्ञानी, सिद्ध को जिद्द समझ लेते हैं। इसलिए सत्यता और शीतलता दोनों शक्तियाँ समान और साथ चाहिए। क्योंकि आज के विश्व का हर एक मानव किसी न किसी अग्नि में जल रहा है। ऐसी अग्नि में जलती हुई आत्मा को पहले शीतलता की शक्ति से अग्नि को शीतल करो तब शीतलता के आधार से सत्यता को जान सकेंगे। शीतलता की शक्ति अर्थात् आत्मिक स्नेह की शक्ति। चन्द्रमा 'माँ' स्नेह की शीतलता से कैसे भी बिगड़े हुए बच्चे को बदल लेती है। तो स्नेह अर्थात् शीतलता की शक्ति किसी भी अग्नि में जली हुई आत्मा को शीतल बनाए सत्यता को धारण कराने के योग्य बना देती है। पहले चन्द्रमा की शीतलता से योग्य बनते फिर ज्ञान सूर्य के सत्यता की शक्ति से 'योगी' बन जाते! तो ज्ञान चन्द्रमा के शीतलता की शक्ति बाप के आगे जाने के योग्य बना देती है। योग्य नहीं तो योगी भी नहीं बन सकते हैं। तो सत्यता जानने के पहले शीतल हो? सत्यता को धारण करने की शक्ति चाहिए। तो शीतलता की शक्ति वाली आत्मा स्वयं भी, संकल्पों की गति में, बोल में, सम्पर्क में हर

परिस्थिति में शीतल होगी। संकल्प की स्पीड फ़ास्ट होने के कारण वेस्ट भी बहुत होता और कन्ट्रोल करने में भी समय जाता है। जब चाहें तब कन्ट्रोल करें वा परिवर्तन करें। इसमें समय और शक्ति ज़्यादा लगानी पड़ती। यथार्थ गति से चलने वाले अर्थात् शीतलता की शक्ति स्वरूप रहने वाले व्यर्थ से बच जाते हैं। एक्सीडेंट से बच जाते। यह क्यों, क्या, ऐसा नहीं वैसा इस व्यर्थ फ़ास्ट गति से छूट जाते हैं। जैसे वृक्ष की छाया किसी भी राही को आराम देने वाली है, सहयोगी है। ऐसे शीतलता की शक्ति वाला अन्य आत्माओं को भी अपने शीतलता की छाया से सदा सहयोग का आराम देता है। हर एक को आकर्षण होगा कि इस आत्मा के पास जाए दो घड़ी में भी शीतलता की छाया में शीतलता का सुख, आनन्द लेवें। जैसे चारों ओर बहुत तेज़ धूप हो तो छाया का स्थान ढूँढेंगे ना। ऐसे आत्माओं की नजर वा आकर्षण ऐसी आत्माओं तरफ़ जाती है। अभी विश्व में और भी विकारों की आग तेज़ होनी है – जैसे आग लगने पर मनुष्य चिल्लाता है ना। शीतलता का सहारा ढूँढता है। ऐसे यह मनुष्य आत्मायें, आप शीतल आत्माओं के पास तड़पती हुई आयेंगी। ज़रा-सा शीतलता के छींटे भी लगाओ। ऐसे चिल्लायेंगी। एक तरफ़ विनाश की आग, दूसरे तरफ़ विकारों की आग, तीसरे तरफ़ देह और देह के संबंध, पदार्थ के लगाव की आग, चौथे तरफ़ पश्चाताप की आग। चारों ओर आग ही आग दिखाई देगी। तो ऐसे समय पर आप शीतलता की शक्ति वाली शीतलाओं के पास भागते हुए आयेंगे। सेकण्ड के लिए भी शीतल करो। ऐसे समय पर इतनी शीतलता की शक्ति स्वयं में जमा हो जो चारों ओर की आग का स्वयं में सेक न लग जाए। चारों तरफ़ की आग मिटाने वाले शीतलता का वरदान देने वाले शीतला बन जाओ। अगर ज़रा भी चारों प्रकार की आग में से किसी का भी अंश मात्र रहा हुआ होगा तो चारों ओर की आग अंश मात्र रही हुई आग को पकड़ लेगी। जैसे आग, आग को पकड़ लेती है ना। तो यह चेक करो।

विनाश ज्वाला की आग्नि से बचने का साधन – निर्भयता की शक्ति है निर्भयता, विनाश ज्वाला के प्रभाव से डगमग नहीं करेगी। हलचल में नहीं लाएगी। निर्भयता के आधार से विनाश ज्वाला में भयभीत आत्माओं को शीतलता की शक्ति देंगे। आत्मा भय की अग्नि से बच शीतलता के कारण खुशी में नाचेगी। विनाश देखते भी स्थापना के नजारे देखेंगे। उनके नयनों में एक आँख में मुक्ति-स्वीट होम दूसरी आँख में जीवन मुक्ति अर्थात् स्वर्ग समाया हुआ होगा। उसको अपना घर, अपना राज्य ही दिखाई देगा। लोग चिल्लायेंगे हाय गया, हाय मरा और आप कहेंगे अपने मीठे घर में, अपने मीठे राज्य में गया। नथिंग न्यू। यह घुँघरू पहनेंगे। हमारा घर, हमारा राज्य – इस खुशी में नाचते-गाते साथ चलेंगे। वह चिल्लायेंगे और आप साथ चलेंगे। सुनने में ही सबको खुशी हो रही है तो उस समय कितनी खुशी में होंगे! तो चारों ही आग से शीतल हो गये हो ना? सुनाया ना – विनाश ज्वाला से बचने का साधन है – 'निर्भयता'। ऐसे ही विकारों की आग के अंश मात्र से बचने का साधन है – अपने आदि-अनादि वंश को याद करो। अनादि बाप के वंश सम्पूर्ण सतोप्रधान आत्मा हूँ। आदि वंश-देव आत्मा हूँ। देव आत्मा 16 कला सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी है। तो अनादि-आदि वंश को याद करो तो विकारों का अंश भी समाप्त हो जायेगा। ऐसे ही तीसरी देह, देह के सम्बन्ध और पदार्थ के ममता की आग – इस अग्नि से बचने का साधन है – बाप को संसार बनाओ। बाप ही संसार है तो बाकी सब असार हो जायेगा। लेकिन करते क्या हैं वह फिर दूसरे दिन सुनायेंगे। बाप ही संसार है यह याद है तो न देह, न सम्बन्ध, न पदार्थ रहेगा। सब समाप्त। चौथी बात-पश्चाताप की आग– इसका सहज साधन है सर्व प्राप्ति स्वरूप बनना। अप्राप्ति पश्चाताप कराती है। प्राप्ति पश्चाताप को मिटाती है। अब हर प्राप्ति को सामने रख चेक करो। किसी भी प्राप्ति का अनुभव करने में रह तो नहीं गये हैं। प्राप्तियों की लिस्ट तो आती हैं ना। अप्राप्ति समाप्त अर्थात् पश्चाताप समाप्त। अब इन चारों बातों को चेक करो तब ही शीतलता

स्वरूप बन जायेंगे। औरों की तपत को बुझाने वाले 'शीतल योगी व शीतला देवी' बन जायेंगे। तो समझा, शीतलता की शक्ति क्या है। सत्यता की शक्ति का सुनाया भी है। आगे भी सुनायेंगे। तो सुना तारामण्डल में क्या देखा। विस्तार फ़िर सुनायेंगे। अच्छा –

18.11.85.. .. यू.पी. वाले क्या करेंगे? सदा शीतल नदियों के समान शीतलता का वरदान दे शीतला देवियाँ बन शीतला देवी बनाओ। शीतला से सदा सर्व के सभी प्रकार के दु:ख दूर करो। ऐसे वरदानों से झोली भरो।

शीतलता का गाान शीतला देवी है। तो निर्मल स्वभाव अर्थात् शीतल स्वभाव। बात जोश दिलाने की हो लेकिन आप निर्मल हो तब कहेंगे सफल टीचर।.. .. अभी-अभी शीतलता के रूप में, अभी-अभी जलाने के रूप में। पानी की शीतलता का भी अनुभव करा सकते तो आग के जलाने का भी अनुभव करा सकते; दवाई का भी काम कर सकता और शक्तिशाली बनाने का माजून का भी काम कर सकता। सिर्फ समय पर कार्य में लगाने की अथॉर्टी बनो।

5.12.89 जैसे फलदायक वृक्ष अपने शीतलता की छाया में थोड़े समय के लिए मानव को शीतलता का अनुभव कराता है और मानव प्रसन्न हो जाता है। ऐसे परमात्म-प्राप्तियों के फल सम्पन्न रूहानी प्रसन्नता वाली आत्मा दूसरों को भी अपने प्राप्तियों की छाया में तन-मन की शान्ति और शक्ति की अनुभूति कराती है।

18.1.92.. .. कभी भी अपना स्नेही मूर्त, स्नेह की सीरत, स्नेही व्यवहार, स्नेह के सम्पर्क-सम्बन्ध को छोड़ना मत, भूलना मत। चाहे कोई व्यक्ति, चाहे प्रकृति, चाहे माया कैसा भी विकराल रुप, ज्वाला रुप धारण कर सामने आये लेकिन विकराल ज्वाला रुप को सदा स्नेह के शीतलता द्वारा परिवर्तन करते रहना।

26.11.94.. शीतलता का गायन शीतला देवी है। तो निर्मल स्वभाव अर्थात् शीतल स्वभाव। बात जोश दिलाने की हो लेकिन आप निर्मल हो तब कहेंगे सफल टीचर।

16.3.95.. .. जिसका प्रसन्नचित्त होता है उसके मनबुद्धि के व्यर्थ की गति फास्ट नहीं होगी। सदा निर्मल, निर्मान। निर्मान होने के कारण सभी को अपने प्रसन्नचित्त की छाया में शीतलता देंगे। कैसा भी आग समान जला हुआ, बहुत गरम दिमाग का हो लेकिन प्रसन्नचित्त के वायब्रेशन की छाया में शीतल हो जाोगा।

30.3.99.. .. चाहे पाण्डव हैं, चाहे शक्तियां हैं, सभी सागर से निकली हुई ज्ञान नदियां हो, सागर नहीं हो, नदी हो। ज्ञान गंगाये हो। तो ज्ञान गंगायें अब आत्माओं को अपने ज्ञान की शीतलता द्वारा पापों की आग से मुक्त करो। यह है वर्तमान समय का ब्राह्मणों का कार्य।

12. शुभचिन्तक

22.01.70..... सदैव शुभचिन्तक और शुभ चिन्तन में रहना। शुभ चिन्तन और शुभ चिन्तक। यह दो बातें सदैव याद रखना। शुभ चिन्तन से अपनी स्थिति बना सकेंगे और शुभचिन्तक बनने से अनेक आत्माओं की सेवा करेंगे।

23.03.70..... तिलक छोटा होता है, चिन्दी बड़ी होती है। बड़ेपन की निशानी चिन्दी है। तिलक तो छोटे भी लगाते हैं लेकिन चिन्दी बड़े लगाते हैं। जब से ज़िम्मेवारी अपने ऊपर रखने की हिम्मत रखते हैं तब से चिन्दी को धारण करते हैं। आप सभी सर्व के शुभ चिन्तक हो, सर्विसएबल अर्थात् शुभचिन्तक। तो इस शुभ चिन्तक ग्रुप की निशानी चिन्दी है और नाम है शुभचिन्तक ग्रुप। आपके शुभचिन्तक बनने से सभी की चिन्ताएं मिटती हैं। आप सभी की चिन्ताओं को मिटाने वाली शुभचिन्तक हो।

20.05.70..... जब कोई ऐसी आत्मा हिम्मतहीन, निर्बल लेकिन इच्छुक होती है, चाहना होती है कि हम कुछ प्राप्ति करें। ऐसी आत्माओं के लिए ज्ञान-दाता बनने के साथ-साथ आप विशेष रूप से उस आत्मा को बल देने के लिए शुभ-भावना रखते हो वा शुभचिन्तक बनते हो। तो विधाता के साथ-साथ वरदाता भी बनते हो। एक्स्ट्रा बल अपनी तरफ से उनको वरदान के रूप में देते हो। तो वरदान भी देना होता और दाता भी बनना होता है। इसलिए दोनों ही हो।

19.07.71..... एक दो के शुभचिन्तक, सहयोगी बनते रहें तो माया की हिम्मत नहीं जो आपके घेराव के अन्दर आ सके। यह है सहयोग की शक्ति। यह संगठन है सहयोग की शक्ति का। यह संगठन के सहयोग की शक्ति का प्रत्यक्ष रूप दिखाना।

19.08.71..... ऐसे नहीं – जिनके संस्कार मिलेंगे उनको साथी बनायेंगे, दूसरों से किनारा कर लेंगे। भले कड़े संस्कार वाली हो, उनको भी अपने शुभचिन्तक स्थिति के आधार से ट्रॉन्सफर कर समीप लाओ। जब कोई होपलेस केस को ठीक करते हैं तब ही तो नाम बाला होता है ना। ठीक को ठीक करना वा ठीक से ठीक होकर चलना – यह कोई बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात है अपनी श्रेष्ठ स्मृति और वृत्ति से ऐसे-ऐसे को भी बदलकर दिखाना।

10.06.72..... जैसे महिमा सुनने के समय वृति वा दृष्टि में उस आत्मा के प्रति स्नेह की भावना रहती है, वैसे ही अगर कोई शिक्षा का इशारा देते हैं, तो उसमें भी उसी आत्मा के प्रति ऐसे ही स्नेह की, शुभचिन्तक की भावना रहती कि यह आत्मा मेरे लिए बड़ी से बड़ी शुभचिन्तक है, ऐसी स्थिति को कहा जाता है देही-अभिमानी। अगर देही–अभिमानी नहीं हैं तो दूसरे शब्दों में अभिमान कहेंगे। इसलिए अपमान को सहन नहीं कर सकते।

19.07.72..... कोई क्या भी करे, कोई आपके विघ्न रूप बने लेकिन आपका भाव ऐसे के ऊपर भी शुभचिंतकपन का हो – इसको कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थी वा होली हंस। जिसका आपके प्रति शुभ भाव है उसके प्रति आप भी शुभ भाव रखते हो वह कोई बड़ी बात नहीं। कोई बार-बार गिराने की कोशिश करे, आपके मन को डगमग करे, फिर भी आपको उसके प्रति सदा शुभचिंतक का अडोल भाव हो, बात पर भाव न बदले। सदा अचल-अटल भाव हो, तब कहेंगे होली हंस हैं।

20.06.73..... यदि कोई भी परिस्थिति व व्यक्ति विघ्न लाने के निमित्त बनता है तो उसके प्रति घृणा-दृष्टि, व्यर्थ संकल्पों की उत्पत्ति नहीं होनी चाहिए लेकिन उसके प्रति वाह-वाह निकले। अगर यह दृष्टि रखो तो आप

सभी की श्रेष्ठ दृष्टि हो जायेगी। कोई कैसा भी हो, लेकिन अपनी दृष्टि और वृत्ति सदैव शुभचिन्तक की हो और कल्याण की भावना हो। हर बात में कल्याण दिखाई दे।

18.07.74..... व्रत यही लेना है कि हम सब एक मत, एक ही श्रेष्ठ वृत्ति, एक ही रूहानी दृष्टि और एकरस अवस्था में एक-दो के सहयोगी बन, शुभ चिन्तक बन, शुभ भावना और शुभ कामना रखते हुए और अनेक संस्कार होते हुए भी, एक बाप-समान सतोप्रधान संस्कार और स्व के भाव में रहने वाला, स्वभाव बनाने का किला मजबूत बनावेंगे–यह है व्रत।

02.02.75..... शुभ-चिन्तक की रिजल्ट स्व-चिन्तक से कुछ परसेन्ट वर्तमान समय ज्यादा है। लेकिन सफ़लता व कार्य की सम्पन्नता व स्वयं की स्थिति की सम्पूर्णता, जब तक फर्स्ट स्टेज फास्ट रूप के रिजल्ट तक नहीं पहुँची है, तब तक नहीं हो सकती। उसके लिये स्वयं के प्रति स्वयं का ही प्लैन बनाओ। प्रोग्राम से प्रोग्रेस होती है, यह अल्पकाल की उन्नति अवश्य होती है लेकिन सदाकाल की उन्नति का साधन है – स्व-चिन्तक बनना।

07.02.76..... निश्चयबुद्धि की निशानी यह है कि वह हर बात व हर दृश्य को निश्चित जानकर सदा निश्चिन्त होगा, ''क्यों, क्या और कैसे'' की चिन्ता नहीं होगी। फरिश्तेपन की लास्ट स्टेज की निशानी है – सदा शुभचिन्तक और सदा निश्चिन्त।

11.05.77..... सम्पन्न आत्मा, सदैव स्वयं प्रति शुभ-चिन्तन में रहेगी और अन्य आत्माओं के प्रति शुभ-चिन्तक रहेगी। तो 'शुभ-चिन्तन और शुभ-चिन्तक' – यह दोनों ही निशानियाँ सम्पन्न आत्माओं में दिखाई देंगी। सम्पन्न आत्मा के पास अशुभ चिन्तन, वा व्यर्थ चिन्तन स्वत: ही समाप्त हो जाता है, क्योंकि शुभ चिन्तन का खज़ाना, सत्य ज्ञान, ऐसी आत्मा के पास बहुत होता है।

14.06.77..... अगर हर आत्मा के प्रति शुभ चिन्तक होंगे तो परचिन्तन कभी नहीं करेंगे। तो सदा शुभचिन्तन और शुभचिन्तक रहने से सदा साक्षी रहेंगे। साक्षी अर्थात् अभी भी साथी और भविष्य में भी साथी।

28.06.77..... सदा स्वचिन्तन और शुभचिन्तक दोनों स्टेज रहती हैं? जब शुभचिन्तक होता है तो व्यर्थ समाप्त हो जाता है। व्यर्थ का रहता है अर्थात् शुभ चिन्तक का अनुभव कम है। जैसे अगर एक बार बढ़िया चीज़ का टेस्ट (Taste) कर लिया तो घटिया चीज़ स्वीकार करने का संकल्प भी नहीं आएगा। वैसे शुभ चिन्तन में रहने वाला व्यर्थ चिन्तन कर नहीं सकता। चिन्तन चलाना अर्थात् उसका स्वरूप बन जाए। जैसे सागर के अन्दर रहने वाले जीव-जन्तु सागर में समाए हुए होते, बाहर नहीं निकलना चाहते। मछली भी पानी के अन्दर रहती, बाहर आई तो खत्म। सागर व पानी ही उसका संसार है, इतना बड़ा बाहर का संसार उसके लिए कुछ भी नहीं, ऐसे ज्ञान सागर बाप में समाए हुए – इन्हों का संसार भी बाप अर्थात् सागर होता है।

25.01.79..... हर आत्मा को चाहे ब्राह्मण आत्मा, चाहे अज्ञानी आत्मा हो लेकिन हर आत्मा के प्रति श्रेष्ठ भावना अर्थात् ऊंचे उठाने की वा आगे बढ़ाने की भावना हो, विश्व कल्याण की कामना हो इसी धारणा से हर आत्मा से सम्पर्क में आना यह है रिगार्ड रखना। सदा आत्मा के गुणों वा विशेषताओं को देखना – अवगुण को देखते हुए न देखना वा उससे भी ऊंचा अपनी शुभ वृत्ति से वा शुभचिन्तक स्थिति से अन्य के अवगुण को भी परिवर्तन करना इसको कहा जाता है आत्मा का आत्मा प्रति रिगार्ड।

28.01.80..... पहले सेवा का आधार है – शुभचिन्तक। यह भावना आत्माओं की ग्रहण शक्ति बढ़ाती है। जिज्ञासा को बढ़ाती है। इस कारण वाणी की सेवा सहज और सफल हो जाती है। तो स्व के प्रति स्व-चिन्तन वाला सदा माया प्रूफ, किसी की भी कमज़ोरियों को ग्रहण करने से प्रूफ होगा। व्यक्ति व वैभव की आकर्षण से प्रूफ हो जाता है। इसलिए दूसरा कारण निवारण के रूप में सुनाया – 'शुभ-चिन्तक और स्व-चिन्तक बनो'।

24.01.81..... मुख्य बात है ''पहले आप'' लेकिन शुभ भावना से। कहने मात्र नहीं, लेकिन शुभचिन्तक की भावना से। शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना के आधार से 'पहले आप' करने वाला स्वयं ही पहले हो जाता है। पहले आप कहना ही पहला नम्बर होना है। जैसे बाप जगदम्बा को पहले किया, बच्चों को पहले किया लेकिन फिर भी नम्बरवन गया ना! इसमें कोई स्वार्थ नहीं रखा, नि:स्वार्थ 'पहले आप' कहा, करके दिखाया। ऐसे ही पहले आप का पाठ पक्का हो।

10.01.82..... जैसे बाप के लिए सबके मुख से एक ही आवाज़ निकलती है –''मेरा बाबा''। ऐसे आप हर श्रेष्ठ आत्मा के प्रति यह भावना हो, महसूसता हो, जो हरेक समझे कि यह – 'मेरी माँ' है। यह बेहद की पालना। हरेक से मेरे-पन की भावना आये। हरेक समझे कि यह मेरे शुभचिन्तक, सहयोगी सेवा के साथी हैं। इसको कहा जाता है – 'बाप समान'। इसको ही कहा जाता है – कर्मातीत स्टेज के तख्तनशीन। जो सेवा के कर्म के भी बन्धन में न आओ।

19.04.83..... बाप से लगन लगी और लगन के आधार पर लगन की अग्नि में चिन्तायें सब ऐसे समाप्त हो गई जैसे थी ही नहीं। एक सेकण्ड में समाप्त हो गई ना! ऐसे अपने को शुभचिन्तक आत्मायें अनुभव करते हो! कभी चिंता तो नहीं रहती! न तन की चिंता, न मन में कोई व्यर्थ चिंता और न धन की चिंता। क्योंकि दाल रोटी तो खाना है और बाप के गुण गाना है। दाल रोटी तो मिलनी ही है। तो न धन की चिंता, न मन की परेशानी और न तन के कर्मभोग की भी चिंता। क्योंकि जानते हैं यह अन्तिम जन्म और अन्त का समय है इसमें सब चुक्तु होना है इसलिए सदा –' शुभचिन्तक'। क्या होगा! कोई चिंता नहीं। ज्ञान की शक्ति से सब जान गये। जब सब कुछ जान गये तो क्या होगा, यह क्वेश्चन खत्म। क्योंकि ज्ञान है जो होगा वह अच्छे ते अच्छा होगा। तो सदा शुभचिन्तक, सदा चिन्ताओं से परे निश्चय बुद्धि, निश्चिन्त आत्मायें, यही तो जीवन है।

14.01.85..... जो सदा शुभ चिन्तन में रहता है वह स्वत: ही शुभचिन्तक बन जाता है। शुभ चिन्तन का आधार है शुभ चिन्तक बनने का। पहला कदम है स्वचिन्तन। स्वचिन्तन अर्थात् जो बापदादा ने ''मैं कौन'' की पहली बताई है उसको सदा स्मृति स्वरूप में रखना। जैसे बाप और दादा जो है, जैसा है – वैसा उसको जानना ही यथार्थ जानना है और दोनों को जानना ही जानना है। ऐसे स्व को भी – जो हूँ जैसा हूँ अर्थात् जो आदि-अनादि श्रेष्ठ स्वरूप हूँ, उस रूप से अपने आपको जानना और उसी स्वचिन्तन में रहना इसको कहा जाता है – 'स्वचिन्तन'। शुभ चिन्तन करने वाले स्वत: ही सर्व के सम्पर्क में शुभ चिन्तक बन जाता है। स्वचिन्तन फ़िर शुभ चिन्तन, ऐसी आत्मायें शुभचिन्तक बन जाती हैं। क्योंकि जो स्वयं दिन रात शुभ चिन्तन में रहते वह औरों के प्रति कभी भी न अशुभ सोचते, न अशुभ देखते। उनका निजी संस्कार वा स्वभाव शुभ होने के कारण वृत्ति, दृष्टि सर्व में शुभ देखने और सोचने की स्वत: ही आदत बन जाती है। इसलिए हरेक के प्रति शुभ चिन्तक रहता है। किसी भी आत्मा का कमज़ोर संस्कार देखते हुए भी उस आत्मा के प्रति अशुभ वा व्यर्थ नहीं सोचेंगे कि यह तो ऐसा ही है। लेकिन ऐसी कमज़ोर आत्मा को सदा उमंग हुल्लास के पंख दे शक्तिशाली बनाए ऊँचा उड़ायेंगे। सदा उस आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा सहयोगी बनेंगे। शुभ चिन्तक अर्थात् नाउम्मीदवार को उम्मीदवार बनाने वाले। शुभ

चिन्तन के खजाने से कमजोर को भी भरपूर कर आगे बढ़ायेगा। यह नहीं सोचेगा इसमें तो ज्ञान है ही नहीं। यह ज्ञान के पात्र नहीं। यह ज्ञान में चल नहीं सकते। शुभचिन्तक बापदादा द्वारा ली हुई शक्तियों के सहारे की टांग दे लंगड़े को भी चलाने के निमित्त बन जायेंगे। शुभ चिन्तक आत्मा अपनी शुभचिन्तक स्थिति द्वारा दिलशिकस्त आत्मा को दिल खुश मिठाई द्वारा उनको भी तन्दुरुस्त बनायेगी। दिलखुश मिठाई खाते हो ना। तो दूसरे को खिलाने भी आती है ना। शुभचिन्तक आत्मा किसी की कमज़ोरी जानते हुए भी उस आत्मा की कमज़ोरी भुलाकर अपनी विशेषता के शक्ति की समर्थी दिलाते हुए उसको भी समर्थ बना देंगे। किसी के प्रति घृणा दृष्टि नहीं। सदा गिरी हुई आत्मा को ऊँचा उड़ाने की दृष्टि होगी। सिर्फ़ स्वयं शुभ चिन्तन में रहना वा शक्तिशाली आत्मा बनना यह भी फ़र्स्ट स्टेज नहीं। इसको भी शुभचिन्तक नहीं कहेंगे। शुभचिन्तक अर्थात् अपने खजानों को मंसा द्वारा, वाचा द्वारा, अपने रूहानी सम्बन्ध सम्पर्क द्वारा अन्य आत्माओं प्रति सेवा में लगाना।

10.11.87.....अगर कभी-कभी व्यर्थ चिन्तन व पर-चिन्तन होता है तो सदा शुभ-चिन्तक भी नहीं रह सकते। शुभचिन्तक आत्माएं औरो के भी व्यर्थ चिन्तन, पर-चिन्तन को समाप्त करने वाले हैं। तो हर एक श्रेष्ठ सेवाधारी अर्थात् सदा शुभ-चिन्तक मणि का शुभ-चिन्तन का शक्तिशाली खज़ाना सदा भरपूर होगा। भरपूरता के कारण ही औरों के प्रति शुभ-चिन्तक बन सकते हैं। शुभ-चिन्तक अर्थात् सर्व ज्ञान-रत्नों से भरपूर। और ऐसा ज्ञान-सम्पन्न दाता बन औरों के प्रति सदा शुभ-चिन्तक बन सकता है। पर-चिन्तन और व्यर्थ चिन्तन वाला सदा खाली होने के कारण अपने को कमज़ोर अनुभव करेगा, इसलिए शुभ-चिन्तक बन औरों को देने के पात्र नहीं बन सकता।

अव्यक्त वाणी संकलित दिव्य गुणों की माला

भाग - 1

आकर्षणमूत
अचल / अखंड / अड़ोल
आज्ञाकारी
ऑलराउण्डर / एवररेडी
अलर्ट
अनासक्त
अन्तर्मुखता
एकांत एकांतप्रिय
एकाग्रता
एकरस / एकमत / एकता
एकनामी, इकॉनामी

भाग - 2

अनुभवीमूर्त
अटूट / अटल / अथक
अधिकारी
ब्लिसफूल
चियरफुल
केयर फुल
नालेजफुल
पॉवरफुल
सक्सेसफुल / सफलता
सेंन्सीबल / इसेन्सफुल
सर्विसएबल
दिव्यता
दृढ़ता

भाग - 3

इजी और अलर्ट
फेथफुल
फ्राकदिल
गम्भीरता ,
रमणीकता
गुह्यता
हर्षितमुख
हिम्मत / साहस
होलिएस्ट / ऑनेस्ट
जिम्मेवार
खुशी
क्षमा

भाग - 4

लॉ-फुल / ला मेकर
लकी और लवली
मधुरता
महीनता / महानता
नम्रता,
निर्माणता
नष्टोमोहा / मोहजीत
निद्राजीत
निमित्त
निराकारी/निर्विकारी/निरंहकारी
निश्चय
निश्चिंत
न्यारा और प्यारा

भाग - 5

परोपकारी
पवित्रता, रियल्टी, रॉयल्टी
रहमदिल, दयाभाव
रिगार्ड रिस्पेक्ट/सत्कारी
रुहानियत
सदा ब्रह्मचारी
सहनशीलता / सरल चित
संतुष्टता / स्पष्टता
संयम
संतुलन (बैलेन्स)
शीतलता
शुभचिंतक

भाग - 6

स्नेह सहयोग
स्वतंत्रता
समीपता
साक्षीपन / साथीपन / ट्रस्टी उपराम
सर्वस्व त्यागी
सिम्पलिसिटी
सच्चाई, सत्यता, निर्भयता
उमंग उत्साह
वफादार / फरमानबरदार
वैराग्य

अन्य किताबें

- मेरे ब्रह्माबाबा
- विकर्माजीत भव भाग 1-8
- दिव्य शक्तियाँ भाग 1-4
- सहज योग भाग 1-4
- उदाहरण मूर्त भव।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क : बी.के.निलिमा (मो) 9869131644,8422960681

स्वतंत्रता